注意

この資料には以下のような問題によりスキャニング出来ない箇所が含まれます。

・糊付け等による開き不良

・原本破損

・製本上の問題

・その他

॥ अथ रुक्मिणी म[illegible]लम् ॥

昭和46年度 寄贈 氏

東京外国語大学 図書館
157840
47.3.31

॥ भूमिका ॥

श्लोकः ॥ गणराजं गणाध्यक्षं गणपालं गणाधिपम् ॥ लम्बोदरं कैशपुत्रं सुखदं गणनायकम् ॥ १ ॥ गणनाथं गणाधीशं वक्रतुण्डं गणेश्वरम् ॥ गुहाग्रजं गौरिपुत्रं गणराजं नमाम्यहम् ॥ २ ॥ प्रियवर महाशयो ! समस्त भारतनिवासी विद्वद्वरों व श्रीराजामहाराजों व गुणग्राहकों व श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्द के सच्चे प्रेमी भक्तों को विदित हो कि मैं सारस्वत ब्राह्मण भारद्वाज कुलोत्पन्न सांगीतकलाकुशल मिश्र श्री १०८ गुरु नन्दूमल शर्मा का भतीजा व शिष्य हूं जिन के कि विद्यमान महोदर लघुभ्राता नादविद्याचार्य परोपकारी श्री १०५ पण्डित ज्वालाप्रसाद शर्मा का पुत्र छललनजी उपनाम ललनपिया करके युक्त हूं सुरसरी समीपवर्ती नगर फर्रुखाबाद— महल्ला मिश्रसेन (मिश्रकूंचा) जहां कि मन वाञ्छितदा श्रीआञ्जनेयकुमार श्रीहनुमान् प्रतिष्ठित बलवान् महान् प्रतापवान् सद्यः फलदाता की जागती कला प्रसिद्धमूर्त्ति देदीप्यमान है जिनके प्रतापसे दर्शनाभिलाषी सज्जनजन धार्मिकगणों के आगमनिक कारण से दिवसाद्ययामिनितक नित्यप्रति एक मेलासाही शोभायमान रहता है प्रतिसप्ताह भौमवारको तो वह स्थल श्रीमहावीर महाराज के सौन्दर्य शृङ्गार होने से अत्यन्तही चमत्कार को प्राप्त होजाता है। अमितप्रकार

सर्गाङ्काः	विषयाः	पृष्ठाङ्कात्	पृष्ठाङ्काः
१८	शिशुपालतिलकेअपशकुननिरूपणम्	१९५	२०२
१९	शिशुपालजन्मप्रादुर्भवनम्	२०२	२०६
२०	दमघोषगेहेबहुभूपागमनम्	२०६	२११
२१	शिशुपालतिलकारोपणेस्वप्नफलम्	२११	२१७
२२	वैवाहिकोपाख्यानेनानोपायन संग्रहणम्	२१७	२४०
२३	शिशुपालस्यभ्रातृभार्याशिक्षणे भक्तिभावः	२४०	२४६
२४	शिशुपालवैवाहिकीयात्रानिरूपणम्	२४६	२५३
२५	शिशुपालप्रयाणेमार्गव्यथावर्णनम्	२५३	२६१
२६	श्रीकृष्णान्तिकेरुक्मिणीपत्रप्रेषणम्	२६१	२७३
२७	द्वारावत्यां द्विजागमनम्	२७३	२९१
२८	शिशुपालस्यागमनम्	२९१	३०५
२९	द्विजसमेतश्रीकृष्णागमनम्	३०५	३१०
३०	श्रीकृष्णवैवा[illegible]भाप्रकाशनम्	३१०	३६६
३१	वैवाहिकसम[illegible]यशिष्टाचारः	३६७	३७५
३२	श्रीकृष्णस[illegible]णीहरणम्	३७६	३८८
३३	ससैन्यशि[illegible]जजरासन्धादिपराजयः	३८८	४०९
३[illegible]	[illegible]मेरुक्मिपराजयः	४०९	४१९
३[illegible]	[illegible]वारणादिनिरूपणम्	४२०	४५०
[illegible]	[illegible]ादिरङ्गसिक्तसंबन्धि	४५०	४६७
	[illegible]णस्यसिन्धुसमीपागमनं	४६७	४७१
	[illegible]क्मणीद्वारकागमनम्. ..	४७१	४७८
	[illegible]हेमानिरूपणंग्रन्थ	४७९	४९२
	[illegible]नरसीभक्तकथानकम्	४९३	५१८

इति ॥

के भोग प्रसाद, पुरजन आन २ कर निवेदन करते हैं और विविधवर्णकी सजावट बनावटके पटुका, पोशाकैं, घण्टा, घड़ियाल, ध्वजा, पताका, तोरण, चमर, छत्रादिक अनेकपदार्थ चढ़जाया करते हैं सांगीतसंवादी मित्रमण्डलीसम्पन्न गुणीजन गाते बजाते आनन्द बरसाते हैं दूसरे इसी मुहल्ले में श्रीरामचन्द्र मर्य्यादा पुरुषोत्तमका वार्षिक जन्मोत्सव रामलीला बड़ी धूमधामके साथ आदि से होती है अतः प्रियवर्गो ! अबकी बार जब मैं देशाटनकर स्वजन्मभूमिपर आनकर उपस्थितहुआ तो अनेक मेरे प्रियमित्रगण यथा—देवदत्तशर्मा कान्यकुब्ज व अभिन्नप्रिय श्रीबच्चनलाल मिश्र (वचनेशकवि) कारकूनरियासत कालाकांकर व प्रियवर मूलचन्दशर्मसारस्वतानुज उपरोहित श्रीराजाराम कारगुज़ार प्रतिष्ठित पुराचीन रईस साह कुन्दनलाल, फुन्दनलालजी साहब निवासी श्रीवृन्दावनके व पुरातनरईस लाला रघुबरदयालु साहब खत्री के कुमार मौलमदासजी साहब व माननीय श्रीपण्डित रामचन्द्रजी महाराज इत्यादि मेरे स्नेही शुभचिन्तकों ने मुझसे जिज्ञासाकी कि तुमने नादगायनविषयसम्बन्धी ख्याल, आस्ताई, तराना, त्रिबट, चतुरँग, चौबोला, ध्रुपद, धमार, सरगम, सादरा, ठुमरी, दादरा, टप्पा, प्रबन्ध, होली, वसन्त, हिंडोला, मलार, लावनी, ख्याल, सावन, बारामासा, शेर, ग़ज़ल, रेखता, भजन, कजली, कहरवा, खेमटा, नकटा, नाटक, अद्धा, दोहा, कवित्तादिकों की रचना करके तो पन्द्रह

व सोलह पुस्तकें यथा——रागनौबहार, इश्करंग, होलीशतक, मोहिनीविलास, मतबेहसनी, केम्पफतेहगढ़ व चिन्तामणि यन्त्रालय व मतबे रौनकेहिन्द स्वदेशीय में और ललनसागर, ललनसुधाकर, ललनप्रभाकर, ललनफाग, ललनविलास, ललनप्रदीपिका, ललनलतिका, ललनचन्द्रिका, ललनकान्ता, ललनविनोद, अनिरुद्धपरिणय इत्यादि श्री[illegible]मुन्शीनवलकिशोर (सी, आई, ई) के यन्त्रालय लखनऊ में मुद्रितकराचुके हो सो वे तो केवल नादविद्याध्ययनक गायनाधीश व गुणज्ञोंको ही लाभदायकहैं परन्तु अब तुमको कुछ पिङ्गलसम्बन्धी छन्दालङ्कारादि विरचित श्रीभगवद्‌गुणानुवादीय श्रीहरिललितलीलालसित चरित्रों से भी कोई पुनीत पुस्तक प्रणीतकर श्री अनन्य हरिभक्तजनों के उपकारार्थ व सर्वसाधारणों के मनरञ्जन हेतु इस संसारके सभ्यपुरुषोंकी सेवामें निवेदन करनी चाहिये । क्योंकि इस अनित्य शरीरके जीवन मरणका कुछ ठिकाना है नहीं श्वासा आई आई, न आई, न आई अतएव मैंने अपने अभिन्नस्नेहीवर्गोंकी प्रेरणासे सर्वसाधारणोंके मनमोद निमित्त यह एक जगन्मङ्गलदायक श्रीरुक्मिणीपाणिग्रहण नामकग्रन्थ जिसमें कि सम्पूर्ण षोडशकला[illegible]री, गिरिवरधारी, श्रीकृष्णचन्द्रभगवान् व साक्षात् लक्ष्मी का अवतार परमसौभाग्यवती भ[illegible]कसुता, श्रीरुक्मिणीजी महाराणी, दम्पतिस्वामिस्वामिनीके जन्म से विवाह पर्य्यन्त अनन्तविषयों से

प्रपूरित चरित्र, परमपवित्र, चित्रविचित्र, गौंतादि छन्दबन्धों में रागरागिनी ताल ब्यौरों सहित निर्माण करके अपनी मन वाणी कायाको निर्मलकरणकारण श्रीमद्भागवत व और २ अनेक पुराणोंका आशय व विपुल कोविद, कविकुलशिरोमणियोंकी सम्मति लेकर यह ग्रन्थ और इस के सम्मिलित भक्तिभूषणनामक सूक्ष्म वृत्तान्तयुक्त पुनीत पुस्तक जिसमें कि श्रीभक्तशिरोमणि नरसीजी गोंडानगर निवासीकी व्याख्या वर्णन है विरचित किया है अब मेरी सर्वसज्जनों की सेवा में यह सविनय प्रार्थना है कि कदापि मेरी अल्पज्ञतासे यदि कहीं कुछ पिङ्गलादिछन्द प्रबन्धमें व रागरागिनी व ताल ब्यौरों के सम्बन्ध में या कथाप्रसंग में अथवा शब्दार्थ वर्णव्यवस्थामें अस्तव्यस्तता या अविधि व अशुद्धता होगई हो तो आप सर्व बुद्धिमान् महाशयों को उचितहै कि इसको भगवत् चरित्र समझकर अखिल पक्षपातोंको परित्यागकर अपनी कुल सज्जनतासे (काचःकाञ्चनसंसर्गाद् धत्तेमारकतींद्युतिम्) इस वचनानुसार अनुग्रह सहित इसे आदर योग्य समझें और अपनी सद्वाणीसे इसको शुद्धकर सुशोभित करें काहे से कि दीन अधीन ललन जनको अपनेही ललन समान जान शिक्षावत् उपदेश देवें इसमें कोई अनुचित व दुर्भावकी बात नहीं है किञ्चित् शङ्का व सकुच धारण न करें क्योंकि जो कोई घोड़ेपर सवार होता है वह भी गिरपड़ता है (यथा—चलतःस्खलनंवापि भवत्येवप्रमादतः) दूसरे न तो मैं पण्डितगुण

[illegible]
ऐसा भी कहा गयाहै कि (यथा नाम तथा गुणः) सो मेरे तो इस ललनरूपी नामही से चतुरताकी चिकित्साका अभाव लक्षित होताहै परन्तु तो भी मेरी लघुबुद्धि के इस अत्यन्त परिश्रम को आपही सफलताको प्राप्त करानेवाले होंगे तबही मेरे परिश्रमको यश प्राप्त होसकेगा कोटिशः धन्यवाद उन महाशयों को देकर मैं अपने आप को कृतार्थकर महाबड़भागी समझूंगा यथा-

दोहा ॥ ललन बड़नकी कृपाबिन, मिलत बड़ाई नाहिं ॥ बड़ेहि बड़ाई देनचहिं, सोइहो बड़ जगमाहिं ॥ १ ॥ लघुहिबने कछुपाइयत, बड़न अशीस प्रसाद ॥ सोइ लघुबड़पद ललनलहि, नवहिं बड़नके पाद ॥ २ ॥ बड़न वाक्य मानैं ललन, चहैंबड़ाई जोय ॥ सन्माने नित बड़नके, बड़ो बड़नते होय ॥ ३ ॥ बन वामन भगवन्त लघु, ललन लह्यो बलिराज ॥ लही बड़ाई बलि विदित, ज्यहि अधीन व्रजराज ॥ ४ ॥ ललन बनेहि बड़ क्षमतहैं, अवगुण करो करोर ॥ बड़न बड़ाई भावते, लघुबड़ होत बहोर ॥ ५ ॥ षोड़शविधि पूजारचा, सेवाशुश्रूषादि ॥ जप तप व्रत संयम नियम,ललन विनय यक यादि ॥ ६ ॥ प्रभुहु प्रेमवश वदतश्रुति, सोइकर विनति सप्रेम ॥ बड़न पूजि निश्चय ललन, लहै कुशल नित क्षेम ॥ ७ ॥ विज्ञेष्वलम् किंबहुना ॥

वही आपका—
निवेदक परिडत ललनपिया शर्मा—फरुखाबादी.

सँव्वत् ११५१ फाल्गुन शुक्ल ५

अथ रुक्मिणीपाणिग्रहणस्य छन्दः प्रकरणम् ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ मङ्गलाचरणम् ॥ सोरठा ॥ जय शिव ललन नमामि, दलन मलन भवसिन्धु अघ ॥ बरहु सुबुधि गुणग्राम, विमल बुधा वियापतिः ॥ १ ॥ दोहा ॥ अर्थ धर्म गति कामना, ललन सुमति दातारु ॥ द्रवहु शारदा सुकृति निधि, सुमति वाणिदा चारु ॥ १ ॥ सोरठा ॥ नमो शिवा शिवपाद, छन्द प्रबन्धोदधि क्षमा ॥ देउ ललन रसनाद, करहु कुशल विधि छन्द महँ ॥ १ ॥ दोहा ॥ जयति जगतपति श्रीहरे, मोर इष्ट कुलदेव ॥ दया मया वरदे ललन, सुख सुखप्रदा अभेव ॥ १ ॥ कोविद कवि कुल संतगण, सुजन गुणज्ञ समाज ॥ शिरधरि महिपर जोरिकर, बन्दहु सब सुखताज ॥ २ ॥

अथ छन्दः प्रकरणः प्रारम्भः ॥

(१) प्रथम छन्द लक्षण वर्णन करते हैं—जिसमें मात्रा व वर्णकी गिनती रहती है प्रायः उन छन्दों में चार पाद होते हैं ॥

(२) वर्ण दो प्रकारके माने गये हैं—एक मात्रिक लघु, द्वै मात्रिक गुरु और अनुस्वार व विसर्गयुक्तको भी गुरु कहते हैं ॥

(३) पिङ्गल [illegible]

(४) वर्णवृत्तमें आठ (८) गण तीनतीन वर्णोंके चार शुभ और चार अशुभ [illegible] यतहैं सो उनका मात्रा, रूप, गण और वर्णजाति, लक्ष, मय उदाहरणके दिखलाते हैं ॥ यथा—

शुभगण	वर्णजाति	पिङ्गलीमात्रारूप	उदाहरण ॥
(१) मगण	तीनगुरु	ऽ ऽ ऽ	यादोजी
(२) नगण	तीनलघु	। । ।	प्रणम
(३) भगण	एक गु० द्वै ल०	ऽ । ।	शङ्कर
(४) यगण	एक ल० द्वै गु०	। ऽ ऽ	भवानी

अशुभगण	वर्णजाति	पिङ्गलीमात्रारूप	उदाहरण ॥
(१) जगण	लघु गुरु लघु	। ऽ ।	मुरारि
(२) रगण	गु० ल० गु०	ऽ । ऽ	जैहरी
(३) सगण	ल० ल० गु०	। । ऽ	हरिॐ
(४) तगण	गु० गु० ल०	ऽ ऽ ।	जैराम

(५) अथ मात्रा वृत्त में यह पांच गण निर्मित कियेगयेहैं अर्थात् छः मात्राका—टगण—पांच मात्राका—ठगण—चारमात्राका—डगण—तीनमात्राका—ढगण—दोमात्राका——णगण—माना

गया है और टगणके १३ ठगणके ८ डगणके ५ ढगणके ३ एगणके २ भेद मानेहैं नागराजका वचन है कि अर्थलोप होने के कारण से छन्दप्रकरण में प्रायः दीर्घ सम्बन्धी मात्रा वर्णको ह्रस्व भी मानलेते हैं इसी हेतु पिङ्गलपाठी महाशयों को ज्ञात कराने के तईं कविजन अपनी कविता के शङ्कित शब्दोंपर किसी न किसीतरहका संकेतिक चिह्न भी मुद्रित करदिया करते हैं और जो नहीं भी चिह्न चिह्नित करते हैं तो पिङ्गलके जाननेवाले तो समझही लिया करते हैं ॥

अब छन्दोंके निरूपण कियेहुये रूपोंके भेद जितने कि छन्द इस ग्रन्थ में वर्णन हैं लिखते हैं सूचितहो कि अनुमानन (४९) उंचास छन्दों में कविता इस ग्रन्थकी विरचित है तिनके पृथक् पृथक् अङ्गोंके मात्रा वर्ण रूपोंको लिख जतराते हैं ॥

(१) अथादौ द्रुतविलम्बितछन्दोविधिमाह ॥ इस छन्दके चारों चरणों में ४८ अड़तालीस अक्षरहोते हैं और प्रतिचरणों में चौथा, सातवां, दशवां, बारहवां दीर्घ होता है बारह२ पर विराम माना गया है ॥

(२) रथोद्धता लक्षणम् ॥ यह छन्द ४४ वर्णका है प्रतिचरण में १, ३, ७, ९, ११ वां गुरु होता है और एकादश २ पै विराम मानाहै ॥

(३) शिखरिणी लक्षणम् ॥ इस छन्दके प्रतिचरणका यह रूप जानना चाहिये यगण (।ऽऽ)

मगण (ऽऽऽ) नगण (।।।) सगण (।।ऽ) भगण (ऽ।।) १ लघु १ दीर्घ अर्थात् १ लघु ५ गुरु ५ लघु २ गुरु ३ लघु १ गुरु होताहै प्रतिपादमें १७ वर्ण और ६, ११ पै विराम कहाहै ॥

(४) अनुष्टुप्वृत्तलक्षणम् ॥ इस छन्द के चारों चरणों में ३२ वर्ण होते हैं व आठ २ पै विरामहै और चारों चरणोंमें ५ वां लघु छठा गुरु होताहै विषमपाद में सातवां गुरु और समपादमें सातवां लघु निर्मित करतेहैं अन्य अक्षरोंके लघु दीर्घ होनेका कोई विचार नहीं है॥

(५) स्रग्धराविधानम् ॥ इस छन्द के चारों चरणोंमें ८४ अक्षरहैं व प्रतिचरण में इक्कीस वर्ण होते हैं और सात २ पै विराम होताहै और हरएक चरणमें आदिके चार चार और ६, ७, १४, १५, १७, १८, २०, २१ वां वर्ण गुरु होताहै ॥

(६) दोहा छन्दलक्षण ॥ यह अड़तालीश मात्राका छन्दहै प्रथम और तृतीयपादमें तेरह २ मात्रा और दूसरे व चौथेमें ग्यारह २ कला मानी गईहैं ॥

(७) सोरठा छन्दलक्षण ॥ इस छन्दमें भी अड़तालीस मात्राहैं प्रथम तृतीयमें ग्यारह २ द्वितीय, चतुर्थपदमें तेरह २ कलहैं यानी दोहे को उलटाकर देने से सोरठा होजाता है ॥

(८) मनहरण छन्दलक्षण ॥ इस छन्दको घनाक्षरी और दण्डक कवित्त भी कहते हैं इस

के चारों चरणोंमें १२४ और प्रतिचरणमें ३१ वर्ण हैं व १६, १५ पर विराम नियतहै अन्त्यका वर्ण गुरु होताहै और किसी अक्षर के लघुदीर्घका नियम नहीं ॥

(९) लघुविसूचिका (लावनी) छन्दलक्षण ॥ इस के प्रतिपाद में सोलह मात्रा होती हैं अर्थात् दो चरणोंका एकपाद मानते हैं इसके चौकान्तर में अनेक छन्द मिश्रित करदेने का भी अधिकार होता है ॥

(१०) हरिगीतिका छन्दलक्षण ॥ इस छन्दके प्रतिपादमें अट्ठाईस मात्रा होती हैं दोचरण का एकपाद माना है और ९, ७, १२ पर विराम है पदान्तमें गुरु रखनेका नियम है ॥

(११) ध्रुपद इकताली छन्दलक्षण ॥ यह गायन छन्दहै तालगणितसे सम्बन्ध रखताहै इस छन्द के प्रत्येक पाद में अड़तालीस मात्रा १२, १२, १२, १२ पर विराम होता है परंच अर्थकी सुघराईके वास्ते जिस चरणमें कोई मात्राकी न्यूनता व अधिकता भी होती है तो न्यूनताकी पूर्ति तानसे और अधिकताको तालगणितकी द्रुततिसे पूरितकर देते हैं ॥

(१२) द्रुमलिका व विसूचिका छन्दलक्षण ॥ इस छन्दका नाम लावनी भी कहतेहैं इसके प्रतिचरणमें २२ मात्रा और १३, ९ पर विश्राम मानना कहा है इसके अन्तर भी हर कोई छन्द रखनेका अधिकार रहताहै ॥

(१३) शूलताली छन्दलक्षण ॥ यह गायनछन्द है इसकी प्रत्येक आवृत्तिमें दशकल विभूषित होती हैं और न्यूनाधिक्य भी तान व तालकालसे पूरित करलेतेहैं ॥

(१४) त्रित्तला छन्दलक्षण ॥ सांगीताचार्य इसको ठुमरी कहते हैं इसकी प्रत्येक आवृत्ति में १६ षोडशकल और चार २ पर विराम होताहै इसके अन्य चरणों में कोई कला वा आवृत्तिका नियम नहीं मानाहै अर्थ की सुगमता के हेतु तानों से मात्रा पूरित करदेतेहैं ॥

(१५) गर्जल छन्दलक्षण ॥ इसको ग़ज़ल भी बोलते हैं यह गर्जलछन्द अनेक भांतिका होताहै इस छन्दके प्रतिचरणमें २६ मात्रा और १४, १२ पर विराम है ॥

(१६) चौपाई छन्दलक्षण ॥ इसे पादाकुलिक छन्द भी कहते हैं प्रति चरणमें षोडशमात्रा होतीहैं और दो चरणका एकपाद मानतेहैं ॥

(१७) गीतिका छन्दलक्षण ॥ इसके प्रतिपाद में छब्बिस मात्रा और ७, ७, १२ पर विराम जानना यद्यपि यह छन्द मात्रिकहै तथापि इसके पदान्तमें गुरु और लघु रखनेका नियम मात्रानुसार मान लियाजाताहै ॥

(१८) सवैया छन्दलक्षण ॥ यह छन्द कईप्रकारका होता है यथा २२ अक्षरी मदिरा का रूप–प्रति चरणमें सात भगण (ऽ॥) और अन्तका एक गुरु होता है अर्थात् एक पादमें २२

अक्षर होतेहैं और १२, १० पर विरामहै ॥ (मालती सवैया २) इस छन्दमें सात भगण (ऽ॥) और अन्तके २ गुरु होतेहैं अर्थात् २३ अक्षर एक पादमें होते हैं १२, ११ पर विराम होताहै॥ (माधवी सवैया ३) इस छन्दमें ८ सगण (॥ऽ) होते हैं व १२, १२ पर विश्राम होता है ॥ (किरीटी सवैया ४) इसमें आठ भगण (ऽ॥) और १२, १२ पर विराम होताहै (सुन्दर सवैया ५) प्रति चरण में पच्चीस वर्ण अर्थात् आठ सगण (॥ऽ) और अन्तमें एक गुरु होताहै १२, १३ पर विराम जानो ॥

(१९) जलहरणकवित्त छन्दलक्षण ॥ इसको रूप घनाक्षरी और जलहरण, दण्डक भी कहते हैं इसके प्रतिचरण में बत्तिस वर्ण सोलह २ पर विराम और अन्तमें लघु रखने का नियम है ॥

(२०) षोडशकलिका छन्द ॥ यह सोलह मात्राका छन्दहै और दोपादका १ चरण होताहै ॥

(२१) रूपकताली छन्दलक्षण ॥ यह सातमात्राका गायन छन्दहै मात्राकी न्यूनाधिक्य तानोंके आधीन मानी गई है ॥

(२२) सोहना छन्दलक्षण ॥ इस छन्द के सम विषम दोनों पादों में ग्यारह २ वर्ण होतेहैं लघु दीर्घका कुछ नियम नहीं है ॥

(२३) झपतालीछन्द ॥ यह दशकला का गायन छन्द है और न्यूनाधिक मात्राओं की ताल, तान, गणित से पूर्तिकरली जाती है ॥

(२४) भुजङ्गप्रयात छन्दलक्षण ॥ इस छन्दके प्रति चरणमें चार यगण (।ऽऽ) और चारों पादों में अड़तालीस वर्ण अर्थात् अस्सी मात्रा मानते हैं ॥

(२५) सोहलछन्दलक्षण ॥ प्रतिचरणमें ३९ मात्रा और ८, ८, ८, ८, ५ पर विश्रामदेते हैं ॥

(२६) ख्याल रंगतलंगड़ीछन्दलक्षण ॥ इस छन्द के विषम चरणमें तीस मात्रा और ८, ८, ८, ६ पर विश्राम माना है और सममें ११, १३ पर विराम होताहै अर्थात् अड़तालीस मात्रा हैं और इसके अन्तर में अन्यछन्द भी रखनेका अधिकारहै ॥

(२७) कव्यछन्दलक्षण ॥ इसके प्रथम चरण में २४ मात्रा व १३, ११ पर विश्राम और दूसरे चरणमें ११, १३ पर विराम मानते हैं ॥

(२८) त्रिभंगीछन्दलक्षण ॥ प्रतिपाद में बत्तीस मात्रा और १०, ८, ८, ६ पर विरति और अन्त में एक गुरु रखनेका नियम है ॥

(२९) श्रद्धानन्दछन्दलक्षण ॥ प्रतिचरण में ३० मात्रा और ८, ८, ८, ६ पर विरति मानी गई है ॥

(३०) ध्रुपद श्रुतितालिका छन्दलक्षण ॥ इसमें कवित्त व सवैया को भी गायन सम्बन्धी तालों में द्वादशमात्रिक आवृत्ति से गायलेते हैं प्रतिचरणमें अड़तालीस मात्रा व बारह २ पर विराम मान न्यूनाधिक्य भी ताल काल से प्रपूरित कर राग रूपमें सुशोभित करते हैं ॥

(३१) दादराछन्दलक्षण ॥ यह गायनछन्द है इसकी प्रतितालके कालमें १ मात्रा और ताल चिह्नित कलामानी है ॥

(३२) आर्णवछन्दलक्षण ॥ यह दश मात्रा का छन्द है इसके चारों चरण समान जानो ॥

(३३) नाराचछन्दलक्षण ॥ इस छन्द के प्रतिपादका यह रूपहै ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ अर्थात् जगण, रगण, जगण, रगण, जगण होते हैं ॥

(३४) रेखताछन्दलक्षण ॥ प्रतिचरण में बत्तीस मात्रा १६, १६ पर अवसान और दो पादका १ चरण मानतेहैं ॥

(३५) यतगर्जलछन्द लक्षण ॥ इसे ग़ज़ल भी कहतेहैं प्रति पादमें अट्ठाईस मात्रा और ७, ७, ७, ७ पर विश्राम रक्खा जाताहै दो पादका १ चरण मानाहै ॥

(३६) गणितछन्दलक्षण ॥ प्रतिचरण में १३ गुरु १ लघु और ८, ५ पर विरति मानी है ॥

(३७) दोहराछन्दलक्षण ॥ इस वृत्तके प्रति चरणमें २९ कला हैं प्रथम पाद में १३, ५, ११ पर अवसान दूसरेमें १३, १६ पर विरामहै ॥

(३८) दोवईछन्दलक्षण ॥ प्रति पादमें २८ मात्रा और अन्तमें गुरु रहता है ॥

(३९) निषंगछन्दलक्षण ॥ इसके हरएक चरणमें २४ मात्रा होती हैं ॥

(४०) अनन्दछन्दप्रबन्ध ॥ यह चतुर्दशाक्षरिक मानागयाहै ह्रस्वदीर्घका विचार नहींहै ॥

(४१) श्रीछन्दलक्षण ॥ यह द्वादशकलिका कहागयाहै ॥

(४२) रोलाछन्दलक्षण ॥ इसके प्रति पादमें २४ मात्रा और अन्तमें गुरु होताहै ॥

(४३) कुंडलियाछन्दलक्षण ॥ इस छन्दके आदिमें दोहा होता है और छः पद होते हैं व समस्त पदोंमें १४४ मात्राहैं व तीसरे चरणमें कव्य छन्दका अर्धभाग योजित करतेहैं ॥

(४४) छन्नछन्दप्रबन्ध ॥ यह पैंतीस वर्णका मानाहै व प्रथम पादमें १५ व दूसरे में २० अक्षर रखनेका नियमहै ॥

(४५) द्वितीय रसछन्नछन्दप्रबन्ध ॥ यह दोपादका छन्द है व २०, २० अक्षर पर विराम माना है ॥

(४६) अन्य मधुछन्नविवरण ॥ यह अड़तालीस अक्षरी छन्द है ॥

(४७) माधुरीछन्दलक्षण॥ इसके प्रति चरणमें २५ कला रखनेकी मर्यादाहै और १३, १२ पर अवसान होताहै॥

(४८) द्वितीय सोहलछन्दलक्षण॥ इस के प्रथम पाद में २४ मात्रा और १३, ११ पर विराम व दूसरे चरणमें ३८ मात्रा और १६, ११, ११ पर विश्राम मानते हैं॥

(४९) सिंहावलोकनछन्दलक्षण॥ इस सवैया सिंहावलोकन के प्रति चरण में आठ सगण (॥ऽ) होते हैं और जो आदिमें होता है वही अन्तमें आता है और काफिया का शब्द पुनरुक्त किया जाता है॥

इति श्रीरुक्मिणी पाणिग्रहणस्य छन्दोलक्षणप्रकरणंसमाप्तम्॥
श्रीशोऽवतु॥ शुभमस्तु॥

श्रीगणेशाय नमः॥

समर्पण॥

श्रीवरकवितारसिकमणि, धर्म्मधुरीण, परमप्रवीण, ग्राहकगुणीन, सभ्यसुजान, दयानिधान, मूर्तिविज्ञान, विप्रवंशाधिराज, महायोगीराज, शान्तिसदन, प्रसन्नवदन, उदारमन, प्रतिष्ठित पद्धतिधनी, हितूनहितूतनी, अनन्यहरिदास, ब्रह्मभक्तिउरविलास, प्रेमीशीलवाणी, अपूर्व्व सुयशिप्राणी, पूर्वदेशाधिकारी, नित्यसत्यव्रतधारी, सिसैंडीनरेशनागर, चहुंजगतविभु उजागर, महामाननीय, कमनीय श्री १०८ राजा चन्द्रशेखरजी त्रिपाठी समीपेषु॥

विदित हो कि हाथकंगन को आरसी क्याहै—सुखदवस्तु प्यारसी क्या है—जिसने देखा न हो देखले—जिसने जांचा न हो परेखले—प्रसिद्धको सिद्ध करनाही क्या—सिद्धको प्रसिद्ध करनाही क्या—क्योंकि आपके कुलमें तो सनातनसे राज्यपदवी विभूषित होती ही आईहै—और हां अब वर्तमानसमय में उसी पदवी के महत्त्वसार को आपके शिरोमणि सुशील धार्मिक इन्द्रियाधिपति मनवाले शरीरने सफलकर प्रदीप्त किया है—कररहा है—और करैगा—काहे से कि वित्तव्ययक व्यवहार से समस्त सांसारिक विलासिक विहार आपने कर छोड़े—सर्व्व धुरंधर सुकर्मिक

व्यसनों को सदैव से आप सत्कार देते आये हैं—उदारता को आपके उदारचित्त ने उदारपुरुष मात्रों से उधार तकलेलेकर अपने दया दान सम्मानरूपी पाणि बलाहकोंसे अमृती संतुष्टनिधी बौछारोंकी बौछोंसेहर्षा बर्षा धूँधार धारों की बरसाती झड़ीसी ऐसी लगा रक्खी है कि जिससे सांसारिक तृषावन्तोंको केवल सुनने मात्रसेही यह सूचित होताहै कि निश्चय विश्वासनीय आपका हृदय एकवीर बिजयी उदारताकी मूर्तिहै मानो उसउरागार द्वारपर उग्र उदारताका दरबार लगाही रहताहै—असत्यको न स्पर्श करतीहुई अपनी सद्वाणीके गतिदायक सुखदायक सत्यको परम प्रत्यक्ष मंजुमित्र ऐसा बनारक्खाहै कि घरद्वार, परिवार, दार, राज्याधिकारको भी तृणवत्समुझ दुरा-डालाहै—ब्राह्मण, गुणी, गन्धर्व, कवि, कोविद, साधु, सन्त, अतिथि, गुरुओंके सम्मान सेवामें तत्पर रहनेसे आप केवल राजाही नहीं—बल्कि राजा महाराजा कहेजातेहैं—शील, स्वभाव, नम्रता, सुयश, प्रकृती, बरताव, मिठबोलन, सत्कार, रीति, प्रीति की धूमधामी धूम आपकी चारों दिशान की विदिशानकी दिशानमें ऐसी प्रपूरित होरही है जैसे कि बसन्तऋतुकी सुहावनी शोभा भवके भूमिभागों को सुहायमानकर अमित सुगन्धित सुमनोंकी सौरभी लहरों से जीवों को क्या पशु, पक्षिमात्र को भी विमोहित करतीहुई छकित करदेतीहै—फिर जितेन्द्रिय बनकर काम को आपने ऐसे जीत रक्खाहै जैसे कि श्रीमहादेवजीने—क्रोधको इस विधानसे वशीभूतकर रक्खा है जिस

प्रकारसे कि सर्व्वशक्तिमान् श्रीविष्णुभगवान् ने भृगुजी की लात खाकर भी किंचिन्मात्र क्रोध कल्पनाकीही नहीं—मदोन्मादको आपने अपने हृदयाम्बुजसे ऐसा दुदकार दियाहै जैसे कि पूर्णब्रह्म श्रीरामचन्द्रजीकी वामांगिनीको रावण हरण भी करलेगया तब भी उन्होंने अपने आपको मदमहत्वका अध्यक्ष न समझा—लोभ, लम्पटा, लबारीको आपने अपनी मनरूपी लाठी और रुचिरूपी लातोंसे रूंद कूंदकर धूल में इसभांति मिलादिया है जैसे कि त्रिलोक सम्पती स्वामी कुबेरके समीप लोभ स्वप्नमात्रको दृष्टिगोचरमें नहीं आसका—पुनः मोह ममता से आप इसभांति बहिर्मुख होगयें हैं जैसे कि षोडशकलावतारी श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् ने देवकी वसुदेव, नन्दयशोदाके प्रकटहो पुत्र कहाय मधुवन जाय उद्धव पठाय ज्ञान दिवाय मोह मायासे रहित हुये—अन्यान्य शेष प्रभावोंका विदित करनाही क्या—हां इस लेखनी की लुभियातीहुई लालशा तो तृप्त नहीं होतीहुई अपनी सामर्थिक शक्तिसे यह तो निश्चयकर उदित करसक्ती है कि आपकी उग्र प्रशंसाको तो आपकी प्रशंसाही स्वयंरूपसे बड़ाई की वृद्धि सबोंको प्रख्यात करती हुई चन्द्रवत् प्रकाश कररही है तो फिर हीरेको हीरा, अमृतको अमृत, सूर्य्यको सूर्य्य कहनाही क्या (अतएव) इसीकारणसे मैं आपको पूर्ण हरिभक्त जानकर श्रीमद्भागवत तथा अन्य२ग्रन्थोंकी सम्मति सम्बन्धित यह एक श्रीरुक्मिणीपाणिग्रहणनामक ग्रन्थ जिसमें कि साक्षात् श्रीलक्ष्मी-

वपुष धर्म्मात्मा भीष्मकतनया रुक्मिणीजी महारानी व पूर्णब्रह्म षोडशकलावतारी श्रीकृष्णचन्द्र मुरारीके जन्मसे विवाह पर्य्यन्तकी सुन्दर सुहावनी मनभावनी लीला वर्णितहै अपनी ललन सरिस बुद्ध्यनुसार विरचितकर आपकी सेवामें निवेदन करताहूं आपने तो अनेकों ग्रन्थ देख पढ़डाले होंगे परन्तु तौ भी मेरे इस अल्पज्ञ बुद्धिवाले के अत्यन्त परिश्रमपर भी दया दृष्टि करके इस हरि चरित्र सम्बन्धी कविता को भी अवश्यावश्य अवलोकनकर मुझ पामर जनको भी कृतार्थ होनेका भागी कीजियेगा क्योंकि हरि चरित्ररूपी सुरसरी में मज्जन करने से परिणाममें प्रमोदही की प्राप्ति होतीहै न कि दुःखकी अतः अगर मेरी सच्ची निष्कपटरूपी प्रेम प्रीतिप्रवाहनी सुहावनी समर्पणिक सेवाहै तब तो मुझे दृढ़ विश्वासीय पूर्ण आशाहै कि इसे आप हित चितसे अङ्गीकारकर मेरे योग्य मुझे स्याबासी देकर यद्यपि प्रसन्न न होंगे तौ अप्रसन्न भी न होंगे और कदापि बनावटी भेंटरूपी सेवाहोगी तौ आप तो योगीन्द्रहैं जब कि तनान्तर दशा को जान पहिचान रहे हैं तो फिर सत्यासत्यका जान लेना बातही क्या है और यथार्थमें तो यथावत् वार्त्ता यही है कि चन्द्रमा व सूर्य्य को दीपकका दिखानाही क्या परंच हां इस प्रत्यक्ष और लक्ष प्रामाणिक प्रमाणपर मेरी ढिठाई भी माननीय होसक्ती है कैसे जैसे कि दिवाकर को दर्पण दिखलानेसे केवल तेजवान् सूर्य्य सत्संगके प्रभावसे उस तुच्छ झूठे कांचके दर्पण में भी इतनी

तेज व चमत्कारकी तीव्रता होजाती है कि उसके सम्मुख भी कोई दृष्टि नहीं करसक्ताहै सो यह केवल आप सरीखे महीपतिराज महात्मा तेजस्वी सूर्य्यकेही प्रभाव और सत्संगकी कृपा का कारण है और मेरा तो नामही ललनहै अगर मैं किसीतरहका ललनपनकरूं भी तौ मैंतो ललन हीहूं और फिर जो आपने कभी मुझे ललन करके पुकारा होगा तौ इस ललनकी समर्पणरूपी सेवा कैसी जो कि श्रीहरिगुणानुवादीय पियूषवती रसोंकी खानिसे प्रपूरितहै इसका आप अपनी हृदयाम्बुजी रसनाको स्वाद चखाकर आशाहै और निश्चय है कि अभिलाषासे विभूषित होतेहुये अवश्यही हर्षाइयेगा ॥ यथा ॥

दोहा॥छल सेवाते दैवहू, रीझतनाहिं त्रिकाल। हरिजनके उरहरि बसें, सो रीझे किन भ्वाल ॥
१ ॥ रीझ बूझ सोइ प्रेमकी, को नहिं जानत जक्त। ललनपनों नहिं चलसकै, सम्मुख श्रीहरि
भक्त ॥ २ ॥ झूठ सांचकी बात जो, बातहिमें प्रकटात। गाथा माथा पीटमें, स्वारथ मात्र जनात ॥
३ ॥ कढ़े स्वार्थही हित बंढ़े, स्वार्थहि लग हरि हेत। को काको बिन स्वार्थ के, यही सबन हित
चेत ॥ ४ ॥ सोइ हित स्वार्थहि रखि ललन, तुम्हें सर्व्व मय जान। करत यथोचित भेंट यह,
तुम हित कृपा निधान ॥ ५ ॥

वही आपका

पण्डित ललनपिया शर्मा नि० मित्तूकूंचा फर्रुखाबाद।

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ कथाविधान ॥

सोरठा ॥ श्रीप्रभु चरितललाम, जो सुनिबेकी रुचिधरै । व्यासबुलय निजधाम, देय निमन्त्रण शीशनय ॥ १ ॥ दो० ॥ तंत्रन वाद्यादिक छिड़ैं, कीर्तन करत अपार । इष्टमित्र गण सङ्गलै, गमनै बुध आगार ॥ १ ॥ चौपाई ॥ सुठिसिंहासन वसन सजावै । त्यहि पहँ पुस्तक लै पधरावै ॥ पालकि म्यान यान कछु साजै । तापै स्थापै बुध महराजै ॥ धूमधाम वाद्यन युतिकरिकै । पोथी पूजि शीशपर धरिकै ॥ यथाशक्तिधन सुमन लुटावत । पण्डित पुस्तक युत हरषावत ॥ लाय भौन सहहित मर्य्यादी । कोविद हेतु सजै सुठिगादी ॥ नित बुधपाद पखारै थारा । शुचिपट सन पदपोंछि पछारा ॥ लै चरणामृत सह परिवारा । सींचै पदजल शेषागारा ॥ सजिषोडश विधि के सामाना । रोरि अरगजा केशर साना ॥ सुमनाक्षत सुबास सम्बन्धी । अनुपम अतरादि की सुगन्धी ॥ नागर बेलिपात पूगीफल । उग्र उग्र श्यामा तुलसीदल ॥ दो० ॥ जातीफल एला लवँग, शद्वगंधिरस भीनि । धनिय कच्चमर कुस्तरी. केशर शीतल चीनि ॥ १ ॥ चौपाई ॥

श्रीफल ऋतुफलमेवा जातिक । विविधभांति नैवेद्य सुस्वादिक ॥ धूपदीप आरतिकर्पूरी । नित-नवीन पट दक्षिना पूरी ॥ यहि विधि प्रतिदिन पुस्तक पूजै । परछै बहुरि व्यास पदछूजै ॥ नौबत भेरि नगार धरावै । बन्दनवार द्वार बँधवावै ॥ व्यासासन चहुं रम्भारोपै । ध्वजा पताका तोरण तोपै ॥ चित्र मुकुर कांचिक सामाना । वस्त्रालंकृत करि विधिनाना ॥ व्यास वेदिका नितनव साजै । पठैनाइ नेगियन समाजै ॥ इष्टमित्र कुलनाती जाती । तीर पड़ोसी जौन सँगाती ॥ सबन निमन्त्रण दै बुलवावै । हरियश सुनैसबै सुनवावै ॥ नितनव सविधि बुधापै अशना । संतुष्टै सहमृदु बचरसना ॥ आवै अतिथि सन्त द्विज कोई । सन्मानै तस जो जस होई ॥ यहि विधि नेमनीति जोइ धरिता । सुनत प्रेमयुत जेहरिचरिता ॥ दोहा ॥ जेजे उत्सव मांगलिक, होयँ ग्रन्थके माहिं । श्रद्धायुततिनको करै, अरुचि धरै हदिनाहिं ॥ १ ॥ चौपाई ॥ पूर्णग्रन्थमे सविधि सप्रेमा । हरि हित पूजै ग्रन्थसनेमा ॥ पलिसहितदे शय्यादाना । विरचित विधिपुराण जिमिभाना ॥ ऊर्ण[1] कौशेय[2] धौं सूत्र[3] वस्त्रशैर[4] । कंचुक[5] पटुको[6] ष्णीष[7] पिताम्बर ॥ धौतवस्त्र[8] अँगप्रोक्षण[9] आदी । छत्र उपानह य-ष्ट्यादी[10] ॥ शुभ पर्य्यङ्कपरिच्छदनीके[11] । उपबर्हणा[12] लुभातेजीके ॥ रुचिर दुशाला सुघर दुलाई ।

१ ऊनी । २ रेशमी । ३ सूती । ४ पांच । ५ अङ्गरखा । ६ पटुका । ७ पगिया । ८ धोती । ९ अंगोछा । १० छड़ी इत्यादिक । ११ गद्दा, चादर वगैरा बिछानेके । १२ तकिया ।

चारि चँदोव मशहरी गाई ॥ भूबिस्तर सुठितम्बुकनाता । ससांगता गोदान सुहाता ॥ गृहवाहन धन पंचह्वरला । पात्र सप्त सुन्दर इमियला ॥ चमचास्थाली ग्लास कटोरी । अम्बुपात्र थाली कलशोरी ॥ ताम्रकुम्भ यकताम्र कटोरी । पंचपात्र गोमुखी बहोरी ॥ अर्घासन रुद्राक्षी माला । आचमनि सम्पटि आदि विशाला ॥ दोहा ॥ भावित भूषण व्यासहित, गहन जलाने जेत । यहि विधि सों संग्रह करै, हरि हित प्रीति समेत ॥ १ ॥ तैल शर्करा तूल घृत, अतरादिकी सुगन्धि । अन्न वर्ष पर्य्यन्तकहँ, पानदान सप्रबन्धि ॥ २ ॥ सोरठा ॥ वस्तु गृहस्थिक सर्व, यावत् जौन यथा-वतै । अर्पै प्रभुहिं अगर्व, हरि हरषैं हृदि रति दृढै ॥ १ ॥ दोहा ॥ पूर्णाचारि विचारिजो, लहत पूर्णफल सोइ । श्रुतिसुरसन्त सराहिं त्यहि, हरिरति भोगी होइ ॥ १ ॥ हो असक्त जस शक्ति हो, साहित हरिरति धारि । सुनै चरित नँदललन के, रीझैं वेगि मुरारि ॥ २ ॥ प्रभु केवल वश प्रेम के, पूरत जनमन आस । बिन प्रेमै दूरै भगत, थिरत न छलके पास ॥ ३ ॥

इति श्रीद्विजवरपण्डितवर्य्यललनपियाकविविरचितापूजाविधानपद्धतिः समाप्ता ॥ श्रीरस्तु ॥

---

१ फरस । २ बढ़ई । ३ लोटा । ४ कलशा । ५ पानका मशाला इत्यादि ।

अथ श्रीरुक्मिणी पाणिग्रहण कथा प्रारभ्यते ॥

तावन्मङ्गलमाचरति ॥

श्लोकः—गणपतिं प्रणमामि महोदरं प्रमुदितं धृतमोदकमीडितम् ॥ विबुधकिन्नरमानवतापसप्रभृतिभी रदनोदितमङ्गलम् ॥ १ ॥

अन्वयः—'तावन्नमस्कारात्मकम्मङ्गलं निर्दिशति'। विबुधकिन्नर मानव तापस प्रभृतिभिः = देवकिन्नर मानुष तापसादिभिः, ईडितं = स्तुतं, रदनोदितमङ्गलं = रदनेन—दशनेन सह उदितं जातं मङ्गलं यस्य सः तम्, (च) धृतमोदकम् (च) प्रमुदितं महोदरं = लम्बोदरं नाम, गणपतिं (अहं) प्रणमामि । द्रुतविलम्बितं वृत्तम तल्लक्षणं च;—"द्रुतविलम्बितमाह नभौभरौ"॥१॥

अर्थ—देव, किन्नर, मनुष्य, मुनि आदिकों से स्तुति किये हुये, (और) दांतके साथ मङ्गल का उदय किये, तथा (हाथ में) लड्डू लिये, और आनन्दित हुये, लम्बोदर नाम गणेशजी को मैं प्रणाम करता हूं ॥ १ ॥

श्लोकः—भारती तनुभृतां च बिभृयात्सद्य एव किल हृद्यधिष्ठिता ॥ सर्वदाऽथ ननु शर्मदा गिरं सौष्ठवोक्ति सरलार्थ शालिनीम् ॥ २ ॥

अन्वयः—सर्वदा अथ = अथेति अनन्तरं ननु = अनुभवे शर्मदा = कल्याणदा—'शर्मशात

सुखानिच' इत्यमरोक्तेः, । भारती=सरस्वती, किल तनुभृतां=मनुष्याणां, हृदि=हृदये, अधिष्ठिता=स्थिता, सतीति शेषः । सौष्ठवोक्तिसरलार्थशालिनीं=सौन्दर्योक्त्या ऋज्वर्थवतीं गिरं=वाचं, बिभृयात्=विदधातु=दद्यादित्यर्थः, अस्मिन्श्लोके चकारस्त्वादावेव योजनीयः । आशीर्वादात्मकं मङ्गलमिदम् । श्लोके रथोद्धता वृत्तम् । उक्तं च;–'रान्नराविह रथोद्धता लगौ' ॥ २ ॥

अर्थ–अब सदाही कल्याण देनेवाली सरस्वती, निश्चय मनुष्यों के हृदयमें बैठकर,–सुहावनी बोलीसे सीधा अर्थ जतानेवाली,–वाणीको देवे ॥ २ ॥

श्लोकः–शिवं दुर्गां सूर्यं हरिमथगुरुंकोविदकवी प्रणम्याऽहंप्रीत्या हरिचरितगानायललनः ॥ प्रियायाःसञ्चक्रे सुललितपदैः कर्णसुखदैर्हरेः श्रीरुक्मिण्याः परिणयकथामङ्गलमिदम् ॥ ३ ॥

अन्वयः–अहं ललनः शिवं (च) दुर्गां (च) सूर्यं (च) हरिं अथ गुरुं (च) कोविदकवी प्रणम्य प्रीत्या हरिचरित गानाय कर्णसुखदैः सुललितपदैः इदं हरेः प्रियायाः श्रीरुक्मिण्याः परिणयकथामङ्गलं सञ्चक्रे=रचनां करोमि । वस्तुनिर्देशात्मकमिदं मङ्गलम् । शिखरिणीवृत्तमेतत् । यथाह,–'यमनसभलागः शिखरिणी' इति ॥ ३ ॥

अर्थ–मैं ललन,–शिवजी और दुर्गा तथा सूर्य और हरि तथा गुरु और पण्डित, कवि (इन) को प्रणाम कर प्रीतिसे नारायण के गण गानेको,–सुननेमें प्यारे और सुहावने पदों से

यह कृष्णजी की प्रिया श्रीरुक्मिणीजी के विवाह की कथा का मङ्गल रचना करताहूं ॥ ३ ॥

श्लोकः–सारस्वताष्टवंशोवै भारद्वाजकुलोद्भवः ॥ ज्वालाप्रसादशर्माऽयंगानविद्याविचक्षणः॥४॥

अ०–(यस्य) सारस्वताष्टवंशःवै भारद्वाज कुलोद्भवः अयं ज्वालाप्रसादशर्म्मा गानविद्या विचक्षणः । अस्तीति शेषः ॥ ४ ॥

अर्थ–जो सारस्वत अष्टवंशीय और जिनका भारद्वाज गोत्रहै वे ज्वालाप्रसादशर्मा गानविद्यामें निपुणहैं ॥ ४ ॥

श्लोकः–तत्सूनुर्ललनोनित्यं भ्रातरंज्येष्ठकंपितुः ॥ नन्हेमलंगुरुंनौमि फरुखाबादवासिनम् ॥५॥

अन्व०–तत्सूनुः = तस्य पुत्रः ललनः नित्यं पितुः ज्येष्ठकं भ्रातरं फरुखाबादवासिनं (स्वीयं) गुरुं नन्हेमलं नौमि = प्रणमामि । अहमिति शेषः ॥ ५ ॥

अर्थ–तिन (ज्वालाप्रसाद शर्म्मा) का पुत्र मैं ललन, नित्यही पिताके बड़ेभाई फरुखाबाद रहनेवाले अपने गुरु नन्हेमल को प्रणाम करता हूं ॥ ५ ॥

श्लोकः–ब्रह्माद्या आदितेया अखिल मुनिवराः सर्वशः सूरयस्ते ज्ञातुं शक्त्याऽपि शक्ता नहि तमनुगमन्यस्य मायावरुद्धाः ॥ विष्वक्सेनस्य तस्याप्युदितगुण गणानन्त्य मेवाऽश्रयेऽहं चापल्यं मे क्षमध्वं परिणयकृतिना नोपहास्यं प्रयामि ॥ ६ ॥

अन्वयः—(यस्य) विष्वक्सेनस्य उदित गुण गणानन्त्यं सर्वशः ज्ञातुं ब्रह्माद्या आदितेयाः=देवाः, अखिल मुनिवराः (च) सूरयः शक्त्या अपि न शक्ताः हि ते यस्य मायावरूढाः, तं एव अनुगमन् अहं आश्रये (तस्मात्) मे चापलं क्षमध्वं अपि=येन, परिणयकृतिना उपहास्यं न प्रयामि ॥ ६ ॥

अर्थ—जिस कृष्णजी के प्रकटित गुणसमूहकी अनन्तताई को भलीभांति जानने को ब्रह्मादि देव, सब मुनिवर और पण्डित, (अपनी) सामर्थ्यसे नहीं शक्त हुये (क्योंकि) अवश्यही वे इसकी मायाके चक्रपर चढ़ेथे उनहींकी स्तुति करता हुआ मैं आश्रय लेताहूं इसलिये मेरी चपलता को क्षमाकरो जिससे रुक्मिणी विवाह की कथा रचना करनेमें (मेरा) उपहास नहो ॥ ६ ॥

श्लोकः—चन्द्रे रसाङ्के शीतांशावब्दे वै वैक्रमेऽसिते ॥ माधवेमासिदेवेज्ये सप्तम्यां प्रविरच्यते ॥ ७ ॥

अ०—चन्द्रे रसाङ्के शीतांशौ=एकोन विंशत्येकषष्टितमे अब्दे=संवत्सरे वैक्रमे=विक्रम नाम युक्ते, कृते,—वा; माधवे मासि=वैशाखे मासे सप्तम्यां (तिथौ) देवेज्ये=गुरुवासरे इदं मङ्गलं प्रविरच्यते ॥ ७ ॥

अर्थ—संवत् १९६१ विक्रमी, वैशाख कृष्णपक्ष सप्तमी बृहस्पति बारको यह मङ्गल रचाजाता है ॥ ७ ॥

अथ भाषा मङ्गलाचरण ॥

सोरठा—करवन्दन ओंकार, नाना ग्रन्थन मतिन लै ॥ बन्दौं अमित प्रकार, श्यामा श्याम

युगल चरण ॥ १ ॥ दोहा ॥ विघन [illegible] वर, बन्दौं विमल सप्रीति ॥ १ ॥ मदन कदनपति गौरिसुत, सिद्धिसदन बुधिराशि । राखहुपति विद्याधिपति, करहु सुबुद्धि प्रकाश ॥ २ ॥ (रागभैरव ध्रुपद चारतालमें) मनहरण कवित्त ॥ जैजै गणनाथ शुद्ध बुद्धिदा अगाध जगपूज्य सबभांति श्रुतिदेव मुनिहूँ कहै । शंकर दुलारे गिरिजाके प्राणप्यारे निज भक्तनके भारे जाकी दृष्टि दुखको दहै ॥ एक रदवारे लम्ब उदर सुभुज चारे सेवक सुखारे जन जेहि कहिबो चहै । करुणा करीजिये ललन बरदीजिये जू मोमनमें राधापति सदाही बसोरहै ॥ १ ॥ (रागिनी भैरवी) लघु विसूचिकाछन्द अर्थात् लावनी ॥ प्रकट पूरण प्रताप जाको । शम्भुसुत भज मन गिरिजाको ॥ (टेक) दरश सुन्दर स्वरूप नीको । भाल मृगमद केशर टीको ॥ लजहिं लखि अलिगण भ्रुकुटी को । शीश छवि मुकुट हरत जीको ॥ दोहा ॥ छवि फब नव गजबदन वर, मृगदृग जलज रसाल । अरुण अधर दुति दशन कल, कुण्डल श्रवण विशाल ॥ माल उर शोभित मुक्ताको । शम्भुसुत भजमन गिरिजाको ॥ १ ॥ बिदित महिमा अनूप यक दन्त । चतुरभुज फलदायक अत्यन्त ॥ ललित लम्बोदर छवि सुखमन्त । अङ्ग आभूषण शोभावन्त ॥ दोहा ॥ चिबुक चारु शोभा घनी, अङ्ग अनङ्ग सुहाय । पीताम्बरकी फबन तन, बहुबिधि रहिदरशाय ॥ परम सुन्दर निधि शोभाको । शम्भुसुत भजमन गिरिजाको ॥ २ ॥ सुधानिधि युग कपोल अभि-

राम । नागिनी अलकनको विश्राम ॥ रहैं मोहित रस बसहि अराम । करैं छिन छिन मुख चूम प्रणाम ॥ दोहा ॥ घुँघुआरी प्यारी लगैं, अलकैंकल कजरारि । मुख मयङ्क द्युतिपै मनहुं, श्यामघटा अनुहारि ॥ दुरत रति मन्मथ उपमाको । शम्भुसुत भजमन गिरिजाको ॥ ३ ॥ पाणि शुभ सोहतमोदक थाल । गदा नव नव कमलन की माल ॥ बरत सुख सम्पति करत निहाल । सकल जनमन रञ्जन प्रतिपाल ॥ दोहा ॥ अष्टसिद्धि नवनिद्धि युत, सुखदायक गणराज । सुर नर मुनि यश रटत जेहि, सफल करन शुभकाज ॥ विघन गण हरता विपदाको । शम्भुसुत भजमन गिरिजाको ॥ ४ ॥ श्रेष्ठ जगबन्दन आदि गणेश । प्रथम पूजित जप यज्ञ हमेश ॥ सकल अज सुरपति विष्णु महेश । करत सुर नर मुनि सुमिरण शेश ॥ दोहा ॥ तिल तन्दुल चन्दन सुमन सुरसरिजल सुस्नान । धूप दीप नैवेद्य युत, पूजन विविध विधान ॥ करत जप मुनिजन सब ताको । शम्भुसुत भजमन गिरिजाको ॥ ५ ॥ दशौंदिश सप्तद्वीप नवखण्ड । चतुर्दश भुवन प्रताप अखण्ड ॥ मोह मद हरन पाप पाखण्ड । करत भक्तनको सुखद अदण्ड ॥ दोहा ॥ विद्या बारिधि विमलमति, चार पदारथ देत । प्रातहोत जो भजतनित, गणपति दुख हरलेत ॥ बृद्धि निशि दिवस सम्पदाको । शम्भुसुत भजमन गिरिजाको ॥ ६ ॥ सकल सुख सिद्धि बिनायकहो । देहु हरि रति सुख-

बाहन बली, सबलायक गुणवान । हरि रुक्मिणि शुभ ब्याहि यश, कारवा चहत बखान ॥ बिनय यहि पूर्ण करहु ताको । शम्भुसुत भजमन गिरिजाको ॥ ७ ॥ सोरठा ॥ शुद्ध बुद्धिकी खानि, रूपराशि छबि अमित बर ॥ बाहन हंस प्रमानि, शील सिन्धु यशवन्ति अति ॥ १ ॥ सुमति करणि कल्यान, करहु कृपाजन दीन लखि ॥ हीन छीनमति जान, कण्ठ बिराजहु ललनके ॥ (रागिनी बहार–त्योरा तालमें) "सरस्वती बिनय ।" छन्द हरिगीतिका ॥ बानी भवानी आदिरानी शुद्ध बुद्धि प्रकाशिनी । त्रैलोक्य चौदह भुवन घट घट प्रकट प्रबल प्रतापिनी ॥ राजति मराल बिशाल बाहनिबिमल बदनी सुन्दरी । शुभ लसत बीणा पाणि पुस्तक बिबिध बिधिसों यशभरी ॥ मृगमद तिलक छबि भाल सोहत शीश मुकुट बिराजहीं । नव कमल दल मृगमीन खञ्जन निरखि लोचन लाजहीं ॥ अति लोल कमल कपोल अमि गृह समुझि अहि शिशु अलकियां । झुक झुक झपट तेहि पिवन रस झगरति परस्पर झलकियां ॥ अँग अँग बिभूषण शशि बदन वर बसन तन शोभा बनी । नव खण्ड सातों द्वीप जग जननी बिदित महिमा घनी ॥ सब काज आदि बिवाह विद्या यज्ञ जप तप उत्सवन । तुव प्रथम पूजन करत मुनिजन साक्षी कारन करन ॥ श्रुति चतुर्वेद वेदाङ्ग भाषत आदि शक्तिहि शारदा । शिव विष्णु बासुकि इन्द्र नारद रटत तुवयश सर्व्वदा नित प्रति कृपालि दयालि भक्तन जनहितू बरणोत्तमा । बरदेहु रुक्मिणि ब्याह बरणों ललन

हियमहँ बसिय मा ॥ १ ॥ "श्रीपार्वती बन्दना।" (ध्रुपद इकताला राग मालकोश में) ॥ भजन ॥ जय जय जग जननि मातु चन्द्र गात सोहै। रूप कान्ति निरखि देवि सुर नर मुनि मोहै॥ (अन्तरा) अम्बु निम्बु उग्र फांकि बिमुहित लखि युग्म आंखि भ्रुकुटि बंकु भाल बांक सुधा थल बनो है ॥ १ ॥ लसत शीश सारी श्वेत अलकन द्युति अति अश्वेत मृदुलबोलनि रस समेत मुहै जग-लियोहै ॥ २ ॥ बिबुध शेष श्रुति सुरेश वर्णी महिमा प्रजेश बिदित यश प्रताप शम्भुपत्नी उमाको है ॥ ३ ॥ भजमनगिरिराजलली होयँ सकलकाज फली अखिल गुण प्रवीण बली भलीभांति सोहै॥ ४ ॥ ललन आश कमल चरण, पूजिये ममाशा प्रण गाऊं श्रीगोविंद गुण सफल करण जोहै ॥ ५ ॥ दोहा ॥ श्रीजगदम्बाऽम्बुज चरण, मन बच क्रम युत बन्द। अखिल लोक जग जीव जेहि, सुमिरि लहत आनन्द ॥ "दुर्गा स्तुति"। (धानी रागिनीमें) द्रुमलिका छन्द अर्थात् लावनी॥ जय जय शिवरानी बेद बखानी माता। अब दास पै होहु सहायमैं शीश नवाता ॥ (टेक) क्या जटा जूट का मुकुट शीश शुभकारी। त्रैलोचन लाल बिशाल परम सुखकारी ॥ शशि शोभित भाल रसाल बाल छबि धारी। भ्रुकुटी बंकुट अभिराम अनोखी प्यारी ॥ सेवित सुर नर मुनि सकल सदा सुख दाता। अब दासपै होहु सहाय मैं शीश नवाता ॥ १ ॥ शशि सुधा सिन्धु मुख छबि का [illegible]

अंग सुभूषण दिपित नाग कालाहै ॥ धारिणि बाघम्बर श्याम जलज सम गाता। अब दासपै होहु सहाय मैं शीश नवाता ॥ २ ॥ है प्रथम पाणिमें मुण्ड लिये महरानी। दूजे में खड्ग कराल कहैं मुनि ज्ञानी ॥ त्रितिये कर कञ्ज चतुर्थ करतरी पानी। सोहत सिंहासनपर प्रिय शम्भुभवानी ॥ जोहै सेवक पद सेय परम पद पाता। अब दास पै होहु सहाय मैं शीश नवाता ॥ ३ ॥ बिन दया तुम्हारी शक्ति बुद्धि नहिं होई। चितवो करुणा की दृष्टि भक्तपर सोई ॥ शरणागत की प्रतिपालि न तुम सम कोई। दे ललन दीन आधीन की दुर्मति खोई ॥ रुक्मिणी ब्याह यश भनहुँ करहु कुशलाता। अब दास पै होहु सहाय मैं शीश नवाता ॥ ४ ॥ "श्रीसूर्य देवस्तुति"। (भैरवी रागिनी में) द्रुमलिकाछन्द अर्थात् लावनी॥ द्विज दीनन के दुख दलन दिवाकर स्वामी। दरशावहु ज्ञान गँभीर हे अन्तर्यामी ॥ (टेक)॥ निश दिन कामी मन दुष्ट कर्म चित लावे। लोचनकी दृष्टि सदैव पाप उपजावे॥ नित काम क्रोध मद लोभ अधिक दरशावे। इन कर्मन से दृढ़ नेह मान सुखपावे॥ मम है क्रोधी भोगी मन मूर्ख निकामी। दरशावहु ज्ञान गँभीर हे अन्तर्यामी ॥ १ ॥ ममता माया वश कियो महा मन मेरो। आशा अनुकूल निवास आन मुहि घेरो ॥ तृष्णाने तनुकर तृषित मोह में गेरो। हो रह्यो घोर तम हृदय मांहि इन केरो ॥ मैं महा मूढ़ हौं क्रूर कुटिल अति कामी। दरशावहु ज्ञान गँभीर हे अन्तर्यामी ॥ २ ॥ हम से खल

अधिक अधर्म्मी अधम अजापी । उनके सुख करता दुख हरता हौ आपी ॥ निशि बासर कर्म्म कुकर्म्म करत जो पापी । उनहूँ को तारत तुमहीं करत अपापी ॥ मुहिं जानि दीन दुख हरहु भरहु यह हामी । दरशावहु ज्ञान गँभीर हे अन्तर्यामी ॥ ३ ॥ तुम्हरे प्रतिबिम्बहि देखि रूप अलबेला । नश जावत अघ सन्ताप शाप के हेला ॥ दुख दूर दरश है होत स्वरूप नवेला । सुख लहत सेय पद जौन तुम्हारे चेला ॥ किरणन सों कटहिं कलेश मनोहर घामी । दरशावहु ज्ञान गँभीर हे अन्तर्यामी ॥ ४ ॥ तुम हौ भय भव के भार नशावन वारे । तुम्हरे सुमिरणके किये नशहिं दुख सारे ॥ तुम हौ जगदीश्वर जग्त के तारण हारे । तुम हौ जग दीपक देव दयानिधि प्यारे ॥ जग पालन पोषण करत तुमहिं बसु यामी । दरशावहु ज्ञान गँभीर हे अन्तर्यामी ॥ ५ ॥ तुम हौ देवन के देव देवता भारी । प्रत्यक्ष तुम्ही भगवान सकल सुखकारी ॥ तुम भक्तनको यश देत भक्त हितकारी । तुम्हरो प्रताप गँभीर अखिल असुरारी ॥ म्वहि देहु भक्ति महराज कृपाकर नामी । दरशावहु ज्ञान गँभीर हे अन्तर्यामी ॥ ६ ॥ जे जन प्रभात उठि करत तुम्हारी सेवा । तन त्याग जायँ जहँ राजत योगीदेवा ॥ तिल तन्दुल चन्दन सुमन चढ़ाये मेवा । सुख सम्पति शुभ संतान प्राप्त हों एवा ॥ तुम्हरी सेवकाई में सदैव आरामी । दरशावहु ज्ञान गँभीर हे अन्तर्यामी ॥ ७ ॥ तुम दीनबन्धु सुख सिन्धु हरण विपदा के । यश प्रचरित जग महराज सकल प्रभुताके ॥ निग-

मागम शास्त्र पुराण सहित गीताके । सुर मुनि ध्यावें जन तुम्हें देव सरिता के ॥ तुम्हरी महिमा माया दाया सरनामी । दरशावहु ज्ञान गँभीर हे अन्तर्यामी ॥ ८ ॥ अब करहु कृपाकी छाँह हेरि मम ओरी । जन जानि मोहिं भगवान दीन करजोरी ॥ वर मांगत मैं प्रभु यही निहोर निहोरी । उर उपजै हरिपद रुक्मिणि रति हित सोंरी ॥ तुव चरण शरण सुख करण ललन जन थामी । दरशावहु ज्ञान गँभीर हे अन्तर्यामी ॥ ९ ॥ सोरठा ॥ शिव नमामि करजोरि, पद सरोज उर ध्यान धरि ॥ बिनवहुँ विमल बहोरि, जानि कुशल वरदा विभव ॥ १ ॥ "शिवस्तुति" (राग अड़ाना कान्हरा, शूल तालमें) सप्तपदी भजन ॥ हे महेश गिरिजापति स्वामी अन्तर्यामी दीनदयालम् । देहु भक्ति म्वहि कृष्णचरणकी हरहु पीर गम्भीर करालम् ॥ १ ॥ (अन्तरा) त्रैलोचन त्रैताप विमोचन सोचन हरण करण आनन्दम् । रिपु अनङ्ग शुभ शीश गङ्ग अर्धङ्ग उमा छबि सुख जालम् ॥ २ ॥ उर मुण्डमाल शोभित विशाल शशिभाल वदन लिपटे व्यालम् । तन रमी चिताकी भस्म मनोहर सोहत डमरू पाणि त्रिशूलम् ॥ ३ ॥ नन्दीगण असवारी बांकी ओढ़े बाघम्बर अभिरामम् । पद पङ्कज रज अघ गण हरणी करणी मङ्गल परम प्रकाशम् ॥ ४ ॥ अघनाशी कैलाशी बासी अविनाशी भक्तन प्रतिपालम् । जय महदेव देव देवनके जय महेश गुण सकल निधानम् ॥ ५ ॥ शेश सुरेश धनेश शारदा विष्णु विरञ्चि देव निगमागम् । श्रुति सदैव तैंतीस कोटि सुर धरत ध्यान तुम्हरो

वसु यामम् ॥ ६ ॥ भोलेनाथ ललन जन की सुनु यह म्वहिं शिव दीजै बरदानम् । बरणौं बिमल ब्याह हरि रुक्मिणि बिदित होय जगजन सुखकाजम् ॥ ७ ॥ "शम्भुके भोले पन पर दृष्टान्त" ॥ दोहा ॥ महाशून्य आरण्यमें, तरुयक वर बट केर । पुराचीन शिव मूर्ति ही तेजस्वरूप घनेर ॥ १ ॥ सोरठा ॥ तहां एक वैश्यानि, जाय सदा पूजन करै ॥ नेम निरन्तर ठानि, गन्धाक्षत पुष्पार्पती ॥ १ ॥ (रागिनी बरुआ ताल त्योरा में) हरिगीतिका छन्द ॥ यक दिवस मालिनि एक निजपति हेत खीर बनायकै । लै चली खेत सिधार वहि ठँह लगी शोचन आयकै ॥ चख लखूं कस तसमई स्वादिक बनी है कैधौं नहीं । धर खीर शम्भु समीप तोरन गई पल्लव तरु तहीं ॥ तरु रह्यो कछुक उतङ्ग नहिं मिलसको दल तब अस कियो । शिव शीश दै पग ठाढ़ भइ भे प्रकट शिव प्रमुदित हियो ॥ कह बरंब्रूहि महेश सुन हँसि परी मालिनि पुनिकह्यो । तुम कौन श्री महराज यदि कोउ देव भये प्रसन्न हो ॥ तो देहु म्वहि सन्तान धन सुख सर्व विविध विधानकै । शिव कहि तथास्तु अलक्षभे त्यहि मिले सब सुख आनकै ॥ सुखि अकसमात विलोकि मालिनि वैश्य त्रिय पूछत भई । कोदेव सेव प्रभावते तो रङ्कता सब नश गई ॥ तब मालिनी शङ्कर अखण्ड प्रताप को बरणन लगी । सुनिवैश्य पतनी चकितहो पशुपति समीपै झटभगी ॥ झुँझिलाय कही यथार्थही में आप भोलेनाथ हो । ज्यहि चहो त्यहिकर देहु यक पलमात्र माहिं सनाथ हो ॥ मैं जन्म पूज्यो

तुम न बूझा बड़ अचाम्भत गाय याहि । करतूति कह नइ कीन्ह मालिनि दिया सुख अगोय ज्यहि ॥ शिव प्रकट बोले ताहि पूजन तोरहो लौकिक प्रसँग । वह सतन अर्पित कीन्ह पुनि मैं किमु न मग्नौं ताहि सँग ॥ लखि सत बनेनी शंभु बच्च कर जोरकही अपार गति । नहिं लहै तुम क्यहि रीझ रीझत जनौं कह मम ललन मति ॥ १ ॥ दोहा ॥ वैश्य बाम इमि बिनय भनि, उरगहि ज्ञानहिं गूढ़ । निछल पूज शिव मुक्ति लहि, जग सुख भोग प्रपूढ़ ॥ १ ॥ सोरठा ॥ बन्दौं बिमल सप्रीति, श्री गङ्गे भागीरथी ॥ जन तारन सबरीति, मन मन्शादायक सदा ॥ १ ॥ "श्री गङ्गा स्तुति" (सप्तपदी रागिनी प्रभाती त्रितलाछन्द में—) भजन ॥ जै गङ्गे जग जननि उजागर जै भक्तन वरदेनी । भवतरणी हरणी भवभारन तारण तरण त्रिवेनी ॥ १ ॥ (अन्तरा) ब्रह्मरूप आनँदमय मैया वेदसार अघ छेनी । विपदा विघ्न बिनाशन हारी हो बैकुण्ठ नसेनी ॥ २ ॥ सुरसरिता भारी शुभकारी शिवहितकारी पेनी । शीश ईश धारी बलिहारी जय जय दलन अठेनी ॥ ३ ॥ जनके कलुष जन्म जन्मनके खलके कुल कुल खेनी । पतित अपावन अति साधारण तारण पाप दलेनी ॥ ४ ॥ सुघर सुधा से सौ गुनिधारा त्रिभुवन यश प्रकटेनी । है प्रताप गम्भीर दरश को वाञ्छित फल अर्पेनी ॥ ५ ॥ महिमा अपरम्पार तिहारी अघ अपराध सुखेनी । विष्णु विरञ्चि वेद यश गावत सुरपति पुनि त्रिय तेनी ॥ ६ ॥ दास ललन विश्वास मात तुव है सुकृती

सुख श्रेनी । रुक्मिणि हरिकी भक्ति देहु वर सर्व गर्व हरलेनी ॥ ७ ॥ (रागिनी भैरवी त्रैताल में) गर्जलछन्द अर्थात् गज़ल ॥ गङ्गे तुम्हारी धारकी महिमा अपार अपार । सोहै सुधा रस से सनी छलसे छनी छबिदार ॥ १ ॥ है नीर अति गम्भीर पावन सकल निर्विकार । दरबार भारी मोक्ष का मैया तिहारे द्वार ॥ २ ॥ त्रैताप दरश प्रताप से नशजात पाप पहार । तनमें लगाये नीर निर्मल दे शरीर सुधार ॥ ३ ॥ जो नेम कर नित न्हाय यमपुर जाय ना सिधार । तन त्याग बेगहि जाय शिवपुर शम्भु के दरबार ॥ ४ ॥ जन ललन आयो शरण मन वच कर्म सर्व प्रकार । हो भक्ति रुक्मिणि श्याम की वर मागूं मात विचार ॥ ५ ॥ दोहा ॥ श्रीगणेश शारद उमा, दुर्गा देवि दिनेश । शम्भु गङ्ग पद बन्दि पुनि, प्रणवहुँ भानु कुलेश ॥ १ ॥ इति श्रीरुक्मिणी पाणिग्रहणे मङ्गलाचरणे प्रथमः सर्गः ॥ १ ॥

सोरठा ॥ बन्दौं रघुपति पद्म, सहित सकल भ्रातान के । शमन शङ्क सुख सद्म, अष्ट सिद्धि नव निधि करण ॥ १ ॥ शेश सुरेश धनेश, नमो निशाकर ग्रह सकल । द्रवौं दिनेश सुखेश, श्रीहनुमत बल बुधि करण ॥ २ ॥ दोहा ॥ नारद सनकादिक मुनी साधु सन्त ऋषि व्यास । सूर सुबुध केशव कवी, बन्दौं तुलसीदास ॥ १ ॥ बाल्मीकि कविता गुनी, घटयोनी गन्धर्व । निगम अगम इतिहास

पितर निशिचर निकर, किन्नरादि जन जेत ॥ ४ ॥ तीनलोक चौदहभुवन, सप्तद्वीप नवखण्ड । विविध भांति प्रणवौं मही, जीव अखिल ब्रह्मण्ड ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ जे पर उपकारी सब योगू । धर्म्म परायण कर्मटि लोगू ॥ जे पर दरद पीर रुचिराते । पर दुख देखत ही अकुलाते ॥ पर सुख बृद्धि बिलोकि सिहाते । सदा सबन की कुशल मनाते ॥ जे पर बाधक नहिं तिहुँकाला । पर स्वारथहित सहत कसाला ॥ पर सुख हेत न निज दुख ध्यानैं । आन भलाई भे मुद मानैं ॥ दया मया की मूर्ति स्वभाऊ । पर हित केर रखैं चित चाऊ ॥ तिनके कमलचरण चितलाई । बन्दौं सविनय शीश नवाई ॥ बन्दौं पशु पक्षिनके यूथा । कीटपतङ्ग पिपीलबरूथा ॥ पुनि बिनवौं कलिके कविजनको । अरु उनकी अभिराम कथनको ॥ यह हमरी बिनती चित दीजै । समुझि दीनजन दाया कीजै ॥ जहँ जहँ हो अशुद्ध कविताई । तहँ तहँ करियो शुद्ध बनाई ॥ (राग सुघरई कान्हरा रूपक तालमें) हरिगीतिका छन्द ॥ नहिं ज्ञान अति अज्ञान दुरमति कुटिल क्रूर करालसा । बल बुधि न विद्या चतुरई हरिगुण कहनकी लालसा ॥ मति हीन युक्तिन छीन शठ की ढीठता देखहु नरा । अति तुच्छ कछु लायक नहीं अरु छुवन चाहत बादरा ॥ हौं शरण लघु शिशुजान सबहि क्षमापि हैं मम चूक सो । पितु मातु जिमि निज ललन निबहत होय यद्यपि मूक सो ॥ हौं कवि न कविता सरस

जिमि शिशु आँयँ बाँयँ बकातहै। पितु समुझि सक न सराहिं तहुँ हुलसायहै जो ज्ञातहै॥ हरि विमुख भक्ति विहीन निन्दक अपन सम नहिं कोउ गिनैं। सो हरिचरित कविता बिलोकि दुरायहैं तौ कह खिनैं॥ १॥ दोहा॥ कविता हरिचरितनु चुनी, यहि दढ़ता मन माहिं। हरिजन पढ़ न प्रशंस तौ, दोषहु कढ़िहैं नाहिं॥ १॥ श्री धी मख भू प्रजापति, वन्दौं बुध पद इन्दु। निशिबासर जिन्ह उर बसैं, चरण कमल गोबिन्दु॥ २॥ सोरठा॥ बन्दौं श्रीहरिदास, जे हरिरूप अनूप जग। जिन्ह हरिरक्षक खास, प्रिय सुरमुनि लच्मीहुते॥ १॥ भक्तवश्य भगवान, जन समुहें सुर मुनिहुँ को। चलन न दें अभिमान, जन मन रुचि राखन सदा॥ २॥ "यथा—दृष्टान्त" चौपाई॥ एक समय प्रभु पद अनुरागी। अम्बरीष महिपति बड़भागी॥ गहि एकादशि को उपवासा। द्वादशि पारण की करि आसा॥ थिरो अहारन अशन अबासा। तेहिछिन आयहु ऋषि दुर्वासा॥ अतिथि जानि नृप कीन्ह प्रणामा। अशन हेतु बुलयो ऋषि धामा॥ कह मुनि मैं मज्जन करिऐहौं। तब अहार तो नृप गृह पैहौं॥ इमि मुनि बदजा कीन स्नाना। भे आसीन विमल हरिध्याना॥ सूक्ष्म द्वादशि तेहि दिन रहही। पारण तेहि क्षण ह्वैबो चहही॥ पर्‍यो धर्म सङ्कट नृप काहीं। बार बार सोचत मन माहीं॥ कौन उपाय करूं कछु बसना। व्रत खोलं द्विज रहै अनशना॥ अनुमत विप्र तोय नृप

जान। हाल भ्वाल तट आनिकै, मुनि वर परम रिसान॥ १॥ चौपाई॥ कह बिनु अशन दिये अतिथै को। तैं अँचाय लीन्हो सलिलै को॥ रे मदान्ध शठ नीति रहित तैं। यहिको फल तुहि देत अबहि मैं॥ अस कहि जटा लटा यक तोरी। मन्त्रित करि भूपति पै छोरी॥ नृपरक्षक हरि चक्रसुदरशन। कृत्या मूढ़ गरेसिन रिसि सन॥ उलट चक्र मुनि दाहन धावा। दहल भगे दुर्वास सकावा॥ भ्रमे त्रिपुर कोउ ठौर न पाई। चक्रघात जो लेहि बचाई॥ पुनि विधिपुर गे निज दुख गावा। चतुरानन सुन सोचि बतावा॥ शिव समीप कैलाश सिधैये। आपन दुख शंकरहि सुनैये॥ मम समर्थ नहिं हर हर योगू। वह तव रक्ष हरहिं सब शोगू॥ गहि बिरंचि सिख ग्रसित सत्रासू। शम्भु निकट मुनि गे कैलासू॥ दोहा॥ सविनय वरणि वृतान्त मुनि, गदगद बच अधिकाय। हे शरणागत वत्स प्रभु, बोले महि शिरनाय॥ १॥ चौपाई॥ भव भय तारण विपति अगाथा। मोर सहाय करिय जन नाथा॥ शम्भु बिलोकि बिचार उचारा। को त्रिभुवनपति चोर उबारा॥ सर्वशक्ति निधि सकल समर्था। श्रीपति विष्णु भक्तिप्रद अर्था॥ मुनि तुम तिन्ह तट जाहु निशङ्का। वे हरिहैं सब तोर कलङ्का॥ लै गिरीश शिक्षा ऋषिधाये। श्रीप्रभु निकट विष्णुपुर आये॥ साष्टाङ्ग करि प्रभुहि प्रणामा। निज अपराध वरण उहि यामा॥ नाथ मोर अब करहु सहाई। यह अघसों मुहि लेहु बचाई॥ अन्तर्घट गति जानन हारे। भक्त प्रतिज्ञा राखन वारे॥ मुनि सदोष

निर्दोष भुआरा । समुझि कह्यो प्रभु जन रखवारा ॥ हे मुनिवर तुहि सूचित हाला । हौं जनप्रण रक्षक तिहुँ काला ॥ दोहा ॥ मोर समर्थ न सुनहु मुनि, सत्य बदहुँ छल नास ॥ किञ्चित् कार्य न करिसकौं, बिन प्रसन्नता दास ॥ १ ॥ सोरठा ॥ जेहि सन हे मुनि धीर, कहौं यत्न सोइ कीजिये । जाहु अवनिपति तीर, विनये वह दुख हरहि तुव ॥ १ ॥ (रागिनी झँझोटी त्रैताल में) सवैया ॥ लैहरिसीख ऋषी रिस तीख सहायक दीख तिहूँ नहिं कोई । आय समीप महीपति के शरणागत लै यश वर्ण घनोई ॥ भूप बिलोकि मुनीमन आकुल जान द्विजै करुणा करि सोई । दै तप को लल नेश फलै तब चक्रहि ते बचयो मुनि जोई ॥ १ ॥ दोहा ॥ इमि श्रीकृष्ण गुपालको भक्त प्रिय सर्वज्ञ । हरि जन हरिसम जानहीं, भेद लहैं ते अज्ञ ॥ १ ॥ इति श्रीरुक्मिणी पाणिग्रहणे देव द्विज गुरु कवि गणेश प्रकृति स्तुति वर्णनो नाम द्वितीयः सर्गः ॥ २ ॥ दोहा ॥ मुक्ति देन गुरुपद पदम, सुमति करन सन्मान ॥ विमल सुबुधि कीरति सुलभ, मुक्तिज्ञान रति खान ॥ १ ॥ चौपाई ॥ गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु समाना । गुरु शिव परब्रह्म श्रुतिभाना ॥ गुरुपद शरण गहे सुखपावे । पुनि न नरक चौरासी जावे ॥ कह्यो परीक्षित प्रति शुकदेऊ । गुरु प्रताप वरणहुँ वरभेऊ ॥ [श्री शुक उवाच] रह्यो बधिक यक अतिही नीचा । जिय हिंसक नामक मारीचा ॥ कोटिन जीव कुटिल ज्यहि मारेउ । अघ अधीश पुर ग्राम पजारेउ ॥ यहि विधि बीत गये बहुकाला । पूर्ब पुण्य फूल प्रकट

विशाला ॥ यक दिन रहित अहेर दुखारी । तरु तर थिर उर शंका धारी ॥ कह बिचारि मैं अति अघराई । हिंसा करि सब वयस बिताई ॥ कबहुँ न भज्यो हरिहि छलछोरी । का गति ह्वैहै हे मन मोरी ॥ इतने में गौतम ऋषिराई । उहि मारग ह्वै निसरे आई ॥ लखि मुनि धाय शीश पग नावा । निज कर्मन सब वरणि सुनावा ॥ [मारीच उवाच] कह म्वहि शिष्य कृपा कर कीजे । अघ निधि सों उबार मुहि लीजे ॥ (रागिनी भूपाली चारताल में) मनहरण कवित्त ॥ बधिक अजापी पापी गौतम प्रतापी भांपी कानधर पान शिष्य कैबे को नटतभे । कह्यो ललनेश पद्म शिष्य को जो पुण्य पाप तासु अर्धभाग गुरु पावै यों भनतभे ॥ तैंतो महाऽधम पूढ सुनुरे मरीच मूढ चेरो हौं करौंगो नाहिं सविधि बदत भे । अघी हठ किये कहे दीक्षा बिनु लिये नहिं जानदिहौं जिये मुनि तब तो डरतभे ॥ १ ॥ (रागिनी सोहनी चारताल में) सवैया ॥ साधु भन्यों सुनुरे अघ सिन्धु न हठ करै हम सोंहिं बृथाही । जो विषयी तपसी यक पात्रहिं लेयँ कदापिहु भोजन खाही ॥ हो भलको खल को ललनै सँग तौ अघ अर्ध मिलै शठ ताही । तैं अति नीच मरीच नहों गुरु शिष्य किये मुहि दोष अथाही ॥ २ ॥ (ध्रुपद राग केदारा चारताल में) मनहरण कवित्त ॥ धारहि न ध्यान कहैं गौतम बखान बहु करहि न कान खल एक ऋषि की कही । ललन प्रमाण कहैं जगत कल्याण चहै को नहीं निजार्थ लहै ऐसो जीव को अही ॥ परो धाय लपटाय पायन ऋषी के आय सब कछु

कह्यो मुनि शिष्य हौं करौं नही। धारे हठि ठाढ़ो शस्त्र नाँगो करि काढो किये बेगुरु न छाँड़ौं कहे मारु मरजावही ॥ ३ ॥ [गौतम उवाच] (ध्रुपद राग एमन चार ताल में) मनहरण कवित्त ॥ छुये धौं सराहे खल किंच बतराये मल दशम बिभाग पाप ताको बट जाय है। दरश ते ध्याये ते वचन सुन पाये भाग सप्तम जो मल को ललन लिपटाय है॥ जप तप दान धर्म सेवा गुरु नाशे पर्म दिग अंश ओघ अघ हदि बिलसाय है। तैंतो घोर पापी पुनि सुनरे मरीच नीच नाहक ही मोहिं यहि क्लेश में फँसाय है ॥ ४॥ [बधिक उवाच] (सादरा राग एमन कल्याण शूल तालमें) सवैया॥ है अभिमान तुम्हें जपको तप को मुनि मान जतावत हौ। सो मोहिं पापन ताप बड़ो हकनाहक मोहिं जरावत हौ ॥ हौ ललनै कछु ना तुम मैं मह मूढ़ मुनी यह जानत हौ। बे गुरु कीन्ह न जान दिहौं बिन काज बिलम्बहि आनत हौ॥ ५॥ [गौतम उवाच] (राग श्याम कल्याण झप तालमें) सवैया॥कर्जहि काढ़ि करै अघ पुण्यनु तीसरभाग धनी फलपावै। चोरहि बित्त करै चहि धर्म कदापि न किञ्चित् पुण्य दृढ़ावै॥ प्रेर कराय क्यहू ललनै पुण पातक केर षडंश भिटावै। तो सों अघी कहँ शिष्य किये तप तीक्षण मोर मरीच नशावै॥ ६ ॥ [मुनिरुवाच] (ध्रुपद राग शुद्ध कल्याण चारतालमें)मनहरण कवित्त ॥तुम्हरे सुज्ञान रूप वाक्य सुनिकै मुनीश मोर औरहू गिलान मनमें प्रकाश हो। नीति को सुनायो तम अधिक लजायो मुनि सोचन दहायो हीय तीक्षणहि त्रास

हो॥तुमसो हू पाय गुरु मोर ना बनाय पुनि कासि कहू जाय महा [illegible] नाथ नाथ कथना अगाथ गाथ ललन सनाथ दास दुख सों निराश हो ॥ ७॥ चौपाई॥विबुध सन्त जन सरल स्वभाऊ। मग्नहिं तनु विनये हर काऊ॥यथा विलोकि वृश्चिकहि काही। बूड़त बारि धार अकुलाही ॥ पाणि पकर त्यहि चह्यउ निसारी। डस्यो डंक मुनि दया न टारी ॥ पुनि पुनि गहैं दहैं मुनि काजहि। हितू परार्थ सदा ऋषि राजहि ॥ शरण पर्यो अघि कहि मृदुबानी। तब तो मुनि मन करुणा आनी॥ मुनि त्रिकाल ज्ञापक त्यहि ध्याना। दाम छदाम न गांठि लखाना॥ यह सों कछु दक्षिणा मँगैये। दै न सकी हड़कै चलिजैये॥ कह मुनि शिष्य कराई दीजै। तब गुरु करे केर फल लीजै॥ इमि गौतम जोइ वरणि सुनावा। गहि अघीश मुनि पद शिर नावा॥ [मारीच उवाच] है अर्पण तन मन मम सारा। मों बल जौन बनै उपकारा॥ हो आज्ञा जो करहुं गुसाईं। पै सनाथ करिये ममकाईं॥ दोहा॥ हौं अधीन मन बच क्रमहि, वन्दत पद अरबिन्द ॥ गुरु सम कौन दयालु जग, देत मिलाय गुबिन्द ॥ १ ॥ चौपाई॥ यक दृष्टान्त कहौं अभिरामा। श्री गुरु दया प्रताप ललामा॥ बार बधू यक पिंगला नामा। सजि शृँगार बैठी निजधामा॥ धनि जन मिलबे आश अगाधी। कोउ नहिं आवा गइ निश आधी॥ दैव योग उहि छिन यक सन्ता। पूर्णब्रह्म आराधि अनन्ता ॥ अमित दूरते आवा चलकै। हो यक बट तर तासु महलकै ॥ निरखि

रम्यथल सुन्दर छांहीं । लीन्ह निवास सुसाधु तहांहीं ॥ जच वराङ्गना ताहि बटोही । चित चिन्तवन कीन्ह इमि सोही ॥ भेंटो आज न कोउ धनि लोगा । चलि करिये यहि सों संयोगा ॥ दीन अकिञ्चन यद्यपि भारा । किञ्चहि धनलै करिय गुजारा ॥ यहि विधि शोच समुझ मन माहीं । करत आगमन भइ त्यहिपाहीं ॥ दोहा ॥ कह बिलोकि तहँ आयकै, है न बटोही कोय ॥ साधुपेखि भौचकि कही, है अभाग्य अपनोय ॥ १ ॥ सोरठा ॥ जान परत नहिं आज, कौन दुष्ट मुख लखि उठी ॥ सब दिन गयो अकाज, प्राप्त भयो नहिं दाम यक ॥ १ ॥ चौपाई ॥ करि विचार वेश्या उहि बारा । प्रश्न करन मुनिसे मन धारा ॥ मृदुल मनोहर बैन रसीले । मुहिनि मन्त्रते पुरित अमीले ॥ हाव भाव युत जादु जमीले । सुभग स्वरीले परम ढँगीले ॥ काम कलानिधि सुख सरसीले । विविध विधानिक विनय बसीले ॥ युग कर जोरि विनति बहु वरणी । ऋषि प्रति सकल कही निज करणी ॥ नाथ कवन कारण ते आजू । बित्त मिलो न प्रसङ्गि भिटाजू ॥ सुनि मृदु बच मुनि तासु यकीना । जानि निदान अपुन आधीना ॥ धनि मुनि द्विज गुरु द्याल महाना । लखि तेहि दीन दया हित आना ॥ बहुरि वचन इमि बोलत भयऊ । ज्ञान प्रदा सुगिरा विरचयऊ ॥ जैसि प्रीति मन तोर हरामा । तैसि श्यामसँग होय जो वामा ॥ चला जाय बैकुण्ठ अशङ्का । भोगै सुर, [illegible]

माना । त्याग राग वैराग दृढ़ाना ॥ ह्वै यकाग्रचित त्यज सुख भौना । कीन्ह घोर बन मारगगौना ॥ कानन बासि विलासि बहोरी । मनसा बाचा क्रम कर गोरी ॥ श्याम नाम आराधन लागी । हित चितसों प्रभुपद अनुरागी ॥ भक्ति वछल प्रभु लखि दृढ़ भक्ती । धारि चतुर्भुज रूप स शक्ती ॥ शङ्ख चक्र अरु पद्म गदाधर । दीन्ह दरश त्यहि आन कृपाकर ॥ मन वाञ्छित पूज्यो त्यहिकेरा । सुर पुर दीन्हों जाय बसेरा ॥ ऐस सन्त गुरु होहिं प्रतापी । ज्यहि पर करुणा करहिं कदापी ॥ क्षण मात्रहि में सर्व कलेशा । पाप पुञ्ज को रहै न लेशा ॥ आवागमन देहिं बिनशाई । गुरु गुविन्द सम भेद न भाई ॥ दोहा ॥ इमि मरीच तन मन अरपि, शिर गुरुचरणन दीन ॥ भये निरुत्तर मोद युत मुनिवर वंश प्रवीन ॥ १ ॥ चौपाई ॥ सुनि मुनि वधिक केर मृदुवाता । पुनि दक्षिणा मांगि गति दाता ॥ अब न पाप को करिये कर्म्मा । भजु हरिनाम सदा यह धर्म्मा ॥ कहि ऋषि चल भे बतै उपाई । वह हरिनाम भजन लौलाई ॥ जब लग जियो परमसुख पाये । मरो लेन यमदूत सिधाये ॥ हरिजन लखि हरिके गण नाना । गये लेन त्यहि लिये विमाना ॥ हरिगण लखि यमदूत सकाये । बोले यहि खल तट कस आये ॥ कह गण यक हरिजन यहि ग्रामा । लैजैहैं हम त्यहि हरिधामा ॥ सुनि गण बैन किङ्करा यमके । बोलत भये गणन ते चमके ॥ महाराज यह अधम अजापी । जीव

अशङ्कय विनाशेउ पापी ॥ ऐसनको तुम कहो हरिदासा। पुनि कह चिह्न अघिन कर खासा ॥ [विष्णुगणा ऊचुः] ॥ दोहा ॥ जबते याने गुरु कियो, कियो न कछु अपराधु ॥ श्रीहरि नाम रट्यो सदा यहि समको अरुसाधु॥ १ ॥ चौपाई॥ अस कहि यमकिङ्करन चिताई। वधिकहि लियो विमान चढ़ाई ॥ जैजै करि हरिजन यश गावत। भेरि नफीर नगार बजावत॥ मुद उच्छङ्ग भरि भरि हिय हरषा। वरषावत फुलवन की वरषा॥ देव यान थिर अजर सुजाना। हरिजन भाग सराहत नाना॥ यहि विधि हरिगण कांध टिकाये। हरिजन रतनसिंहासन ठाये॥ हरिपुर को लै जावत भयऊ। गुरु प्रसाद अस मुक्तिहि दयऊ॥ गुरु शरणागत ह्वै हरि सुमिरै। त्यहिको यहि विधि सुख गति सुधरै॥ गुरु बिन भव निधि तरै न कोई। गुरु बिन ज्ञान मुक्ति नहिं होई॥ परम्पराते यही प्रणाली। सुर नर मुनि सब की यह चाली॥ विश्वामित्र राम गुरु कीन्हे। श्री शुकदेव जनक सिख लीन्हे ॥ इति श्रीरुक्मिणी पाणिग्रहणेगुरुप्रभाव वर्णनोनामतृतीयःसर्गः ॥ ३ ॥

[श्रीशुक उवाच]॥ दोहा ॥ पुनि वरणहुं निगुरुन गति, जिमि श्रुतिआगम लेख ॥ सावधान श्रोता सकल, सुनहु सुचित्त परेख ॥ १ ॥ विधि सुत नारद मनमुखी, गुरु दीक्षाते हीन ॥ जाय सदा हरि दरश हित, हों ज्यहि ठहँ आसीन ॥ २ ॥ सोरठा ॥ करि हरि दरशन तौन, भौन गौन अचाक, कौतुक लखि शङ्कित भयउ। मानि मुनि अति मृदुवाक, श्री प्रभुपद शिर टेकि माह ॥ ३ ॥

[नारद उवाच] (राग माल कोश त्योरा तालमें) गीतिकाछन्द ॥ अपराध कह मम नाथ भा धौं अनुचिता देखी कहां। मुहि दियो आसन ठाम ज्यहि क्यहि हेतु लिपवायउ तहां॥ सुनि बैन मुनि के कह्यो हरि तुम अबहिं गुरु कीन्हों नहीं। यहि हेतु शोधन परहि नित गोमय सजल इतनी मही॥ जहँ जाय दीक्षाहीन बैठे सो स्थल शोधन परे। गुरु मुखि सुजन पग परहिं जब तब धरा शुध होवै घरे॥ सुनि वचन प्रभुके कह्यो मुनि मैं महा शठ पापी धमा। अब करहुँ क्यहिको गुरु वेगि बताइये स्वहिं पतिरमा॥ [श्रीकृष्ण उवाच] जो प्रथम कल मिलजाय प्रातहि ताहि गुरु करलीजिये। भे भोर निसरे मुनि बने हरि धीमरा ऋषि शिष किये॥ पुनि गये दरशन हेत नारद देखतहि हरि उर लियो। कहु काहि कीन्हो गुरु बतावत धीमरहि सकुचो हियो॥ गुरु कीन्ह भिंग सुलीन्हु जच प्रभु कह्यो चौरासी परो। सुनि शाप अजसुत निकट गे गुरु उर विषाद उदधि भरो॥ वन वीथि वीथि बिहाल भ्रम गुरु नाम रसना रटधरे। लखि दुखित जन पुनि प्रकट प्रभु मुनि विनय निजकृत उच्चरे॥ गुरु याल कहि हरिसों लिखावहु जाय चौरासी सबहि। लिख चुकहिं जब नँदललन तापर लोट तुम जैयो तबहि ॥ १ ॥ (रागिनी मुलतानी चार तालमें) मनहरण कवित्त॥ मानि गुरु दीक्षा गहि सीक्षहि बहोरि मुनि विष्णु महराजके समीप भये आवते। अम्बुज

चरण बन्दि भाषि विनती बिनीति जै जै श्रीगोपाललाल भक्त मन भावते ॥ शाप तोर मानों पै न जानों हौं ललन मति को को चवरासी नर्क कै कृपा जनावते। जानिहौं जो लेतो अघ दुखन निकेतो तब भोगह्नु में लेतो प्रभु बिरच सुनावते ॥ १ ॥ [श्रीशुक उवाच] सोरठा ॥ श्रीहरि कृपा निधान, धीमर उत इत स्वयं प्रभु । चह मुनि दीबो ज्ञान, गुरु प्रताप को लक्षकर ॥१॥ सुनि मुनि के मृदु बैन, जन वत्सल व्रजराज हरि। बोले वच सुख दैन, लिखहुँ चुरासी योनि सुनु ॥२॥ [श्री भगवानु वाच] (रागिनी धनाश्री चारतालमें) मनहरण कवित्त ॥ जलचर नव दिग लक्ष खग जाति पांति एकादश लक्ष कीट क्रम यौंही जानो जू । विंशति विटप बेलि त्रिंशत पशुन हेलि चार लख नर मेलि ललन पिछानो जू ॥ योनि ये चुरासी लक्ष भोगो मुनि पेखि चक्षु बैन सुन श्याम वच गुरुको प्रमानो जू । लोट गये तापे मुनि राजे करजोरि पुनि लेखि हरि ज्ञान शुचि देवऋषि मानो जू ॥ १ ॥ चौपाई ॥ पूछ्यो प्रभु यहि क्यहि मति लीन्ही। कह ऋषि श्रीगुरु शिक्षा दीन्ही ॥ धनि धनि मम गुरु सिख सुख दाई । दुखित जानि जन कीन्ह सहाई ॥ धनि गुरु संतन सरल स्वभाऊ । सेवक सुलभ सहाय प्रभाऊ ॥ दया मया परमारथ भौना । शुभ चिन्तक जन मोद खिलौना ॥ अस श्रीगुरु कृपाल अविनाशी । काटि दईं छिन महँ चतुराशी ॥ गुरु गुविन्द जन निवार दुख नासी ॥ सोइ गुरु पद बन्दहु बार बारा । [illegible] ॥ कह लग गुरुकी करौं बड़ाई । शारद शेष न सकत बताई ॥ जय गुरु जय जय जय गुरु देवा । ज्ञानोदधि सुख प्रदा अथेवा ॥ दोहा ॥ धारि सनेह सप्रेम हृदि, गुरु पद पद्म पराग । श्रीरुक्मिणि हरि ब्याह यश, बरणहुँ युत अनुराग ॥ १ ॥ इति श्रीरुक्मिणीपाणिग्रहणे गुरुप्रतापानुभाव वर्णनोनामचतुर्थःसर्गः ॥ ४ ॥

चौपाई ॥ बन्दो श्रीरुक्मिणि जगमाता । जिनकी कृपा सर्व सुखदाता ॥ बन्दौ करुणा निधि घनश्यामहिं । जन मन रञ्जन यश सुख धामहिं ॥ युगल चरण को रख उर ध्याना । श्री बलदाऊ सुमिरि सुजाना ॥ संग्रह सार ग्रन्थ मति नाना । त्यहि अनुसारिक कहुँ धरिध्याना ॥ महभारत औ विष्णु पुराणा । भागवत मत्स्य पुराण प्रमाणा ॥ महा ब्रह्म अरु पद्म सुनीती । लै निघण्ट की सुमति सुरीती ॥ गर्गसंहिता हरिबंशादी । सुनि बहु वच कवि मुनि मर्यादी ॥ रुक्मिणि परिणय मङ्गलकारी । श्रीगुविन्द रति प्रदा अपारी ॥ मति अनुसार कहौं हरि लीला। जग जन मुक्ति दायिनी शीला॥ श्रीहरि चरित सुने बिन काना । पावत कोउ नर नेक न ज्ञाना ॥ बिना ज्ञान हरि भक्ति न होई । मुक्ति भक्ति बिन लहै न कोई॥ हरिगुण भजन महात्म्य न थोरा। नाशन कुमति कठिन अघ घोरा ॥ भवनीरधि कलिमल संहारक । कुल कलुषिन अति पावन

कारक ॥ धर्म बेल सुन्दर सुखदायक । मङ्गल लोक शोक बिन शायक ॥ मन्त्र महीप सुकृत फल काहीं । भनत निगम अरु अगम सराहीं ॥ गए कलङ्क अहिगरल समाना । दुस्तर सुमति पियूष निधाना ॥ जन्म मरण हारक बिनु शङ्का । हृदि तमारि विज्ञान मयङ्का ॥ दोहा ॥ यहि कलिकाल कराल महँ, ज्यहि हरिनाम सनेह । तरणि तैर तिमि पारलगि, दृग निमेष बिनु गेह ॥ १ ॥ सतो रजो तम त्रिगुण को, सरल प्रकाशक मूल । मोक्ष स्वर्ग सुख दायको, दासन प्रति अनुकूल ॥ २ ॥ राधारमण गुपालजू, जो मम पक्ष सहाय । तौ वरणौं सो कुशल युत, दिहैंग्रन्थ रचवाय ॥ ३ ॥ भव कानन कुञ्जर मना, दुख दव दहत अनन्त । शरद सरित हरिगुण परे, तबहि मिलत सुख तन्त ॥ ४ ॥ चौपाई ॥ बहुश्रुति बहुत पुराण शास्त्र विधि । सुर मुनि कवि कोविद वाणी निधि ॥ क्लिष्ट संस्कृत देव सुवाणी । मम मतिमहा अल्प तुछ प्राणी ॥ भाषाहू पुनीत जिमि गाई । सोउ न हौं जानत तिल राई ॥ प्रचलित सरल शब्द जग जेही । वरणत ग्रन्थ शब्द तिन तेही ॥ पद विभेद पै भाव न आना । जिमि विधु इन्दु भानु रवि भाना ॥ सुनि बुध संशय करिय न कोई । हरिगुण गुणत नितहि सुख होई ॥ चहे संस्कृत हो चहि भाषा । चहि वार्तिक हो हरिगुण भाषा ॥ प्रभु चरित्र हर विधि सुखदाई । कहै कहावै सुनै सुनाई ॥ ग्रन्थ माहिं जहँ लगि जस होई । अखिल

सम शान्त प्रणाली । नवौ रसनकी भनिहौं चाली ॥ दोहा ॥ भँवर शङ्क सतसँग गहिर, अर्थाध्याय प्रवाह । विविध जाति जलजात सो, छन्द प्रबन्ध अथाह ॥ १ ॥ कथा प्रसंग तरंग निधि, शब्द स्वच्छता वारि । अर्थ बीचियां विमलता, हरिगुण सुगँध अपारि ॥ २ ॥ [शुक उवाच] दोहा ॥ रति निष्ठों में अग्रणी, हरिकीर्तन में कल्प । धर्म परायण विधिललन, कलिजन सुखद अनल्प ॥ ३ ॥ जग उद्धारि णि युग तरणि, जिन उपदेशै सोय । बाल्मीकि रामायणौ, श्रीमद्भागवत जोय ॥ ४ ॥ जे इन तरणि अरूढ़ ह्वै, विहरैं जग ब्यवहार । अखिल अघन ते रहित ह्वै, बिलसैं देव अगार ॥ ५ ॥ त्यहि पुराणमति यह कथा, सुखद विलक्षण जेति । श्रोता सुमति समाज प्रति वरणौं रतिदा नेति ॥ ६ ॥ जे न सुनहिं हरियश ललन, निन्दैं हरिजन काहिं । ते शूकर विष्ठा भखहिं, अन्त जन्म पछिताहिं ॥ ७ ॥ हरियश सुन समुझैं दृढ़ैं, प्रमुदैं करि विश्वास । तदाकार प्रभुरूप ह्वै, औन गौन हो नास ॥ ८ ॥ चौपाई ॥ सुन यक बार राम हरि चरचा । जन्म जियत को करहि न फरचा ॥ जबलौं जियै जगत के माहीं । कबहुँ न हरिगुण सुन तृप्ताहीं ॥ जे अभिमान ऐस मन धारक । हम सुन चुके कथा बहु बारक ॥ ते गिर अन्ध कूप दुख पावत । कबहुँ न प्रभु तिनते हरषावत ॥ यह सो सुखद प्रकृति यह लीजै । सदा सदा हरियश रस पीजै ॥ दुस्तर जग सतसङ्ग गनायो । क्लिष्ट गृहस्थाश्रम जग गायो ॥ कथा पुराण सुने अप्रयासहि । नित सत-

सङ्ग पुजैं सुख राशहि ॥ ×जहँ हरियश हों तीरथ सारे। सुरमुनि गुनि आगमनहिं न्यारे॥ जिन्ह जग दरशन दुर्लभ घोरा। ते आदरशहिं नित बरजोरा॥ अब यह कलिकी कठिन कुचाली। चेतन उर जड़ता बहु शाली॥ दोहा॥ जे धनि नृप किङ्कर निकर, निज कुल धर्म न जांच॥ कथा कहानी सम समुझि, जगत जनावत बांच॥ १॥ (रागिनी धानी शूललाल में) कवित्त॥ जे खल पाखण्डी खण्ड बण्डी मति केरि दुष्ट देवकी ललन पद प्रीत्यभिगिलानी हैं। अधम अभागे शुभ कर्म धर्म त्यागे छल छन्द अनुरागे महामूरख अज्ञानी हैं॥ दया दान वैरी वाम रति अति-शैरी राजैं अघ तरु छैरी क्लेश कुमति निशानी हैं। कवि बुध गुणवन्त निन्दकीश सुर सन्त बाजे बाजे मूढ़ कहैं कथा को कहानी हैं॥ १॥ चौपाई॥ कोइ कोइ दुष्ट मन्दमति जोई। भनत कथा सुन कह फल होई॥ अस बहु सिखे कहानी किस्सा। जन्म सुनावैं तिन कर हिस्सा॥ कोउ भन जनि कछु कथा पुराणा। नर करणी सोइ सत्य प्रमाणा॥ वै अधि यह वच हृदि न विचारैं। लिखब पढ़ब व्यवहार अपारैं॥ बिन सुन सिखे काज कर सिद्धी। सुमति चतुरता ज्ञान न वृद्धी॥ लेन देन बहु जग कृत भूरी। हों सिधिश्रवणा लम्बहि पूरी॥ कोउ इमि कह हम कथा न फलहीं।

× श्लोकः—तत्रैव गङ्गा यमुना त्रिवेणी गोदावरी सिन्धु सरस्वती च। सर्वाणि तीर्थानि वसन्ति तत्र यत्राच्युतोदारकथा प्रसङ्गः॥ १॥
अर्थ-जहां श्रीभगवद्गुणानुवाद कथा हो वहांही गङ्गा, यमुना, त्रिवेणी...

चाल बाप दादाकी चलहीं॥ कोउ प्रबन्धकर जबरन सेती। कुल पुज पण्डित प्रोहित हेती॥ कहु क्यहु कथा देत बैठाई। तौ मनु तनु हित व्याधि बिसाई॥ हितुन बुलै बच भणहिं अगाधा। फँस गय इन दिन बिच यक व्याधा॥ दोहा॥ यक द्विज दीन अकिञ्चनै, करी न बिनती थोर॥ त्यहि की बातन आयके, फंस गयो मनमोर॥ १॥ चौपाई॥ तासु कथा हम दइ बैठाई। देखहिं क्यहि दिन पिण्ड छुड़ाई॥ राज काज श्रम हारे मारे। गे दिन रजहिं सांझ गृह द्वारे॥ आन कथाको देखि प्रसङ्गा। सूख जात हमरे सब अङ्गा॥ रुचिवत् उदर न मिलै अहारा। नैन न नींद गयो सुखसारा॥ दै वच करन परो प्रतिपाला। लोक लाज बश सहत कसाला॥ बिना प्रेम कब भग-वत् लोभा। कोउ जग कृति नहिं पावहि शोभा॥ जैसन के तैसहि हितु जानो। उनहुन उन वच सत्य प्रमानो॥ गाथा अपन सुनावन लागे। सावकाश न बतावन लागे॥ कोउ धन पद्धति मांहि भुलाने। गृह त्यज जायँ न आन ठिकाने॥ दोहा॥ भाषहिं अपन समान जो, उचित तासु सतसङ्ग। लघु जन कथा समाज बिच, बैठत उपजत भङ्ग॥ १॥ चौपाई॥ कोउ इमि कहहिं परस्पर गाई। का ह्वां जाय बनावैं भाई॥ हैं न बूढ़ चल सिखैं जो ज्ञाना। जियैं बहुत सुन लिहैं पुराना॥ का कोविद रस व्याख्या भाखैं। वृथा जाय ह्वां फोड़ैं आंखैं॥ कोउ हठि हितू करन कछु लागे। प्रभु चरित्र सुनबे अनुरागे॥ ताहि बनावत हिल मिल चारी। भक्त बबा त्यहि कहत

पुकारी ॥ हो कदापि हमजोलिय कोई । कथा सुनन सिख दे कहुँ जोई ॥ तासु करहिं अपगति मलभाती । भक्ति ददा कर बनवैं नाती ॥ ले बैठैं शतरञ्ज कि तासा। रखहिं ताहि बिलमाय अ-बासा ॥ आप न जावहिं बरजहिं आनहुं । बहु अस नर्कि निगोड़े ध्यानहुं ॥ दोहा ॥ अब कलि कठिन कराल बिच, धर्म कर्म रुचि थोर। हरि सुमिरण सुख रस रहित, अज्ञ अधर्मी घोर ॥ १ ॥ (राग सारङ्ग चारताल में) कवित्त ॥ बूझैं नाहिं सन्तनको विप्रपद पूजैं नाहिं अतिथैं न मान ललनै प्रिया प्रधानोहै । गुनियन देखिके बरात मुखमोर जात भांड़ भगतुअन सों नेह निरमा-नोहै ॥ कोविद सों कांपत करेज यहि कारण सों कहुँ कछु मांगिबे लगैं न धन खानोहै । वेश्यन विलोकिके उदारता धरत चित्त ऐसो यहि काल में अधर्म बगरानो है ॥ १ ॥ धनको न दान वस्त्र भूषण निदान न अशन सनमान पाँव लागत डरात हैं। सीधे ना करत बात व्यङ्ग वच बतरात ब्रह्मको सुनत नाम अति अनखातहैं ॥ आवत विलोकि विप्र मूँदत कपाट क्षिप्र कालके समान द्विज देखि घबरातहैं । नास्तिक निगोड़े जे ललन दुष्ट पोढ़ेके न मानत द्विजै न देववेद निदरात हैं ॥२॥ मानैंना वचन वेद गुणीसों करत खेद मित्रसों रखत भेद प्रीति ना गुपालमें । आयेकी पुँछैं न बात गये सों रखैं न नात भांड़ भडुओंके हित माते हरहाल में । वेश्यनके साथ में उदारता अनेक भांति भोगैं द्विज ह की नारि पावैं कोर [illegible]

ललन अधर्म्म अस छायो कालिकालमें ॥ ३ ॥ (राग कलांगड़ा रूपकैं तालमें) सवैया ॥ सुनि विप्रन देखि डरात अती घबरात न शीश नवैबे परै। मुख मोरत चोरत चित्त चितै सकुचात ढिगै न बिठैबे परै ॥ उठिजात घरै दुरिजात सरै यहि लाज कि मूँ न दिखैबे परै। मरिजात सुने द्विज नाम कहूं ललनौ नहिं पाउं परैबे परै ॥ १ ॥ द्विज के भ्रमते कोउ आन लखैं कँपि जायँ मनैं म-नमा अतिहीं। जिय जानपरै मनु काल ग्रसो गुम जायँ कला बुधिकी सबही ॥ दुरवैं दुर वाक्य भनैं घुरकैं नगिचान न दें अपने ढिगही । कछु बादकरै तो विवाद करैं ललनौ मिलि मारहिं ताहि सही ॥ २ ॥ अदरैं नहिं वेद पुराणनको निदरैं कवि बैन मुनीयनके। न धरैं चितमें तिलमात्र कछू अपमानक सन्त गुणी जनके॥ अभिमान भरे बक वेष धरे बिमुखी हरिभक्त गुरू अनके। ललनौ तिन्ह देव द्विजै न नवैं पद पूजत भांड़ भडूअनके ॥ ३ ॥ * रुगु आत जबै घबरात तबै द्विज पण्डित पै घिघिआत फिरैं। हित पुत्र कलत्रके नाच नचैं बहु दुःख परे रिरिआत फिरैं ॥ कहुँ पत्रि लिये सुतकी करमें बुध की बखरी मँड़रात फिरैं। हमगे ललनै कहँ नीक करौ करजोर अती खिसियात फिरैं ॥ ४ ॥

* श्लोकः—सङ्कटे देव भक्तश्च दारिद्रश्च ब्रह्म चारिणः । अशक्तौ साधवः सर्व्वे कुरूपा या पतिव्रता ॥ १ ॥ अर्थ—जब दुःख में फँसजातेहैं तब देवता की पूजा करते कराते हैं और दरिद्री होजातेहैं तब ब्रह्मचारी बनजाते, और सामर्थ्य हीन हुये तब सब साधु होते, तथा कुरूप (बद सूरत) होने पर स्त्री पतिव्रता बनती है ॥ १ ॥

दोहा ॥ कथा वार्ता हरि चरित, नाम सुनत अलसायँ। झूठहि गढ़हिं अनन्त मिस, यहि प्रकार बतरायँ ॥ १ ॥ (रागिनी अल्हैया चारताल में) मनहरण कवित्त ॥ कौन सुनै कथा बिथा मौन की सतायरही कुटुँब बीमार परो सोच दिन रातहै। कोऊ कहै लहचार हमें ना मिलै उआर जौन खन कथा हो सो भोजनमें जातहै ॥ मन तहँ लागै जहँ नैनन को चैन मिलै हमें कथा अथा कहैं तबहीं सुहात है। ललन की सोहँ हँसि बोलिबोहू जाय मीत मङ्गलामुखी के चलु जो सुख की गात है ॥ १ ॥ दोहा ॥ कोउ भानैं इमि कह कहैं, जौन कथा की बार। सोइ छिन सैन बिहार की, हमरे हम लहचार ॥ १ ॥ चौपाई ॥ कथा सुनन को जो कोउ काथैं। नाक सकोर धरैं श्रुति हाथैं ॥ कोटिन काम बतै गृह भागैं। हरियश अघिनु गरल समलागैं ॥ कोउ सँयोग वश जाइ पधारैं। आलस निद्रा प्रबल पसारैं ॥ कहुँ चारहुं त्रिय बैठि निहारैं। तो नैनन सैनन छलधारैं ॥ कोउ कहि कथा सुनन जो जाई। उतनि देरकी जाय कमाई ॥ कथा सुनै सो जो चहि ज्ञाना। धौं कुल त्यागो चहै निदाना ॥ कथा सुनैं भा चहैं जो योगी। सुन सुख लहैं अकिञ्चन सोगी ॥ जौन निरक्षर अघि जगभारे। तिनहिं विषय कर्मादिक प्यारे ॥ बुलवहिं हरियश सुनन निहोरी। शीश दुखत अस कहैं बहोरी ॥ अब कालहिते होतहि संझा। सुनिहैं हम नितप्रति बिन अंझा ॥ मेल मलहिजा वश कहुँ धावैं। तौ गृह किङ्कर ते कहिजावैं ॥ शयन समय मृत दिजो बिहाई। कोउ

मिसकर झट लिहा बुलाई ॥ कथा समाप्त व्यास कहुँ जाना। तौ आगेहि ते करहिं पयाना ॥ भार उतारनकी बिपदा कर। चढ़े दक्षिणा पुनि अकुला कर ॥ मुँह चुपरीकै सदन सिधावैं। कहुँ बुध वच जनि श्रुति परिजावैं ॥ दोहा ॥ कथा पूर्त्तिमें जो कहूँ, कछु विलम्ब होजाय। तौ बुलवन वारे बुलै, बोलैं परम रिसाय ॥ १ ॥ सोरठा ॥ इतक बुलाय अगार, वृथा हमैं बैठालियो। है कछु पारावार, अबहिं कथा केती परी ॥ १ ॥ चौपाई ॥ कोविद कहेउ न युग अध्याया। तुमतो इमि हरबरहि मचाया ॥ कोउ पण्डितते कहत पुकारी। शीघ्र समाप्तहु कथा तुम्हारी ॥ कोइ पण्डितकी पुस्तक ओरी। लाल लकीर लखैं दृगसोरी ॥ लखि अध्याय अन्तको लेखा। करहिंसमाप्ती केर परेखा ॥ कोउ गृह अधिपति कहत जनाई। आरति सामां धरहु सजाई ॥ कथा समाप्त होतही बेरी। आरति करिय बेगि तजि देरी ॥ कोउ निज पगन न दुख पहुँचावैं। दछिना देकर दास पठावैं ॥ अपन जायँ तौ कहुँ छल छैया। निज जो चलै बसकै चतुरैया ॥ भीर भारको देखि समैया। चढ़ै देहिं झट खोंट रुपैया ॥ कहुँ वेश्या नृत देखन जावैं। जो कछु गांठ होइ दै आवैं ॥ पुनि कछु हानि न लाभ विचारैं। चहि गृह जन नहिं अशन अहारैं ॥ छुधा तृषा पगि प्रेम बिहावैं। नैनन नींद निकट नहिं आवैं ॥ दोहा ॥ नृत्यारम्भहुते प्रथम, राजहिं जाय सगेहु। जबलों नृत्य न शान्तहो, हटये हटहिं न केहु ॥ १ ॥ चौपाई ॥ कथा सुनन कहुँ कोउ धर आपा। मनु तुपकानन सन्मुख थापा ॥ सौ सौ मिस कर च-

लिहों धाई । भगत छांह नहिं परहि जनाई ॥ पूर्वक पाप प्रताप प्रतापी । हरिचरचा न सुहाय कदापी ॥ बैठें तो औंघें सुखसेती । कै प्रपञ्चकी सारें खेती ॥ निहसैं धौं बकवादे ठानें । श्रवणअन्त दें अन्तहि ध्यानें ॥ सुनहिं न बुध वच जो कछु मानें । भगवत चरित तमाशहि जानें ॥ हरिजन बनें बनावट केरे । प्रेम प्रीति जिन्ह गयो न नेरे ॥ भक्तिहीन बक वेष बहूता । छल प्रपञ्च को धारे बूता ॥ तिन्हसों कबहुँ न रीझत माधो । जिन्ह कुल कपट नात जग साधो ॥ जिन्ह सत चितसों हरिहि अराधा । तिन्हें न जियत सतावहिं व्याधा ॥ सुबुध वचन सुन सत्य न जानें । वेद पुराण असत्यहि मानें ॥ तिन्हें न प्राप्त कृष्ण रति होई । कोटिन जन्म धरें जग जोई ॥ दोहा ॥ परम्पराते श्रुति वदत, बिन हरि रति मृष गात । हा! दुर्लभ नर बपुष लहि, विषय विभोग सिहात ॥ १ ॥ चौपाई ॥ जीव सो असुर समान गनायो । ज्येहि नहिं प्रभुसों हेत लगायो ॥ कोटि उपाय करहु सत कर्म्मा । चहि करु अमित पुण्य वर धर्म्मा ॥ सत सङ्गति सेवै मुनि देवा । तीरथ जप तप महिसुर सेवा ॥ कोटिन दान देहु जगमाहीं । बिन हरि भक्ति तिहूँ सुख नाहीं ॥ जासों दृढ़व्रत धारिय नेमा । भजिये हरि रुक्मिणि युत प्रेमा ॥ हरिभक्ती को सरल उपाई । सुनहि कथा हरि यश सुखदाई ॥ सुनै कथा प्रभु यश मनभावै । हरिजन सों मन प्रीति दृढ़ावै ॥ तबहि जान उर भक्ति प्रकाशा । हों सुख वित्त वृद्धि दुखनाशा ॥ भक्ति भये नित मङ्गल कारी ।

और विषय उर थिरहिं न बारी ॥ अब जग जन कलिकी यह रीती । हँसहिं आनकी लखिशुभ नीती ॥ उपहास्य छन्द ॥ योगी रोगी भक्त बावला ज्ञानी पूत निखट्टू । कर्म्म काण्डी ऐसे डोलहिं ज्यों भाड़ेका टट्टू ॥ मातपिता परिवार पड़ोसी नाती हितू निकट्टू । ललनहुँ फिर दृगतरे न लावें नहिं अदरात मेहट्टू ॥ घरै घुसे भौं नांक सकोरैं मोरे नैन निपट्टू । भांति भांतिकी विथा गनावैं बैठन देइ न खट्टू ॥ (रागिनी लहचारी टोंड़ी चारतालमें) मनहरण कवित्त ॥ अन्न लाउ धन्न लाउ भूषण वसन लाउ आगलाउ सागलाउ लाउपै बढ़ी रहै । लड़का खिलाय लाउ कुरता सिलाय लाउ लाउलाउ कहिबेसे चुप्प ना घड़ी रहै ॥ जैसेही कलन्दर नचावतहै बन्दरको तैसे ही लै लकड़ी हुकूम पै खड़ी रहै । भूत प्रेत व्याधा हो उतरजाय एक क्षण मर्द पै लुगाई निशि वासर चढ़ीरहै ॥ चौपाई ॥ जग केवल धनही कर नाता । छूँछा पूछा कोउ न विधाता ॥ यासों यहि जग जीवन सारा । हरि सुमिरण तन हित उपकारा ॥ प्रभु सुमिरनमें जाइँ जो बारी । अन्त समय सो हों सुखकारी ॥ जग प्रत्यक्ष दुरो नहिं काहू । तरे भक्त बहु भज श्रीनाहू ॥ तारी गणिका सुगा पढ़ावत । मलिन मरीचि नीच पीपावत ॥ जूठ बेर भिलनी के पाये । पार्थ प्रिया दुख सकल नशाये ॥ तन पाषाणिक पाइस जोई । गौतम नारि उबारिस सोई ॥ गजको ग्राह फाँससे तार्‍यो । नामदेव छीपीहु उबार्‍यो ॥ धना जाट जनको बिन बीजै । क्षेत्र उगायो निधि अव

नीजै ॥ नापितसेन शूद्रको छोरा । सदन कसाई विदित न थोरा ॥ द्विजते भयो कवीर जुलाहा । हरि अराध पायो मनलाहा ॥ दोहा ॥ विदित दासरैदास रति, सरहत वेद पुरान । बलि पायो अहिलोकत्र, करि हरिहित महिदान ॥ चौपाई ॥ सूपक ढेढ़ म्लेच्छ बरूथा । दास खानखाना जन हूथा ॥ जन निषाद नानकहु फकीरा । तुलसी सेवक सूर सुमीरा ॥ नरसी नवा सुमिरि श्रीस्वामी । जनप्रह्लाद उबारेउ नामी ॥ पुण्डरीक अम्बरिष पराशर । शुक्र वशिष्ठ शौन शुक आगर ॥ गोपि जनादिक व्याध कपीशा । पायो सुमिरि सुयश जगदीशा ॥ दशमुख सन्मुख अङ्गद योधा । पादरोप भा ठाढ़ सक्रोधा ॥ सो प्रण राखन बालितनै को । बीसभुजा बलबीर हनैको ॥ मीत सुदामहिं प्रभु अपनायो । बहु कुवेर से तिन्ह धनपायो ॥ दुर्योधन अभिमान नशायो । शाक अलोन विदुर गृह पायो ॥ ध्रुवहि विभीषण भक्ति प्रतापा । चहुँ दिशि प्रचरित जग यश जापा ॥ बालमीकि उलटा जप साधा । लह्यो वास वैकुण्ठ अगाधा ॥ दोहा ॥ अज भज लहि जगसृजन कृति, विष्णु पोषणिक शक्ति । शिव संहारक शक्ति लहि, दशौतार वश भक्ति ॥ १ ॥ चौपाई ॥ कमठहि उदधि मथन कर हेतू । मत्स्य पञ्चजन मारण केतू ॥ हिरण्याक्ष नाशन वाराहू । नरहरि हित प्रह्लाद उछाहू ॥ परशुराम भू भार उतारन । वामन शक्र हेतु तन धारन ॥ रावण हनन हेतु रघुराजू । कंसारातिहु श्रीव्रजराजू ॥ बौद्ध जैन मति खण्डनकारी । कल्कि धर्म्म

पालन अवतारी ॥ मुनि कुल कमल सुसन्त सयाने । हरि भजतर तिन श्रुति यश भाने ॥ कवि कोविद ऋषिव्यास पुनीता । विदित जगत चहुँ दिशि सब रीता ॥ आपतरे निस्तारण कारह । जगहित रचेउ पुराण अठारह ॥ सोइ भागवत शिरोमणि मयकी । कथा कृष्ण रुक्मिणि परिणय की ॥ मति अनुसार कहहुँ अब सोई । नित नव मङ्गल दायक जोई ॥ इति श्री रुक्मिणी पाणिग्रहणे कथाश्रवणमाहात्म्यवर्णनो नाम पञ्चमःसर्गः ॥ ५ ॥

अथ कथा प्रसंगः ॥

दोहा ॥ श्रीशुकदेव महानमुनि, भूपपरीक्षित पाहि । जिमि वरण्यो हरियश सुखद, सुनहुं सविस्तरताहि ॥ १ ॥ [श्रीशुक उवाच] चौपाई ॥ एकसमय कैलास शिखा पै । विशद मनोहर उग्रगुफा पै ॥ चिताभस्म अहि अँग लपटाये । गलमुँडमाल विशाल सुहाये ॥ रत्नसिंहासन आसन लीन्हे । युगल रूप निज हृदि विच दीन्हे ॥ त्रिदृग सम्पुटित गहे समाधी । सेवित सिद्ध हरणदुख व्याधी ॥ वामाङ्गी हिमवान दुलारी । शोभित सङ्ग अनूप अपारी ॥ मोद गोद मनु गहे अगाधी । प्रेम पुरित रहे हरिहि अराधी ॥ खुलत चक्षु हँस शिव सुखि ऐना । सोइ गिरिजा बोली मृदुबैना ॥ आज नाथ क्यहि को रहे ध्याई । निरखि परत मन अति मुदिताई ॥ कारण तासु मोहि बतैये ।

हृदयाम्बुज सुख रस बरषैये ॥ कह्यो शम्भु रुक्मिणि भगवाना । तिनको करत रह्यो हौं ध्याना ॥ [पार्वत्युवाच] दोहा ॥ भन्यो शिवा सुन पशुपते ! तुव वच वर्धक क्षेम । कछु हरिचरित सुनाय मुहि, करिय कृतार्थ सप्रेम ॥ १ ॥ सोरठा ॥ प्रिया प्रश्न सुन प्रीय, श्रीमहेश मन मुदित ह्वै । हरि यश सुखद अतीय, वदत उमाचित लाय सुन ॥ १ ॥ [शिव उवाच] (राग एमन चारताल में) शिखरिणीछन्द ॥ अनाद्यन्तः स्वामी अविगत अविद्यो यशभरा । सदानन्दो गामी शरण नित-दासो गिरिधरा ॥ कला कल्याणी जो विमल यश दात्री श्रुति धरा । बुधा पौराणी जो वरणि बहुहारे मुनि सुरा ॥ १ ॥ सदा शान्ति प्रीतः प्रणत जनको पालन करै । महा माया नीतः सकल जन सेवा अनुसरै ॥ सुरेशो विश्वेशः परमपरमात्मा तमहरै । परेशः सर्वेशः शरणगत पाता सुखभरै ॥ २ ॥ विभुर्विश्वव्यापी विपति दुख हन्ता सुख निधिः । नियन्ता सन्तापी जन अघ दलै विश्व परिधिः ॥ विधाता है दाता विदृत विभवो वेद कथितः । सएवाऽहं ज्ञात्वा वरणियत योना अनु-मितः ॥ ३ ॥ चिदानन्दो न्यायी निखिल जगदाधार विदितः । सदा शेषे शायी प्रकट महिमा यस्य परितः ॥ कृती कर्ता हर्ता त्रिजग हित भर्त्ता स्व विषये । य आत्मांशं धर्ता निजजन कृते निर्गुण मये ॥ ४ ॥ तदेवं रुक्मिण्या प्रकृति कथिता या मधुरिपोः । तया माया देव्या सह हरि अरिं हेम कशिपोः ॥ उमा ! ध्यानावस्था नित प्रति रह्यो भक्त शरणा । जपैं योगी स्वस्था मुदललन श्री

कृष्ण चरणा ॥ ५ ॥ (राग एमन कल्याण चारतालमें) कवित्त ॥ यशिहि उजागर जो ज्ञाता गुण-सागर को नागरमें नागर सो आगर बुधी को है । प्रबल प्रतापी है अनापी क्षेम गाती आपी वेदन अलापी सो मिलापी जन जीको है ॥ अधिपति नीति को है प्रीतम प्रतीति को है पयोनिधिप्रीति को जितेन्द्रिय प्रतीको है । मुनिजन देव सेव मूरति प्रमुद येव नन्दको ललनपूर्ण ब्रह्म ईश श्री को है ॥ १ ॥ चौपाई ॥ अमित चरित माया नित हरिकी । निर्गुण सगुण सलीला धरकी ॥ सो कछु कहहुँ बखान भवानी । प्रभु लीला चरित्र सुखदानी ॥ सगुण चरित हौं तोहि सुनावत । ज्यहि सुनिकै नर भवतरि जावत ॥ सतयुग मनु सुत पा नृप नामा । त्यहिकी तीय पृश्नि अभिरामा ॥ द्रोण धरा द्विज वसु त्यहि काला । धरणि तासु बामाङ्गि विशाला ॥ सुत हितलैदोउ प्रिय त्रियसङ्गा । कीन्ह तपस्या कठिन अभङ्गा ॥ लखि इनको अखण्ड आराधन । प्रकटेउ रमा रमापति ताछन ॥ पूँछ्यो प्रभुका चहि सोइ भानों । हम तुम्हरन तपसन सुख मानों ॥ भरि विनोद इन्ह मांग्यो सोऊ । तुम सम सुत श्रीसदृश पतोऊ ॥ श्री कमला पति जचि रुचि जनकी । एवमस्तु कहिलइ मग वनकी ॥ दोहा ॥ भई पृश्नि सो देवकी, सुतपा नृप वसुदेव ॥ नन्दजन्म द्विज द्रोण वसु, धरणी यशुदा एव ॥ १ ॥ चौपाई ॥ प्रभुसम सुत पाये कर नेहू । तिनयश वरणहुँ सहित सनेहू ॥ प्रभु तो भक्ति वश्य प्रिय गायो । भक्तन कर बिन दाम बिकायो ॥ भक्तहिके हित प्रभु वपुधारे । लीला

निधि जग विच अवतारे ॥ सोइ प्रभु द्वापर युग सुखदाई । द्विज सन्तन सुर प्रद मुदिताई ॥ श्री पति पूरण ब्रह्म अनन्दा । मथुरा जन्म लियो यदुचन्दा ॥ जिन्ह वसुदेव देवकी जाया । श्रुति पुराण मुनियनयश गाया ॥ पुत्रनु वधते तात दुखारे । तिन्हैं दरशदै कीन्ह सुखारे ॥ युगकर जोरि कह्यो शिवरानी । नाथ कहिय यह कथा बखानी ॥ श्री वसुदेव देवकी पूतनु । को वध कियो कौन कर हेतनु ॥ शिव भाष्यो सुन शिवा सयानी । कहहुँ व्यवस्थाऽखिल पौरानी ॥ दोहा ॥ उग्रसेन यदु वंशि नृप, कंसासुर सुत तासु । नीच बुद्धि हरि विमुखि अति, दायक निजकुल त्रासु ॥ १ ॥ चौपाई ॥ लियो राज्य पितु दूरे अधर्म्मी । क्रूर काय दुख दाय कुकर्म्मी ॥ तासु देवकी भगिनी आही । नृप वसुदेव सङ्ग त्यहि ब्याही ॥ यदिहि ब्याह देवकि वसुदेऊ । बिदा कराय चले गृह एऊ ॥ भइ अकाश वाणी त्यहि बेरा । अष्टम पुत्र देवकी केरा ॥ काल कंसको त्यहि कर जानों । यह सुनि कंस अतिहि अकुलानों । कीन्ह विचार कंस नृप तबहीं । मारि विनाशहु भगिनी अबहीं ॥ बिन भगिनी को पुत्र उपाजी । पुनि मुहि को बधकरै पराजी ॥ भगिनी हनन हेतु असि काढ़ी । मारण धावा अतिरिस बाढ़ी ॥ तब वसुदेव वरणि श्रुति नीती । कंसहि समुझायो बहुरीती ॥ तिय पर शस्त्रन कोउ प्रहारै । तैं नृप चतुर अनीति विचारै ॥ परिहर कुमतिन तिय वध कीजै । उचित समुझ मन आपन लीजै ॥ [पार्वत्यु वाच] दोहा ॥ उग्रसेन धार्म्मिक नृपति, पुण्य

परायण पर्म्म । आत्मज तासु कुमार्गी उपजो अस क्यहि मर्म्म ॥ १ ॥ यहि सन मम रुचि नाथ यह, करणि कंस नृप नीति । सह विस्तर प्रभु वर्णिये, करिमोसन उरु प्रीति ॥ २ ॥ इति श्री रुक्मिणीपाणिग्रहणेकथाप्रसङ्गवर्णनोनामषष्ठःसर्गः ॥ ६ ॥

[महादेव उवाच] दोहा ॥ सुनहु वल्लभे कंस कृति, राज्यनीति नृप जौन ॥ जिमि ध्रुवसों हरिने कही बरणौंतुव प्रति तौन ॥ १ ॥ (राग विहाग चारतालमें) मनहरणकवित्त ॥ ललन ललित पति व्रतमेड मरजाद पूर्णरेखा उग्रसेन केरि भामिनी भली । ऋतु असनान कर एक द्योसकी जिकर विपिन विहारन सखिन संग लैचली ॥ देखि दुर्मलिक दानो तासु रूप पैलुभानो भूपति सुरूप आनो ठाढ़ भयो वाथली । कामातुर नृपजान सखि वन में लुकानि केलि रस लपटान नृप नारि सों छली ॥ १ ॥ (रागिनी आशावरी चारतालमें) मनहरण कवित्त ॥ रति वेगि वाके सन रानी जचलीन्ह मन येतो मम पतिना अजान कपटीको है । बोली नृपनारि सांची कहो तुमको कुमार शापत अभी तो होत टूक अवनीको है ॥ दानो डरमानो कहा शाप जो न आनो भानों देखिकै निपूती रूप दियो गर्भिणीको है । मोरति प्रभाव सों ललन बलवन्तहोगो दानो दुर्मलिक

१ आत्मा वै जायते पुत्र इति वेदानुशासनम् । वेद शिक्षामें कहाहै कि, आत्माही पुत्ररूप से उत्पन्न होता है । तब धर्म्मात्मा उग्रसेन का पुत्र कंस, अकर्म्मी क्यों हुआ !

मोर नाम नारि नीको है ॥ २ ॥ चौपाई ॥ उचर नाम निज विपिन सिधावा । हरबराय जिय रानि सकावा ॥ खल प्रसङ्ग कारण तनकेरे । अस्त व्यस्त शृङ्गार भयेरे ॥ वन विलोकि नृप नारि अकेली । सिमिटि सिधाई सकल सहेली ॥ कुकृत शृंगार चकित चितरानी । मुख मलीन लखि कह सखि स्यानी ॥ स्वामिनि यह कह दशा तिहारी । रानि कहा सुन व्यथा हमारी ॥ वन विहरत यक वानर आवा । म्वहिं विलोकि अति घुरक डरावा ॥ हौं दपटौं तन लिपट अभागो । भूषण वसन नोचबे लागो ॥ गिर गइ महि तन दशा विहाई । धरक उठो मम हिय अधिकाई ॥ पटा भरण गे बिगर बहोरी । दौर दुरो वह कानन ओरी ॥ चलहु झपट झट वाम निकेतू । यह वनथल अति भय सङ्केतू ॥ खल रति सों गर्भित भइ रानी । आनि वेगि मन्दिर बिलसानी ॥ दोहा ॥ यहि कारण राक्षस भयो, उग्रात्मज मद भौन । दनुजमती हरिसन विमुख, द्विज मुनि दुःखद तौन ॥ १ ॥ अब लघु विधि वर्णन करत, प्रिय नृप नीति विधान । सुन्दर महापुराण को, इतिहासिक व्याख्यान ॥ २ ॥ चौपाई ॥ परम पुनीति नीति संवादा । ध्रुव भक्ती दृढ़ता मर्यादा ॥ जप तप घोर क्लिष्टता करणी । श्रुति सकात सुर सकत न वरणी ॥ श्रम फलकी प्रभुता को कारण । यश सुपूत निज कुल उद्धारण ॥ प्रेम नेम कर नियता चारा । शुभ्र शीलता जग व्यवहारा ॥ कहि शुकदेव परीक्षित सेती । सो सब कथा सुनाऊं तेती ॥ आदि स्वयम्भू भे मनु

राजा । ज्यहि उत्तानपाद सुत आजा ॥ सुरुचि सुनीति जासु युग वामा । सकल गुणागर छवि अभिरामा ॥ सुरुचि रही मनुकी प्रियभामा । भयो तनय त्यहि उत्तम नामा ॥ अपर सुनीति तीय ध्रुव तासू । भयउ सुरुचि त्यहि लखि उर त्रासू ॥ प्रति दिन ध्रुव माता सौतेली । सेर अन्न दै पठै हवेली ॥ त्यहिते भरहिं जीव दोउ पेटा । कियो शरसालि पालिकर बेटा ॥ दोहा ॥ यक दिन ध्रुव खेलत गयउ, जहँ नृप थिर मन मोद । जनक अङ्क विहरन चह्यो, लीन्हतात पितु गोद ॥ १ ॥ चौपाई ॥ सुरुचि देखि ध्रुवकी रुचि बोली । ईर्षा वश करि गर्व अतोली ॥ विधि नृप गोद मोद जो देतो । तौ मम उदर जन्म तैं लेतो ॥ पुत्र होय मम सौतिन केरो । पुनि नृप अङ्क चहत सुख हेरो ॥ दुरहो अरु कह दण्डौं तुहिका । अब जो आन दिखयो मुख मुहिका ॥ सेर प्रमाण अन्नकी रोजी । सोउन मिलब फिरिहौ जग खोजी ॥ तोसि जननि मम पति तिय नेका । तिन सम गृह चाकरि वह एका ॥ कहि यहि विधि गृहद्वार निसाय्यो । रुदित दुखित तट मात सिधाय्यो ॥ सुनि रव रुदन सुवन नृप जाया । भवन विहय सुत दौरि उठाया ॥ नीलवर्ण शुष्कित रद पटला । लखि भय भीत दृगन झर अटला ॥ अङ्क अंकु मुख अञ्चल धारी । हीय लाय पूछिसि महतारी ॥ काभाको दण्ड्यो कस भीता । क्यों विलखत मम जीवन मीता ॥ [ध्रुव उवाच] (राग पूरिया ताल त्योरा में) हरिगीत छन्द ॥ ध्रुव पेखि पालक जननिसों कहि

अकुलता अति उरलही। अवलोकि क्रीड़त मोहिं पितु लै लीन्ह अङ्कहि का कही॥ अतिरोष कोषहि रोषि मोपै पितु के आरानी लटै। लय पाणि पाणि घसीट डार्यो द्वारद्वारे गहि लटै॥ वद विपुल वद वच मोहिं तुहि मुख समुहे गृह पालकनके। कुल पुर पड़ोसि अचाक भे लिय अधर विच रद पटनके॥ नहिं मने वाहि कियो पिता यह दुःख उर औरहु भरा। अब जननि काकी शरण ह्वै सुख विलसि बसहुँ वसुन्धरा॥ [सुरुचिरुवाच] कह मात बिन भगवान के अरु कौन सुख दातार है। ज्यहि राखि गर्भते लीन्ह वह पितु मातु प्रिय परिवार है॥ है अधम जिय नहिं ताहि जानैं परे सङ्कट यादिहो। वह दीन दयाल गुपाल तहुँ जनकी सुनै नहिं वादिहो॥ जासोंहिं प्रियसुत सांवरे ब्रजराज को आराधिये। प्रभु विश्वजन दुखहरन त्यहि भजु हन सकल दुख व्याधिये॥ सुन दुख सने वच मातुके पुनि प्रश्न ध्रुवने यह करी। तुम सुरुचि युगपितुरानि वहि सुख तुम्हैं दुख कस हरघरी॥ कह सुनिति कर्म्माधीन दुख सुख रानि भइतौ का भयो। नहिं दान लालन कीन्ह कछु सोइ भाग्य वश दइ दुख दयो॥ १॥ (रागिनी भैरवी त्रैतालमें) सवैया॥ होत वही जो लिलार लिखो विधि कोटि उपाय करेहु टरैना। मात पिता पति बन्धुहितू इन ते सुत कारज एक सरैना॥ भूल मरै भ्रमि नाहक ही जग कर्म्म कि रेख पै मेख गरैना। चेतअजौं ललनै परिणाम चहे सुख तौ हरि क्यों सुमिरैना॥१॥ ललनै करणी जग सार सदा करनीकमनीय

कलानु भरी। करनी नृप इन्द्र कुबेर करै करनी दिगपाल दिवानगरी॥ करनी अजईश प्रतीश करै करनी वश श्रीभगवान हरी। करणी जो करै सो कोऊ न करै करणीहि प्रधान प्रमाणखरी॥२॥ (खम्माच रागिनी चारताल में) कवित्त॥ दुन्दुभी दुनी में दीन दयालता दराजी केरु देशनु दातव्यता उदीप्त दिशि चारीहै। काहूको तुरङ्ग ताज गजराज सुखसाज काहूमहराज राज कियो छत्र धारीहै॥ काहू को नवाब बादशाह राज राजनको काहूको कलत्र धन यौवन अपारीहै। करणीकी करामात कर्मनके साथ लाग ए रे ए ललन जग करणी सुखारीहै॥१॥ काहूको सुरूप दियो काहू काहिं भूप कियो काहू को अनूपबल विद्या अधिकारीहै। काहूको कुलीन दीन हीन मति छीन काहू धनिक प्रवीन कीन काहूको भिखारी है। काहू उमराव राव बादशाह सेठशाह काहू अधिराज राज दीन्हों पद भारी है॥ काहू को गुरुत्व गति काहू की ललन मति काहू को अमित सुख कर्म गति न्यारी है॥ २॥ (राग देश रूपक तालमें) पद॥ जग बिच कर्मही यक सार। (अन्तरा) कर्म ते जग भोग भोगै कर्म करत भिखार॥ १॥ कर्मही कर मूर्ख ज्ञानी कर्म बिन सुख छार॥ २॥ कर्म फल नहिं हो वृथा कहे ललन सुर श्रुति कार॥ ३॥ (राग शङ्कराभरण झूमड़ा तालमें) हरिगीतिका छन्द॥ मम दुख निहारि न दुखित हो तुम अपन पुत्र बनाइये। सब त्याग राग बिराग श्रीपति चरण मनहि लगाइये॥ सुनि मातु शिक्षा ज्ञान भा ध्रुव कह्यो अब अस कीजिये। तजि भौन कानन बसहुँ हरि

यश जपहुँ आज्ञा दीजिये ॥ कह जननि तैं मम धनरु जीवन पुनि अबहिं बारो लला। यदि क्षुधा तृषा सताय कासों अशन तैं मँगिहै भला ॥ पुनि शीत वर्षा उष्ण दुख वन बाघ सिंह लगाहिं घन । तुहि जानि बालक दण्डि हैं तब एक नाहिं बिसाय तन ॥ [ध्रुव उवाच] ध्रुव कह्यो मातु बिसर गयो तुव ज्ञान अबहि तुरन्तही। जिन्ह गर्भ ते बचयो विपिन गृह सबहि ठहँ रक्षक वही ॥ अस कहि बनहिं ध्रुव चल्यो लखि गण सचिव चल नृपते कही। तव ललन बारो जात कानन बात यह अनुचित लही ॥ १ ॥ [राजो वाच] सोरठा ॥ सुनि प्रधान वच भ्वाल, विस्मित बोल्यो मन्त्रियन। जा शिक्षहु यहि काल, कानन सुवन न गमन भल ॥ १ ॥ दोहा ॥ हौं जचि सुत दुख दारुणहि, जानि जननि प्रतिकूल ॥ त्यहि भय भीमहि लाय उर, चलिभा विपिनै कूल ॥ १ ॥ सोरठा ॥ कहि यह वचन अनूप, नित अहार दोसेर लो। वन न गमन अनुरूप, जनक जुहारो तोहि प्रिय ॥ १ ॥ दोहा ॥ सांठि शीश आयुष नृपति, राज काजिया लोग ॥ महिपति मर्महि मण्ड मन, शिशु ढिग कीन्ह सँयोग ॥ १ ॥ सोरठा ॥ नृप बचते सौगून, अशन वसन अर्पन कह्यो। विनय शिक्ष दै दून, चलु गृह बहु मन्त्रिन कह्यो ॥ १ ॥ सुनि ध्रुव सचिवनु बैन, निर्मल ज्ञान प्रकाशभा ॥ रमतहि वन अस चैन, सहसा मान मिलै अबहि ॥ २ ॥ चौपाई ॥ सुकृति पुण्य फल लखि प्रभुताई। हरि आराधन कर्म कमाई ॥ गद गद फूल्यो अँगन समावत। मन मन मुद

कहि सत श्रुति गावत ॥ हरि मारग अतिही सुखदाई। अब घर फिरब न कोटि उपाई ॥ मन्त्री पच हारे समुझाई। नहिं मानों ध्रुव अति हठि लाई ॥ सचिव समुझि अपनी लहचारी। भूपहि सुत कृति जाय सकारी॥ कह नृप यक युग त्रय श्रुति ग्रामा। दै लौटारि लेहु ध्रुव धामा ॥ मन्त्रिन जब यह जाय सुनायो। तब ध्रुव औरहु निश्चय लायो॥ चलिभा जाकर नाम आसरे। मिलहिं ग्राम वित सुख बिलासरे ॥ नाम लिये फल जनै न का हो। अब न जाउं गृह कोटिहु चाहो ॥ नृपसन जाय हाल तिन्ह गायउ। नृप आपुहि ध्रुव मिलबे आयउ ॥ दोहा ॥ नृप चौथ्याई राज्य पुनि, अर्ध सबहि कहि लेहु। मौज करहु निज गृह बसहु, मोहिं ललन सुखदेहु ॥ १ ॥ सुनि पितु बच सुत कह प्रथम, किञ्चित दर नहिं कीन। यदि हौं हरिपद चित दियो, करत राज्य आधीन ॥ २ ॥ चौपाई ॥ अब जो कियो सो कियो पिता मैं। दुख सुख को स्वामी घनश्यामैं ॥ जपिहौं हित चित सन हरिनामै। गाढ़ि परे आवहिं जन कामै ॥ को काको पितु सुत महतारी। झूँठो सब नातो संसारी ॥ कर्म प्रधान सदा जग राखा। हरि सुमिरण रस सो चहुँ चाखा॥ कर्महि ते बिगरै बनि जाई। कर्महि रङ्क करत नृपराई ॥ कर्महि भानु भ्रमहिं आकाशा। कर्महि करभे शिव भव नाशा। कर्महि कर भा शक्र सुरेशू। जलपतिबरुण कुबेर धनेशू ॥ कर्महि बायु पूत बलशाली। कर्म्महि बालमीकि भा बाली ॥ होत सकल फल कर्म्म अधीना। अम्बु अधीन सदा जिमि

मीना ॥ जाहु पिता अब गृह नहिं जैहौं । बिन प्रभु मिले न मुख दिखरैहौं ॥ दोहा ॥ अस कहि ध्रुव कानन रम्यो, प्रभु चरणन चित लाय । महिप मन्त्रि मन्दिर गये, मर्दि पाणि पछिताय ॥ १ ॥ चौपाई ॥ मन मलीन ध्रुव जनक महाना । त्रिय कृति हृदय दहन अकुलाना ॥ राज काज प्रति मन नहिं लागत । खान पान रस रुचि नहिं पागत ॥ नेह न नेहत निशि दृग निदिया। जलभर स्रवत अथाहनि नदिया ॥ उत नृपसुत मनमोद पसारे । पहुँचिस सघनारण्य किनारे ॥ वन प्रविशत ध्रुव नारद भेटे । कह अकेल तुम कित इत बेटे ॥ जननि जनक कर कह तुव नामा। कौन ग्राम विश्राम ललामा ॥ कहि ध्रुव मातु पिता घनश्यामा । जिन्ह भरोस आयउ यहि ठामा ॥ जगत नात उत्तानपाद पितु । मातु युग्म सुरुची सुनीति इतु ॥ उत्तम नाम सुरुची कुँवरको । ध्रुव मुहिं कहत सुनीति महरको ॥ सुरुचि रही प्यारी पितु मनको । हिय हित जासु न हम दोउ जनको ॥ दोहा ॥ मम जननी को रिपु लखहि, दूसरि जननी मूढ़ । यक दिन हौं पितु गोद लहि, झिड़क निसाख्यो कूढ़ ॥ १ ॥ चौपाई ॥ मुहिं दुर्बचन कह्यो मैया हित । हौं सिसिकत गृह गयउ दुखित चित ॥ पूँछ्यो मात भयो कह लाला । तब हौं बरणि कह्यों सब हाला ॥ मन्यों विकल ह्वै पुनि मम माई । श्री हरि सुमिर जो चहहि भलाई ॥ वहि जन दुख दलता वसु यामी । दीन हितू जग जीवन स्वामी ॥ सुनि माता सिख भा उर ज्ञाना । हौं हरि शरण विपिन चलि आना ॥ तुम

को प्रभु मुहिं कहहु जनाई । ऋषि कह मुहिं नारद श्रुति गाई ॥ सुनि ध्रुवमुनि पग पर अस टेरा । करहु नाथ शिष भव निर्वेरा ॥ तब अजसुत दीन्हों उपदेशू । तुम बारे बसिये निज देशू ॥ कह मुनि चलु निजु पितु ढिग लालन । राज्य दिवै तुहि करहु सुपालन ॥ ब्याह करहु सुख सुत उपजावहु । राज्य सौंपि त्यहि पुनि वन आवहु ॥ दोहा ॥ तीसर पन तप लाइयो, हरि चरणनु सों डोर । मम आशिष सों पूर्ण हो, मनोकामना तोर ॥ १ ॥ चौपाई ॥ तुम शिशु वन बिच त्रास अनेका । हिम दुख वर्षा उष्ण जितेका ॥ जीव जन्तु दुख दाइ अथाहू । भालु भेड़िया सिंह सियाहू ॥ पुनि जब क्षुधा तृषा तुहि दहिहै । ढिग पितु मात न क्यहि सन कहिहै ॥ तासों मोरि मान ध्रुव लीजे । करणि कठिन वन प्राण न दीजे ॥ कह ध्रुव बिन हरि सुख जग नाहीं । वहि रक्षक गृह वन सब ठाहीं ॥ है अनित्य तन बेदहु भाषै । पुनि जस करणी तस फल चाखै ॥ यह को कह बिचार मुनि राया । को काको जग पथिक गनाया ॥ राज्य न चही चहूँ हरि पद रति । देउ गुरु मन्त्र कृपाकर बिधि वति ॥ धनि मम भाग्य सुफल घड़ि यह छिन । मिल न दरश मुनि दया दैव बिन ॥ जासों मुनि मुहिं दीक्षा दीजे । पतित अनाथ सनाथ करीजे ॥ दोहा ॥ ध्रुव दृढ़ता हरिभक्ति लखि, ह्वै प्रसन्न ऋषिराज । द्वादशाक्षरी मन्त्र पुनि, उपदेशो महराज ॥ १ ॥ जप तप सकल विधान व्रत, मुद्रा योगाभ्यास ॥ ब्रह्मात्मज सिखयो ध्रुवहि, संयम सहित हुलास ॥ २ ॥ (एकादशाक्षरिक) सो-

हना छन्द ॥ खेचरी जीहँते नाम उच्चार, अग्गोचरी उल्ट ब्रह्मांण्ड जावै। चाँचरी त्रिकोण त्रिकुटी लखै, भूचरी शब्द शब्दहि मिलावै ॥१॥ उन्मुनी नासा नाभिको कै एक, ध्यानमें जगमगी ज्योति तो आवै। पञ्च शुभयोग के मुद्रा यही, समुझकै भेद कोउ सन्त पावै ॥ २ ॥ (योग सम्पत्ति नामानि) दोहा ॥ षट साधन वर योगके, शम दम नियम बहोर। आसन शुभ वैराग्य युत, बदत तितिक्षा ओर ॥ १ ॥ (अष्टाङ्ग योग नामानि) यमो नेम आसन कहत, प्राणायाम सुजान। प्रत्याहार सुधारणा, ध्यान समाधि बखान ॥ २ ॥ ईड़ा पीड़ा सुखमना, इँगल पिंगल समान। दहनी बांई श्वास नक, यह तीनों परिमान ॥ ३ ॥ बह्व सुफलिक मुनि योग कृति, सिद्ध कराय सिखाय। धारि पाणि ध्रुव शीश पहँ, गे विधि पुर हरषाय ॥ ४ ॥ चौपाई ॥ लखि मुनि दया ध्रुवानँद पायउ। लै गुरु सिख मधुबन चलि आयउ ॥ एक चरणभे महि पहँ ठारे। अन्न त्याज फल फूल अहारे ॥ फल त्यज दल दल त्यज जल पायउ। अंबु त्याग पुनि पवन अचायउ ॥ वायु त्यजत अति शक्र डरायउ। माया देबिन बोल पठायउ ॥ कह्यो मोर आयुष मण्डन कै। ध्रुवहि डिगावहु तप खण्डन कै ॥ आज्ञा गृहित पुरन्दर केरी। लै बहु साज ढोल डफ भेरी ॥ तबला तबल सितार तँबूरा। बीन रबाब पखावज तूरा ॥ घुनन घुनन घूँघुरु घन

१ जिव्हा। २ ज्ञानचक्षु। ३ तीनों श्वासा।

घोरी। भनन भांभ भनकाय बहोरी ॥ साज मनोहर शुभग शृँगारा। यकसों यक छबि सिन्धु अपारा ॥ उर्वसि तिलोत्तमा युत मैना। लाईं ध्रुवहि डिगावन सैना ॥ (रागिनी भीमपलासी आड़ा चौताला में) हरिगीतिका छन्द ॥ माया प्रचार बसन्त ऋतु रचि हरित भूमि सुहावनी। शीतल सुगन्ध सुमन्द मन्द समीर बेहरहिं भावनी ॥ वन बाग बिपुल विशाल बिरचि सुतरुन द्रुमन प्रकाश छबि। चहुँ सुमन सुन्दर बाटिकान विहार मधुपन बैन फबि ॥ सौरभ विलासि सुवासि बेहद पुरित कोसन कोस तक। नरकी कहै कह मुहँ पशु खग देव मुनि गण जायँ चक ॥ बर वृन्द विशद बिछै बिछायत मखतुलादिक रतन मय। महि घेरि तम्बु कनात डेर छिड़ावती भइँ तन्त्र लय ॥ सुर बाम तन अभिराम रति पति काम कला अनेकहीं। सब नाचि गाय रिझाय हारीं ध्रुव समाधि डिगी नहीं ॥ तब देवि विहँसि विचारि माया धारि आंधि चलाइयां। जल डारि उपलन मारि शीत सृजाइ गात दुखाइयां ॥ नहिं डिगे तब ध्रुव माय रूप बनाय आय जुहारियां। हे पुत्र नृपति निसारि दइ भइ विपति तुढिग सिधारियां ॥ अब राखु सुत पति मोरि हाहाकार प्रबल सुन्यो जबै। जगतहि समाधि बिचार नारद वचन ध्रुव सोचे तबै ॥ लखि परहि माया माय नहिं छल जानि हरि सुमिरत भयउ। गइँ हारि सुरपुर देवि शक्र डराय श्रीहरि पहँ गयउ ॥ महराज ध्रुव तप तेज तय भय विकल सुर महि मन महीं। झट जाय

दीजै दरश प्रभु अब बारि किय बनती नहीं ॥ सुनि विनय व्यथित विलोकि सुरपति भलो जन वत्सल भनो। ध्रुव निकट गे लखि लिय समाधी शङ्ख रव तब कियो घनो ॥ गइ ध्रुव समाधी उचट देख्यो कृष्ण को सनमुख खरो। शिर नाय पदकर जोरि ललन विनय बहुत ध्रुव उच्चरो ॥ १ ॥ [ध्रुव उवाच] (रागिनी गौरी झपताल में) भुजङ्ग प्रयात छन्द ॥ नमो दीन बन्धो कृपा क्षेम वारो। नमो नील कञ्जाभ हूँ दास थारो ॥ तुम्ही विघ्न शङ्का जनों की निवारो। समर्थे सबै सर्व आपत्ति टारो ॥ १ ॥ प्रभो पूर्ण हो पूर्ण माया घनेरी। गती पूर्ण कर्तव्यता पूर्ण तेरी ॥ जनै पूर्ण विश्वास है ईशभारो। समर्थे सबै सर्व आपत्ति टारो ॥ २ ॥ मया तेरि का भेद कोई न पाया। सदा वेद वेदाङ्गहू नेति गाया ॥ अनाद्यन्त सर्वादि है निर्विकारो। समर्थे सबै सर्व आपत्ति टारो ॥ ३ ॥ हृषीकेश शङ्खाब्ज चक्रादि धारी। मही में प्रकाशी हुई कीर्ति सारी ॥ पिता मात स्वामी तुही है हमारो। समर्थे सबै सर्व आपत्ति टारो ॥ ४ ॥ निराकार तू है अमूर्ती अलक्षा। महा निर्मला ज्योति सर्वत्र दक्षा ॥ निराधार आधाररूपी उचारो। समर्थे सबै सर्व आपत्ति टारो ॥ ५ ॥ तुही विक्रमी शार्ङ्गधन्वा बिहारी। दया हो जबै भक्ति पावै तिहारी ॥ तुहै धन्य तेरोहि मोंको सहारो। समर्थे सबै सर्व आपत्ति टारो ॥ ६ ॥ मुकुन्दा मुरारे अभिव्यक्त देवा। मिला दर्श अद्यैव मों धन्य सेवा। जगेशो महेशो परेशो सुखारो। समर्थे सबै सर्व आपत्ति टारो ॥ ७ ॥ भुवी भारधारी अभै

दानि तू है। विना तोहिं संसार में ना कछू है ॥ सुधन्योऽस्मि मैं नाथ बालो विचारो। समर्थे सबै सर्व आपत्ति टारो ॥ ८ ॥ भवाब्धौ परो तोहिं कैसे पिछानू। भरी मूर्खता चित्त मेरेऽभिमानू। करी भक्तरक्षा हिरण्याक्ष मारो। समर्थे सबै सर्व आपत्ति टारो ॥ ९ ॥ तुसी नैकदायाहि निर्वाह मेरा। ममै बार क्यों बार कीजै घनेरा ॥ कृपा के जगत्सिन्धु ते वेगि तारो। समर्थे सबै सर्व आपत्ति टारो ॥ १० ॥ सुरेन्द्रादि भी यस्य पारं न पावैं। तथा वेद भी नेति नेतीति गावैं ॥ प्रणैपाल हो तो ललन् को उबारो। समर्थे सबै सर्व आपत्ति टारो ॥ ११ ॥ [शुक उवाच] चौपाई ॥ यहि विधि ध्रुव हरिकी स्तुति गाई। पस्यो वेगि प्रभु चरणनु धाई ॥ ह्वै प्रसन्न हरि हृदय लगायो। कह प्रिय वर मांगहु मन भायो ॥ [ध्रुव उवाच] करी कृपा प्रभु दर्शन दीन्हा। सेवक लखि सनाथ मुहिं कीन्हा ॥ तुम्हैं पाय मन सब सुख लीना। अब कह मांगहुँ अपर नवीना ॥ पुनि पुनि प्रभु निज पद रति दीजे। अपनि भक्ति ते न्यार न कीजे ॥ सुनि ध्रुव वच भे मग्न मुरारी। कही सत्य सुत बात तिहारी ॥ तुम मम पुरि के भे अधिकारी। पै इतनी सिख सुनहु हमारी ॥ तुम बिन मात बहुत दुख पायो। प्रथम राज्य मिल करहु सुहायो ॥ छत्तिस सहस वर्ष जग जीजे। जननी जगति प्रजहि सुख दीजे ॥ अन्त मातु सँग लै मम धामहि। सुख सम्पन्न करिय विश्रामहि ॥ [ध्रुव उवाच] दोहा ॥ सुनि प्रभु वचन प्रमाण कै, बोले ध्रुव अस बैन ॥ मुहिं केवल भक्ती चही,

राज्य नरक दुख देन ॥ १ ॥ [श्रीभगवानुवाच] चौपाई ॥ नहिं नहिं जे अधर्मि अघ करता । राज्य सुनीति रीति परिहरता ॥ ते नृप निरय जाहिं दुख पावैं । धर्मवान नित मम पुरि आवैं ॥ [ध्रुवउवाच] मैं मति मूढ़ महा अज्ञाना । जानत नाहिं कछु नीति विधाना ॥ धर्म्माधर्म्म परहि बनि कोई । तौ तप तेज मोर बिनशोई ॥ [भगवानुवाच] भन्यो नाथ सुनु ध्रुव प्रिय मोरे । राज्य नीति हौं वरणि कहौंरे ॥ मन्त्री मूढ़ न राखहि भूपा । मिथ्या कबहुँ न कहि अनुरूपा ॥ दैकै भँगै न मित्र दुखावै । अन जाने क्यहु अशन न पावै ॥ सेवै विप्र सन्त मुनि देवा । सुत सम पालहि प्रजा जितेवा ॥ मद्य द्यूत पल हिंसा चोरी । द्रोह मोह मद दे रिस छोरी ॥ परधन विष पर त्रिय मातासी । सत्सङ्गति को रहै उपासी ॥ निज पत्नी सन नेह निवाहै । कबहुँ न त्रिय पै शस्त्र प्रवाहै ॥ दोहा ॥ मो सम मम भक्तनु लखहि, तजहि न मेरो ध्यान । सुनहि श्रवण मम यश कथा, जो चहि निज कल्यान ॥ १ ॥ चौपाई ॥ रिपुहि कदापिहु जनि पतियावै । मनको भेद न क्यहू जतावै ॥ मानहि कवि श्रुति वाक्य प्रमानी । कटु न केहु सन बोलै बानी ॥ दान सुपात्रहि दे त्यजि लोभा । जप व्रत सन्ध्या करहि सशोभा ॥ जे नृप ऐसि नीति अनुरागैं । तिन कहँ दोष न किञ्चित लागैं ॥ यहि विधि राज्य करहु ध्रुव जाई । हौं तुम्हरो रहुँ सदा सहाई ॥ सज दिय राज साज भगवाना । दासि दास धन रत्न खजाना ॥ नाना हय गज रथ असवारी । सामा सज दइ सकल मुरारी ॥

लै ध्रुव दल आज्ञा यदुराई । चले हर्ष निज पुर नियराई ॥ गगन बीथि बिहरत मुनि देख्यो । कै तप सुफल आव ध्रुव लेख्यो ॥ ध्रुव पितु पुर गे नारद धाई । लखि नृप ऋषि अति प्रीति सृजाई ॥ दोहा ॥ सादर सिंहासन दियो, षोडश बिधिहि प्रपूज । मुनि मन तोषि नृपाल निज, लीन्ह मनोरथ पूज ॥ १ ॥ चौपाई ॥ कै ऋषि भूपति बिपुल बड़ाई । सुत आगमनिक खबर सुनाई ॥ हरि भक्ती करि सुःख सृजायउ । राज्य चक्रवर्ती त्यहि पायउ ॥ यहि प्रकार मुनि सकर सँदेशा । रमणेउ ऋषि कीर्तत अज देशा ॥ सुनि सह नगर निवासि सिहाये । कुँवर मिलन हित सर्व्व सिधाये ॥ पहुँच्यो सुत समीप जब राई । ध्रुव पग परि बहु विनय सुनाई । माय धाय उर लाय जुड़ानी । प्रेमाश्रुनन्हवयो सुत रानी ॥ पुर जन ध्रुव पूछी कुशलाई । लै आये निज पुरहि बुलाई ॥ बिशुकर्महि प्रभु आज्ञा कीन्ही । कञ्चन पुरी तुरत रच दीन्ही ॥ तहँ निवासि ध्रुव की रजधानी । सुनि नृप चहुँ के भेटे आनी ॥ ध्रुवहि व्याह लाये भल वामा । जासु भयो सुत अति अभिरामा ॥ छत्तिस सहस वर्ष सुख कीन्हा । सुत दै राज्य बहुरि वन लीन्हा ॥ हरि अराधि हरि धाम सिधायउ । मात पितर वैकुण्ठ बसायउ ॥ निश्चल पदवी भइ ध्रुव कार्हीं । अखिल नखत परिकर्म्महि जाहीं ॥ ध्रुव हरि भजि ध्रुवपदवी पाई । जिनको जग यश सुनि तरजाई ॥ इति श्री ललनपिया विरचित रुक्मिणी पाणि ग्रहणे ध्रुव चरित्र वर्णनो नाम सप्तमः सर्गः ॥ ७ ॥

[शम्भुरुवाच] दोहा ॥ कह्यो शम्भु सुन भामिनी, तुव इच्छा अनुसार । सुनयो तुहि ध्रुव यश सकल, राज्य नीति ब्यवहार ॥ १ ॥ सोरठा ॥ त्यजी नीति सोइ कंस, खड्ग बहिन बध हित लियो ॥ मारण चला निशंस, शिच्यो त्यहि वसुदेव तब ॥ १ ॥ [पार्वत्यु वाच] दोहा ॥ नाथ न त्रिय बध उचित तौ, भृगुनायक कस कीन्ह । निज जननी निजकर बधी, सो कलङ्क किन दीन्ह ॥ १ ॥ [शिव उवाच] चौपाई ॥ सुन गिरिजा कारण मन लाई । कहूँ ब्यवस्था सकल सुनाई ॥ श्री जमदग्नि रहे मुनिराई । जल हित निज तिय सरित पठाई ॥ कछु बिलम्ब भा वाहि विधि योगू । ऋषि रिसान त्यहि यह संयोगू ॥ पुत्र बुलै मुनि आयसु दीना । करिय याहि सुत शीश विहीना ॥ परशुराम पितु आज्ञा धारी । वहि छिन हनन कीन्ह महतारी ॥ निज आज्ञा पालक सुत जाना । भे प्रसन्न मुनि विविध विधाना ॥ प्रिय सुत मम रुचि राखन हारे । युग युग जीवहु मोर दुलारे ॥ जो वर चहिय मांगि सो लीजे । जामदग्नि कह पितु यह दीजे ॥ जननि सजीव होइ उठ जागै । मुहि न मातु बध पातक लागै ॥ मोर हनन सुधि माय रहै ना । एवमस्तु कहि कियो सचैना ॥ पितु आज्ञा वश दोष निपाता । पै तिय बध वर्जित सब भाता ॥ [शुक उवाच] दोहा ॥ श्री वसुदेव सिखावनै, सोच समुझ मथुरेश ॥ बहिनरु बहिनोई दुउन, पुनि यह दीन्ह कलेश ॥ १ ॥ सोरठा ॥ लाय आपने सङ्ग, पाणि पदन बेड़ी ग्रसन ॥ कीन्ह तिन्हैं

अति तङ्ग, कारागार निवास दै ॥ १ ॥ चौपाई ॥ दिवै कपाट सांकरिन तारे । बाहर रखवारे बैठारे ॥ दीन्ही आज्ञा भूपति सबहिन । जन्मै मम भगिनी सुत जबहिन ॥ दीजहु मोहि लाय सुत सोई । यामें नेक बिलम्ब न होई ॥ यहि विधि जो देवकि सुत जाये । कंसासुर सब मारि नशाये ॥ दम्पति सुतन शोक दुख पाये । तब निशि दिन हरिसों हित लाये ॥ लखि जन दुखि प्रभु भक्त सुखारे । अष्टम सुत ह्वै हरि अवतारे ॥ घनश्याम तनु छवि सुखदाई । नख शिख शोभा अमित सुहाई ॥ चार भुजा धारी बनवारी । गदा शङ्ख चक्राम्बुजधारी ॥ पीताम्बर तन द्युति अति सोहा । देवकि गृह जन्मत मन मोहा ॥ दम्पति लखि शिशु अद्भुत शोभा । मोहि मुदित भा उर विच छोभा ॥ १ ॥ [शुक उवाच] दोहा ॥ कुँवर न बध सुधि बेधि हिय, लोचन जल झर लाग । छौन छबीली पेखि छवि, उपज्यो उर अनुराग ॥ १ मन मोहनि सोहनि सुरत, छोहन छाहन हारि ॥ त्रिपुराधिपति विलोकि पुनि, को तन सुधि न विसारि ॥ २ ॥ सोरठा ॥ योगी राज महेश, देव नाह सुर सन्तहू ॥ लखि रसरूप सुवेश, को न बिमोहत मनुज कह ॥ १ ॥ चौपाई ॥ सुत जीवन कर लोभ लोभ भर । कछु मन मुदित दुखित कछु ह्वै कर ॥ पति सों देवकि कहत उचारी । अबकी यह शिशु लेहु उबारी ॥ तात मात लखि दुखित कन्हाई । मोहि लियो मन कह्यो सुनाई ॥ जो मुहिं तात बचावन चाओ । तौ नँद गृह गोकुल पहुँचाओ ॥ है श्री यशुमति कन्या जाई । ताहि यहां

लै आवहु धाई ॥ अस कहि प्रभु निज माया टारी । शिशु वपु रूप धरो उहि बारी ॥ लखि शिशु तन बिस्मय दोउ माना । हरि माया को भेद न जाना ॥ खुलगे अपन आप पट तारे । सोय गये सारे रखवारे ॥ निगड़ बन्ध पितु केर बिहाये । लै गुपाल गोकुलहि सिधाये ॥ निशि अँधेरि फुइयन घन बरसै । चलैं बाट जब दामिनि दरसै ॥ दोहा ॥ शीश धरे सुत सूप महँ कीन्हे छांह भुजङ्ग । वासुदेव बसुदेवलै, धावत बेगि बिहङ्ग ॥ १ ॥ चौपाई ॥ पहुँचे यमुना तट ज्यहि बारा । बहै धार कर हाहा कारा ॥ भय वश पग जल बिच नहिं आनह । सुमिरि श्याम प्रविशे यमुना महं ॥ लखि निज पति यमुना त्यहि बेला । बाढ़ी पग परसन भरि हेला ॥ पुञ्ज प्रवाह देखि बसुदेवू । जचिस मीच शिशु आपुन एवू ॥ सुधि बुधि बिगति गयउ घबराई । सोइ हरि चरण दिये लट-काई ॥ छुइ पग तुरतहि यमुन थिरानी । बहन लग्यो मुरवन ते पानी ॥ लै पितु पार गयउ घन-श्यामा । लखि निद्रा वश पुर जन बामा ॥ नँद निकेत नियरतहि ललामा । रखि सुत लै कन्या वहि यामा ॥ प्रबिशे निज मन्दिर ज्यहि बारा । लगिगे त्यहि छिन कुलफ किवारा ॥ परिगे बन्धन मातु पिताके । कन्या लखि दम्पति सुख छाके ॥ गहतहि गोद सुता किलकारी । सोइ जग परे जुहे रखवारी ॥ दोहा ॥ सुनि शिशु बच निशिचर निकर, गे नृपालके द्वार ॥ भन्यो नाथ तुव भगि-नि सुत, भा अष्टम अवतार ॥ १ ॥ (रागिनी पलाशी रूपक ताल में) हरिगीत छन्द ॥ सुनि

कंस खड्ग लै सिधावा आय पट खुलवायकै । कह भगिनि सुत कहँ दई कन्या विनय विपुल सुनायकै ॥ दे बकस सुता न पुत्र भ्राता एक नहिं मान्यो बली । पटकी शिला भइ लोप माया जा गगन राजी भली ॥ भइ बानि नभ अज्ञानि तैं मम नहक हत्या शिर लई । तुव हनन हारो सुर सुखारो ललन गोकुल जन्मई ॥ सुनि कंस ब्याकुल भा बहिन बहिनोइ के चरणन परो । मैं महा खल किय नीच कर्म क्षमापि अब करुणा करो ॥ दय काढ़ि बन्दी भवन ते दोउ कंस दुख दारुण नये । हरि जन्म मथुरा जाय गोकुल शिशु चरित करते भये ॥ १ ॥ दोहा ॥ इतै कंस अति शोच हृदि, हरि हि हनन के हेतु । उत प्रभु पूरण ब्रह्म अज, प्रकटे नन्द निकेतु ॥ १ ॥ श्रीयशुमति जागी जबहि, लखि सुत जन्म सुखार । भरि प्रमोद उत्साहकों, नँद सों कही गुहार ॥ २ ॥ नौबत भेरि नगार झरि, होन लगे सुख ठाट । खबर भई प्रभु जन्मकी, चहुँ व्रज बीथिनु हाट ॥ ३ ॥ [अथ नन्दोत्सव] (राग जङ्गला त्योरा तालमें) हरिगीतिका छन्द ॥ सुनि जन्म श्रीनँदलाल गोपी ग्वाल व्रज मण्डल मही । गृह काज त्यज व्रजराज दर्शन काज नित आवैं सही ॥ कोउ कण्ठ कुँवर लगाय चूमैं बदन हँसि हुलसावतीं । लखि छबि मनोहर रूप तन मन वारि बलि बलि जावतीं ॥ नव नील नीरज गात शिर घुँघुआरि अलकैं शोभतीं । शशि मुख सुत्रा थल भाल भ्रू अलि पंक्ति जनु चित चोभतीं ॥ दृग बाल मृग धौं कमल दल बिनु

कजर कजरारे खरे। अमि गरल मद रस खानि पलकैं मदन सर तीक्षण धरे ॥ शुक नासिका लखि लजहिं गोल कपोल अरुण गुलाब से। श्रुति सुघर मकराकार कुण्डल हरत मन छवि भाव से ॥ मुख मञ्जु बिद्रुम अधर मधुरी हँसन मनु मुहनी भरी। युग कन्ध बाहु बिशाल अभरन नव रतन शोभायरी ॥ कर कमल कोमल अँगुरि चम्पक कली नख मोती दिपैं। कर कनक कङ्कण मणिन मानिक देखि द्युति रवि शशि छिपैं ॥ मृदु कम्बु ग्रीवा गुञ्ज कठुला धुकधुकी नौनग जड़ी। मखतूल माखन ते मुलायम उदर कटि किङ्किणि पड़ी ॥ जिमि छिलित चीकनि कदलि जङ्घा गुल्फ अति छवि राजतीं। पद पद्म नूपुर मदन दुन्दुभि तड़ित ध्वनि मनु बाजतीं ॥ तनु भक झँगुलिया पिअरि मनु कञ्चन कसित मणिनील सन। अँग अँग अनोखी छवि त्रियाँ बलि जायँ लखि यशुदा ललन ॥ १ ॥ दोहा ॥ लै लै वृन्द विपुल वधू, सज सज साज शृँगार ॥ कोउ दर्शन हित धावतीं, कोउ कर रहीं विचार ॥१॥ [सख्युवाच] (रागिनी काफ़ी तीन तालमें) पद ॥ चलो चलो सखी नँदके द्वार, कन्हाई जन्मेरी यशुदा के गृह, एरी सखी एरी सखी सज शृँगार, भरु दूब सों थार ॥ (अन्तरा) कृष्णपक्ष रोहिणी, नक्षत्र आठैं बुधवार, जन्म लियो नँदलाल, देवें सखी देवें सखी बधाई भिगड़, लावें हीर हार ॥ १ ॥ जुरत समाज धाई, नँदके भवन आई, प्रेम रँग बरसाई, दीन्हीं सखी दीन्हीं सखी बधाई विमल, पायो धन अपार ॥ २ ॥ दाई हँसि हँसि नेग

माँगति करत रारि, वन्दीजन भीरभार, ढाढ़ी भिक्षुक ढाढ़ी भिक्षुक, मचलरहे माँगैं नेगचार॥ ३ ॥ काहू गज ग्राम गण, वसन तुरङ्ग पायो, जो जो जाके मन भायो, वर माँगे वर माँगे, ललन यही दरश दीजै मुरार ॥ ४ ॥ चौपाई ॥ कोउ लै हरदी दधिहि मिलावैं। दधिकांदों की कींच मचावैं॥ लै लै ललित विविध विध बाजे। सजि सजि सुघर सहेलि समाजे ॥ बीन मृदङ्ग चङ्ग मोहनाला। तूर तान पूरा करताला ॥ गहि डफला डफ ढोल सरङ्गी। भाँभ मँजीर मञ्जु मुरचङ्गी ॥ बेंन रबाब बांसुरी बेला। मौहर ओद सितार सुहेला ॥ यौवन योम प्रेम मद मातीं। शङ्ख भेरि घड़ियाल बजातीं ॥ कोइ नाचैं नव नव गति काढ़ी। कोइ गावैं रस आनँद बाढ़ी ॥ कोउ निज प्रीति जनावैं गाढ़ी। कोइ नँद महर रिझावैं ठाढ़ी ॥ यशुमति सुवन सरहि सन्मानैं। दें नँद दान जौन जोइ भानैं ॥ पग अँगुष्ठ मुख दिये कन्हाई। लखि छवि युवति छकित बलिजाई ॥ दोहा ॥ असि शिशु मूर्ति उपासना, नेम प्रेम अनुराग। धारक कुञ्जर वदन पितु, द्वितिय पर्म्म जन काग ॥ १ ॥ रामकृष्ण जब जब जगत, जन्मै ले अवतार। जब लगि बालक भाव वपु, धारैं कृष्ण मुरार ॥२॥ नव नव वेष बनायकै, काक भुशुण्डि महेश। निज निकेत त्यजि दर्श हित, आवैं नित व्रज देश ॥३॥ इति श्रीरुक्मिणीपाणिग्रहणेगोकुलकृष्णजन्मोत्सववर्णनोनामाष्टमःसर्गः ८॥

[श्रीशुक उवाच] सोरठा ॥ अब कछु अन्य प्रकर्ण, सुन महिपति वर्णन करूं। जन्मे हरि

अथ हर्ष, सुनि मन मग्न महेश भे ॥ १ ॥ यक दिन शम्भु सुजान, मन वच क्रम हरि हित पगे । गोद लेन भगवान, गये नन्द यशुमति भवन ॥ २ ॥ (रागिनी परज चारतालमें) ॥ कवित्त ॥ जटाजूट सोहै शिर गङ्ग की तरङ्ग वर अङ्ग अङ्ग चिता भस्म लेपन सुहाई सो । तीन नेत्रवाला त्रयशूल लै निराला ताप नाशन कराला मुण्डमाला उर लाई सो ॥ योगिया बनाय वेष बाघं-बरलै सुवेश श्रीनँदलल्लन द्वार शृंगिलै बजाई सो । जानि सन्तराई उठि धाई यदुराई माई भिक्षा मित लाई लीन्ह शम्भु सुखदाई सो ॥ १ ॥ (राग कलांगड़ा इकतालामें) कवित्त ॥ भिक्षा भेटि भाषी कर जोरि अभिलाषी मुनि आशिष वरौ ललन मोर चिरजीजिये । सुनि शिव ज्ञाता वच कहो अहो माता सच देखौं तुव लाल लाय गोदी मम दीजिये ॥ करौं यों उपाई होय अमर कन्हाई सुनि माई सुत ल्याई कह्योयोगी सन लीजिये । जातै हर अङ्क लखि छल चिंघरे अलख छीन हरिहर झँखि भनि गौन कीजिये ॥ २ ॥ चौपाई ॥ जा योगी निज निलय सिधाई । मेरो सुत तुम दियो डराई ॥ सुनि दुर्वचन यशोमतिजीके । शङ्कर दुख मान्यो बिचही के । द्वार आय सोचन शिव लागे । क्यहि अपराध मोर दुख जागे ॥ ध्यावनलगे प्रभुहि त्यहि बेरा ॥ कौन दोष लखि मोहिं निदेरा ॥ परम भक्त मुहिं वेदन गाई । मम जीवन धन सदा कन्हाई ॥ रही निरन्तर मुहिं तुव भक्ती । मम तप फल सब भयउ विरक्ती ॥ यशुदा समहु न भक्ति हमारी । वृथा मोर

जीवन तप भारी ॥ योगी ह्वै जग नाम धरायो । हरि पद रति रस लेश न पायो ॥ मो सम कोउ अभागि जन नाहीं । धिक् धिक् शिव कीन्हों मन माहीं ॥ हौं निज अङ्क नेक प्रभु लायो । अप-राधी लखि मुहि निंदरायो ॥ दोहा ॥ कह्यो शम्भु भरि दृगन जल, शीश टेकि करजोरि ॥ तमहु नाथ जो लाग मम, जनकी निरख निहोरि ॥ १ ॥ चौपाई ॥ तुम अन्तर्गति जाननहारे । किमि मोसों छलछन्द पसारे ॥ सृजत नशावत तुम जग पाला । तुम्हरे डर डरपत नितकाला ॥ सो प्रभु तुम लखि मोहिं डराने । मम अपराध कि तुम छलसाने ॥ मुहि कारण कछु परत जनाई । जो प्रभु मोसन गयउ रिसाई ॥ पुनि अचरज हिय विचरत आना । भक्त विमुख कबहुँ न भगवाना ॥ जन अनुचितहु निवारत देवा । जन सन कबहुँ न राखत भेवा ॥ यासन समुझ परत मुहि नाथा । निश्चय कोउ मम खोरि अगाथा ॥ तुव वियोग दुख गति मति नासी । हीनी हिय की अ-खिल हुलासी ॥ चित चिपटात न चूक चकावत । कोटिन यत्न न धीर उपावत ॥ हा शठता धिक् चातुरताई । धनि प्रभु तुव माया निपुणाई ॥ (राग अड़ाना त्यौरा तालमें) हरिगीतिका छन्द ॥ वर भाग्य भगवन् श्रेष्ठ निपुण स्वभाव समर सुशूर हो । संग्राम दुर्जय शत्रुमर्दन युगान्ताग्नी भूर हो ॥ दुर्द्धर्ष दीन परमगते जन व्यथित अभय प्रदायिने । यश पात्र हे विज्ञानबलनिधि कोह मोह नशायिने ॥ हे कुशल आलय अप्रमेय कृतज्ञ धीरात्मा अहो । विग्रह विनाशक विपुल

विक्रम सत्पराक्रम निधि लहो ॥ हे जगतपालक लालनेश कलुष कदन करुणा गरे। बहु वीर्यवान् कुलीन लीलावपु विलक्षण सागरे ॥ हे सत्वगुणसम्पन्न जनहित निरत अतिहि प्रशंसनिय। रवितेजसम तेजस्वि शशिसम तुल्य अखिल सुलोकप्रिय ॥ अनमित कुबेर समान त्रिभुवन भूप राघव विष्णु सम। हे सत्यवादी मधुरवाचक बहु बृहस्पति मूर्ति नम ॥ कन्दर्प सुभग स्वरूप ते वर मूर्तिमान् प्रभागुरे। दुख शान्ति कारक समय ज्ञापक क्लिष्ट क्रोधहु त्यागुरे ॥ शुभ तेजसी श्रुतिकर्मकारी सत्यसङ्कल्पी भले। हे प्रभो शम दम क्षमा धर्म्म धृती निखिल पति भूतले ॥ प्रिय दरश बुद्धि प्रमत्त संशय रहित शास्त्रज्ञहु हरे। विश्वास सिन्धू सर्वहितु अपकारि दण्डक गुणगरे ॥ नहिं चिन्तनीय प्रभाव कल तव धारणा शक्ती सदा। कुल धर्म्म नियमाधिप स्वइच्छा चारि यादवपति यदा ॥ विपरीत वृत्ति विनाशने मनुजेश ईश समज्ञ प्रभु। अनुचित निवारण नीतिनिपुण नम्रचित सर्वज्ञ प्रभु ॥ जय जय अधर्म्माङ्कुश अहो सर्वत्र कारज सिध करन। रत शरण लौकिक वित्त प्रभु अब क्षमहु तुव विनवत ललन ॥ १ ॥ चौपाई ॥ हौं तुम्हरो अपनो तुहि जानों। दीन वचन जब शिव अस भानों ॥ भई गगनवाणी तेहि बेरा। शिव तुम सम प्रिय कोउ नहिं मेरा ॥ तुव छल निरखि हमहुँ छल धारो। परमभक्त मम उमहिं विचारो ॥ मोर जन्म नहिं वाहि सुनायो। ताबिन मोर दरश मन लायो ॥ विस्मृत भा कह पालिल हाला। राम

जन्म कर कठिन कसाला ॥ लै प्रेमानँद मग्न विशाला। दियो न मम प्रसाद निज बाला ॥ कपट विलोकि उमा इमि शापा। तुव निर्माल्य अभक्ष्य प्रथापा ॥ नरक जाय भक्षक हो श्वाना। अब छल कर का चहहु कमाना ॥ ताते शिव कैलास सिधावो। मोर जन्म सुख उमहिं सुनावो ॥ तव मन आशा पूरण होई। हर्षे शिव सुनि विस्मय खोई ॥ दोहा ॥ हरि हरि हर सुमिरत चले, वाराणसी सिधार ॥ आवत प्रिय शिव मग्न लखि, हुलसी हृदय अपार ॥ १ ॥ सादर उठि आसन दियो, अर्घ पाद्य सह प्रीति ॥ आज नाथ कस परम मुद, समझाओ सब रीति ॥ २ ॥ [महादेव उवाच] (रागिनी झँझोटी त्रैताल में) सवैया ॥ शम्भु कह्यो सुन शैल सुता मम जीवन प्राण अधार दुलारी। आनँद हेतु कहौं ललने ब्रज जन्म लियो नँद भौन विहारी ॥ प्रात प्रिया धरि मोद हिया चलिये पुरि गोकुल वेगि पधारी। लोचन लाहु लहो उलहो दरशो परशो अज ब्रह्म ललारी ॥ १ ॥ दोहा ॥ करिय प्रिया निज सुफल तप, योग जन्म गति स्वल्प ॥ सुनि प्रमुदी मन महँ प्रिया, भई निशा जिमि कल्प ॥ १ ॥ चौपाई ॥ भोर भयो उठि गिरिजारानी। बोल लई सहचरी सयानी ॥ विमला रमा इन्द्र सुर वामा। विविध अप्सरा सज अभिरामा ॥ रूपराशि छवि अमित ललामा। लखि छवि फव लाजैं रति कामा ॥ सजि सजि सुघर शृंगार अपारी। बनी गोपिका देवी सारी ॥ कनकन थार जड़े मणिहीरा।

साजे गहिर गुलाल अबीरा ॥ केशर कस्तूरी रँग रोरी । दधि हरदी सों भरी कमोरी ॥
ताम्बूल पूगीफल श्रीफल । हरित दूर्वा साजि कमल दल ॥ लैलै साज पखावज तबला । गाय
रिझावैं नृत्यहिं नवला ॥ यहि बिधि गावतिं अनँद बधाई । नन्दद्वार सब सुरत्रिय धाईं ॥ प-
हुंचीं नन्दभवन जेहि बारी । लखि यशुमति भइ परम सुखारी ॥ हितकर उठि गहि गहि कर
चादर । कनक पटन बैठारी सादर ॥ दोहा ॥ जिमये षटरस व्यञ्जना, नाना बिधि सामान ॥
जल गुलाब अचईं अमित, अर्पि इलाची पान ॥ १ ॥ चौपाई ॥ सुन नवेलि नारिन आगमना ।
दर्शाशाभिलाष भइ कमना ॥ कोश चुरासी ब्रजमण्डलमा । चहुँ दिश धूम परी प्रति थलमा ॥
मोद उमङ्ग रङ्ग रस रातीं । श्री प्रभु प्रेम पुञ्ज मदमातीं ॥ सज सज सुन्दर साज सोहने । बि-
बिध वर्ण रँग रूप मोहने ॥ तेहि क्षण आईं ब्रजकी भामिनि । बदन मदन छवि फव द्युति दा-
मिनि ॥ अमित प्रकार भीर नँद गेहा । गावैं हरिगुण सहित सनेहा ॥ हुलसैं लै गुपाल को गोदा ।
दधि केशर कर कींच समोदा ॥ उड़ैं अबीर गुलालन धूरा । युत केशर कस्तुरी कपूरा ॥ रजैं देव
धर गोप शरीरा । शुभग शृंगार सजे शिर चीरा ॥ बन गन्धर्व वेद हरि ढारीं । राग रागिनी कुल
परिवारी ॥ दोहा ॥ गावैं अनँद बधावरे, नइ नइ भातिन भानि ॥ सुरपुर सम सुख महर घर,
नचि नचि नैंन ... ॥ १ ॥ (राग जँगला त्रेताल में) सोहिला पद ॥ मुहि नन्दामहर सुत

मोहिलारे । मन मोहिला मोहिला मोहिला महर सुत मोहिलारे ॥ (अन्तरा) साँवरी सुरतिया
वारो, पट पीत सुभग तनु धारो, मदन छबि सोहिलारे ॥ १ ॥ मोहिनी मुरतिया मानों, जादू
टोना चितवन जानों, अजब ढँग ओहिलारे ॥ २ ॥ कोइ टीको भाल हरि देवै, कोइ लेय गोद
पद सेवै, मगन त्यज द्रोहिलारे ॥ ३ ॥ लखि पती रमणीया, उरलै हुलसानी प्रीया, न कोउ यह
जोहिलारे ॥ ४ ॥ लखिभाव उमा मुसक्यानी, प्रिय ललन मनहिं सनमानो, मचो ब्रज सोहि-
लारे ॥ ५ ॥ [पार्वत्युवाच ॥] दोहा ॥ श्रीलक्ष्मी पद्मालया, पद्मा कमला नाम ॥ रमा लोकमा
सिन्धुजा, इँदिरा प्रिय घनश्याम ॥ १ ॥ हृदय पङ्करुह बिच सरहि, भरि विनोद अनुराग ॥
उचरि उमा कहि धनि रमा, धनि सुहाग तव भाग ॥ २ ॥ (राग कान्हरा दरबारी त्रैतालमें) पद
बधाई ॥ आज नँद भवन बधाई बाजे । यशुमति गृह सुख सकल सम्पदा साक्षात् प्रभुराजे ॥
(अन्तरा) कञ्चन रजित पात्र दूर्वा दधि, केशर कस्तूरी मेलित मधु, अबिर गुलाल इतर नाना
विधि, वर्षाजिर नँदराजे ॥ १ ॥ विमला रमा उमा सुरनवला, गवैं बधाई सब ब्रज अबला, कोई
डफ मृदँग बजावें तबला, नव नगारगनगाजे ॥ २ ॥ तोरण ध्वज पताक चामर वर, छत्र बँदन-
वारी ढिग ढिग पर, गजमुक्तन पुर चौक मनोहर, सुरपुर सुख जनु आजे ॥ ३ ॥ नृत्यैं गुनि
गन्धर्व अलापे, श्रुति प्रसङ्ग बुध कवि यश जापे, नन्दललन ब्रज जन्म धरापे, भरैं सुर सुमन

समाजे ॥ ४ ॥ (राग केदारनाथी मल्लार त्रैतालमें) पद बधाई ॥ आज माई सरस बधाई बाजे। (अन्तरा) श्रीपति जगद्वन्द्य यदुराई जन्मलियो ब्रजराजे ॥ १ ॥ भवन चतुर्दशकी सुख सम्पति नँदगृह गोकुल राजे ॥ २ ॥ सुरसुरत्रियबनि ढाढ़ि ढाढ़िनी नृत्य बजैं बहुबाजे॥३॥ नारदादि शारद बीणाधुनि गगन दुन्दुभी गाजे ॥ ४ ॥ सुर पुर मँगलाचार सुमन झरि बरसत सुरन समाजे ॥ ५ ॥ नन्दललन यश भनत वन्दिजन धनि घरि यह दिन आजे ॥ ६ ॥ (राग शारङ्ग में) पद ॥ नँदरानी ढोटा जायो बधावा लाई ढाढ़नियां ॥ (अन्तरा) ढाढ़नियां गावत गीत मचल रही डोमनियां। नाई दाई झिगड़ मचाय नेग मांगे नाइनियां ॥ १ ॥ बन ठन कर ढाढ़ी डोम राग अरु रागिनियां। आई सुरत्रिया अभिराम धारिवपु ग्वालिनियां ॥ २ ॥ बाजत वरवेणु मृदङ्ग पखावज हर मोनियां। नृत्तें श्री हरिगुण गाय सकल बृजभामिनियां ॥ ३ ॥ सुर ब्रह्मा विष्णु महेश शेश महिधारिनियां। इन्द्रादि इन्दुछवि निरखि जाऊँ बलिहारिनियां ॥ ४ ॥ धन रत्न निछावर नेति करत नँद नँदरनियां। श्रीनन्दललन चिरजियो अशीसैं त्रिभुवनियां ॥ ५ ॥ (सोहिल राग शारङ्गमें) पद ॥ शुभघड़ि सुन्दर दिन आज कुमर जायो नँदरनियां ॥ (अन्तरा) तिथि आठैं बर बुधवार नछत्तर रोहिनियां। शुभभाद्रपक्ष अँधियार अर्द्धगत यामिनियां ॥ १ ॥ लागत खन हरषन योग मुहूर्त सुहावनियां। त्रिभुवनपति लियो अवतार

सकल जग तारनियां ॥ २ ॥ चलु २ चलुरि बधावा देवन बीर बजाजिनियां। सज अम्बर पीतपटोल सुघरसी भूलनियां ॥ ३ ॥ चलु साज सोहिलो बीर सुशील सुनारिनियां। लै सुन्दर रत्नन जटित सुभूषण कंचनियां ॥ ४ ॥ सज केशर अबीर गुलाब सहेलि पसारिनियां। यशुदा हित सोंठि पगाउ कन्दकी चासिनियां ॥ ५ ॥ चलु सुघर बधाई साज सहेलिन गन्धिनियां। चोया इतरन सरबोर सींच नँद आँगनियां ॥ ६ ॥ सजु सुवरण चांदीवर्क लसेती बीड़िनियां। लय चलिय बधावा देवन बीर तँबोलिनियां ॥७॥ मणिमाणिक रतन अमोलिक हीरनकी कनियां। चलु साज जौंहरिन बीर बधावा दरशनियां ॥८॥ सुन एरी भटू सुकमारिन गोटेवारिनियां। पट साज बादला किरन झालरैं लटकनियां ॥९॥ चलु साज सोहिलो मनोहर मालिनियां। लय सुमन सेहरा हार माल अनमोलिनियां ॥ १०॥ एरी मेरी छैल बृजवासिन बीर अहीरिनियां। कर मृगमद केशर मेल कींच दधि कांदनियां ॥ ११ ॥ तिल तैल मनोहर घार धारि बर भाजनियां। जब्बातन मर्दन कोलै चलुरी तेलिनियां ॥ १२ ॥ सुन एरी बीर मतिधीर सुघर हलवाइनियां। सजु व्यञ्जन मधु निमकीन बधावा कारनियां ॥ १३ ॥ अरी एरी छैल छमकीलिन ऋतुफल वारिनियां। फलदै कर लहु फल चार प्रमोद विहारिनियां ॥ १४ ॥ चलु साज बधावादेन बीर मुगलाइनियां। मेवा दय दत्त महत्व पदवी लहु पावनियां ॥ १५ ॥ सुन शाकवणिक की नारि साजु तरकारिनियां। दय साग पाग

अनुराग भाग मन भावनियां ॥१६॥ लय चल भरि भाजन भूरि प्रपूर कुम्हारिनियां। घट गागर कूमर दियल सूजहु सुख पूरनियां ॥१७॥ चकई लटु डोर चटूइ झुंझुना फिरकनियां। चलुसाज बधावादेवन बीर बिसातिनियां ॥ १८ ॥ सुनु रजकिन ढोटा जायो यशोमति महरनियां। चलु जच्चा के वसन पखार धनी हो निर्धनियां ॥ १९ ॥ रचु पातर पातर पात पातरी अरु दुनियां। चलु लय चल यशुमति भौन सहेलिन बारिनियां ॥ २० ॥ भरि कलश कालिन्दी नीर सगुन सुख दाइनियां। लय चल नँदद्वार उतार लाह लहु महरनियां ॥ २१ ॥ गुहि रेशम बांधी झबा कमर की करधनियां। पहिराव नन्दसुत आंग मांगवर पटविनियां ॥ २२ ॥ तुहि देत सँदेशो सुखद अरी सुन धनुकुनियां। यशुदा सुत जन्मो आज तिहूं पुरको धनियां ॥ २३ ॥ धनि या घड़ी लग्न मुहूर्त मनोर्थ पुरावनियां। हरि दरशो परशो धाय सकल ब्रजबासिनियां ॥ २४ ॥ भयो पूर्ण ब्रह्म नँदललन जन्म सुख सारनियां। वरषैं सुर सुमनन माल त्रिपुर जय जय भनियां ॥ २५ ॥ इति श्रीसोहिलापचीसी समाप्ता ॥

चौपाई ॥ यहि विधि प्रति दिन रहै अनन्दा। जबते नँदगृह मे ब्रजचन्दा ॥ रुद्राणी सुरतिय इन्द्राणी। वपुधरि आवहिं ब्रज ब्रह्माणी ॥ बाल गुपालहिं दरशैं परशैं। कृष्ण खिलाय गोद हिय हरशैं ॥ आय नन्दगृह ब्रज त्रिय मोदैं। प्रभु त्यजि निलय चलत मन

रोदैं ॥ कछुक दिवस गत मे शिवस्वामी। हरिदर्शन लोभी वसुयामी ॥ योगीवेष सजायउ सुन्दर। करत्रिशूल डमरू शृङ्गी वर ॥ विजया विमल छके रँगराते। हरि गुणगाते डमरु बजाते ॥ चिता भस्म तनु ब्याल विशाला। मुण्डमाल उर तनु मृगछाला ॥ दृग ललाम त्रय मस्तक चन्दा। चले शम्भु ब्रज सहित अनन्दा ॥ शिव आगमने जान मुरारी। मात गोद रोपरे चिंहारी ॥ दोहा ॥ यशुदा चौंकपरी चकित, कुँवर रुवाई पेखि ॥ गति मति विगत बिहाल बहु, प्रभु मुख रही परेखि ॥ १ ॥ चौपाई ॥ जादू टोना विविधहिं भाँता। यन्त्र मन्त्र पढ़ फूँकहि माता ॥ चुपहिं न लालन जननि चुपावै। नाना बिधि बहु लाड़ लड़ावै ॥ बोलि वैद्य बुध ज्योतिष स्याने। करि सब निज निज यत्न थकाने ॥ श्री हरिकी नहिं मिटहि रुवाई। लखि सुतदशा मातु अकुलाई ॥ नँदद्वारे त्यहि छिन शिव गयऊ। शृङ्गी नाद बजावत भयऊ ॥ अतिथि द्वार आवा यह जाना। गई महरि योगी गृह आना ॥ आदर भाव बहुल विधि दर्शा। पूजि विनय जुर पगकर पर्शा ॥ कह्यो अबहिं की बात यशोदा। हौं सुतलीन्ह रही निज गोदा ॥ औचक रोवन लग्यो कन्हाई। चुपै न कह कीजै ऋषिराई ॥ भन्यों शम्भु सुन यशुमति रनियां। आपन सुत दीजै मम कनियां ॥ करहुं यत्न अस सब दुख जाई। भल हो अमर तोर सुत भाई ॥ दोहा ॥ सुनि शिववच सुखदाय अति, यशुमति सुतको लाय ॥ योगीराज महेशकी, दियो गोद

पधराय ॥ १ ॥ चौपाई ॥ जातहि शम्भु अङ्क नँदलाला । चुपे कान्ह मुसके तत्काला ॥ साजे शिव उर मुण्डन माला ॥ ताहि देखि मग्नहिं गोपाला ॥ शशि ललाट शोभा हरिजोहैं । कबहुँ जटन गहि शिव मन मोहैं ॥ मृगछाला बाला बृष छैला । छवि विलोकि विहँसहिं मुख फैला ॥ कबहुँ शृङ्गि मुख लोहिं लगाई । देहिं पगन डमरू ठनकाई ॥ मन्द मन्द हँसि शिवमुख हेरैं । छिन कलोलकर कर गल गेरैं ॥ किलकि गहत छिन कांध ब्रजेशू । कनियां लेत चढ़ाय महेशू ॥ यहि विधि हरकी आश पुजाई । जननि अङ्क नहिं जायँ कन्हाई ॥ जबहिं मात शिवसों सुत लेवै । नहिं आवै तुरतहि रो देवै ॥ यदि बहु विधिहि पोट फुसलाये । तब हरि जननीगोद सिधाये ॥ (राग दिवसी पूरिया झूमरा ताल में) हरिगीतिका छन्द ॥ लै डमरु शम्भु बजाय नृत्ये गाय हरिहि रिझावते । ज्यों ज्यों करैं शिव नृत्य ताण्डव श्याम त्यों हुलसावते । भइ मग्न यशुदा सोंचि मन कह योगिया को दीजिये । इन्ह कियो नीको ललन मन धन दै कछुक यश लीजिये ॥ नँदरानि कह्यो बखान बाबा अब न बहु श्रम लागिये । जो भाय योगीराज सो मन मनी भिक्षा मांगिये ॥ १ ॥ [शुक उवाच] सोरठा ॥ सुनि यशुमति मृदुबैन, बोले शिवयोगी यही ॥ मन मानों कहिदैन, तौ यह भिक्षा दे हमहिं ॥ १ ॥ चौपाई ॥ अन्न न धन पट भूषण इच्छा । अनहोनी नहिं मांगहुँ भिक्षा ॥ आन परहुँ कहुँ तोर भुवन को । दिजिय गोद मम

अपन सुवनको ॥ तोर कृष्ण मम जिय प्रियलागा । गोद खिलावन मन अनुरागा ॥ यासों यह वर मांगौं तोसो । भरि हामी यशुमति शिव तोषो ॥ गावत हरिगुण आनँद बाढ़े । अखिल दाप दुख हियते काढ़े ॥ लै वर वाराणसी सिधारे । नित आवहिं शिव यशुमति द्वारे ॥ नित हरि गोदि खिलावैं हरसैं । बिरह व्यथित जावैं नँद घरसैं ॥ प्रेमैं के वश सदा कन्हाई । भक्तन कर बिन दाम बिकाई ॥ जन मन मन्शा सब विधि पूरैं । सदा सहाय रहैं नहिं दूरैं ॥ सदा मोहनहिं भक्ति पियारी । जनप्रण रक्षक रोष बिसारी ॥ [दृष्टान्त] दोहा ॥ हरि कीर्तन में निष्ठमति, यक हरि दास पुनीत ॥ कर्म्म धर्म्म हरिभजन प्रण, त्यजै न साधुन रीत ॥ १ ॥ चौपाई ॥ तीर्थ भ्रमण कर नरतनु शोधै । श्रीहरिमय जड़ जङ्गम बोधै ॥ नित्य नियम बन्धन प्रतिकालै । थहत दिवस पग एक न चालै ॥ यक दिन भ्रमत क्षुधित वनमाहीं । छैगा सान्ध्यसमय मुनि काहीं ॥ लै टिकास विश्वासि वनैमाँ । लागु अराधन हरिहि मनैमाँ ॥ क्षुधा तृषा पीड़ित उहि ठामा । गे विहाय यामिनि युग यामा ॥ श्री हरि दुखित देखि निज दासा । त्यजि अहिसेजहि भयउ उदासा ॥ पद्मा विकल विलोकि पतीको । पूछ्यो हेतु बिरचि विनती को ॥ कहैं प्रिया प्रति प्रभु सोइ कारण । मँग्यो भक्त हित अदन अहारण ॥ प्रभु जनवत्सल जान स्वमाया । वहि क्षण सद्य भक्ष निर्माया ॥ अशन थार लै श्री युत जोऊ । धाये नांगे पायँन दोऊ ॥ गे जन ढिग भख

भाँति अगाथा। देखि चकित मुनि मग्न सनाथा॥ दोहा॥ तुष्ट पुष्ट विधि दास हिय, रमारमण निज हस्त॥ अमित जन्मके अघ अब, तासु कीन विध्वस्त॥ १॥ सोरठा॥ दर्श पर्श नहिं स्वामि, प्रेम भाव भरि भक्ति युत॥ कीन्हिस श्याम प्रणामि, वार वार यश वरणि बहु॥ १॥ चौपाई॥ दै प्रभु धीर पीर हरि जनकी। गहि मग कमला कृष्ण भवन की॥ दृढ़ विस्तम्भ[1] अचल निज धर्म्मा। वदत वेद वेदाङ्ग सुकर्म्मा॥ सतो रजो तम रुचि नहिं पर्शी। ब्रह्म विचार व्याप्त समदर्शी॥ इन्द्रिय देहिं मृषाङ्ग महाना। कपट प्रपञ्च विहीन प्रधाना॥ सन्त शासना सहनशीलता। परहित हितू प्रकृति सुशीलता॥ परम धर्म्म सत्कर्म्म परायण। लखत सकल विधि सबै नरायण॥ सदा शांति रस चाखन हारे। श्रीप्रभु के गुण भाषन हारे॥ शुभ्र समान भाव मञ्जुल मति। रहत प्रमत्त मध्य हरिपद रति॥ सरल स्वभाव नम्रचित जिनके। मिष्ट वचन दातव नित तिनके॥ करुणारूप अनूपै मानों। जिन्ह इमि चिह्न साधु तिन्ह जानों॥ दोहा॥ जन मानाग्रे मुनि सुरन, वामाङ्गिहु अभिमान॥ पलक मात्र नहिं सहिसकैं, खण्डैं श्री भगवान॥ १॥ सोरठा॥ धृतराष्ट्रात्मज सेहि, जीतेगे युत कपट जिमि॥ पाण्डव सह त्रिय देहि, हारे वनवारे भये॥ १॥ लाक्षादिक भयपूर, द्रुपदि चीर हारण समय॥ रक्ष किये गे भूर, श्रीश कृपा

[1] विश्वास॥

हि कटाक्षकर॥ २॥ चौपाई॥ द्रुपदसुता युत पाण्डव पाँचो। वनवासहिं गहि हरि हित साँचो॥ एक समय औचक अतिशैरी। दुर्योधन इनकर बड़ बैरी॥ ताहि मिटाने कहुँ दुर्वासा। साठ सहस्र लिये सँग दासा॥ करि प्रणाम बहु हित दर्शावा। नम्रहोय इमि वचन सुनावा॥ महाराज पाण्डव बहु दिन सन। चिन्तत तुम्हैं दिये तुवपद मन॥ आज नाथ तिन्ह निलय सिधैये। सहहित भोज्य जाय तहँ पैये॥ सहज स्वभावहि गहि नृप वाचा। मुनि सशिष्यजा पाण्डव जाचा॥ ऋषि विलोकि पारथ भयभीते। करि प्रणाम व्याकुल भे हीते॥ अशनाधार चुके मुनि आगम। अब न कुशल विधि होत लहत मम॥ मुनि स्वागत करि कुटी सिधाये। मन मलीन बैठे शिर नाये॥ वाम विलोकि उदास अनन्ता। द्रौपदि प्रश्न कीन्ह प्रति कन्ता॥ [पाञ्चाल्युवाच] दोहा॥ स्वामिन् क्यहि आगमन भा, किमु मलीन मनमाहिं॥ केहि कारण शङ्कित हिये, मौनित दुख मोकाहिं॥ १॥ सोरठा॥ तब पाण्डव इमि भानि, साठसहस शिष्यन सहित॥ दुर्वासा रिसखानि, आयउ असमय विपद भइ॥ १॥ (रागिनी पहाड़ी त्रैताल में) सवैया॥ है न चरी बखरी कुछ भोजन जो मुनि दै सन्मान परैंगे। वे ऋषि रोषनिधान प्रिया अचये बिन शाप रिसाय बरैंगे॥ क्या असमै अति घोर उपाय न चालसकै कछु काहकरैंगे। शोच यही मन पोच भयो ललनेश किये कृत आज मरैंगे॥ १॥ चौपाई॥ द्रुपदसुता सुनि

बोल उचारी । नाथ धीर धर हो न दुखारी ॥ मज्जन करहिं कहहु मुनि सेती । करिय बचाव वार पति एती ॥ करहिं सहाय कुशल व्रजस्वामी । जन दुखमोचन अन्तर्यामी ॥ सुनि त्रिय लिख मुनि जाय सुनाई । स्नान ध्यान करिये ऋषिराई ॥ हौं अहार बनवावत ताजे । यथा विधिहि समस्त तुम काजे ॥ सुनि मुनि पाण्डव बैन विशाला । गे सुरसरि मज्जन तेहि काला ॥ द्रुपद-सुता हरिपद अनुरागी । मन वच क्रमसों हरि हित पागी ॥ अवश दुखित चित करुणाबानी । धरि उर श्याम रूप सुखदानी ॥ वार वार विनये करजोरी । महिसुर टक बहोरि बहोरी ॥ नाथ अनाथ सनाथै काजा । वेगि सहाय करिय व्रजराजा ॥ चीरहरणत्यहु यह दुख दूनो । विनु कण अन्न भवन मम सूनो ॥ ऐस समय मो दीन अवासा । रोषकोष आयउ दुर्वासा ॥ जो न अशन मुनि पाइस मोसू । तौ शापैगो किमि सन्तोसू ॥ अब मम लाज नाथ तुव हाथा । दासि जान प्रभु क-रिय सनाथा ॥ बार बार भरि वारि विलोचन । बूड़न लागि दासि निधि सोचन ॥ सुनि करुणा वच श्रीदरपानी । प्रकट भये तिहि क्षण प्रभु आनी ॥ हरि हिय हरण रूप लखि गोरी । प्रमुदि धैर्य धरि द्रुपदकिशोरी ॥ दोहा ॥ साष्टाङ्ग दंडवत् सहित, प्रेमिक पुलकित गात ॥ हितसानी बानी विरचि, सन्मानी नँदतात ॥ १ ॥ सोरठा ॥ सरहत भइ निज भाग, जनवत्सलता श्याम बहु ॥ गद्गद मृदु मुद लाग, भाग भाग्य दुख समुझि हिय ॥ १ ॥ (राग यामिनी पूरिया चारताल

सवारी में) कवित्त ॥ आतुरावलोक यज्ञसेनी हिय शोक थोक अधिप त्रिलोक कह्यो काहे मुहि यादो है । शरणेश बछल को सांचोही सनेह लेव झपट लपट पग नैन अम्बु साँदो है ॥ हाहा बहु भाति अकुलानि गत मान जानि नन्द के ललन सन मानि यों समादो है । तोहि दुखी जानो कछु मानो ताहि हीय आनो क्षुधित हूँ भक्ष्य दय रखु मरियादो है ॥ १ ॥ चौपाई ॥ सुनि तुव टेर त्याग गृह धायउँ । दौरत विह्वल तो ढिग आयउँ ॥ जोश खमोश होश हौं अनदम । भे भावज अँग शिथिल अखिल मम ॥ बिन भख भखे भखो नहिं जाई । प्राण अन्नमयही भौजाई ॥ हरि वच सुनिगै चक पाञ्चाली । औरहु दुगुण व्यथा उर शाली ॥ वदत भई हरि ओर चितै के । प्रभु चरणाम्बुज में मन दैके ॥ महाराज हौं तो यहि हेतू । सुमिरि बुलायो तुमहिं निकेतू ॥ आपुहि भखत भखहि भखवावौ । नाहक हँसि मम जीय खिझावौ ॥ जानत हौं तुम त्रिभुवन नायक । हे भावज न मोर क्यहु लायक ॥ यासन ही तुम अधिक लजावौ । मँगताहिते न मांगि सकुचावौ ॥ परी चरी कण झरी झरोखी । अखरीपै अखरी भइ चोखी ॥ विदित स्वामि तुहि मम गति सारी । कह दुराव तुमसों हितकारी ॥ जबलो हौं न अहारत अशना । तब लौं रहै प्रपूरण बसना ॥ यह चरि दै बर दीन्हों भानू । अवश कहा करिये भगवानू ॥ दोहा ॥ हौं अहार अब लीन्ह प्रभु, रह्यो न किनका मात्र । रीती भीती टिकि चरी, धुवे धरे सब पात्र१॥

सोरठा ॥ उषित बसित हू नाहिं, जो लै तुम आगे धरहुँ ॥ धिक् धिक् हूँ जगमाहिं, हा यहु लायक भइ न मैं ॥ १ ॥ तुमसे सुहृदहि कांहि, मखहु न दै सन्मान सकि ॥ मोसम को अघि आंहि, कोटि असङ्ख्यहु खर्ब धिक् ॥२॥ (रागिनी देशी त्रैताल में) सवैया ॥ श्याम कह्यो भल देखहुँ तो चरि सांचि कहै कि झुठाय हमै को । भावज की हँसि भावभरी अस होत हमेशहि भेद लहै को ॥ ना हम ना हम माननके ललनै नहि हौं फुसलाव न मै को । चाल जनौं तुमसी बहुतै यह घात तिहारिहि हीय धरै को ॥ १ ॥ (रागिनी बरुआ में) लावनी छन्द ॥ सुन मृदुल बैन गिरिधरके पञ्च भतारी । झट लाय चरी दिखरावत भइ बनवारी ॥ (टेक) गहि हाथ भाजनहि खोज खोज प्रभु देखा । मज्जत पै कहुँ कण रहिगो ताहि परेखा ॥ भरिकर प्रमोद लियो शोध पाणि धरि के खा । कर फेर उदर कह भा मैं तृप्त बिशेखा ॥ हरि कृपा अघैंगे सकल शिष्य तपधारी । झट लाय चरी दिखरावत भइ बनवारी ॥ १ ॥ व्हाँ अखिल अजीरण रोग सोग उर छायो । वायू बिलन्द भइ बन्द हृदय अकुलायो ॥ भइ दशा मीन जलहीन तुल्य दुख पायो । शिर धुनि धुनि रोदैं मुनि इमि पेट पिरायो ॥ भगतहु बनि आयो नहिं कोउ सन उहि वारी । झट लाय चरी दिखरावत भइ बनवारी ॥ २ ॥ हरिबोले परम सुजान द्रुपदजा सेती । बुलवहु किन वेगहि क्षुधित सैन मुनि जेती ॥ भेजो भन भीमहि मुनि ढिग पार्थ समेती । लावहु

दुर्वासहि घेर देर किमु एती ॥ आज्ञा हरिधार सिधार चले बलकारी । झट लाय चरी दिखरावत भइ बनवारी ॥ ३ ॥ सुरसरि समीप जा लख्यो मुनीश्वर हाला । दल विह्वल खलबल विपुल व्यथा विकराला ॥ कोउ धुनत भाल शिरपेट समेटत खाला । धरि दशन चबावत अधर दबाये गाला ॥ करमुष्टिक नाक सिकोर भरहिं सिसकारी । झट लाय चरी दिखरावत भइ बनवारी ॥ ४ ॥ कर जोरि निहोरि बहोरि भीम बुलकारे । चलिये श्री मुनि महराज अशन तैयारे ॥ सब हेरत गृहजन बाट काज कुल टारे । हम शरणागत जन निकट तिहारे ठारे ॥ मुनि पीड़ित बैन उचार कही लहचारी । झट लाय चरी दिखरावत भइ बनवारी ॥ ५ ॥ लखि दिव्यदृष्टि धर ध्यान भन्यों मुनि ईशा । कियो मैं अनर्थ बड़ दोषि अदोषि बलीशा ॥ धनि धनि अनन्यहरिभक्त भक्ति बकशीसा । चिर जियो अभय बर वदत तुम्हैं आशीसा ॥ तुम नन्दललन सांचे हित रति व्रतधारी । झट लाय चरी दिखरावत भइ बनवारी ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ धनि दयालता दीन दयाल की । धनि सहायता नन्दलालकी ॥ धनि प्रति पालनता गिरधरकी । धनि धनि लालनता नटवरकी ॥ धनि धनि नीति रीति पतिपद्मा । धनि धनि शीलवन्तसुखसद्मा ॥ धनि धनि जन आदर अदरावन । मान दान सुख खान सुहावन ॥ धनि प्रभुता अनमोल अनैसी । धनि हित परिचय लखी न ऐसी ॥ कहँ लगि हरिजन देहुँ बड़ाई । तस नृप जन जीवन यदुराई ॥ जिन्ह जन्मत

पूतना विदारी ॥ अमित निशाचर हने मुरारी ॥ [राजोवाच] नाथ पूतनातन क्यहि बंसा । प्रभुकर बध ज्यहि लह्यो निशंसा ॥ [श्रीशुक उवाच] बलितनया पूतना प्रमानो । नाम रत्नमाला ज्यहि जानो ॥ गे बलि छलन जबहि भगवाना । वामनरूप धारि बलवाना ॥ दोहा ॥ हरि छबि निरखि विमोह वश, बलितनया सुकुमारि । प्रभु पादाम्बुज टेक मन अभिलाषी वहि बारि ॥ १ ॥ [रत्नमालोवाच] सोरठा ॥ हे विधि दीनदयाल, अस लघु सुत मुहि देत यदि ॥ तौ मैं होति निहाल, पय पिवाय अपने स्तनै ॥ १ ॥ [शुक उवाच] ॥ चौपाई ॥ प्रभु विलोकि भक्ती त्यहिकेरी । एवमस्तु बोले वहि बेरी ॥ करिउरोज पय पान तिहारा । मातु केरि गति दिहौं अपारा ॥ सोइ प्रभु पूरण ब्रह्म अनादी । वश जनभक्ति नीति मर्यादी ॥ जन प्रण मन रुचि राखन हारे । द्वापर मध्य जबहि अवतारे ॥ बालचरित गोकुल निर्माया । अमित अनन्द अखिल ब्रज छाया ॥ भइ पूतना ब्रह्म वरदानी । कंस नृपति खलदल अगवानी ॥ प्रभु मारण हित कंस पठाई । मातृगती त्यहि दीन्ह कन्हाई ॥ ❀

※ यथा श्लोकाः—बलियज्ञे वामनस्य दृष्ट्वा रूपं मनोहरम् । बलेःकन्या रत्नमाला पुत्रस्नेहं चकारतम् ॥ १ ॥ मनसा प्रार्थनं चक्रे पुत्रोऽयं सदृशो मम ॥ भवेद्यदि स्तनंदत्त्वा कुर्यां तं चसु वक्षसि ॥ २ ॥ हरिस्तन्मानसं ज्ञात्वा पपौ जन्मान्तरे स्तनम् । ददौ मातृगतिं तस्यै कामरूपः कृपानिधिः ॥ ३ ॥
अर्थ—अपने पिताके यज्ञमें बलिकी कन्या रत्नमालाने वामनजीके मनोहर रूपको देखके उनमें पुत्र का स्नेहकर मनसे यह प्रार्थना करी कि यदि ऐसा मेरा पुत्रहो तो मैं स्तन पिलाकर अच्छी तरह हृदयसे लगाऊं; भगवान् भी उसके मनकी बात समझगये और दूसरे जन्म में इसका स्तन पीकर स्वेच्छाचारी दयालुने उसको अपनी माता के सदृश गति दी ॥ १ । ३ ॥

मथुरा मार कंस खल आदी । उग्रसेन को दीन्ही गादी ॥ सत्रह बार जरासँध जीता । कालयवन जीता विपरीता ॥ भक्तन सुखदै नन्दकुमारा । जाय सिन्धु बिच बसइ द्वारा ॥ सोरठा ॥ बलदाऊ युत श्याम, बसे द्वारिका आदि नर ॥ श्रीवपु रुक्मिणि वाम, भीष्मकजा परिणयमहीं ॥ १ ॥ दोहा ॥ अमित भूप कुण्डन गये, रुक्मिणि ब्याहन काज ॥ तिन्हु भुज बलसों जीत प्रभु, ब्याही श्री ब्रजराज ॥ १ ॥ चौपाई ॥ सुनि शिव वचन उमा महरानी । बोली मधुर मनोहर बानी ॥ आदि पुरुष जो तुम प्रभुगाया । रमा जन्म रुक्मिणिहि बताया ॥ क्यहि कारण दोउन अवतारा । जीते प्रभु कंस सकल भुआरा ॥ रुक्मिणि ब्याह अथाह अनन्दा । ज्यहि विधि ब्याही श्री ब्रजचन्दा ॥ बरणहु नाथ ब्यवस्था सारी । मम आज्ञा पुरवहु त्रिपुरारी ॥ उमहिं प्रपूर्ण प्रेम पति पेखी । अविचल कृष्णचरण रति देखी ॥ प्रभु चरित्र सुनबे रुचिराँची । गति अनुराग सो जाय न बाँची ॥ आशा वासा युत अभिलासा । मन वच क्रम सन उदित हुलासा ॥ नम्रचित्त हिमसुता सुशीला । सीम पतिव्रत सो बिन हीला ॥ उमा वचन सुन आनँद हेतू । मन प्रसन्न बिहँसे वृषकेतू ॥ इति श्री रुक्मिणी पाणिग्रहणे हरिजन्मोत्सववर्णनो नाम नवमः सर्गः ॥ ९ ॥

[शिव उवाच] ॥ दोहा ॥ श्रीशङ्कर मन मुदित अति, बोले परम सुजान ॥ सुनहु उमा चितलाय प्रभु, सुयश सुमङ्गल खान ॥ १ ॥ बन्दनीय महि मूल भव, ज्यहि पर जगत् विहार । नमो नमो

त्यहिधरणि प्रिय,सुख सागरी अपार ॥ २॥भूनामानि वर्णनम् ॥ (बहिर लँगड़ी में) ख्याल॥जयति अनन्ता अचलाभू काश्यपी धरित्री विश्वम्भरा। धरणि भूमिज्या रसाक्षोणी नमु नमु श्री वसुन्धरा॥ (टेक) सर्वसह क्षोणी क्षिति वसुधायै धात्री गोत्रा अवनी। उर्वी पृथ्वी क्षमा वसुमती मही माहि कुंभेदनी॥ पृथ्वी विपुला इला गह्वरी क्षमा भूतधात्री कुँभनी। जय जय जगती रत्नगर्भा गुपसर्वा गोवदनी॥ सर सागर नदि पर्वतादि वन नगर नराधर धीर धरा। धरणि भूमि ज्या रसा क्षोणी नमुनमु श्री वसुन्धरा ॥ १ ॥ सर्वरूप मय सकल सहायक समस्त कारणि बहु सारी। पञ्चतत्त्व में अन्त लखि पड़ै वही समस्त न्यारी॥ सुखद जीव जन्तरा अन्न धनदा तृणदा जीवनकारी। थल गृह कारक सदा समगती विहारिणि आचारी॥ हनन कुकर्म अधर्म अपावन पावन करनी निरन्तरा। धरणि भूमि ज्या रसा क्षोणी नमु नमु श्रीवसुन्धरा ॥ २ ॥ कोइकी बिस्तर कोइकी अम्बर क्यहुकी शस्तर क्यहुकी धन। जगत् जीवनी सजीवनमूरि जनाहार दाइ अन॥ पोषणि गोपशु प्रदा घृतौ पय नर बलदायक दृष्टि दृगन। मनो कामना कि दाता वेद विदित सुरनर मुनि मन॥ महाबला अतुला अचला दृढतावत सेवित जगत भरा। धरणि भूमि ज्या रसा क्षोणी नमु नमु श्रीवसुन्धरा॥३॥ सुयश प्रताप कहाँ लागि वरणूँ धनि धनि बड़ भागिनि स्थिरा। पूर्णब्रह्म प्रभु ज्यहि पर अवतारें पावन करैं धरा॥ प्रभु समीपनी सदा जगत् गतिदा प्रमुदा तिहूँ कालवरा। नन्हे मल गुरु ज्ञान

गानविद्यानिधान शुभ कथंकरा ॥ प्रभुपद सेवी सदा ललन जन कथत नाम सागराम्बरा। धरणिभूमि ज्या रसा क्षोणी नमु नमु श्रीवसुन्धरा॥ ४॥ दोहा॥ जब नृप निशिचर अघनते,सहि न सकी महिभार। धरा धेनु तनु धर गई, बिधिपै अधिक दुखार ॥ १ ॥ कव्य छन्द ॥ विधि पहि अधिक दुखार धरणि लखि अज दुख पाये। लैमहिसुर सँग क्षीरसिन्धु प्रभु निकट सिधाये॥ हरिपद बिनयनु बन्दि कहेउ विधि जग दुख जोई। सुन वाणीपति बैन गगन वाणी भइसोई॥ नभवाणी भइ सोइ धीर कछु दिन सुर धारो। करिहौं तुव सब काज दुष्ट दल मारहुँ सारो॥ १॥ दोहा॥ जा ब्रज सुर सुरबाम तुम, गोप गोपि तनु लेहु॥ हौं वसुदेवै जन्म गृह, नाशहुँ भवदुख केहु॥ १॥ कव्य छन्द ॥ नाशहुँ दुख भव केहु न मानो तुम भय कोई। नय प्रभु गे भे गोप गोपिका सब ब्रज सोई ॥ १ ॥ दोहा॥ श्रीबल परम प्रतापनिधि, लीन्ह शेष अवतार। पुनि अस कारण ब्रह्म अज, नरवपु धरयो मुरार॥ १॥ कव्य छन्द॥ नरवपु धरयो मुरारि कह्यो शिव बोधि उमाको। भाषहुँ सुन अब जन्म चरित रमणीक रमाको॥ १ ॥ (रागिनी जयजयवन्ती ताल त्यौरासें) हरिगीतिका छन्द ॥ यक दिवस शय्या शेष सुन्दर शयन सुख विलसहिं हरी। पति पद्म पदन पुनीत कमला दाबती रहि उहि घरी। अभिमान भा मन रमा मोसम कोउ न हरि जन सुन्दरी। हरि मान जन अभिमान नाशन जानि गे उर अन्तरी॥ हँसि कह्यो प्रभु जो भक्त

मम सो तुमहुँ से मुहि प्यार हैं। तुम रहो जिनके वश्य धन जीवन जु मोहिं बिचार हैं॥ सुन रमा प्रभु वच कह्यो कथन न पति ये तोर प्रमान है। मम जन तिसै तुव नाम सपनेहु ना सुहावत ध्यान है॥ दृढ़ भक्त जो तुव जगत् तिनहूँ को मैं तन मनसे प्रिया। तुव मया मम युग छया तिय धन बच्यो को इनसे पिया॥ नरकी कहूँ कह देव मुनि सब चहें निशिदिन मम दया। जो बचै जन मम कृपाते दृढ़ भक्त जानहु सोइ त्वया॥ नहिं मनहु तौ दृढ़ दासगृहजा वेष बदल बसहु तहां। कछु दिन गये हौं आय लखुँ दृढ़भक्ति तुव जन की जहां॥ निज जन ललन मति बनै गारी धका तुमहिं दिवायकै। निंदराय दूं निसराय तहँ सों भेव अपन दिखायकै॥ [शिव उवाच] सोरठा॥ माया परम अपार, प्रभु माया जानहिं प्रभुहि॥ मायहु लहहि न पार, वेद भेद सुर कह कहहिं॥ १॥ (रागिनी पीलू ताल त्योरामें) हरिगीतिका छन्द॥ हरिभक्त परम प्रधान अर्जुन यक दिवस प्रभुसों भनी। हे देव! पलकनिवाज! माया तोर कस माया धनी॥ अभिलाष प्रविलोकन हमहिं बहुकाल सन पूछन चही। करि कृपा कबहुँ लखाइये लखि कृपाकारक हौं कही॥ चिरकाल मे गत वार यक मज्जनहि मतो प्रमानिकै। निधि पैठि गोता लीन्ह सोइ अहिलोक पहुँचे आनिकै॥ लखि तेज पुञ्ज प्रताप तिन्ह नृप थप्यो अहिन पतालकै। प्रिय पाय अनुपम सुन्दरी हित रस अशक्त बालकै॥ गईं विपुल साल विहाय सुख युत गई तन सुधि

देशकी। विधि योग रानी मुई दृढि रुचि सता होन नरेशकी॥ सिख दीन्ह द्रुपदीशहि अमित नहिं मानि प्रभु द्विज बनगये। कह प्रथम मज्जु महीप तव पुनि सताहो रूदित भये॥ जोइ लीन्ह गोत भुवाल जहँके तहां थिरु पेखो अपन। तहँ देखि श्रीहरि ठाढ़ अचरजवत परे प्रभुके पगन॥ कहि धनि प्रकृति पति स्वामि अपरम्पार गति पूजित भवै। श्रुति शेष शारद सन्त सुर कवि कुल सकहिं वर्णत सबै॥ जै देव देवन देव सेव अभेव भेव न पाइये। सब शक्ति मान महान श्रीप्रभु ललन जन अपनाइये॥ चौपाई॥ कह शिव सुन गिरिजा हरिचरिता। जेहि सुनु जनमन पावन करिता॥ कमला को अभिमान विनाशन। द्विज दीनन भक्तन दुख नाशन॥ साधु वेष बनयो गोपाला। मृत्युलोक आये तत्काला॥ यक उज्जैनपुरी अति पावन। धनपति नाम वैश्य तहँ हरि जन॥ अति धर्मज्ञ शील अत्यन्ता। विप्र साधुसेवी गुणवन्ता॥ ता सम शीलवती गृह नारी। हरिचरणन सेवी व्रतधारी॥ गे त्यहि गृह द्वारे यदुराया। देखि साधु धनपति हुलसाया॥ धाय गिरयो चरणन अकुलाई। हाथ जोरि पुनि विनय सुनाई॥ करी कृपा म्वहिं दर्शन दीन्हा। आज सनाथ नाथ जन कीन्हा॥ कछु दिन बसि गृह पावन कीजे। यह जनकेर मनोर्थ पुरीजे॥ दोहा॥ सुनि धनपति के वचन वर, बोले साधु सुजान॥ सन्त बसै वो कठिन बड़, चहै तो मम बच मान॥ १॥ चौपाई॥ जहँ निशि बसहिं तोर सुत बामा।

मम आसन लागै तेहि ठामा ॥ जब लगि जिय चाहै गो मेरो । तब लगि तो घर करहु बसेरो ॥ उपरी भक्ति न कर उबियैयो । सरिस सरस हित नित सरसैयो ॥ जो मानहु इतने वच मोरे । तो मैं बसहुँ भक्त गृह तोरे ॥ सुन हरिभक्त साधु मृदु बतियाँ । मन प्रसन्न भा पुलकित गतियाँ ॥ महाराज अहो भाग हमारा । तुम्हरो वच सब अङ्गीकारा ॥ मम तन मन धन अरु कुलजाती । साधु हेतु अर्पण सकलाती ॥ करि साधू अस कौल करारा । बसे वैश्य गृह युत सत्कारा ॥ जहँ निशि बसैं सुता सुत दारा । तहँपर्यङ्क सन्त हित डारा ॥ षट् रस भोजन सरस बनाई । मेवा मिश्री दूध मलाई ॥ नव नव नित प्रति अशन करावैं । तत्पर रहैं साधु सेवामें ॥ दोहा ॥ खान पानसन्मान युत, धनपति कुलपरिवार ॥ साधूकी सेवा करत, दइ निशि सप्त बिसार ॥ १ ॥ चौपाई ॥ तब बृद्धा तनु कमला धारा । कम्पित कर पद शिर तनु सारा ॥ अति निषिद्ध तनु सजे गूदड़ी । मुख लारित गहि जीर्ण लाकड़ी ॥ धनपति द्वार समाधि दृढ़ायो । खांस खांस कफ ढेर लगायो ॥ लखि कुरूप अस बृद्धा केरा । धनपति कुल जन रिसै घनेरा ॥ ललकारत भे सब दै गारी । स्वच्छ पौरतैं दई बिगारी ॥ सब कछु टारी टरी न बृद्धा । दर्शनते भइ सबन अश्रद्धा ॥ कह धनपति आवा निज द्वारी । क्यों बृद्धा बैठी हठिधारी ॥ वचन जरा तब वैश्य सुनावा । तीन दिवस भे अशन न पावा ॥ म्वहिं भोजन कछु देहु कराई । पुनि

मैं तुरतै जाउँ सिधाई ॥ लखि धनपति त्यहि दीन बिचारा । भन्यों बसहु भलि देतु अहारा ॥ दोहा ॥ रोटी पहिती भात घृत, पापर बरी मुगौरि ॥ साग भाजि दधि दुग्ध मधु, तस्मै कढ़ी फुलौरि ॥ १ ॥ चौपाई ॥ औरहु व्यञ्जन विविध विधाना । प्रथम जिमायहु साधु सुजाना ॥ पुनि धनपति भर अशन पराता । कही जरा तट जा यह बाता ॥ बसन बिछाय अशन परसाले । पाय उदरभर अपन रहाले ॥ मनही मन कमला मुसक्यानी । ताही छिन निज माया ठानी ॥ गुदड़ीते यक काढ़ी थारी । कनक रत्नमय मोल अपारी ॥ ता बिच करपट्टिका धराई । अन्य थारि यक और सृजाई ॥ तामें दार तृतिय महँ भाता । पुनि चतुर्थमें लीन्हों राता ॥ यहि विधि अशन रहे जितनेही । बृद्धा पात्र रचे तितनेही ॥ पृथक् पृथक् भोजन परसायो । लखि धनपति विस्मय मन लायो ॥ है कोउ सिद्धा यों अनुमाना । वेष दुराये परम सुजाना ॥ लायो गुप्त सुशीतल वारी । जरा निकारी कञ्चन झारी ॥ दोहा ॥ लै जल अशन जुठार पुनि, गुप्तहि कही गुहार ॥ जितक पात्र उच्छिष्ट मम, दे घूरे पर डार ॥ १ ॥ चौपाई ॥ सुनि सकुच्यो धनेश मन माहीं । जरा कह्यो कछु विस्मय नाहीं ॥ मोरी यही सनातन रीती । चौसठ वर्ष करत ज्यहि बीती ॥ सदा यही मम नियम बखाना । रचहुं नवीन पात्र नित नाना ॥ ज्यहि भाजन यक बार अहारौं । उहिमें फिर नहिं भोजन धारौं ॥ पात्रोच्छिष्ट न राखहुँ पासा । नित प्रति फेंक देहुँ बिन

त्रासा ॥ मोरे गुरु यहि सीख सिखाई। जिन्ह यह विद्यामोहिं बताई॥ बसि यह सदा धारणा मेरे। अतिथिहि उचित कि लोभ न हेरे॥ सुनत वैश्य असबैन जराके। टेर किङ्करन अति हुलसाके॥ पात्रन सकल धुवावत भयऊ। निज गृह पुनि पहुँचावत भयऊ॥ लखि त्रिय पात्र हेम रत्नारे। भा बिस्मय पुनि हर्ष अपारे॥ पूँछत भईं सकल गृह बाला। धनपति जा वरण्यो सब हाला॥ दोहा॥ है कोइ उत्तम सन्त यह,करामातिया पूर॥ त्यहि कृत फल धन प्राप्त हो, टिकवहु विनय प्रपूर॥ १॥ (रागिनी परज बहार शूल तालमें) त्रिभङ्गी छन्द॥ सुनिसब यह भाँती त्रिय हुलसाती सुत अरु नाती धावत भे। उरबिच अभिलाषा दर्शन आशा बृद्धा पासा आवत भे॥ पुनि हिल चित झलका लायउ पलका पट मखमलका आनत भे। शुचि तकिया भीले नीले पीले काम जरीले साजत भे॥ अति भरे उछाहा करि करि हाहा जरहि सराहा विनवत भे। अतिशय करि आदर कोई पकरो कर जरहिं पलँग पर लावत भे॥ ले शाल दुशाले दामनवाले लै तन घाले भावतभे। अरु कोउ पग दाबे ब्यजन डुलाबे ललन चँवर लै ढ्वारत भे। यहि विधि सारे सेवा सारे प्रेम अपारे पारत भे। कहि कहि श्री माई जरा टिकाई गृह हुलसाई राजत भे॥ १॥ चौपाई॥ दिन थावतही वैश्य उचारा। कुल जन सगरे जाहु बजारा॥ जोइ जोइ मिलैं शाक अरु भाजी। चीर बसौंधि मलाई ताजी॥ खोया खुर्चन दधि नवनीता। छाँछ शिकरनी सद्य पुनीता॥ मेवादिक

नमकीन मिठाई। ऋतु फल अमित बिसावहु जाई॥ इतर इलाची पान मसाले। मृदुल मुरब्बा स्वाद सम्हाले॥ सामग्री सब जाय लियावहु। बृद्धाहित ब्यारू बनवावहु॥ किङ्कर कुलजन हाटहि धाये। बिसै वस्तु बहु घर लै आये॥ त्रिय मिल सकल बनाय अहारन। अनगिन धरे निकार अचारन॥ साज समस्त समग्री बाला। धरे अमित भर भर कर थाला॥ बिसरि गई साधू की सेवा। प्रथम जरहिं जा दियो कलेवा॥ दोहा॥ भख बिलोकि बृद्धा तुरत, है शत थाल सृजाय॥ कनक रत्न मय भाजनहिं, निरखत जिय ललचाय॥ १॥ चौपाई॥ प्रति प्रति पात्रहि यक यक भोजन। पृथक् पृथक् परसायउ रुचिमन॥ बोली अशन पाय बृद्धा पुनि। जूठ पात्र दे फेंक गुप्त सुनि॥ तब सब वैश्य दास उठिधाये। धोय पात्र धनपति गृह लाये॥ खोल धनेश कोठरी एका। ताबिच भाजन धरे अनेका॥ शाहुनि शाह मुदित अति गाता। पूछै कोउ न साधु कि बाता॥ बृद्धाको सुख कुल जन आंका। भयो सन्तको वा निशि फांका॥ रजनी नींद न काहू चीन्ही। वैश्य सबन यह आज्ञा दीन्ही॥ करिय जराकी अति सेवकाई। टिकी रहै कछु दिनतो माई॥ प्रातहि भोजनकरियो त्यारा।पाछे और होहिं ब्यवहारा॥ भोरहि उठि त्रिय अशन बनाये। जोइ ले जन बृद्धा ढिग आये॥ सोरठा॥ बोली रूखे बैन, रहूँ वैश्य तो गृह जबहि॥ बसो साधु तो ऐन, ताहि काढ़ बाहर करहु॥ १॥ चौपाई॥ नहिं तो चलि जैहौं यहि यामा। लिहौं निवास

औरही ठामा ॥ जो तैं मेरो वचन प्रमानै । करहुँ कुबेरहुसे धनवानै ॥ कुल जन वाम कह्यो पति पितुसों । जरा कथन सोचहु सत चितुसों ॥ कौन काज सरबे बाबासे । देहु निसार साधुको तासे ॥ बृद्धा लेहु बसाय महलमें । जासों सुख सम्पति हो पलमें ॥ त्रिय कुल जन बाबा पहँ आकै । बोले कटुक वचन बिलगाकै ॥ तुव सेवा हम बहुदिन अदरी । अब जा बसहु और कोइ नगरी ॥ सुन साधू कटु बच अस भानी । लोभी ! अधम ! नीच ! अज्ञानी ॥ कस कीन्हों तैं कौल करारा । रखती बार न मोहिं बिचारा ॥ हौं तुव हठिनु न हटहूँ हटाई । सुन अस वच त्रिय परम रिसाई ॥ दोहा ॥ साधुहि गारी देयँ सब, नर नारी भुँझलाय ॥ यह सण्डा साधू नहीं, मुण्डा गुण्डा काय ॥ १ ॥ चौपाई ॥ न यह साधु संन्यासी दण्डी । यह प्रपञ्चिया परम पखण्डी ॥ ऐसो साधु कहो कोउ देखा । बसै वधुन बिच तस कह लेखा ॥ खाय हरामी माल मुटाना । निकसति नहिं घरसों हठि ठाना ॥ यहिकी शङ्क न कोउ उर धारौ । काढ़ि भवनते बाहिर डारौ ॥ है कोउ याको बेगि निसारौ । गुलचन मारि धमूकन टारौ ॥ दास सुनत आये वहि ठाहीं । कोइ पग ग्रीवा पकरी बाहीं ॥ पकर साधु लाये गृह द्वारी । अन्तर्ध्यान भये बनवारी ॥ भये अलक्षित श्री हरि जबहीं । ह्वै गइ लोपित बृद्धा तबहीं ॥ सुवरण पात्र रहे गृह जेते । ते तुरतै बिलायगे तेते ॥ जरहि न देखि वैश्य परिवारा । अति अचरज निज निज उर धारा ॥ दोहा ॥ बदत परस्पर स-

कल मिल, कह भा यह भगवान ॥ खोजहिं अजिर अटारि चढ़, ह्वै चौपँच मजलान ॥ १ ॥ दर दर द्वार उघार पट, माय माय कर टेरि ॥ मिली न बृद्धा बिकल सब, कहा गुप्त गति हेरि ॥ २ ॥ चौपाई ॥ भा सो भा अब त्यज सन्देहू । सुवरण पात्र शोधि सब लेहू ॥ खोल कोठरी जो सब देखा । भाजन को ह्वां रूप न रेखा ॥ बिह्वल खाय पछाड़ धनेशा । गिरो महीपर सनित कलेशा ॥ त्रै दिन भये न कियो अहारा । भइ रवइ नभवाणी त्यहि बारा ॥ साधू रूप धारि हरि गयऊ । तैं सादर निज मन्दिर ठयऊ ॥ पुनि दुर्गति अपमान समेतै । साधु निसार दीन्ह बिनु हेतै ॥ जो वचदै निज टारत प्रनको । सो भोगत रौरव नरकन को ॥ जे परमान प्रभञ्जक लोगू । ते नर नहिं जग पद्धति योगू ॥ हौं कमला रहि हरिकी माया । तो हित बृद्धा रूप सुजाया ॥ तोरी दृढ़ भक्ति जाचन को । छल करि तुहि दिखयो सुबरन को ॥ लोभ विवश तुव मति भरमाई । त्यजि हरिपदरति मो सिख भाई ॥ जहँ हरि नहिं तहँ हौं कस रहही । मो बिन मम मायहि किमु ठहई ॥ लोभ गहे गति मति नश जावे । बनी बनाई हू बिगरावै ॥ एक छाँड़ दूसर को धावै । यहि विधि डूबै थाह न पावै ॥ दोहा ॥ सदा दुरङ्गी दूरकरि, जौन रँगै यक रङ्ग ॥ तिनको दुख ब्यापै नहीं, जिमि पुरयन जल सङ्ग ॥१॥ दुबिधा मन त्यागी नहीं, बनि बैठो हरिदास ॥ दुबिधा में दोनों गये, माया पुरी न आस ॥ २॥ दुबिधा है मति लोभकी, लोभ दुःखको धाम । दुबिधामें

दोनों गये,माया मिली न राम ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ यासन सोच देहु बिसराई । नाहक दिजियतु प्राण गँवाई ॥ रमा वैन सुनि वैश्य उचारा । काऽपराध तुम मोर निहारा ॥ माया विरचि मोर मति हारी । तव कह तुमन सुजनता धारी ॥ माया वश मुनि देव भुलाने । शारद शेष चतुर्मुख स्याने ॥ हौं लघुमति नर कौन बिसाँती । मायाकृत जानहुँ क्यहि भाँती ॥ म्वहिं जन जानि करी हरि दाया । तुम छल करि मुहिं दोष दिवाया ॥ कोउ हरि जन सँग करै न ऐसा । तुम अपराध कमायउ जैसा ॥ करवायो अपमान पतीको । तुम यह काम न कीन्हों नीको ॥ तुम जैसे मम जीय जरावा । हो दुख तस हौं शाप सुनावा ॥ मृत्युलोक में जाय बिराजो । मानुष भवन जन्म लै राजो ॥ प्रभुसों होय बिछोह तुम्हारा । बिरह दहै नौ वर्ष अपारा ॥ दोहा ॥ यह कारण हौं क्रोधवश, रमा देत तुहि शापि ॥ फिर न भूल कोउ साधु सँग, करो विरोध कदापि ॥ १ ॥ (रागिनी भँझोटी त्रैताल में) श्रद्धानन्द छन्द ॥ सुनि रमा शाप बोली अलाप रेऽधम अनाप अज्ञानी । दै वृथा दोष मुहिं दिवय रोष निज भक्ति पोच नहिं जानी ॥ १ ॥ हरि भक्त जान हौं शाप मान तुहि देहुँ भान यह शापा । हो जन्म जहाँ तैं होय तहां बड़ भाय महामति पापा ॥ २ ॥ कूल करै दुखी हरिसों बिमुखी जग हो न सुखी हतमाना । साधु दुगाया मोहिं दुखाया दोष कमाया नहिं ध्याना ॥ ३ ॥ सोरठा ॥ भयो परस्पर शाप, कमला धनपति दुहुनको ॥ लख हरि

भजन प्रताप, हरि जन वच उलँघ्यो न श्री ॥ १ ॥ दोहा ॥ शम्भु कह्यो यहि हेतु श्री, भीष्मक गृह अवतार ॥ रुक्मिणि अग्रज वैश्य भा, नाम रुक्मि ज्यहि धार ॥ १ ॥ इति श्री रुक्मिणी पाणिग्रहणे रमाजन्महेतुवर्णनो नाम दशमः सर्गः ॥ १० ॥

[पार्वत्युवाच] ॥ चौपाई ॥ कह्यो उमा शिव सों करजोरी । कियो कौन तप भीष्मक घोरी ॥ जेहि कर साक्षात हरिमाया । रमा जन्म भीष्मक गृह पाया ॥ [महादेव उवाच] ॥ शुचि यक देश विदर्भ मँझारा । कुण्डिन पुर पति भीष्मक भ्वारा ॥ द्विज सन्तन सेवी नृप ज्ञानी । तस ब्रह्मण्य भक्त तिहि रानी ॥ त्यहि सुत पाँच भये सब समरथ । रुक्मबाहु कचरुक्म रुक्मरथ ॥ रुक्ममालि रुक्मी बल-वाना । ज्यहिको बल प्रताप जग जाना ॥ शङ्कर पूजि पाय वर छाका । दश सहस्र गज सम बल जाका ॥ असुर बुद्धिहरिसों बिपरीता । मगधाधिप शिशुपाल सुमीता ॥ नृप सह धूम बिवाहे सब सुत । सुख राजे निजभौन बहुनयुत ॥ रुक्मित्रिया हरि भक्तसुजाना । कृष्णकथा नित सुनै पुराना ॥ निशि बासर हरि सुमिर बितावै । दै द्विज दान अन्न तब पावै ॥ सोरठा ॥ यक दिनकी प्रिय बात, रजे रानि नृप मुदित गृह ॥ हरिगुण गावत प्रात, आगमने ऋषिराज सोइ ॥ १ ॥ (रागिनी प्रभाती इकताला में) पद ॥ गिरिवर गिरिधर गुपाल गोविंद गिरिधारी ॥ (अन्तरा) मदन मोहन मधु-सूदन माधोजी मुरारी । मनमोहन मदनलाल मुहन मुरलिधारी ॥ १ ॥ कमलापति कृष्ण कान्ह

कुँवर कुँजबिहारी। कान्हा कान्हर कन्हाइ कलि कलेशहारी॥ २ ॥ वृन्दावन बिहरन बलवीर वर विहारी। बेणीमाधो व्रज वनितन व्रज पति वनवारी॥ ३ ॥ लाड़िलो लड़ैतीलाल ललित लीलाधारी। लगन लागि ललन लोचन लखनलाल सारी॥ ४॥ चौपाई॥ सादर दम्पति लखि उठि धाये। सुन्दर सिंहासन बैठाये॥ पग पखारि पुनि पूजि जिमायो। लखि प्रसन्न मन वचन सुनायो॥ [राजोवाच] तुम्हरि कृपा गृह सकल पदारथ। अन धन गव्य पञ्च सुत समरथ॥ नहिं कन्या मोरे मुनि कोई। सफल सुता बिन पुण्य न होई॥ † करहु कृपाकर अस कोउ यत्ना। होय प्राप्त जो कन्या रत्ना॥ कह मुनि बुध गण बोल नृपाला। करि आरम्भ यज्ञ तत्काला॥ आवहिं आवाहन कृत देवा। तिनकी रुचिर कीजिये सेवा॥ करु मुद द्विज सुर लहु वर चोखा। सुता जन्मिहैं निज त्रिय कोखा॥ जस मनसा तुव हो फल सोई। जगकीरति सुरपुर यश होई॥

---

† यथा श्लोकः॥ कन्या जाता न गेहे न च शुभदिवसे दत्तदानं कदापि। न स्नाता वारि गाङ्गे सकलभयहरी सुन्दरी नैव गेहे॥ तेऽस्मिञ्जाता वृथैव क्षितितलशुभगे यैः श्रुतं नो पुराणम्। सोपानं शीघ्रयानं हरिहरपदयोर्दानकन्याप्रदानम्॥ १ ॥ अर्थ॥ जिनके सदन में कन्याकी उत्पत्ति न हुई और शुभ दिनमें दान नहीं दिया, तथा कभी गङ्गाजी के जलोच्छ्वास में स्नान नहीं किया, अथवा "जिनके" घरमें समस्त भय को दूर करनेवाली सुशीला गेहनी नहीं है, वा जिन्होंने कभी पुराण नहीं सुना और हरिहरके स्थान में तुरन्त पहुँचानेवाले सोपानरूप कन्यादान का अनुष्ठान नहीं किया वे जन इस सुन्दर पृथिवीतलमें योंही आये॥ १॥

कहि मुनि नृपसे गे निज लोका। हरिगुण गावत परम अशोका॥ (रागिनी टोड़ी तीनतालमें) पद॥ जय जगदेव परम हितकारी सुमति ज्ञान मुहि दीजै। (अन्तरा) जग धर्ता हर्ता भव भारन आनँदमय गुण सीजै। परम कृपाल निहाल निरन्तर निर्गुण वैसन छीजै॥ १ ॥ सर्व्व समर्थ शक्ति सर्व्वोपरि सर्व्वव्यापि प्रतीजै। अलख अरूप अमूर्ति अजन्मित द्वितिये नास्ति सहीजै॥ २ ॥ परम पुनीत पूज्य जगनायक सबलायक तुम्हरीजै। अविगत अपार नहिं परत पार महिमा अपार यश भीजै॥ ३ ॥ प्रणतपाल पूरण जन काजन मन मनोर्थ मम कीजै। ललन स्वजन को देहु भक्तिवर कुमति कला हरलीजै॥ ४ ॥ [शुक उवाच] चौपाई॥ ऋषि वच मानि यज्ञ नृप ठाना। सकुल सनेह स श्रम लपटाना॥ तोष कोष सन्तोष समाना। दीन्ह द्विजन बहु अतुलित दाना॥ अन धन धाम ग्राम गो हय गज। दियो जौन मांग्यो ममता त्यज॥ बिरची वेदि मण्डलाकारी। कञ्चन मणिन कणिन रत्नारी॥ वेदपाठि षट्शास्त्रि न्यायकी। सुठि पुराणि षट्कर्म्म कायकी॥ विप्र बोल मख कियो अरम्भा। बजें बधावे नृत्यें रम्भा॥ आवाहन कर सब सुर पूजे। भे सुर मग्न भँगो नृपहूजे॥ अहो देव मम विनय सुनीजै। कन्या रत्न मोहि वर दीजै॥ सुनि सुर वचन प्रीति अनुरागे। भूपतिसों अस कहिबे लागे॥ सफल यज्ञ भा तुम्हरो राजा। पूरण ह्वैहैं तुव सब काजा। जन्मैगी नृप सुता रमासी। जनक समान जगत

यशभ्यासी ॥ सुर वरदै चलिभे निज निज पुर । सुफल कार्य नृपभा धीरज उर ॥ दैदै देव नृपहिं वरदाना । पुर बाहर निकसत भा ध्याना ॥ श्रीसम सुता होय कहिआये । अस न भई पुनि बनहिं लजाये ॥ जासों चलि कमला तटधाई निज नदानता देहु सुनाई ॥ ह्वै यकमति सुर सकल सिधारे । जालक्ष्मी ढिग विनय उचारे ॥ (रागिनी पीलू रूपकताल में) हरिगीतिका छन्द ॥ मातु हम तुव शरण आये दास जान सहाय हो । रच्यो भीष्मकसुता हित मख मग्नो हमें अघाय हो ॥ ताहि वर हम दीन्ह शक्ती सम सुता अवतारि है । अवतरो नृपगृह तौ हो वर रुचिसत्य जौन हमारि है ॥ जन्म यदुकुल श्याम जननी तिन्हें जाय वरहु प्रिया । देहु सुख सेवकन जग जे जे सनातन हरि त्रिया ॥ प्रेम पूरित देव बच सुनि सिन्धुसुता निहाल भइ । एवमस्तु प्रणीत वरदै सुरन उर आनन्दमइ ॥ करि करि प्रणाम सुदेव धामन जाय हरि सुमिरन लगे ॥ सोइ कुँडिन नृप अँग रमा प्रविशी भाग भूपति के जगे ॥ शुभ शुभ मुहूर्तै ललन नृपते गर्भ रानीने गह्यो । भा तेज नृपत्रिय रूप बाढ़ो पुरजनन सुनि सुख लह्यो ॥ भे विगत जब नव मास सुन्दर लग्न अर्ध निशा रही । कर नींद वश पुर रानि कमला जन्मि जननि न श्रम लही ॥ तनु दिव्य बसन विशाल भूषण कमलदल दृग सोहने । शशिवदन पग अंगुष्ठ मुख मुसक्यान रँग ढँग मोहने ॥ प्रति अङ्ग अद्भुत सुखद छवि लखि कोटि रति मन्मथ नमै । अस आदि शक्ती रमा वपुधरि प्रकटि

भीष्मक भवन मैं ॥ अथ जन्मतहि परि जाग जननी सुता मुख लखि छक गई । तनु पुलकि ह्वै मन मग्न पति सुत वधुनको टेरत भई ॥ गइँ बधू सुत नृप लखि सुता छवि चकित मति गति सुख भरे । सुन खबर कुल नर नारि साजि शृँगार आई नृप घरे ॥ करि नृत्य बाज बजहिं बधावे गाय हिय हुलसावतीं । कोइ रानि हेत मँगाय मेवा कन्द सोंठि पगावतीं ॥ धूँ धार बजैं नगार नौबत द्वार नृप याचक जुरैं । दे दान कर सन्मान द्विज याचकन महिपति नहिं मुरैं ॥ सुर आनि चढ़े विमान नभते करहिं वरषा सुमन की । गुण गाय रमा रिझाय जै जै ललन बहु विधि भनन की ॥ १ ॥ चौपाई ॥ सुनि सँदेश नृप जन्म कुमारी । बटुरे विपुल जालि नर नारी ॥ मागध बन्दि भाट सूतादिक । बरणहिं वंश छृद्धि सुर नादिक ॥ नटी नटा नृत्यैं गति चोखी । गाय राग रागिनी अनोखी ॥ मँगलामुखी सुमङ्गलचारा । विरचैं नारि गारि व्यवहारा ॥ हास विलास तमास अनेका । करहिं हुलास प्रकाश विवेका ॥ प्रेमानँद मदमत्त समस्ता । देहिं अशीष वस्तु गहि हस्ता ॥ पुनि नृप विप्र पुरोहित बोले । बरणैं सुता चरित्र अमोले ॥ पट भूषण वर अँग अँग धारे । यहि विधि जन्मी सुता हमारे ॥ यह को कह कारण महि देवा । सोचैं द्विज पावैं नहिं भेवा ॥ इतने में श्री नारद स्वामी । हरिगुण गावत बहु गुणग्रामी ॥ (रागिनी खम्माच तीनताल में) पद ॥ जै जै प्रभु पूरणब्रह्म पतितपावन दुख मोचन पापहरन । (अन्तरा) अति शक्ति मान

बहु गुणनिधान कल्याणरूप सुखबृद्धि करन । जग जीवन व्यापक बिश्व सकल सत्यः स्वरूप कृतिश्रेष्ठ बरन ॥ १ ॥ गति अगम बुद्धि वर बिन प्रमाण मति सुमति खानि यश शक्तिसदन । दीनन दयालु दुर्मतीदलन शुभमती करन जन मनरञ्जन ॥ २ ॥ अब जनि बिलम्ब करु कृपानाथ आरत अनाथ की सुन श्रवनन । वर देउ भक्ति प्रभु ललन जनहि शरणागत विनय करत तुम सन ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ वीणा पाणि बजावत आये । नृप लखि अहो भाग्य कहि धाये ॥ आदर कर गहि मुनि गृह लाये । सुता जन्म कृति सकल सुनाये ॥ लखि नृपसुता मुनी मनमाहीं । करि प्रणाम निज भाग सराहीं ॥ सुनि मुनि नृप मृदु वचन जुड़ाने । कह कछु मति विस्मय उर आने ॥ तोर सुता भइ रूप निधाना । रमा आय गइ मोहि सुजाना ॥ दै गइ पट भूषण हित मानी । तैं धनि धनि बड़भागी प्रानी ॥ धनि तप तेज तोरि पुण्याई । ज्यहिकर अस पुत्री नृप पाई ॥ रुक्म समान जासु अँग शोभा । ज्यहि छवि निरखि जाहिं सुर लोभा ॥ तासों नृप मम मान मताको । नाम रुक्मिणी राखु सुता को ॥ गहि मुनि सिख भूपति परिवारा । नामकरण कीन्ह्यों वहि बारा ॥ करि बहुदान मान महिनाथा । रङ्क द्विजनदै कियउ सनाथा ॥ अथ नारद श्री हरिगुण गावत । चल भे निज पुर हिय हुलसावत ॥ (रागिनी खम्माच ताल दादरा में) पद ॥ नमो नमो नारायणो जय जय हरे हरे । प्रभु सर्व्वे शक्तिमाना सर्व्वे गुणै निधाना ॥ (अन्तरा) सर्व्वत्र-

व्यापी आपी सुख सागरे निस्तापी श्रुति वाक्य बहु अलापी स्मृति भनन करे ॥ १ ॥ माया अनन्त जोहै नाहिं भेद कछु लहो है बहु भाँति सब कहो है अति दुर्लभो परे ॥ २ ॥ अविगत अनादि स्वामी प्रभु सकल गुणनग्रामी आनन्दि अष्टयामी नामी दया धरे ॥ ३ ॥ हरि सकल निर्विकारे सत्यःस्वरूप धारे सम दृष्टि निरङ्कारे जगदीश यशभरे ॥ ४ ॥ करुणा निधान बाँके आरत ललन पियाके दुख हरहु वेगिताके भरपूर सुख बरे ॥ ५ ॥ [दैवज्ञा ऊचुः] (रागिनी झँझोटी त्रितला छन्द में) पद ॥ रुक्मिणि सुता रमा अवतारी । (अन्तरा) चन्द्रवदन छवि भाल मनोहर अलकैं घूँघुरवारी ॥ १ ॥ बाल मृगी सम नैन अनोखे चितवन टुनवावारी ॥ २ ॥ भ्रुकुटि बंकु युग खण्ड मैनधनु कै धौं द्वि अहिनारी ॥ ३ ॥ शुभग कपोल सुधा थल शोभित नासा शुक छवि धारी ॥ ४ ॥ अधर अरुण विद्रुम सों सुन्दर मृदु मुसक्यान पियारी ॥ ५ ॥ चिबुक चारु लम्बित भुज वर कर अमल कमल उन्हियारी ॥ ६ ॥ यव तिल ध्वजाम्बुज सथिया करि कर हंस मीन चिन्हारी ॥ ७ ॥ नख शिख ललन अमित शोभा वर पट भूषण छवि न्यारी ॥ ८ ॥ लखि लखि छवि नर नारि देव मुनि उचरत जै जैकारी ॥ ९ ॥ चिरञ्जीव तव सुता भाग्यरव वर यहि मिलैं मुरारी ॥ १० ॥ चौपाई ॥ अस प्रशंसि दै सुता अशीसा । बुध गे भवन पाय बक शीसा ॥ याचक करे अयाचक राजा । पूरण किये सबन के काजा ॥ जब सों श्रीरुक्मिणि

अवतारी। हौं नित नृप गृह आनँदकारी ॥ ऋद्धि सिद्धि नव निद्धि आकरी । आनन्दावलि देहिं चाकरी ॥ क्षेम प्रेम युत नेम निबाहें। मन वाञ्छित कामना दृढ़ाहें॥ सुख युत भई वर्षगत चारी। पायन चलबे लगी दुलारी ॥ करें माधुरी तोतरि बतियाँ । जुड़वै मात भ्रात पितु छतियाँ ॥ गोदिन गोदिन सुता विहारै । छवि विलोकि कुल तन मनवारै ॥ तीर परोसिन केर कुमारी। खेलें तिन रुक्मिणि सँग सारी॥ विविध भाँति के खेल रचावें। निरखि मातु पितु अति सुखपावें॥ (राग कान्हरा सहाने की बहार इकताला में) पद॥ रुनुक झुनुक चलत चाल, अति प्रिय रुक्मिनियां ॥ (अन्तरा) चमकन चपला सि गात, शोभा कछु कही न जात, अँग अँग छविमदन फवन, दिपत विधु वदनियां ॥ १ ॥ शोभित तनु नील वसन, सङ्गम जनु दामिनि घन, काम दुन्दुभी सी पगन, बाजैं पैजनियां ॥ २ ॥ मुर मुर पितु तनु निहारि, धावति छिन पुनि अगारि, दौरति किलकारि मार, हँसन सुख सदनियां ॥ ३ ॥ तोतर मृदुबैन ऐन, जादू टूनवासी सैन, कञ्जनैन श्रवत चैन, चञ्चल चितवनियां ॥ ४ ॥ सुधासिन्धु युगकपोल, नासा बेसर अमोल, विद्रुम दुति अरुण अधर, हीर सम दशनियां ॥ ५ ॥ सुकृति पुण्यपुञ्ज भूप, उदित तासु अजिर रूप, सुखनिधि फल सुताऽनूप, पूजित नृप रनियां ॥ ६ ॥ लखि छवि रुक्मिनि रसाल, ब्रह्मादिक इन्द्रबाल, बरसें नभ सुमन माल, ललन सुयश भनियां ॥ ७ ॥ चौपाई ॥ यहि विधि लखि छवि

रुक्मिणि केरी। मातु भ्रातु पितु सब हर्षेरी ॥ तोरि तोरि डारैं तृण वारी। नित नव नृप गृह मङ्गल चारी ॥ पञ्चवर्ष भइ राजसुता जब। यकदिन कह्यो प्रभा जननी तब ॥ पूज्यो करु तैं गौरि भवानी। होय विमल मति तुव कल्यानी ॥ सुफल पुरै तुव सब मन कामा। मन भायो वर मिलै ललामा ॥ यहि प्रकार सिख मात सिखाई। सुनि रुक्मिणि मन अति हुलसाई ॥ धीरापन धारण चतुराई। सुता सावधानी निपुणाई ॥ सुभग स्वभाव वृत्ति कृत चोखी। निरखि प्रभा भइ मुदित अनोखी ॥ निज पति विपुल सराहत भागा। नित हरि ध्यावत विमल सरागा ॥ हे प्रभु जन मनरञ्जन स्वामी। तुम जनवत्सल अन्तर्यामी ॥ तुमहिं कृपाकर ऋषिहि पठायो। जिन कन्या हित यज्ञ बतायो ॥ तुम्हारि कृपा मख पूरण भयऊ। तुव दाया मुहि सुर वर दयऊ॥ तुमहीं सुर सन्तन मुनि प्रेरक। तुमहीं प्रभु कारण सुख सेवक ॥ तुमहीं कृपादृष्टि प्रभु हेरे। तब यह सुता भई गृह मेरे॥ कहँ लगि तुम्हरी करहुँ बड़ाई। चेरि जानि प्रभु मुहि अपनाई ॥ (रागिनी खम्माच त्रैताल में) पद॥ अलखरूप अनजीत जगत करता कीरति नइरे। जगत करत कीरति नइ रे ॥ (अन्तरा) आनँद करन हरन भव भारन जन सन्तन मन रञ्जन रे। पूरण मायानिधि वशीकरण प्रकटित आनँद मइ रे ॥ चहूँ दिशि यश पूरण मइ रे॥ १ ॥ जग पालन पोषण हितकारी बलकारी जगजीवन रे। सबलायक अन्तर्य्यामि स्वामि वरणी वेदन गइ

रे ॥ ललन जन शरणागत लइ रे ॥ २ ॥ (तथा) पद ॥ जय जय जग जीवन परम मीत जन मनरञ्जन दइ रे । सकल जन मनरञ्जन दइ रे ॥ (अन्तरा) विविध भाँति पृथ्वी अकाश आनँद विलास करतार रच्यो। महिमा अपार नहिं परत पार खोजन बहु विधि भइ रे ॥ श्रुतिन वेदन मति गति गइ रे ॥ १ ॥ सकल सुखार सरल सब लायक दीनबन्धु करुणा मइ रे । मम काम क्रोध मद लोभ हरो उपजै शुभ मति नइ रे ॥ ललन हिय आनँद मइ रे ॥ २ ॥ दोहा ॥ जैस कृपाकर कृपा कर, मोतन हेरे नाथ॥ मोसमरथ नहिं कहि सकहुँ, जिमि मुहि कीन्ह सनाथ॥ १ ॥ तो सम कौन दयालु जन, मोसम खल अपनाय॥ ऐसि सुता दइ जन्म मम, सुफल कीन्ह यदुराय॥ २॥ यहि विधि प्रभा गुपाल गुण, गावति निशि दिन प्रात ॥ गद्गद तन मन वचन सन, रोम रोम पुलकात ॥ ३ ॥ इति श्रीरुक्मिणीपाणिग्रहणेरुक्मिणीजन्मवर्णनोनामैकादशःसर्गः ॥ ११ ॥

दोहा ॥ एक दिवस श्री देवऋषि, हरि गुण गावत नेति ॥ शारद बीण बजावते, भरे प्रमोद समेति॥ १ ॥ (रागिनी तिलङ्गमें दादरा) पद ॥ जय जय जगदेव हरे जय जय जगदेव ॥ (अन्तरा) पूर्णब्रह्म परमानन्द, आनँद कन्द श्री गोविन्द । माधो मुकुन्द मदन मुहन, मधुसूदन वासुदेव ॥ १ ॥ तरण तारण कारण जग, हारण दुख वारण अघ । कृपासिन्धु अति सुजान, सुरपति पति महादेव ॥ २ ॥ निर्विकार नारायण, निराकार नरसिंह तन । शेष श्रुति महेश ललन, पावत नहिं

तोर भेव ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ विहँसत भीष्मक गृह ऋषि धाये । दै सन्मान नृपति बैठाये ॥ करि पूजन बहु वन्दन कीन्हा । मन प्रसन्न नारद को चीन्हा ॥ नृपसुतवधू सकल सुकुमारी । रुक्मिणि ऋषि चरणन पै डारी ॥ तुम्हरी कृपा सुता हौं पाई । यह सम वर मुनि देउ बताई ॥ सुनि नृप वच कह मुनि गुणआगर । सुता विलोकि रूप छवि सागर ॥ यह लायक वर कृष्ण गुपाला । श्यामगात सुन्दर नँदलाला ॥ उन सँग कन्या देउ विवाही । दूलहो अस तिहुँपुर कोउ नाही ॥ ऋषि आनन प्रिय सुनि पिय नामा । विहँसि वन्दि मुनि कीन्ह प्रणामा ॥ सत हित चित विलोकि हरि ओरी । बहु प्रशंसि मुनि नृपति किशोरी ॥ वहि छिन निकट बुलाय कुमारी । मन्त्र दियो विधि सकल उचारी ॥ पूजिय उमा महेश पियारी । मन भायो वर देहिं मुरारी ॥ * द्वादशाक्षरी मन्त्र बतावा । सकल कार्य सुखदायक भावा ॥ श्रीहरि ध्यान श्याम वरणीया । रुक्मिणि को उपदेशित कीया ॥ यहि प्रकार करि धारण नेमा । मनवाञ्छित वर मिलिहै क्षेमा ॥ दै आशिष नारद उठिधाये । बहुरि पितामहलोक सिधाये (रागिनी प्रभाती इकताला में) इकताली छन्द अर्थात् भजन ॥ भजमन श्रीराधे राधे श्याम श्याम श्याम ॥ (अन्तरा) गिरिवरधर गिरिवरधर गोविंद घनश्याम ॥ यादो माधो मुकुन्द पूरण निधि काम ॥ १ ॥ नन्दनँदन

* ओं नमो भगवते वासुदेवाय इति ।

यशुदानन्द अनुज श्री बलराम। वासुदेव देवकिसुत सुन्दर सुखधाम ॥ २ ॥ राधावल्लभ गुपाल श्रीपति अभिराम। गोपिनाथ मदनमुहन जीवन व्रजवाम ॥ ३ ॥ दामोदर दीनद्याल जनवश बिन दाम। ललन शरण रहुरे मन कृष्ण के वसु याम ॥ ४ ॥ चौपाई ॥ मुनि सिख पाय मगन पितु माता। मन प्रमोद फूले न समाता ॥ पेखि प्रफुल पितु हदि जलजाता। रुक्मिणि मनसुख पुलकित गाता ॥ जननि जनक लखि मुनि मत समता। दूर भई प्रिय उरकी अमता ॥ प्रमुद समेत धीर उर धारण। लागी श्याम नाम उच्चारण ॥ सुमिरि शिवासुत सिद्ध विनायक। सकल सुमति सुखसदन सहायक ॥ वाणी विमल वन्दि बहु भाँती। निजकुलपूजक देव मनाती ॥ गिरिजानाथ सनेह लसानी। सब सुखदायक सुमिरि भवानी ॥ हदिक गोदभर मोद महाना। तात तीर प्रिय कीन्ह पयाना ॥ लै पितु माता आज्ञा रुक्मिन। पूजन लगी अम्बिका प्रतिदिन ॥ प्रकट न होयँ सूर्यनारायण। न्हाय प्रभात उदित तारागण ॥ दोहा ॥ पीताम्बर वर पहिर पुनि, पूजन थार सँजोय ॥ अरचि अंबिका प्रेमयुत, चन्दन वन्दन सोय ॥ १ ॥ (राग खम्माच चारताल में) ध्रुपद॥ बेला चमेली केतकी निवारी जुही मोतिया गुलाब दौना मरुवा मालती वसन्तमालरी। मोगरा कुसुम केवरा कदम्ब कोयलीय गुलेदावदी कनेर कुन्ती कचनालरी ॥ गुल्ल अनार गेंदादिक गहिरे गम्भीर रङ्ग चम्पा चाँदनी सो चारु सेवती तमालरी। ललन प्रिया

अमल कमल पुष्पन पुनीत पद्म पायँन लौं सजे अंग अम्बिका सम्हालरी ॥ १॥ दोहा ॥ धूप दीप नैवेद्य दै, भूषण बसन सजाय ॥ करहि वन्दना विविध विधि, उर विश्वास दृढ़ाय ॥ १ ॥ [रुक्मिणी विनय] (रागिनी भीमपलाशी शूलताल में) आर्णवछन्द॥ जननि जनपै हेरि। करुजनि अब देरि॥ तोर चरणन चेरि। गहुँ कर क्यहि केरि ॥ १ ॥ प्रभु श्रुति मलि गैल। बहु बलि खल भैल ॥ मधुकैटभ छैल। अघ प्रपञ्च शैल ॥ २ ॥ विधि विदार्ण हेत। शस्त्र लीन्ह नेत ॥ सुस्तुति अज सेत। दीन्ह विष्णु चेत ॥ ३ ॥ देख दीन दास। मधु को कियो नास ॥ महिषासुर त्रास। कियो सुरन ह्रास ॥ ४ ॥ प्रविश रुद्र देह। प्रकटि रूप गेह ॥ तेंतिस कोटि जेह। विबुध अभय भेह ॥ ५॥ सुराकै अहार। बहु बल निरधार ॥ महिषहि संहार। कियो सुरन प्यार ॥ ६ ॥ धूम्राक्ष चण्ड। मुण्ड बलि प्रचण्ड ॥ रक्तबीज खण्ड। उदधि बल घमण्ड ॥ ७ ॥ पराक्रमी शुम्भ। शर पिनाक चुम्भ ॥ निश्चरा निकुम्भ। कुमति पूर्ण कुम्भ ॥ ८ ॥ सुर सँग रणमण्ड। अमर पुरन खण्ड ॥ देवन दै दण्ड। कीन्ह सुख अखण्ड ९ ॥ विबुधन तब तोरि। हिम गिरि की ओरि ॥ विरचि विनय घोरि। प्रकटि गिरि किशोरि ॥ १० ॥ वेगि ह्वै सहाय। दियो दुख मिटाय ॥ कृपा केरि काय। दलनि खल निकाय ॥ ११ ॥ धरो यदि अनूप। मोहिनी सुरूप ॥ मुह्यो शुम्भ भूप। परो मोह कूप ॥ १२ ॥ सुग्रीव दूत जौन। कीन्हो आगौन ॥ कह तुमसन तौन। वरु मम नृप सौन ॥ १३ ॥

कहि त्यहि सन माय । लरै जौन आय ॥ जीतै रण लाय । वहूँ ताहि जाय ॥ १४ ॥ सुन
खल अस बैन । धूम्र सहित सैन ॥ दीन्हि नैन सैन । पठयो रण लैन ॥ १५ ॥ ताहि दै
हुँकार । कियो दुष्ट छार ॥ सिंहने बिडार । दियो खलन मार ॥ १६ ॥ पुनि धरि तन बाल ।
कालिका कराल ॥ कढ़ी जीभ लाल । दीर्घ दन्त भ्काल ॥ १७ ॥ नेत्र अग्निज्वाल । मुण्डन
गलमाल ॥ खड्ग कर कपाल । खप्पर विकराल ॥ १८ ॥ सृज रण तत्काल । ठोंक समर ताल ॥
चण्ड मुण्ड भ्काल । सौंप दीन्हु काल ॥ १९ ॥ रक्तबीज बङ्क । हन्यो ह्वै निशङ्क ॥ सहस दश
भुजङ्क ॥ निशुंभ वध भयङ्क ॥ २० ॥ भन्यों शुम्भ रोष । रचो रण सदोष ॥ काह प्रण प्रतोष ।
तुव वच अति फोष ॥ २० ॥ एकोहं मूढ । गह्यो खड्ग गूढ ॥ बध्यो दुष्ट पूढ । हनि खल दल
कूढ २२ ॥ देवन दुख भूर । कियोमातु दूर ॥ ह्वै मुद भरपूर । हने भेरि तूर ॥ २३ ॥ सस्तुति बहु
गाय । वाञ्छित सुखदाय ॥ याग भाग पाय । तृप्त सब भाय ॥ २४ ॥ तो कृति कमनीय । चरित
अकथनीय ॥ विधि शिव श्रीपीय । चकृत शेषहीय ॥ २५ ॥ तो सम नहिं आनि । सेवक सुख-
दानि ॥ ललन मोहिं जानि । दे हरि रति दानि ॥ २६ ॥ हे जनप्रतिपालि । कृपा करु कृपालि ।
शीघ्र ह्वै निहालि । मिलहि वन्नमालि ॥ २७ ॥ चौपाई ॥ ऋद्धि सिद्धि दाई सुखदाई । तुम
बिन कोउ न मोर सहाई ॥ तुमरी शरणागत जो आवै । जो जन तुमसों प्रेम पुरावै । ह्वै निष्कपट

तुम्हें जो ध्यावै । मनवाञ्छित वर सो जन पावै ॥ सेवै चरणकमल चितलाई । अखिल अघन
दुखते छुटजाई ॥ नेम निबह नितपूजै जोई । ताहि प्राप्त सब जग सुख होई ॥ तुव उदारता तिहूँ
पुर जानी । सुत सम्पतिदायक वरबानी ॥ जन बिपदा मोचन शिवरानी । अधम उधारणि वेद
बखानी ॥ तोरी आश मातु सब भाँती । दीजै वर मुहिं कृष्णसँगाती ॥ यहि विधि नितप्रति
दुर्गा ध्यावै । रुक्मिणि मनकी आश पुरावै ॥ सोरठा ॥ प्राणायाम चढ़ाय, ध्यावै प्रियतम श्याम
को ॥ दृढ़ सों आसन लाय, द्वादशाक्षरी मन्त्र जप ॥ १ ॥ चौपाई ॥ सङ्ग सहेलरियन रह भागी ।
खेल कूद सबहिन रुचि त्यागी ॥ ग्राम सखी आवैं मिल सारी । सन्मानै दै बातन टारी ॥ नित
अनुराग अम्बिका चरणन । राग विराग अरुचि जग कृत सन ॥ शयन समय सहचरी बुलाई ।
पूजन सामा देहि बताई ॥ प्रियकिङ्करी होत भिन्सारा । दै समग्रि पावहिं सत्कारा ॥ हरि यश
तिन्ह मुख सुनहिं सुनावैं । मज्ज भगवती भवन सिधावैं ॥ मन वच क्रमसों हरि हित पागी ।
निशि दिन हरि रटना लौ लागी ॥ तात मात लखि व्रत रुक्मिन को । अति उछाह उर आनँद
तिनको । कर वरसुरति देवऋषि केरो । कहैं भाग्य धनि कन्या तेरो ॥ धनि धनि तैं हरिपद
अनुरागी । धनि नारद तुहि कीन्ह सुभागी ॥ इति श्रीरुक्मिणीपाणिग्रहणेनारदमन्त्रोपदेशे
रुक्मिण्या गौरीपूजनवर्णनोनामद्वादशः सर्गः ॥ १२ ॥

दोहा ॥ शम्भु कह्यो सुनु भामिनी, अपर कथा सङ्केत ॥ गे नारद द्वारापुरी, सुन्दरश्याम निकेत ॥ १ ॥ सोरठा ॥ गावत राग रँगीन, हरि चरणन तन मन दिये । कर शारद को बीन, प्रेमानन्द अतीव मुद ॥ १ ॥ (रागिनी सोहिनी त्रैतालमें) नाराच छन्द ॥ बसौ सिधी नवौ निधी प्रदा प्रपुञ्जता भरी । नमो नमो कृपानिधे करो कृपा निरन्तरी ॥ ललाम शक्ति स्वामि सर्व ही समर्थ हो हरी । हरो व्यथा वरो अनन्द क्यों विलम्बता करी ॥ १ ॥ अनन्त देव हो सुभेद वेद हू मिलो नहीं । मया अपार है तुम्हार नेति नेति सों कही ॥ सदा सुखी स्वरूपशान्ति शुद्धबुद्धि आगरी । हरो व्यथा वरो अनन्द क्यों विलम्बता करी ॥ २ ॥ त्रिलोकनाथ हो अनाथ नाथ भाँति भाँति सो । विभू विशेष दीनबन्धु जक्त में बिभाति सो ॥ तुम्ही कृपा करी कुनक्र फन्दते बच्यो करी । हरो व्यथा वरो अनन्द क्यों विलम्बता करी ॥ ३ ॥ अती पराक्रमी परेश पूर्णब्रह्म निश्छली । अहै न तो समान और जक्त में यशी बली ॥ महो परे परात्म नित्य सत्यता भरी खरी । हरो व्यथा वरो अनन्द क्यों विलम्बता करी ॥ ४ ॥ समस्त ज्ञत्व व्यापके व्रती कृती नवीन है । तवै महात्म्य को करै बखान को प्रबीन है ॥ अनादि तू अनन्त तू अजन्म ईश अन्तरी । हरो व्यथा वरो अनन्द क्यों विलम्बता करी ॥ ५ ॥ सृजी सुसृष्टि व्योम को भली प्रभा दई दई । दिनेश औ निशेश आदि की छटा छई नई ॥ असंख्य तारका गणों अनूठि भाविभावरी । हरो व्यथा वरो अनन्द

क्यों विलम्बता करी ॥ ६ ॥ मही पताल नाक में सुव्याप्त होरही महा । मया तिरी भरी विमोह शक्ति युक्तिसों अहा ॥ न ओज बुद्धि शास्त्र शक्ति युक्ति भक्ति है भरी । हरो व्यथा वरो अनन्द क्यों विलम्बता करी ॥ ७ ॥ अधीन दीन तोरही सहायता सदा चहै । रती पदारविन्दकी सुध्या-नहूँ हदै रहै ॥ ललन्न सेवकै सनाथ मोददै घरी घरी । हरो व्यथा वरो अनन्द क्यों विलम्बता करी ॥ ८ ॥ चौपाई ॥ प्रमुदितगात वेष भल राजै । मुनिन अधीश विबुध शिर ताजै ॥ नाद वेदगुणज्ञाता नीता । पहुँचे हरि गृह मध्य पुनीता ॥ पाणि पुनीत वीण शारद को । आवत लख्यो कृष्ण नारद को ॥ सादर उठि धाये गृह लाये । रत्न सिंहासन ऋषि बैठाये ॥ पूजन विविध भाँति हरि कीन्हा । षट् रस अशन अमिय सम दीन्हा ॥ पुनि प्रभु ऋषि पलका पौढ़ायउ । लखि प्रसन्न मुनि वचन सुनायउ ॥ कृपा कीन्ह बहु दर्शन दीन्हा । धनि मुनि प्रमुद मोर मन कीन्हा ॥ अब यह विरचि बदिय सत भाये । कौन हेतु कर मम ढिग आये ॥ हौं जानत तुहि मुनि वर ज्ञाता । तुम जीवन जगके सुखदाता ॥ यासन विमल विहय मन शङ्का । कहिय भेद मन मुनिन मयङ्का ॥ दोहा ॥ सुनि मृदुवचन गुपालके, बोले ऋषिपति बैन ॥ बिच विदर्भ कुण्डिन पुरी, नृप भीष्मक को ऐन ॥ १ ॥ चौपाई ॥ तासु धाम हौं आज सिधावा । द्विजसेवी तुव भक्ति जनावा ॥ तासम शीलवती गृह देवी । प्रभा नाम तवचरणन सेवी ॥ ताके सुता रूप-

निधि ऐसी । देखी सुनी न तिहुँपुर तैसी ॥ कच कै धौं नागिनि के छौना । भाल सुधाग्रल भल अनहोना ॥ भ्रुकुटी बङ्क मदन धनुखण्डन । नासा शुक शोभानिधि मण्डन ॥ मधुप मीन मृग खञ्जन छवि कर । लोचन लखि लजात इन्दीवर ॥ चितवन चारु चपल चपला सी । हेरन हरण मोहिनी वासी ॥ गोल कपोल लोल अरुणारे । मञ्जु गुलाब आब हिय हारे ॥ श्रवण प्रभावति रत्नित अतिशय । हेम तरौना शोभित जिन पय ॥ बिम्बाधर विद्रुमकी लाली । लाल लजैं छवि निरखि निराली ॥ दशन कहों धौं दाड़िम दाने । धौं मुक्ता हीरा द्युतिखाने ॥ सोरठा ॥ वशीकरण मुसक्यानि, जादूधर टोना किधौं ॥ मृदु बतियन रसखानि, सुमन झरत बोलत वचन ॥ १ ॥ दोहा ॥ ग्रीवा कम्बुप्रभा छजत, पीक लीक गर कुन्द ॥ गुदित चिबुक वर बिन्दु मनु, मदन मानवत मुन्द ॥ १ ॥ (राग जोगिया तिवरा तालमें) हरिगीतिका छन्द ॥ कर कमल कोमल अमल कर अँगुली मनहुँ चम्पककली । खद्योत मोतिहु ज्योति होत मलीन नखशोभा भली ॥ कर वर हथेली कनकसी मिहँदी अरुण चूनर चिती । नभमध्य शशि लग उदित उडुगण नहन मनमथ की स्थिती ॥ भुज कमलनाल विशाल असिता कल कलाइन चूरियाँ । जिमि बालशशि थल राहु अहिगण सुधहि समुझ प्रपूरियाँ ॥ हृदि वर उदर बिच त्रिबलि नाभि सुकुण्ड अमि कटि केहरी । युग जङ्घ कदली सुरँग सुन्दर गुल्फ अनुपम हे हरी ॥ पग परम पद्म पुनीतशुभकर रुचिर जावक बिन्दुवत । मनु हेम

पातन लाल माणिक विद्रुमन जड़नादिपत ॥ कर्पूर ज्योति सुचरण अँगुरिन अर्धचन्द्र प्रभा नहन । मखतूल माखनते मुलायम पगन तरवन छवि ललन ॥ १ ॥ दोहा ॥ अँगअँगकी सुकुमारता, कहँ लग करूँ बखान ॥ लजत देखि शशिवदन शशि, ऐस सुता नृपजान ॥ १ ॥ चौपाई ॥ कान्ति अधीश कि धौं त्यहि ईशा । कान्तिसदन धहुँ कहुँ जगदीशा ॥ गौरवता गौरि ये गातकी । कुन्द इन्दुभा लजत प्रातकी ॥ हेम हिरासहि होत कपाशू । दामिनि दूरत देखि प्रकाशू ॥ चिक्कणता चित एक न आवे । माखन मखमल ग्लानि उपावे ॥ अङ्ग सुगन्ध विलास न थोरा । सौरभ सर्व मानसद तोरा ॥ नम्र स्वभाव महामति भोरी । रोम रोम छवि ले मनचोरी ॥ बोलनि हँसनि सुधानिधि ऐसी । मृतक सजीवन मूरि अनैसी ॥ जो कदापि रविफव छवि नवकी । लखि पावे नृपसुता सुखवकी ॥ ह्वै चित चकित रोक रथ अपनो । शङ्कित होत बाल धौं सपनो ॥ कहँ लगि तुम सन करौं बड़ाई । कहत न बनै लखत बनि आई ॥ दोहा ॥ सुन्दरता तिहुँ पुरनकी, विधि कै विश्वा बीश ॥ मनहुँ रुक्मिणीवदन अज, कियो छवि छविनु अधीश ॥ १ ॥ चौपाई ॥ एक दिवस की बात सुनो तौ । दशनन अँगुरि दबाय रहो तौ ॥ हहा हुहू तुम्बुरु गन्धर्वा । विहरतु चढ़ि बिमान दिशि सर्वा ॥ आय परे कहुँ कुण्डिन ओरी । रही अटा ठाढ़ि भीष्मकिशोरी ॥ न्हाय सुखाय रहीथी केशन । औचक दृष्टिपरी गन्धर्वन ॥ मूर्च्छित ह्वै महिमण्डल आनी । गिरे विकल

तन दशा भुलानी ॥ तीन दिवसलौं चेत न आई । तिन त्रिय खबर लेन चलि धाई ॥ खोज लगाय आय पति नीरे । निज पुर लै धाई पत्नी रे ॥ नृपकुमारिका नागर नवला । लाजैं देव वधू मुनिअबला ॥ अङ्ग अङ्ग की अद्भुत शोभा । ताहि विलोकि न क्यहि मन लोभा ॥ स्वर्ग पताल वितल रसातल । निरखि विमोहैं रूप सर्वतल॥ दोहा॥ रुद्राणी इन्द्राणियां, ब्रह्माणी देवज्ञ॥ पग तरवा धोवन नहीं, वा सरवरि सर्वज्ञ ॥ १ ॥ चौपाई ॥ तहां तोर ब्याहन के काजा । बात चली हमसों यदुराजा ॥ मोमन अस प्रसन्नता जामी । कोटिन निधि मनु मिलि वहियामी ॥ तुम मम स्वामि शपथ मुहि आपुनि । उमँग उठो मन मोर महा पुनि ॥ आश वास ज्यहि हीय उमङ्गन । पुरिहैं विधना ममरुचि तत्क्षन ॥ तुमहुँ सदा प्रभु अन्तर्यामी । कहत न किञ्च असत हौं स्वामी॥ तुमका कह न लक्ष जतराऊँ । दुरो पदार्थ कौन ज्यहि गाऊँ ॥ कोटिबात की यक निरबेरी । पुनि पुनि प्रभु यह मन्शा मेरी ॥ जो तुमका वह नारि चिकनियां । मिलै नागरी रूपनिधनियां ॥ तौ हमको सुख होय अनन्ता । पावैं सुख सुर सब मनमन्ता ॥ कहि यह समाचार ऋषिराई । लै आज्ञा चल हरिगुण गाई ॥ (राग सोरठ में) रेखता छन्द ॥ जो सार देखा निहार हमने है सार इस जगमें नाम हरीका ॥ असार सारा पसार माया बिसार ये ढँग है बेहतरीका ॥ १ ॥ जो मान बैठे हैं बन उसीके उन्हें न खटका कोई घरीका ॥ चैन की वन्शी बजा चैनसे भोग लगावैं

सदा खुशीका ॥ २ ॥ जाप से जारें जातिके झगड़े ताप तुजावैं ताप दुनीका ॥ धुँकादे धूनी में पाप सारे आपमें रक्खें न बल खुदीका ॥ ३ ॥ हैं वेद गीता पुरान बरनन सुर नर मुनि कवि कहन सबीका ॥ भजा सो भज्ञा भय भवसागर बास मिला वैकुण्ठ पुरीका ॥ ४ ॥ जतन जरासी जो ध्यान लावे है प्रभु प्रेम वश्य भक्तीका ॥ ललन लगा लौ बनाले अपनी न कोई हरि बिन कोई किसीका ॥ ५ ॥ [शुक उवाच] चौपाई ॥ सुनि बड़ाइ रुक्मिणि छबि फबकी । प्रिया प्रीति लागी माधवकी ॥ दिन रतिया कछु नाहिं सुहावत । खान पान निपटहि नहिं भावत ॥ नैन न नींद निशा नहिं पूरे । दहत सदा विरहानल सूरे ॥ दिन दिन होत दूबरे मोहन । भ्राता लखि सोंचत कर छोहन ॥ कह भयो अनुज मोर हरि काई । होत जात तन कृशित गुसाईं ॥ बोल सखागण वृन्द सयाने । जे हरि हितू पुनीत प्रमाने ॥ तिन्ह तन भ्रात भेद बल लेवत । अन्त न लहत खेद उर सेवत ॥ कबहूँ तीर परोसिन वृद्धन । हेर पुकार दिखावत मोहन ॥ है अचरज मम उर यह हांजी । भयो रोग कोउ कह हरिकाँजी ॥ करत विविध विधि जादू टुनवा । विविध शोच वश सगरो कुनवा ॥ सोरठा ॥ वैद्यन भ्रात बुलाय, दिखरावत गोपाल को ॥ कह गो कान्ह रुगाय, देखहु तौ मन लाय तनु ॥ १ ॥ गहि नारी कर केरि, भेद न पावत वैद्य कछु ॥ चकितहिं हरि मुख हेरि, थकित भईं गति मति सकल ॥ २ ॥ चौपाई ॥ बुधन बुलाय कहत बलदाऊ ।

हरि पत्री देखहु चित लाऊ ॥ कौन कठिन ग्रह हरिहि अरिष्टी । शान्ति उपायनु करहु सुदृष्टी ॥ लै कोविद पञ्चाङ्ग पुरातन । ग्रह बल शोधि विचारत सह मन ॥ सार समुभ्क कछु आवत नाहीं । मनहीं मन बहुविधि अकुलाहीं ॥ बल प्रतिउत्तर देत न आवत । कछु सोचत कछु भाव जनावत ॥ सोरहुँ कला जौन बुध केरी । काम न देहि एक वहिबेरी ॥ हारि हिरास होयँ यह मानैं । ग्रह निषिद्ध नहिं कछु अनुमानैं ॥ पै श्रुति मता मानि बलराई । कछु हरिकर देउ दान दिवाई ॥ सब दुख रोग व्याधि हर ताऊ । यहि सम गति नहिं आन उपाऊ ॥ [शिव उवाच] हरि माया अति गूढ़ भवानी । पावत अन्त न सुर मुनि ज्ञानी ॥ हरिकी माया हरिही जानै । नर लघुमती कहा पहिचानै ॥ (रागिनी धनाश्री चारताल में) ध्रुपद ॥ जाको वेद ध्यावत ब्रह्मा व्यास बालमीकि शारदादि नारद गन्धर्व सनकादिक मुनि वसिष्ठ । (अन्तरा) गौतम शुकदेव शुक्राचार्य जु मुनीश ब्रह्म गोरख गुण भनत शेष सहस मुख प्रतिष्ठ ॥ १ ॥ अष्टादश पञ्च त्रिय सप्तकोटि देवपती योगी राजयती सती ध्यावत श्री मुनिवरिष्ठ । अमित जासु महिमा अमित माया विस्तारि ललन खोज खोज हारो जगत जासु गति बलिष्ठ ॥ २ ॥ इति श्री रुक्मिणीपाणिग्रहणेरुक्मिणीरूपवर्णनेकृष्णौत्सुक्यमनोवर्णनंनामत्रयोदशःसर्गः ॥ १३ ॥

[शिव उवाच] दोहा ॥ अपर कथा सुन कहत प्रिय, यक दिन मुनि ऋषिराय ॥ गेकु-

ण्डिननृप सुता कृति, पेखन प्रकृति सुभाय ॥ १ ॥ सोरठा ॥ छेड़त शारदयन्त्र, प्रभु पद भक्ति रसिक मणी ॥ गावत हरियश मन्त्र, प्रेमानँद मदमत्त अति ॥ १ ॥ (रागिनी खम्माच में) दादरा ॥ तोरी सुरत पर वारी मदन मनमोहन मुरारी । (अन्तरा) बसी रहत उर माधुरि मूरति टरत न पल छिन टारी ॥ मदन मनमोहन मुरारी ॥ १ ॥ रखत लालसा दृग दरशन की हौं तुव दरश भिखारी । मदन मनमोहन मुरारी ॥ २ ॥ जय नमामि जगदीश ललन जन राखत आश तिहारी । मदन मनमोहन मुरारी ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ गये भौन भीष्मकके देवा । लखि नृप विधिवत् कीन्हीं सेवा ॥ चरण पखारि पूज दै भोजन । पुनि पलँगा पौढ़ायो राजन ॥ रानी पाँय पलोटन लागी । जेठि बधू ऋषि हित अनुरागी ॥ जान्यो मन प्रसन्न मुनि को जब । दम्पति युग करजोरि कह्यो तब ॥ [दम्पत्यूचतुः] तुम्हरि कृपासन भइ यह कन्या । भये हमार भाग अति धन्या ॥ तुम जो कह्यो हतो ऋषि नाथा । यहि लायक वरहैं ब्रजनाथा ॥ उनकी कथा कहो समुभ्काई । कस प्रताप धन बल चतुराई ॥ कह सुनाय अस वच जब सबहीं । कहन लगे ऋषि हरियश तबहीं ॥ [नारद उवाच] भादौं मास जगत सुखदाई । अन धन कल फल देन अथाई ॥ हरित भूमि शोभित द्रुम बेली । वन बागन महि उमँग नवेली ॥ नदी तड़ाग सकल जल पूरितु । पावन मन भावन वर्षा ऋतु ॥ दोहा ॥ झूलन फूलन वाटिका, दूर्वा महि

मखतूल ॥ कूलन कूलन मधुप गण, गुञ्जै मन मद फूल ॥ १ ॥ चौपाई ॥ फलित कदम्ब जम्बु अम्ब्रादिक । तरुवरान शोभा संवादिक ॥ बरण बरण खग रूप रँगीले । बोलत ऐन सुबैन सुरीले ॥ मोरी मोर नृत्य गति लावैं । झींगुर झननन झाँझ बजावैं ॥ बक पिक शुक कोकिलकी बानी । मनहुँ राग रँग रसकी खानी ॥ हंस तितुर चकोर बच आदा । मनहुँ प्रचार साज संवादा ॥ घन गर्जन मृदङ्ग धौं तबला । ताल प्रकाशहिं विद्युत प्रबला ॥ बरसैं सह बूँदरियन बदरा । जग जन ताप हरैं सुख छदरा ॥ अस भादों सुखसिन्धु मँझारी । कृष्णपक्ष आठैं बुधवारी ॥ हर्षण योग नक्षत्र रोहिणी । अर्ध निशा अँधियारि सोहिणी ॥ घिरे चहूँ दिशिते घन घोरैं । फुइयन परैं गगन ते फ्वारैं ॥ दोहा ॥ धीर समीर सुगन्धिवत, बहै सियरि स्वच्छन्द ॥ रोग सोग रिपु बलप्रदा, दहन दलन दुखद्वन्द ॥ १ ॥ सुखद समय अवलोकि अस, दीनद्याल गोपाल ॥ प्रकट देवकी उदरकरि, नँदगृह लीला बाल ॥ २ ॥ (रागिनी धनाश्री त्योरा ताल में) हरिगीतिका छन्द ॥ प्रभु अलख ब्रह्म अनादि अविगत अखिल लोकन अधिपते । अवतरे पूरण ब्रह्म नरतनु धर्मरक्षक सुखरते ॥ जनवत्स चारिहु वर्ण पूजित सन्तगण उपकारकौ । सतनीति न्यायक निपुणता निधि द्विजोपासन धारकौ ॥ श्रुति सर्वशास्त्र पुराण कुशल सुकर्म व्यौहारज्ञ वर । सुखशील गृह विज्ञान वेदन वादियन महँ पूज्यतर ॥ अतिनिष्ठ परमै क्लिष्ट सागर धनु-

र्वेद कृतीन में । प्रभु शत्रुसन्तक्षक सनातन विदित देव मुनीन सें ॥ आजानुबाहु अतीव कम्बुग्रीव सुन्दरवर्ण तन । नवनील नीरज अङ्ग अतुलित पराक्रमी प्रताप धन ॥ सम तुल्य शुभ सर्वाङ्ग ऊरू मुष्टि अरु मणिबन्धते । त्रयीथल स्थिर भौ बिपुल बाहू द्वुथल लम्बित बन्दते ॥ कचकुञ्च कुटिल कराल कोमल विमल बैन नगार से । वर नाभि कुण्ड पियूष सों शोभाय अमित प्रकारसे ॥ दृग केरु अन्त सुपाणि नख अरु चरण तरवा लाल त्रै । पग रेख केश भुजङ्ग अग्रक भाग चिक्कन जाल त्रै ॥ स्वर नाभि बाल गँभीर उदर सुकण्ठ त्रिबलित भावने । वरवर्ण मृदु श्रीवत्स लक्ष्म सुचिबुक सुभग सुहावने ॥ गल शिश्नु फीली पृष्ठ लघु त्रै घेर युत शिर जानिये । शुठि चारि रेख लिलार छान्बे अँगुलि उच तनु मानिये ॥ अंगुष्ठ मूल सुचारि रेखा विलसती शोभा सनी । हो लक्ष जिनते वेद स्मृति वक्ता विधाता यदुधनी ॥ छवि प्रवह भाभिनुसार गण्डस्थलहु युग्म समानसे । अति सुघरताई उदित उज्ज्वल अङ्ग सकल प्रमानसे ॥ नकछिद्र भ्रू दृग अस्तनै व्युपुनी श्रुति अधर शुभ कूर्परौ । मणिवन्धै जानु वृषण गलहरी बगल कर पग रदँवरौ ॥ यह जोट पन्द्रह बदन बिलसत सुभग सम सम भावसे । गज शार्दूली वृषभ केहरि चाल सरल स्वभाव से ॥ वर उच्च चौहैं लोमै मृदु मुख त्वंचा सुन्दर चिक्कने ।

१ कपोल २ कुचका श्यामघेर ३ हस्ततल ४ कलाई ५ अण्डकोष ६ ओष्ठ सन्धि ७ दन्त ८ चोहर ९ बाल १० खाल ।

अँगुष्ठ जङ्घा टङ्क बलनिधि पोर्गलित भर पूरने ॥ मुख नेत्र जिह्वा ओष्ठ तालु स्तनौ करवर पग अथा। मुख अन्तर स्थल नखहु युत नीरजइवाकारो यथा ॥ कल कुक्षि कँखरी काँध नासा नीपि छाती भाल उचि। नख त्वचा शुष्कि न लोल अँगुरिनि पोर अकचित परम शुचि ॥ श्री यश प्रताप प्रपूर्ण जननी पितु कुलोज्ज्वल अति सुघर । गौराङ्ग धी सत धर्म्म रत रोहिणी नन्दन अनुजवर ॥ प्रभु नित्य सत्सङ्कल्प त्रिभुवननाथ सबसे श्रेष्ठ मनु। जिन्ह भुज छयामहँ अखिल पुरजन सुख सहित विलसैं ललनु॥ [जन्माङ्ग वर्णन] (रागिनी गौरीरूपक ताल में) हरिगीतिका छन्द ॥ वृष लग्न जन्मस्थान निशिपति उच्चको तेजेश्वरी । तनु पुञ्ज सुख दातारु शोभा रूपदायक हरघरी ॥ शुभ सिंहराशी सूर्य्य स्वक्षेत्री सकल वश करहिं महि। बुध बलित कन्या केर पञ्चम सन्ततीदायक अतहि ॥ भृगु षट् तुलाके शत्रु नाशन अपनक्षेत्री अति बली। उच राहु राजत सप्तमे बहु त्रिया कारक चञ्चली ॥ सुत श्याम सुन्दर छवि मनोरम शनी दशमस्थानि है। नव थल महीसुत उच्च लग्निक मकर ऐश्वर्य खानि है ॥ ग्यारहें लाभ स्थान मीन बृहस्पती ऋधि सिधि करन । प्रभु अलख ब्रह्म अनादि ह्वै यशुदा भवन प्रकटो ललन ॥ (रागिनी बरुआ रूपक तालमें) जत गर्जल छन्द अर्थात् गज़ल ॥

१ पोला २ कोखि ।

उन्से छल बल चाल सयानपन जो गिरा किसीने उठालिया। ज़ो विदित है घात कला कपट सो उन्हींसे हाथ लगालिया ॥ १ ॥ रख छोड़ा क्या पूतनाने छल । आई कुचमें अपने लगा गरल ॥ वो बली छली थे उसेभी दल । निजु धाम वाहि बसालिया ॥ २ ॥ शकटा न क्यासङ्कट दिया। बधा जिस्को करके कड़ाहिया ॥ अधिकारी निजपुर का किया। उस्ने अपना काम बना लिया ॥ ३ ॥ जो के तृणासुरका फरेब था। किया जोकि छल उसे जेवथा ॥ सो जचा उन्हें सब भेवथा। धर दाँव छिनमें नशा लिया ॥ ४ ॥ वो बली बकासुर बाँकुरा। जोकि था कपट छल आगुरा ॥ तिसे मार सब दल आसुरा। चहुँ ओर जग यश छालिया ॥ ५ ॥ अड़ा जो अघासुर आनके। कपटी कड़ा अभिमानके ॥ त्यहि तान बान कमानके। यक पलमें मार ढहालिया ॥ ६ ॥ शठकाय धेनुकासुर प्रबल । किये क्या न थे छलछन्द खल ॥ तिसे बातै बातमें बलसे दल । फिर अपने माहिं मिलालिया ॥ ७ ॥ जो प्रलम्ब शठ खल वंशका। था शिरोमणि दलकंसका ॥ कर आ मता विध्वंसका। तिसे हरिने मार गिरालिया ॥ ८ ॥ वत्सासे दुष्ट मतङ्गिको। विपदा के कोटि प्रसङ्गिको ॥ मति भङ्ग चङ्ग अनङ्गिको। वहि थे जो उसको हरालिया ॥ ९ ॥ कर उखल बन्ध बँधायके। यमलार्जुनै सुख छायके ॥ तिनको स्वलोक पठायके । निज बन्धनैं छुड़वा लिया ॥ १० ॥ बिधि ग्वाल गाय चुरालई । उनसीहि वेगि सृजालई ॥ लखि चारु केलि नई

नईं। अज पाद पर परचा लिया ॥ ११ ॥ गिरिरूप धारि पुजादियो । ब्रज केर मान मना दियो ॥ निज भेव जक्ष दिखा दियो । सुरराज रोष दिवालिया ॥ १२ ॥ गिरिको उठाय बचा पुरी । घननाथ कोप ले घनकुरी ॥ करि घोरवृष्टि बहादुरी । न हरीसे कुछभी बिसालिया॥१३॥ जलदूत नन्द लिवागये। तत्काल नाथ तहां गये ॥ जल ईश शीश नवागये । लै तात गृह रस्तालिया ॥ १४ ॥ अहि को हवाल अपूर्वहो । हित भक्ति पादै आ गहो ॥ सुरधाम बास वहो लहो । गति मोक्षपदवी पालिया ॥ १५ ॥ गये काली गेंद निकालने । कोई जाना हाल न ग्वाल ने ॥ विषधारि ब्याल गुपालने । उसे जाके पलमें नथालिया ॥ १६ ॥ फिरे कोटि कञ्ज लदाय के । नटवरका रूप बनायके ॥ नृत कीन वेणु बजायके । पितु मातु ग्राम लुभालिया ॥ १७॥ अक्रूर सङ्ग सिधारके । जलरूप ब्राट विहारके ॥ मन तासु मोहि सम्हारके । पुनि अपनि ओर अमा लिया ॥ १८ ॥ रजकै प्रबध्य विवादसे । पट छीन तासु प्रमाद से ॥ मिलके सुदाम समादसे । कीन्हों कृतज्ञ वो मालिया ॥ १९ ॥ कुबरी जो चन्दन लावती । हरि केर अङ्ग लगावती ॥ तनु रूप सुन्दर पावती । लखि प्रेम प्रभु अपनालिया ॥ २० ॥ मथुरेश द्वार पधारके । कुबलीय कुञ्जर मारके ॥ चाणूर मुष्ट प्रहारके । पुर कंस मार छिनालिया ॥ २१ ॥ उन पा विजय भरपूरही । रजधानि उग्र कि जो रही ॥ प्रभु ताहि दै कीरति लही । नहिं दानि हरिसा दयालिया ॥ २२ ॥

जरासन्ध कालयवन बली । रण राचि जीत महा छली ॥ मुचुकुन्द दै भक्ती भली । मुर शत्रु गात तमालिया ॥ २३ ॥ वृन्दावनै सरनाम जो । वह कीन्ह पावन श्याम सो ॥ जग जीवनै सुर धाम वो । जहँ मोक्षहू वासालिया ॥ २४ ॥ प्रभु रचि रहस्य विशालसा । परिपूरि भामिनि लालसा ॥ शिवदेव सन्त हिया लसा । मुरली बजा भरमालिया ॥ २५ ॥ पुरि सिन्धु बीच विहारकी । मणि जटित हेमकि त्यारकी ॥ करके विलास अपारकी । उनसा नहीं प्रतिपालिया ॥ २६ ॥ जन मन के भाये काज जो । प्रभु कीन्ह हैं बिन लाज सो ॥ तुम्हरेहु लाज जहाज को । निरबैरि है वनमालिया ॥ २७ ॥ जोइ रखता हरि पै भरोस है । उसे दे वही सन्तोष है ॥ जब के दाया उसकी का जोश है । कोइ क्या करैगा मलालिया ॥ २८ ॥ वसुदेव देवकि नँदनँदन । जन तोर मैं यशुदाललन ॥ रख नाथ मुहि अपनी शरन । तुमसे मैं प्रेम लगालिया ॥ २९ ॥ इति श्री मद्भागवतान्तर्गतदशमकथायांहरिप्रभाववर्णनंसमाप्तिमगात् ॥

सोरठा ॥ पूर्णब्रह्म सुखधाम, घट घट व्यापक स्वामि जग ॥ जन बश नित बिन दाम, करुणा-सिन्धु खरारि नम ॥ १ ॥ दोहा ॥ जो जन सांचे प्रेमसों, हरि चरणन चित देत ॥ मनवाञ्छित जन सुफलकर, वेगि विपति हरलेत ॥ १ ॥ चौपाई ॥ ऐसे सुन्दर श्माम कन्हाई । रूप राशि नीरधि नि-पुणाई ॥ गुणन ग्राम बलधाम धुरन्धर । श्रेष्ठ कुलीनाध्यक्ष पुरन्दर ॥ विद्योदधिधनि तेज प्रतापा।

धर्म्मि सुकर्म्मि परम सुघरापा ॥ दया मया परमार्थि अनापा । ज्यहि यश देव मुनीन्द्र अलापा ॥ सरल स्वभाव सकल सुखदाई । तिन्हैं सुताकी करहु सगाई ॥ सफल होय जग जीवन सारा । यश तुम्हार हो जगत अपारा ॥ सुनि अस वचन देवऋषि केरो । सकल सराहन लगे घनेरो ॥ धनि धनि तुम कृपालु मुनिनाथा । कीन्हों वंश हमार सनाथा ॥ रुक्मिणि सुनि गुरु वचन पुनीता । भइ अभिलाष मिलहिं कब मीता ॥ मनहीं मन गुरुबन्दन कीना । बाढ़ो हरिसों प्रेम नवीना ॥ (रागिनी खम्माच त्रैतालमें) पद ॥ रखो लाज महराजा राज जग जीवन यदपि दियोरे । (अन्तरा) चञ्चल मन मूरख मम ऐसो कुटिलहि काम कियोरे । क्रोध सों नेह बढ़ाय महा चित चिन्ता माहिं दियोरे ॥ १ ॥ गहि गुमान अभिमानी मदसों दुष्ट कर्म्म परखोरे । फल ताकोहि पाय कमाय ओघ अघ सर्वानन्द छियोरे ॥ २ ॥ प्राकृत जीवन सम ममता कर परस अज्ञता पियोरे । सब आपा आप विहाय हाय धिक् मन लगि त्रास जियोरे ॥ ३ ॥ मोही महा मरो मदपै हरि माया माहिं भ्रमोरे । अब क्षमहु नाथ अपराध मोर मृष जन्महि जात खियोरे ॥ ४ ॥ त्राहि त्राहि शरणागत स्वामी मन वचसों विनयोरे । श्रीनँदललन द्रवहु करुणाकर भा बहु विकल हियोरे ॥५॥ इतिश्री रुक्मिणीपाणिग्रहणेनारदभीष्मकदम्पतीसंवादेकृष्णगुणानुकीर्तनवर्णनोनामचतुर्दशः सर्गः ॥१४॥

दोहा ॥ नारद हरि यश गावते, गये पितामह धाम ॥ दम्पति मन अभिलाष बढ़ि, दरश हेतु

वसु याम ॥ १ ॥ (रागिनी कान्हड़ेकी बहार इकतालामें) पद ॥ श्याम श्याम श्याम श्याम श्याम सुमिरु भाई । (अन्तरा) कुल सुत परिवार वाम, ऐहैं नहिं एक काम । निज सुख केरे गुलाम, नाती समुदाई ॥१॥ धान्य आन्य ग्राम धाम, वाहन गज तामझाम । रहिहैं सब यही ठाम, काल जब डसाई ॥२॥ कोह मोह लोह द्रोह, तृष्णा मद अर्थ छोह । पाप ताप कर्म वोह, गांठ गृह धराई ॥ ३ ॥ जप तप मख व्रतविधान, तीर्थ गो न दीन्ह दान । ललन ह्वै निदान अन्त, परिहै पछिताई ॥४॥

[शुक उवाच] चौपाई ॥ ऋषि यश कहतहुते नृप रानी । आयो तबहिं रुक्मि अभिमानी ॥ पूछ्यो कह चरचा गृह छाई । को ऋषि क्यहिकी करत बड़ाई ॥ सुनि सुत प्रश्न ताल हित लाई । निज ढिग रुक्मि लियो बैठाई ॥ नृप नारद यश वर्णन लागे । सुता देन हरि हित अनुरागे ॥ सुनि चौंक्यो कर महि दै मारे । भौं चढ़ाय मस्तक बल डारे ॥ लाल लाल करि लोचन बांके । बोला को ऋषि कृष्ण कहांके ॥ बौराई मति तोर तात है । सठियानी तो सङ्ग मातहै ॥ बूढ़ भये मति तोर हिरानी । लोकलाज कुलकानि सिरानी ॥ तू अहीर को देइ जो कन्या । नृप सुनि कहा कहें तुहि धन्या ॥ जातिहीन कुलछीन मलीना । सुता ताहि दै पुनि जग जीना ॥ दोहा ॥ धिक् जीवन जग जन्म तुव, जिय नहिं किञ्चित् ग्लानि ॥ शुभी समुझ अनगैरि कहँ, करि विश्वास जुड़ानि ॥ १ ॥ चौपाई ॥ यश अपयश कुछ परत निहा-

रा। जो तैं अस मनमाहिं विचारा ॥ वह कुरूप कारो कागासो । सुता मरालि गौरवर्णा सो ॥ कामधेनु रुक्मिणि सुकुमारी । वा लायक नहिं बहिन हमारी ॥ सुता शशिहि वह राहु समाना । कहँ बबूल कहँ सुरतरु भाना ॥ कारी कामर हाथ लकुटिया । धेनु चरैया अति लम्पटिया ॥ वाहि देत तुम राजदुलारी । को दरहो तव जगत मँझारी ॥ पञ्चनमें पति जाकी जावै । सो फिर मुख जगमें दिखरावै ॥ हम शाखनके नृप सरताजा । उहि कुल भयो कौन कहँ राजा ॥ जो तैं वा सँग ब्याहै छोरी । नाक कटै भूपन बिच मोरी ॥ अहिर गँवार लवारहि खोटा । वर ढूँढ़ो यशुमति को ढोटा ॥ दोहा ॥ और नृपति संसारमें, रहे न तुमका कोय ॥ नँदहि छबीरा छोहरा, सूझ परो जग तोय ॥ १ ॥ चौपाई ॥ यासे तो विष बिसहि मँगाओ । सो कन्या को घोर पियाओ ॥ कै धौं करो प्रहार कटारी । नहीं बुड़ावहु सिन्धु मँझारी ॥ है भल भाड़ झोकबो यातो । भल न जोड़बो वा सँग नातो ॥ जो नहिं राखहु मेरो माना । तौ कुल मार करहुँ खरियाना ॥ जनहु न मुहिं मैं शिव वरदानी । दशहजार गज सम बलवानी ॥ करिआदर कादर सँग नाता । नाम डुबावत कुलको ताता ॥ उतावली अस मत पितु कीजे । * सोच बिचार तनक मन

* उक्तंच " श्लोकः-सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परमापदाम्पदम् । वृणते हि विमृश्यकारिणं गुणलुब्धाः स्वयमेव सम्पदः ॥ १ ॥ अर्थ-कहा है कि, चट पट कोई काम न करै क्योंकि, बिना विचार करना आपत्तियों का स्थान है सोच विचार के करने वाले के निकट सम्पत्ति (सब सुख) आपही प्राप्त होती हैं कारण कि, ये गुणके लोभ में आसक्त रहती हैं ॥ १ ॥

लीजे ॥ पति चँदेरि दमघोष कुमारा । है हौं लायक सब विधि भ्वारा ॥ धन बल कुल सुरूप गुणआगर । कोटिन नृपति सहायक जाकर ॥ ता सँग पिता कुमारि विवहिये । सुयश होय तुव जग यश चहिये ॥ [शिव उवाच] दोहा ॥ देखि कुमति रति अमित विधि, रुक्मि हठी हठि नेति ॥ विधिगति प्रबल बिलोकि नृप, कीन्ह वेद वच चेति ॥ १ ॥ * एक भवनमें द्वै मता, भक्ति कहां ते होय ॥ खसम अराधै देवता, भूतपूजनी जोय ॥ २ ॥ सोरठा ॥ पुनि नृप यह मन शोच, उलटी रीति जहानकी ॥ लखहिं न सुत मति पोच, बड़न दोष सब देन लगि ॥ १ ॥ रोष सकोच सलाज, धीरजधर अवसान युत । हेतु सुधारन काज, मन वचसों उद्यत नृपति ॥ २ ॥ कुँवर मता पुनि लीन, अधम उचारै कृष्णबदि ॥ धरि सनाम बहुबीन, उचितानुचित न ध्यान तब ॥ ३ ॥

* यथा श्लोकः-क्रोधान्धाः शिशवः सवारि सदनं पङ्कावृतं चाङ्गणं शय्याकीटवती च रूक्षवसनं धूमेन पूर्णं गृहम् ॥ भार्या निष्ठुरभाषिणी प्रभुरपिक्रोधान्धदृष्टिः सदा स्नानं शीतलवारिणा च सततं धिग् धिग् गृहस्थाश्रमम् ॥ १ ॥ सानन्दं सदनं सुताश्चसुधियः कान्ता प्रियालापिनी स्वेच्छा पूर्णधनं स्वयोषितिरतिः स्वाज्ञापराः सेवकाः ॥ आतिथ्यं हरिपूजनं प्रतिदिनं मिष्टान्नपानं गृहे साध्यं सान्ध्यमुपासते प्रतिदिनं धन्यो गृहस्थाश्रमः ॥ २ ॥ अर्थ-क्रोधसे अन्ध पुत्र, और पानी भरा घर, तथा कीचड़सना आँगन, व खटमलों से भरी खटिया, और चुभनेवाला वस्त्र, व धूयें से पूर्ण मकान, तथा कटुबोलनेवाली भार्या, और स्वामी भी क्रोधान्धदृष्टिवाला और (जाड़ेमें भी) शीतल जल से स्नान करने को मिलना, ऐसे गृहस्थाश्रमके लिये धिक्कार है ॥ १ ॥ (किन्तु जिसमें) सुखका सदन, और सुत बुद्धिमान्, तथा अर्धाङ्गिनी प्यारसे बोलनेवाली, व अपने मन माना धन और अपनी प्रियासे सङ्गम, तथा नौकर आज्ञानुसार चलनेवाले, और प्रतिदिन भगवत्पूजामें लीन, व मीठा भोजन पान मिलना, और बनपड़े जहांतक नित्य सन्ध्योपासन करना, ऐसे जिस (घर) में हैं वह गृहस्थाश्रम धन्यहै ॥ २ ॥

दोहा ॥ भीष्मक कह सुत कहु न अस, अबतैं कछु न नदान ॥ बुद्धिमान ह्वै भुलत पुनि, ऋषि वच वृथा न जान ॥ १ ॥ चौपाई ॥ पूर्णब्रह्म अवतार कन्हाई । जिनकी सुर मुनि करत बड़ाई ॥ तैं तिनको निन्दत अस बेटा । मनु उनसम कोउ जगति न हेटा ॥ वर्ण सितासितको कह लेखा । जग जन रूप अनन्त अलेखा ॥ सजन सुजनता कीर्ति बड़ाई । सो तैं ले भल भांति शुधाई ॥ तब निज मुख सुत कहु अस बतियाँ । नाहक रिसकर जरवत गतियाँ ॥ यकसों यक जग बली कराला । नाति सँगाति जातिधर भ्वाला ॥ नहिं मद नीक न हरि सहि सकहीं । लघु मुख बड़ वच जनि कह चहहीं ॥ (दृष्टान्त) एक दिना गाण्डिव धनुवारा । प्रभुसों भरि अभिमान उचारा ॥ जो न होत मैं भारत माहीं । तौ रिपुरण जय होतिहु नाहीं ॥ अष्टादश सहस्र रिपुसैना । तिन्ह प्रहार हौं कीन्ह कुधैना १ ॥ दोहा ॥ अजहुँ धनुष बल शरों कर, सुरपुरलौं यदुनाथ ॥ रचि सोपान विरच सकूँ, जग जन बिलसन पाथ ॥ १ ॥ सोरठा ॥ गमनैं बहुरि न कोय, यमपुर के मार्गहिं कबहुँ ॥ स्वेच्छागामी होय, लहहिं स्वर्ग सुख सर्व जन ॥ १ ॥ चौपाई ॥ अहि रिपुसुनि अर्जुन की वाचा । इनहुँ लगो उर घमँड तमाचा ॥ गरुड़हु इमि निज बल मदमांते । कहन लगे हरिसों यहि भांते ॥ यक मुहूर्त महँ अगणित योजन । मो बिन तुम पहुँचा सक को जन ॥

१ सिढ़ढी=नसेनी ।

पुनि यहि विधि हरि युवति परस्पर । कहहिं अहंकृति में ह्वै तत्पर ॥ केवल प्रभुहिं न रुक्मिणि प्यारी । हमहुँ सबहिं हरि प्राण अधारी ॥ सोइ प्रभु दीनदयालु प्रवीना । तिनहुक गर्व विभञ्जन कीना ॥ खगपति सों यों नाथ बखाना । यक किम्पुरुषखण्ड सुस्थाना ॥ तहँ यक परमभक्त मम जोई । हनुमत नाम बानरा सोई ॥ त्यहि ढिग जाय कथहु यह गाथा । जो रविकुलमणि श्री रघुनाथा ॥ राजतहैं द्वारा यहि काला । बोल पठायो तुहिं चलु हाला ॥ दोहा ॥ लै निज सङ्ग विहङ्गपति, अङ्गालसहि विहाय ॥ शीघ्रगामि तुम शीघ्रजा, मो ढिग लाउ बुलाय ॥ चौपाई ॥ प्रभु आज्ञा गहि गरुड़ सिधाये । तुरत अञ्जनीसुत ढिग आये ॥ बार बार हनुमत कहि टेरा । वे समाधि लवलीन न हेरा ॥ अहिअरि पुच्छहि गहि हनुमन्ता । झटकि जगायो अतिबलवन्ता ॥ जगि हनु लांगूलै फटकारा । युगशतपाणि दूर त्यहि डारा ॥ कछु पँख नश महि मूच्छित व्यापा । बार बार मुख राम अलापा ॥ सुनि श्रीराम नाम सुतपवने । जचि हरिजन समीप तब गमने ॥ विकल बिलोकि बहुरि हरियानू । प्रभु प्रति विनय भनी हनुमानू ॥ यदि दयालु मोजनपर स्वामी । हरिय वेगि यहि दुख यहि यामी ॥ प्रणपालक सुनि बचन कपीशा । जन बच सुफल कीन्ह जगदीशा ॥ सावधानि धरि उठि वहि बारी । हनुहि प्रणाम कीन्ह अहिहारी ॥ दोहा ॥ लखि प्रफुल्ल नागारि पुनि, पूँछि कुशल हनुमान ॥ को तुम श्रीहरिभक्त किमु,

मोलग कीन्ह पयान ॥ १ ॥ [गरुड़ उवाच] सोरठा ॥ हे समीरसुत बीर, श्री रघुवंशिन मुकुटमणि । जानकीश रणधीर, राजहिं यह छिन द्वारिका ॥ १ ॥ चौपाई ॥ दरश देन तुमकाहिं बुलावा । लै सँदेश प्रभुकर हौं आवा । हुइ मम पृष्ठ नाथ आसीना । चलिय वेगि श्रीहरि आधीना ॥ सुनि विहङ्ग अधिपति मुख बैना । वचो विहँसि हरिपदरति ऐना ॥ चलिय भक्तहौं करिजप पाछे । तुमसुँ अग्र आपहुँचिब आछे ॥ नागशत्रु सुनि हनुमत वाचा । अति आश्चर्य हीयबिच राचा ॥ मोसम को जन शीघ्रहिगामी । मदमण्डित महान नभगामी ॥ गहि खगेश आज्ञा हनुमतकी ॥ चले वेगि हरि मिलन सुरत की ॥ कृत्यहि करि समाप्त भलरीती । धारि राम उर अन्तर प्रीती ॥ वायुपूत त्रैडग धरि त्योंही । प्रभुसमीप पहुँचे चलि ज्योंही ॥ प्रभु विलोकि आगम हनुजीका । तियन ओर लखि पुनि इमिटीका ॥ जाम्बवती रुक्मिणि सतभामा । अष्टसंख्य[1] जो मम प्रिय वामा ॥ दोहा ॥ तुम महँ जो कोउ सीय छवि, धारि सकहि यहि काल ॥ सो मम ढिग आसीन हो, अवर थिरहि नहिं बाल ॥ १ ॥ चौपाई ॥ नतु यहि कपि जुइ मम तट आवत । भक्ति लिहै बिन शङ्क यथावत ॥ सुनि अस कहनि युवति हरिकेरीं । अखिल ओर रुक्मिणि मुख हेरीं ॥

[1] गिनती में आठ ।

धारि न सकीं जनकजा भा को । लजितभईं मदखोइ हियाको ॥ सोइ प्रभु रुक्मिणि टेरिसुनायो । त्यहि छिन सीतारूप बनायो ॥ लखि दोउ इष्टदेव कपिराजू । कीन्ह प्रणाम मुदित रघुराजू ॥ आनि गरुड़ हनुमत कहँ देखा । चकित स्वामी आज्ञा पाइ बहोरी । प्रभु समीप बैठे कर जोरी ॥ लजित ग्लानि विशेखा ॥ अथ आजानु बाहु नरगाता । हनुसों विहँसि भनी अस बाता ॥ सुनिय अहो प्रिय अञ्जनिलाला । अति बलिष्ठ अर्जुन यहि काला ॥ पवनतनय बोलेउ इमि गाई । होगा का कछु अचरजताई ॥ (राग पूरियादिवसी चारतालमें) मनहरण कवित्त ॥ पुनि दरपानी इमि भानी हनुमन्त प्रति गाण्डीव धनुषधारी अर्ज्जुनै गुमान है । कहै अस वाचा निज बलके प्रताप कछु स्वर्गलो नसेनी बाँधूँ ऐस अरमान है ॥ अञ्जनीललन काथ बांधसकै होगो नाथ हनु निंदरायो सुनि पाण्डव रिसान है । चाप गहि शायकले आपने सहायक जे बांधिकै दिखाऊँ कहो तबतो प्रमान है ॥ १ ॥ चौपाई ॥ पेखि प्रमाद अर्जुनहिं भारी । कह हनुमत बाँधिये बलधारी ॥ पण्डुतनय भरि जोम कराला । दृढ़ पैंकरी सृजइँ तत्काला ॥ वायुसुवन तिन्ह कहेउ चिताई । भूरि परिश्रम करिय न भाई ॥ यह कृति तुम्हरि देखि हम लेई । पुनि अगारि रचिये अरु तेई ॥ इमि जोइ हनु सिड्ढिन पग धारा । खण्ड खण्ड भइँ अखिल अपारा ॥ बहुरि विरचि बहु दृढ़ करि जोऊ । चरण धरत पताल धसि सोऊ ॥ तब तु क्रोध भरि पण्डुकुमारा । अतिहि

क्लिष्ट यह प्रण मनधारा ॥ कै नसेनि दृढ़ बाँध मनौंगो । नहिं चुन चिता पजारि मरौंगो ॥ जन प्रण जानि कठिन भगवाना । सेवक लाज काज प्रद माना ॥ कूर्मरूप धरि गिरिवर धारी । तर नसैनिजा रुपे मुरारी ॥ दोहा ॥ अलख अनादि अनन्त अज, अविगत अगम अपार ॥ जन रुचि रक्षक प्रभु सदा, तिन्ह चरणन बलिहार ॥ १ ॥ चौपाई ॥ जोइ सुत वायु पाद पुनि रोपा । टूटि न युगहु चरण धरि कोपा ॥ तहुँ न विनाशि हनु हीय विचारा । अरु अतीव अचरज उर धारा ॥ मोसम अरु को बली कराला । जो मम बल सहार सक हाला ॥ अस कहि हनुतर ओर निहारे । कमठरूप प्रभु पेखि सुखारे ॥ शोणित प्रबह पृष्ठते बहही । इष्टदेव इमि दुख अँग लहही ॥ त्राहि त्राहि कै त्याग नसैनी । धरनि जाय भे ठाढ़ अचैनी ॥ भन्यो भ्रात तुम भगवद्रक्षा । हैं प्रभु तुव रक्षा अनुरक्षा ॥ पै अब इमि अभिमान अमूला । कबहुँ न हरि जन धारिय भूला ॥ परख प्रमाणि सहायक स्वामी । अर्जुन मद नाश्यो उहि यामी ॥ हिय लजान अति ग्लान उपाजी । मद शठता जा दूर बिराजी ॥ दोहा ॥ पन्नगारि से पराक्रमि, अर्जुनसे बलवान ॥ तिन्ह मद यक पलमात्रमें, भञ्जि दियो भगवान ॥ १ ॥ सोरठा ॥ पटरानिन समकौन, अहंकार तिनको नश्यो ॥ दश मुख अतिबलि जौन, सोउ मद करि क्षय है गयो ॥ १ ॥ मम अनुभव सतिजान, हनहिं सबन मद सदा हरि ॥ मदहारी भगवान, यासों

मान नदान सुत ॥ २ ॥ (रागिनी ज़िला बरुआ गज़ल ताल में) हरिगीतिका छन्द ॥ यह सों हे प्रिय सुत रुक्मितैं मन सोच समुझि विचारले । तजि रोष कोष भरोस तोरहि भगिनि काज सुधार ले ॥ करु नात श्री नँदलाल सँग नहिं दोष कोउ चित आनि हैं । जग सुनै जौन प्रशंसनिय सो सुयश तोर बखानि हैं ॥ सुनि तातमुख हरिनाम पुनि शठ दुगुणि रिस उर धारके । नक भ्रू मरोर सकोर यहि विधि कहत भयो पुकारके ॥ १ ॥ [रुक्म्युवाच] (रागिनी खम्माच त्रैताल में) पद ॥ श्याम को सगाई में ना करि हौं पितु श्याम को सगाई में ना करिहौं रे । (अन्तरा) मम सम जो नृप हो कुल बलमें ताको मैं भगिनी बरिहौं रे । लम्पट कुटिल कुमारगगामी नाम तासु उचरिहौं रे ॥ १ ॥ हैं दमघोष चँदेली को भूपति तासुत के तिलकहि सरिहौं रे । शील स्वभाव बली गुण आगर ताशिर मौरहि धरिहौं रे ॥ २ ॥ जरासन्ध सम जासु सहायक ताके मैं पायँन परिहौं रे । धेनुचरावत बाल ग्वाल ता सँग रुक्मिन न भमरिहौं रे ॥ ३ ॥ जो पितु वचन न मानहु मेरो तो प्राणन परिहरिहौं रे । कै कुल नाश करौं यक छिन में अपनो प्रण नहिं टरिहौं रे ॥ ४ ॥ नारद वचन बतावत साँचे सो मैं नैन निहरिहौं रे । शिशुपालहि व्याहौं रुक्मिणि को नन्दललन से न डरिहौं रे ॥ ५ ॥ सोरठा ॥ सुन रुक्मीके बैन, कुलजन समझावत सकल ॥ तैंनृप बुद्धिहि ऐन, पुनि यह कह चीतत चितै ॥ १ ॥ (राग विहाग त्रैतालमें

पद ॥ छैल तोरी नेक न गइ रे नदानी छैल तोरी नेक न गइरे नदानी । (अन्तरा) बिन गुरु सीख मिलत कहँ शुभमति वेदन साँचि बखानी । निगुरो ह्वै चतुरा बन बैठो दरशावत बुधि-वानी ॥ १ ॥ पितु वच कर अपमान सभाबिच यह तुहि चाहियत भानी । बुद्धिनिधान बनत अपना को सो कछु परत न जानी ॥ २ ॥ पितु प्रणपालक पुत्र पुनीता सोइ पण्डित सोइ ज्ञानी । तोरे हठ कहुँ हानि होय कछु हँसि हैं तुहि जग प्रानी ॥ ३ ॥ तैं गहु मौन व्रती मन रिस कर रारि ललन क्यों ठानी । तात मात कुल भ्रात दुखित हों तो तोरी यहि में हानी ॥ छैल तोरी नेक० ॥ ४ ॥ (राग एमन चारतालमें) कवित्त ॥ भूते गुरु जननि औ नभ ते जनक उच्च तीर्थ सुर कर्म धर्म जप तप रूप जे । जिन्ह पद सेये सन काम क्रोध मोह मद तृष्णा हूँ तिरात ना थिरात अघकूप जे ॥ तृणते महानतर चिन्ता हू चकौनि चित दीखैं न चितौन चच्चु कोर लों सुरूप जे । विधि विष्णु शिव अनवद्य औ अनादि ब्रह्म ललन सुखद साँई तात जगानूप जे ॥ १ ॥ ॥ (रागिनी गौरी त्रैताल में) कवित्त ॥ भवन भलाई जोपै भामिनी सुशीला होय वाम की भलाई जो सुहाग सुतवारी होय । नर की भलाई जो सुमति गुणवान होय सङ्गति भलाई ब्रह्मज्ञान अधिकारी होय ॥ नात की भलाई जो लखण सम भ्रात होय तात की भलाई राम सो सुत सुखारी होय । पुत्र की भलाई मात पितु आज्ञाकारी होय हित की भलाई नन्दललन

सों यारी होय ॥ २ ॥ दोहा ॥ नर तन दुर्लभ समुझि जन, करिय न वेद विरुद्ध ॥ अनुमत श्रुति विख्यात यह, करणी करिय विशुद्ध ॥ १ ॥ (रागिनी धनाश्री चार तालमें) मनहरण कवित्त ॥ दानीही कुबेर का गुमानी दशकन्धर का मानी गोपिकाही काह ध्यानी ध्रुव ध्याइये । बली अरजुन काह छली यामिनीश काह द्यूतईश पाण्डो काह कौरव गनाइये ॥ वीर काह धीर का अमीर का फकीर काह पीर बिन पीर का सुशीलता सुहाइये । करनी को ईश कोहै करै को प्रतीश वोहै ललन भनत कियो कर्म फल पाइये ॥ १ ॥ (रागिनी पहाड़ी झँझोटी त्रैतालमें) सवैया ॥ जीवतही तनको जग नात सुखीयहि देखि सबै अपनावत । आन परै कछु भीर उभीर सगो अपनो सोउ नैन छिपावत॥ ये कलिकाल महीं ललनै सुखसार यही जो हरी हर ध्यावत । कोउ न काहुके सङ्ग चले अपनी करनी सोइ पार लगावत ॥ २ ॥ दोहा ॥ सुनहु सकल मम कान दे, हे रजवंशी पूत ॥ यक बालक यक चन्द्रमा, यक छेरी को मूत ॥ १ ॥ कृष्णभक्त सो चन्द्रमा, पिताभक्त सो पूत ॥ काज बिगारनहार जो, सो छेरी को मूत ॥ २ ॥ [सर्वजना ऊचुः] सत्य सत्य तुव कथन नृप, असत न कछु यह मांझ ॥ करत ललनपन तैं रुकम, निष्प्रयोजनिक

१ सदश=सम्मत ।

झांझ ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ बड़नुकाहिं जो कोउ सन्मान्यो । तिनकह सफल जन्म जग मान्यो ॥ जन समस्त रुक्मै समुझावा । वाके मनहिं न एकहु आवा ॥ कह्यो उलट तुम को बड़ थापू । दरक देत मो बिच जो आपू ॥ तुम को मम सरपञ्च कहाये । किन्हहुँ करन पञ्चायत आये ॥ तुम का कौन बुलावन गयऊ । बड़ बड़ात बहु चतुरा भयऊ ॥ चलभे धर बड़ पग्गड़ शीशा । मनहुँ हमार पूज्य कुल ईशा ॥ बहु बुधिमानी अपन दिखावत । औरनको शिशु मूर्ख बनावत ॥ जहँ सलाहिया तुम सम लोगू । तहँ कस बनव शुभग संयोगू ॥ चल चल बासहु भवन आपने । आये मम गृह क्लेश थापने ॥ अस भाषत चलिगा रनवासय । लै खट पाट पड़ो बिन आशय ॥ दोहा ॥ सुमुखि बिलोक अनीति अति, पति ढिग कहि अस जाय । तुहि पिय लालच लोभ कह, जो जिद्दत हठिलाय ॥ १ ॥ चौपाई ॥ जननि जनक बड़ बूढ़ तिहारे । करहिं चहैं जस का तुहिं प्यारे ॥ सुने हमहुँ नँदसुत यश भारे । जबते ब्रजमोहन अवतारे ॥ हने निशाचर अमित मुरारी । बहु प्रताप बलवान अपारी ॥ बोल ले आयो हरि अक्रूरे । भञ्जन कीन्ह कंस नृप क्रूरे ॥ दइ रजधानि उग्रसेनैको । लोभ छोभ जिनको नहिं नैको ॥ हम सँग नात करे कह दोषू । बहु गुणज्ञ कुल सम्पति कोषू ॥ सुमुखि कथन सुनि श्याम प्रशंसा । बोल्यो कुमति सुयश विध्वंसा ॥ कह अहीर की भनत भलाई । हौं भल जनहुँ जासु कदराई ॥ जरासन्ध सँग रण

त्यज भागा । कालयवन सन आहँव त्यागा ॥ ऐस सङ्ग मैं करहुं जो नाता । बिगरजाय मम सकलहि बाता ॥ दोहा ॥ सुनि पिय वच त्रिय भन्यों पुनि, तुम न जनहु यह हाल ॥ ज्यहि कारण रण त्यागकर, भगे मदनगोपाल ॥ १ ॥ चौपाई ॥ सो हौं वरणि सुनावत हाला । ज्यहि विधि मैं सुनि राख्यो भ्वाला ॥ जरासन्धकी सुता युगलहीं । अस्ति रु प्राप्ति रूपनिधि भलहीं ॥ कंसभार्या युग्महि जानों । जबहिं कंसवध यदुपति ठानों ॥ कन्तवधन लखि दोउ सिधाई । जाय जनक प्रति व्यथा सुनाई ॥ मार्‍यो नाथि नाथ मम माधो । कठिन कराल वैर बद साधो ॥ हम सुहाग नाशक गोपाला । रहै तोर जीवत खुशहाला ॥ कन्तकदन मधुवन रजधानी । हा पितु हरि नृप होत निदानी ॥ है हम जियब वृथा जग ताता । जो तुम हनहु न गोबिंद गाता ॥ पुत्रिन रुदत बिलापत पेखा । उपजा नृप हिय शोक अलेखा ॥ तबहिं जरासँध कोपि कराला । रणहित जाच्यो आ नँदलाला ॥ पाचि हारो करब्बल बलसारा । कबहुँ न जितो लड़्यो बहु बारा ॥ दोहा ॥ जरासन्ध हार्‍यो जबहि, सत्रह खन यक सङ्ग ॥ प्राण हतन प्रण ठान तव, मन्त्रि रच्यो यह रङ्ग[१] ॥ १ ॥ सोरठा ॥ किमु नृपाल मन थोर, हरिजीतव कह कठिन कृति ॥ ध्यान धरहु सिख मोर, ब्रह्मभक्त नँदललन बड़ ॥ १ ॥ चौपाई ॥ महिसुर बोलि पठावहु हाला ।

१ संग्राम ।

सैन्य सिपाह सजाय कराला ॥ इमि नृप मधुपुरि करहु चढ़ाई । हो तुव निश्चय विजय बड़ाई ॥ निरखि विप्रगण यदुकुलसाईं । कबहुँ न तुम सन लड़ब गुसाईं ॥ सुन मन्त्रिनवच परम निहाला । द्विजन बोल पठयो तत्काला ॥ समर श्याम सँग करन सुनायो । महिदेवन सुनकहि जतरायो ॥ ब्राह्मण को जो ब्रह्में जानैं । सो पुनि किमु हरिसों रण ठानैं ॥ हम समर्थ नहिं भरहिं जो हामी । हम बल काज न सुधरब स्वामी ॥ जे द्विज अधम कर्मसञ्चारी । सुरापान अरु मांसाहारी ॥ कृष्ण विमुख सुरनिन्दक हैं जो । अस ब्राह्मण जग मिलहिं तुम्हें जो ॥ तिन्हसों कार्य तुम्हार सरैगो । हमसन कछु न हेतु सुधरैगो ॥ विलग न मानिय सुन हम वचना । हम हरिभक्त सत्य वचरचना ॥ (रागिनी पहाड़ी त्रैतालमें) मनहरण दण्डक कवित्त ॥ लखि द्विज दृढ़ता नृपाल विकराल विधि हार लहचार यहि कृत मनलायो है । ज्वारी मांस मदिरा अहारी अघचारी तिन्ह विप्रवृन्द बोल धन लालच दिखायो है ॥ पापी जे अनापी शापी अधम अजापी तापी तिलक त्रिपुण्ड बिन्दु बक वेष ठायो है । समर सिपाह बन अस्त्रन को साजतन विरचै ललनपन कुयश कमायो है ॥ १ ॥ सोरठा ॥ विप्रन वृन्द सजाय, चढ़ि आवा रणकाज नृप ॥ ब्रह्मभक्त यदुराय, यहि कारण प्रभु नहिं लरे ॥ १ ॥ चौपाई ॥ जरासन्ध तौ हो खिसियाना । यहि मिस अपनि जीत अनुमाना ॥ विजय मनाय गयो निज भौना । यह वहकी कृत मृषा जनौ ना ॥ कालयवन

कृत सुनी जो साईं । सोहूँ वरणि कहौं तुम पाईं ॥ यदुवंशिन गुरु गर्ग मुनीशा । यक दिन हरि गृह गे गुणईशा ॥ त्रिय मति चञ्चल शास्त्रन गाई । इमि गुरुसन कहुँ कीन्ह हँसाई ॥ [त्रिय ऊचुः] महाराज तुम नरतन पायो । पै न एकहू पुत्र सृजायो ॥ कछुक क्लीव तुम निरखि परत हौ । यही हेतु सुत रुचि न करतहौ ॥ सुनि मुनि अनुचित वच उनकेरे । शाप दियो करि नैन तरेरे ॥ हौं अस पुत्र सृजहुँ अब सोई । ज्यहि सन्मुख यदुवंशि न होई ॥ अस कहि मुनिवर नगर विलायत । कालसूत्र तट गे वहि सायत ॥ दोहा ॥ मुनि आगमन विलोकि नृप, मन वच क्रम हित लाय ॥ षोडश विधि पद पूज ऋषि, कियो प्रसन्न अघाय ॥ १ ॥ चौपाई ॥ पुत्र विहीन रह्यो नरपाला । मुनि कृपालु लखि विरच्यो हाला ॥ [कालसूत्र उवाच] मोर मरण समया निय-राना । यकहु न मम सुत भयउ सुजाना ॥ दयादृष्टि कछु हेरिय नाथा । पुत्र पुजै जग होहुँ सनाथा ॥ नृपसनेह लखि मुनि सुखपायो । जेठि रानिको निकट बुलायो ॥ नग्न ठाढ़करि मन तेहि रमणी । वहि क्षण भइ नृपनारि गर्भिणी ॥ गे मुनि जब नव मास विहाना । कालयवन जन्म्यो बलवाना ॥ भा समर्थ भरि जोम उलहैके । तीन कोटि तुरकन सँग लैके ॥ चढ़ि आवा मथुरा छिनबे को । श्री बल श्याम सङ्ग भिरबेको ॥ विप्रवीर्य को अंश लखान्यो । यहि हित माधव रण नहिं ठान्यो ॥ मनमोहन ने दीन्ह बरावा । तबतो खल प्रभु पाछे धावा ॥ दोहा ॥

देवनु दनुजन एक समय, बहुत सतायो आन ॥ सुरन त्रास मुचुकुन्द लखि, करी सहाय सुजान ॥ १ ॥ सोरठा ॥ भे सुर मग्न महान, मुचुकुँद प्रति वरण्यों तबहिं ॥ चाहिये जोइ वरदान, सो हमसन भल मांगिये ॥ १ ॥ चौपाई ॥ मुचुकुँद अमित भयो जब घोरा । वह वर मांग्यो नींद कठोरा ॥ जब लग चहुँ तब लगि हौं सोवौं । समर थकार सकल दुख खोवौं ॥ जो कोइ मोहिं जगावहि आई । दृग दृष्टी परतहि नशजाई ॥ एवमस्तु देवन कहि दीन्हा । गिरि गुफाह चलि आसन लीन्हा ॥ तहँ प्रभु धावत पहुँचे जाई । वाहि वसन निज दीन्ह उढ़ाई ॥ कालयवन धरि घात मनोही । गिरि छिपान कह छोड़ब तोही ॥ शर सन्धान गुफा प्रविशानों । जहँ सोवत मुचुकुन्द दृढ़ानों ॥ पीताम्बर लखि कृष्णहि जाना । दै ठोकर जगयो रिसयाना ॥ मुचुकुँद के जागत वहि बेरी । भस्म भयो कछु लागि न देरी ॥ श्रीप्रभु आनि दरश त्यहि दीन्हा । प्रभुपद रतिवर मुचुकुँद लीन्हा ॥ दोहा ॥ तासु सैन्य बलरामने, मारि कीन्ह विध्वंश ॥ वीर विहारी विक्रमी, अस पिय विजयी वंश ॥ १ ॥ चौपाई ॥ को अस जीव त्रिपुर अधिपादी । देव दनुज किन्नर इत्यादी ॥ को मुनि मनुज महीप बलीशा । जो न जनै प्रभाव ब्रजईशा ॥ परम प्रवीन दीन हितकारी । सेवक सदा सहाय मुरारी ॥ भक्तिवश्य भक्तन सुखदाता । नम्र स्वभाव नीति निधि गाता ॥ [श्री शुक उवाच] इमि सुमुखी हरिकीर्ति बखानी । अति कोप्यो तिय पहँ

अभिमानी ॥ बहु दुर्वचन सुनाय भगायो । तब त्यहि त्रिय अति सोच उपायो ॥ त्यज शृँगार आभूषण वसना । परित्याग कर दीन्हों अशना ॥ सुमुखि दशा लखि रुक्मीमाता । पुत्र-वधू सिखवत नय बाता ॥ कस परिहरेउ शृँगार सुगाता । तैं किमु सोच करत बिन बाता ॥ तैं सौभाग्यवती सुन रानी । तुहि न कृत्य यह उचित सयानी ॥ [स्त्री शिक्षा] (रागिनी सुलतानी चारतालमें) सवैया ॥ स्वामिहि जीवतही त्रिय जो सउभाग्यहिके पट भूषण जोई । क्रोध कमाय शृँगार त्यजै अनुमान करै धहुँ त्याग न कोई ॥ तौ प्रतिघोसहि जानियजू भरतायुष सम्पति नाशहि होई । कीर्ति कढ़ै अरु आयु घटै ललनै लिखु भानत झूठ न सोई ॥ (१) (रागिनी धना श्री चारताल में) सवैया ॥ मृत्यु भये पति के उपरान्त सुलाजिमहै वर वाम सबै को । जे सउभाग्यक भूषण वस्त्र शृँगार सुधार सजै नहिं नैको ॥ केवल शुभ्र शृँगार तबैलउ जौलउ जीवत नाह जिन्है को । श्री ललना पति कीर्तिप्रदाहि सुहागिनि को नहिं राँड़ त्रियैको ॥ (२) (रागिनी भीमपलाशी चारतालमें) सवैया ॥ यद्यपि पूर्ण कुलौ विनशे तबका सौ-

(१) श्लोकः—यथा ॥ भर्तुर्जीवति या नारी सौभाग्यं च त्यजेत्क्रुधा । आयुर्वित्तं च कीर्तिश्च तस्या भर्तुर्विनश्यति ॥ अर्थ जिस स्त्री का पति जीवित हो और वह स्त्री क्रोध से अपने सुहाग सम्बन्धी वस्त्र आभूषणादि त्याग देती है तौ उसके पतिकी आयु, धन, यश इत्यादि नष्टहोने का उपक्रम होता है ॥ (२ —श्लोकः—मृते भर्तरि सा नारी सौभाग्यं नैव बिभृयात् । पत्यौ जीवति तस्यास्तु सौभाग्यं श्रीविवर्द्धनम् ॥ अर्थ—(ईश्वर न करे) यदि भर्ता जीवित न हो, तो स्त्री को सौभाग्य के वस्त्राभूषणादि नहीं धारण करने ही उचित हैं; यदि पति विद्यमान है तो वस्त्राभूषणादि पहिरना लक्ष्मीवर्धक सूचित कियाहै ॥

भाग्यवती कुलनारी । जौ सउभाग्यकि रूपिहि द्रव्य सु त्यागति हैं नहिं कोटि विचारी ॥ जे ललनै पति जीवन आयु सुकीर्तिहि वैभव इच्छह धारी। ते अपने न सुहाग शृँगारिक अंबर भूषण त्याग न बारी ॥ (३) (राग सारँग चारताल में) सवैया ॥ है त्रियकी सब पूर्णगती जग औ परलोकहु में पति साथहि । ना सुतकै न सहोदर सङ्ग कुटुम्ब न बन्धुन ते सत गाथहि ॥ जो धन कीरति की रतिहै तिय जीवन सुःख समस्त सु नाथहि । और सबै जग माहिं वृथा बिन पी ललनै सुख कोटिन हाथहि ॥ (४) (रागिनी बरुआ चारताल में) सवैया ॥ ब्रह्म स्वभावहि ते वरणी पतिनी पतिकी गति भांति यही । धौं परदेश पधार गयो धहुँ देहि तियाग भयो कतही ॥ तौ कुलभार प्रजा सुत पालनको त्रियको यह धर्म सही । जो बिधना वरणों सत सो ललनेश प्रमाण भन्यो भलही । (५) (रागिनी झँझोटी त्रैतालमें) सवैया ॥ जो ललनेश पतिव्रत नेम सुभाग्यकि

(३) श्लोकः-मृते कुलेऽपि सकले किं त्यजन्ति कुलाङ्गनाः । सौभाग्यद्रव्यं वस्त्रं च भर्तुर्जीवितुमिच्छया ॥ अर्थ-यदि (विधि कोप वश) समस्त कुलभी नष्ट प्राय होजाय, तौ क्या कुलललनायें जो अपने पति के चिरजीवन की इच्छा रखती हैं, अपना सौभाग्य का धन वस्त्रादि परित्याग करदेती हैं ? (नहीं कभी नहीं !) (४) श्लोकः-भर्ता सहैव गमनमिहलोके परत्र च । न कुले न सुतेनाऽपि न भ्रात्रा न च बन्धुना ॥ अर्थ-स्त्री के लिये केवल एक पतिमात्र गति है न कुलसे और न पुत्रसे तथा न सहोदर सेही और न बान्धव से गति है (५) श्लोकः-भर्तैव गतिरुद्दिष्टा प्रकृत्या विधिना स्त्रियाः । कुटुम्बभारोद्वहनं पत्यौ याते व्रतं स्त्रियाः ॥ अर्थ-यों तो ब्रह्माने स्वभावसेही स्त्री की गति केवल पतिही बतलादीहै किन्तु स्त्री का एक यह भी व्रत है कि, पतिके विदेश चले जाने या किसी अन्य कारण से विद्यमान न रहने पर कुटुम्बका पालन अन्वीक्षण शिक्षण का भार अपने शिरपर रक्खै ॥

मोदन चाह करै । प्रीतम क्रोधहि शान्ति करै न बहिर्मुख हो पद पूज फरै ॥ औ विधवा चहि होन यदै पति रोष चढ़ै वच यों उचरै । धौं पिय खीझ दुखी नित हो परिणाम व्यथा सन भौन भरै ॥ (६) (रागिनी पीलू चारतालमें) सवैया ॥ जे ललना भरताज्ञहि बध्यति धौं उपवास बिहारति हैं । हो फल किंचित्मात्र न निष्फल हो व्रत जौनहि धारति हैं ॥ वेद भनै पति आयुष कीर्ति सबै सुख वित्त विदारति हैं । हो बुधिनष्ट कलिष्ट कलेश कमै परिणाम बिगारति हैं ॥ (७) (राग पूरिया चारताल में) सवैया ॥ पतिनी पति प्रीतिकरा जग जे बिन भोजन एक दिनौ न रहै । सउभाग्यवती वरभामिनि के सुखदा शुभलक्षण जान यहै ॥ पियको प्रथमै भखदै अदनै तब आप अहारहि मोद लहै । सुपतिव्रत धर्मवती ललना वहि ध्यानहि जो श्रुति वाक कहै ॥ (८) (रागिनी गौरी चारताल में) सवैया ॥ सतहै अबला पितुको त्यज दे चहि पुत्र

(६) श्लोकः—सौभाग्य मिच्छती साध्वी भर्तुरुद्वेगनाशिनी । वैधव्यमिच्छती नारी भर्तुरुद्वेगकारिणी ॥ अर्थ-अपने सौभाग्य की वृद्धि चाहनेवाली पतिव्रता स्त्रीको उचितहै कि अपने स्वामी की घबराहट (क्रोध) को (सान्त्वना के वचनों से) दूर करै और जो विधवा होना चाहती है वह प्रियतम को (कठोर वाक्यबाणों) से क्रोधित करै ॥ (७) श्लोकः-भर्तुराज्ञां विना या स्त्री चोपवासव्रतं चरेत् । व्रतंतस्यास्तु विफलं भर्तुरायुष्यनाशनम् ॥ अर्थ—जो नारी विना पति की आज्ञा व्रत आदि करती है उसका वह व्रत निरर्थक होताहै और साथही स्वामीकी आयु भी क्षीण होती है ॥ (८) श्लोकः-भर्तुः प्रीतिकरी नारी दिनमेकं न लङ्घयेत् । भोजनेन विना नूनं साध्वी सा स्त्री पतिव्रता ॥ अर्थ-युवती यदि पति से प्रीति चाहै तौ बिना भोजन किये एक दिन भी न रहै वही बुद्धिमती पतिव्रता कहाती है ॥

कलत्र त्यजै जग सारो । पद सेवन आज्ञहु को न त्यजै न त्यजै पति हीय करै न दुखारो ॥ नित नेह निवाह करै ललने परिणाम मिलै पुर विष्णु सुखारो । जिमि कौशिकजा त्यज राम दियो न पती सतसङ्गति सों मन टारो ॥ (९) (राग जँगला चारतालमें) सवैया ॥ चक्रवती अवधाधिप ने जब रामगये बनवास त्यजो तन । लक्ष्मण राम सुनी पितु मृत्यु भयो सिय सोच महान महा मन ॥ पै सउभाग्य सँयोगिक भूषण ते सिय त्याग न कीन्ह यको छन । सूचनिका यहि भांति सबै ललनौं वति ध्यानहु वेद मता सन ॥ (१०) (राग पलाश चारताल में) सवैया ॥ शिरजङ्घ धरे त्रियके पिय सोवत औचक तासुत अग्नि परो । जननी सुत की न सहाय करी सु प्रभाव पतिव्रत देखि खरो ॥ भइ शीतल वह्नि महा तुरतै ललना न जरो न जरो उबरो । असहै सुप्रताप पतिव्रतको सब युक्तिन शक्तिन मुक्ति भरो ॥ (११) (रागिनी मुलतानी चारतालमें)

(९) श्लोकः-पितरं सुतं त्यजेद्वाऽपि न पतिं तु कदाचन । आज्ञाऽऽचरणमात्रेण नारी वैकुण्ठभागिनी ॥ अर्थ-तरुणी यदि अपने पिता सुत को छोड़ भी दे परन्तु पतिका कभी न त्याग करै, क्योंकि अबला निज पतिकी आज्ञानुसार आचरण करने मात्रही से स्वर्ग प्राप्तकरतीहै ॥

(१०) श्लोकः—मृते दशरथे राज्ञि रामे शोकमुपागते । सीतया न परित्यक्तं सौभाग्यं वस्त्रभूषणम् ॥ अर्थ-यद्यपि राजा दशरथ का लोकान्तरित होना जानकर रामचन्द्रजी शोकसागर में निमग्न होगये थे; तौभी श्री जानकीजीने सुहागका वसनाभरण कोई नहीं उतारडाला ॥

(११) श्लोकः—सुतं पतन्तं प्रसमीक्ष्य पावके न बोधयामास पतिं पतिव्रता । तस्यास्तु पातिव्रतभङ्गशङ्कया हुताशनश्चन्दनपङ्कशीतलः ॥ अर्थ-पति की सेवामें आसक्त हुई कोई सौभाग्यवती अपने प्रिय पुत्र को अग्निकुण्डमें गिरता देखकर भी पतिव्रत धर्म के खण्डित होजाने के भयसे पति को नहीं जगाती हुई, तब उधर अग्नि देवभी चन्दनलेपके समान शीतल होगये ॥

सवैया ॥ है त्रियको पतिही परमेश्वर दूसरना सुखसारनहारो । जे अबला अपने पतिसेवहि माहिं निरन्तर नेम अधारो ॥ ते परलोक स्वलोक सबै विधि सन्तति सम्पति सुःख निहारो । भाषतहै ललनै श्रुति वाञ्छितदाय पतिव्रतभाव अपारो ॥११॥ (रागिनी खम्माच चारतालमें) सवैया ॥ देवन मन्त्र महीसुर तीर्थन औषधि वैद्य गुरुपद सेवत । जो ज्यहि भावन ध्यावत है मन कर्म वचै सन ते सुख लेवत ॥ शङ्क कछू जिय जासु दृढ़ै ललनौ कछु भानत ना पसगेवत । ध्याय लखै हरिनामहिको लखि लेय कहा नहिं वाञ्छित देवत (१२) चौपाई ॥ ऐसी कृत्य वधू जनि कीजे । अस रुचि किय पति बल यश छीजे ॥ तैं सयानि मतिमती अनन्ता । मम सुत मोरहि हृदय दहन्ता ॥ हौं यह व्यथा कहूँ केहि जाई । कबहुकि न मानत खल अन्याई ॥ कृत्य तासु देखत बनि आवत । देखत सुनत न बनत बतावत ॥ दैव कुशलकर्ता दुखहारी । सेवक सन्तजनन हितकारी ॥ वहि भरोस मन तोषत मोरा । छेंकत नेम कुमति मम छोरा ॥ ईशपाणि मम लाज सुताकी । कै अम्बा पूरक मन्शाकी ॥ तैं हिरास ह्वै मोहिं हिरासै । कुलकी फूट फटासहि त्रासै ॥ सुखद उपाय सोच प्रिय कोई । सुमति साथ कह विजय न होई ॥ दै

१२ श्लोकः-देवे मन्त्रे द्विजे तीर्थे भैषज्येऽथ चिकित्सके । यादृशी भावना यस्य गुरौ सिद्धिश्च तादृशी ॥ अर्थ-देवता, मन्त्र, ब्राह्मण, तीर्थ, औषधि, वैद्य, और गुरु, इनमें जैसी भक्ति कीजाय (अर्थात् बुद्धिसे समझै) वैसीही सिद्धि (फल प्राप्ति) होती है ॥

शिक्षा सुतवधू चिताई । प्रभा बहुरि पति पास सिधाई ॥ इति श्रीरुक्मिणीपाणिग्रहणेरुक्मीधार्थ्यैसुमुखीशिक्षायांश्रीधर्मनिरूपणंनामपञ्चदशः सर्गः ॥ १५ ॥

दोहा ॥ कहत शम्भु सुन भामिनी, हरिमाया बलवान ॥ मायावश जग मान ज्यों, अंकुश वश गज जान ॥ १ ॥ (राग भैरव चारतालमें) मनहरण कवित्त ॥ नृपति निपूते और रङ्क सहपूते राजरोगी धनवान निरधनी भोगी वामके । अङ्गहीन विषयी नपुंसक महाबलीरा राजा हों कुरूप रङ्क रूप अभिरामके ॥ मूर्खनु रँगीली नारि शङ्खिनी रसिक काहिं बूढ़िन सुहाग बाल राँड़ काम रामके । काबुलमें मेवा औ करील बीच वृन्दावन नोखे खेल देखे देवकीललन श्यामके ॥ १ ॥ (तथा) कवित्त ॥ तरसैं तरुणजन तरुणी अनन्द काहिं वृद्धगृह तरुणी विलास सुख भाँतिके । शूर भूर कुटिला औ हूर भोग कूरकाहिं नूर पूरि नीचै औ कुरूपा ऊँच जातिके ॥ सिंह शारदूल रति सुफल ललन लेखु मानुज नृफल केलि बहु बाँझ गातिके । शूरके अशूर खलकेरि हरिभक्तजन खेल करतार के अनोखी करामातके ॥ २ ॥ (रागिनी टोंड़ी चारतालमें) मनहरण कवित्त ॥ कहीं कहीं भूप रूपवान औ कुरूपा कहीं गुणी सभ्य सज्जनहूँ दुष्ट दुखदाया है । कहीं मही हीरा मोती रत्न सुवरण खानि कहीं पै मेवान्न कहीं ऊसर अथाया है ॥ कहीं नीर नीरदादि अम्बु को अभाव कहीं कहीं राग रङ्ग कहीं शोक बगराया है । कहै ललनेश विधि

माया है अलेख देख कहीं पर धूप घनी कहीं पर छाया है ॥ ३ ॥ (तथा) कवित्त ॥ कहीं कहीं भूपै भूर देवठाम मुक्तिधाम कहीं कहीं भूत प्रेत निश्चर निवासा है । कहीं कहीं दानी दयावान परस्वार्थी जन कहीं कहीं पापी परद्रोहिन विलासाहै ॥ कहीं कहीं पूरण अनन्य हरिभक्तजन कहीं कहीं निन्दक निगोड़न को बासा है । नोखे करतार की अनोखी ललनेश कृति नित नये खेल रचि खेलन तमासा है ॥ ४ ॥ (रागिनी अलहैया आसावरी चारतालमें) मनहरण कवित्त ॥ काहूको सुरूप दियो काहू काहिं भूप कियो काहूको अनूप बल विद्या अधिकारी है । काहूको कुलीन दीन हीन मति छीन काहू धनिक प्रवीन कीन काहूको भिखारी है ॥ काहू उमराव राव बादशाह सेठ शाह राजा महराजा राज दीन्हों पद भारी है । काहूको गुरुत्वगति काहूको ललन मति काहूको अमित सुख कर्मगति न्यारी है ॥ ५ ॥ सूरदासी पद ॥ करी करतारकी सब होय । जो अपनो पुरषारथ मानै अति ही झूठो सोय ॥ साधन यन्त्र मन्त्र उद्यम बल ये सब राखे धोय । जो कछु लिख राखी यदुनन्दन मेट सकत नहिं कोय ॥ दुख सुख हानि लाभ कर्मन वश बृथा मरत कतरोय । सूरदास स्वामी करुणानिधि श्यामचरण चित पोय ॥ १ ॥ चौपाई ॥ नारायण जाकहँ दुख देई । बुद्धि प्रथम ताकी हरिलेई ॥ पचिहारे समस्त परिवारी । रुक्मि जननि हुइ परम दुखारी ॥ बोली प्रभा सुनहु पति मोरी । सुतसों बहु न करौ बरजोरी ॥ होय बश

बरको जब बालक । लगै न ता मुख यह कुलघालक ॥ पूर्णहिं पाप पूर्बले केरे । तबतो खल सुत उपजो मेरे ॥ है डर मोहिं बहुतहिय वासै । कर अपघात न कुलको नासै ॥ यासे समुझ बूझ चुप रहिये । नाहकहीं अपनो उर दहिये ॥ जो मम कन्या भाग्य पुनीता । तौ मिलिहै वहि मोहन मीता ॥ नारद वचन मृषा नहिं होई । जो श्रुति साँच कहै जग सोई ॥ अरु जो सुता भाग्य की हेटी । तौ शिशुपालहि बरि है बेटी ॥ * दोहा ॥ जन्मकेर साथी सबहि, मात पिता परिवार ॥ कर्म सँगाती विधिहु नहिं, जस करणी तस पार ॥ १ ॥ † [यथा दृष्टान्त] (रागिनी कलांगड़ा रूपक तालमें) सवैया ॥ द्वै द्विज एक महीप ढिगै नित जायँ कहैं दुइ भाँति वचानन । एक अशीस भनै नृपको दृढ़ दूसर कर्महि वेद मतासन ॥ लौकिक रीति प्रतीति यही जो प्रशंसहि नाहिं कहूँ धनवानन । ताहि न आदर दें कबहूँ ललनौ त्यहि लागहिं मूर्ख बतावन ॥ १ ॥

* श्लोकः-अवश्यमेव भोक्तव्यं पूर्वं कर्म शुभाऽशुभम् । न भुक्तं क्षीयते कश्चित्कोटिकल्पशतैरपि ॥ अर्थ-पूर्वजन्म के किये हुये कर्म बुरे हों या भले अवश्यही भोगने होंगे, करोड़ कल्पशत क्यों न बीत जांय परन्तु पूर्वाऽर्जित कर्म नहीं छूट सकता है ॥

† यथा श्लोकौ-लाभाऽलाभे सुखे दुःखे विवाहे मृत्युजीवने । भोगे रोगे वियोगे च दैवमेव हि कारणम् ॥ १ ॥ भाग्यं फलति सर्वत्र न विद्या न च पौरुषम् । समुद्रमथने प्राप हरिर्लक्ष्मीं हरो विषम् ॥ २ ॥ अर्थ-हानि, लाभ, सुख, दुःख, विवाह, जीवन, मरण, भोग, रोग और वियोग (ये सब) दैवकी इच्छा से होते हैं ॥ १ ॥ (और) भाग्य सर्वस्थान में फलता है न विद्या और न पौरुष (फलता) क्योंकि, समुद्र मथा तब (समान परिश्रम होनेपर भी) विष्णुजीको लक्ष्मी प्राप्त हुई और महादेवजी ने विष पाया ॥ २ ॥

‡ चौपाई ॥ यक अशीस यक कहै ये हाला । फलति कपालो नच भूपाला ॥ सुन त्यहि वच निज मुख न लगावै । जौन अशीसै त्यहि अदरावै ॥ यक दिन कूष्माण्ड लै एका । त्यहि बिच मोहरैं मेल अनेका ॥ दीन द्विजै दीन्हो नृप दाना । दूसर द्विज विलोकि अनुमाना ॥ नृप दातब यह छूँछ न लेखूँ । यह फल पाय करब कह देखूँ ॥ ता पाछे लग लीन्ह सुजाना । दीन विप्र मन में यह भाना ॥ मुहि नृप दान दीन्ह तो भाई । पै फलसों कह कार्य बनाई ॥ नहिं कुलजन तोषहिं कछु यासों । बेच अनाज लीजिये तासों ॥ जनुँ आजहि को चलब अहारा । कल को पुनि विधि देवनहारा ॥ शाक वणिक तट जाय गुहारा । लीजत है फल मोल हमारा ॥ दोहा ॥ दै वसु टका बिसाय फल, शाकवणिक धर लीन्ह ॥ त्यहि धनसों कछु नाज लै, द्विज कुल पोषण कीन्ह ॥ १ ॥ सोरठा ॥ दूसर विप्र सुजान, दीन्ह मुनाफा कछुक वहि ॥ लै फल गृह बिच आन, काट कुम्हेड़हि धन लह्यो ॥ १ ॥ चौपाई ॥ द्वितिय दिवस नृप निकट सिधावा । बहुरि वही द्विज वचन सुनावा ॥ तब तेहि क्षण अवनीपति छिप्रा । बुलयो दीन अकिञ्चन विप्रा ॥ पूछ्यो महिपति महिसुर सेती । दियो जो तुहि फल प्रेम

‡ यथा श्लोकौ-कुरूपाः कुकुला मूर्खाः कुत्सिताऽऽचारनिन्दिताः । शौर्यविक्रमहीनाश्च दैवाद्राज्ये प्रतिष्ठिताः ॥ १ ॥ काणाः खञ्जा अभव्याश्च नीतिहीनाश्च निर्गुणाः । नपुंसकाश्च दृश्यन्ते दैवाद्राज्ये प्रतिष्ठिताः ॥ २ ॥ अर्थ-कुरूप, और नीचकुल, मूर्ख, भ्रष्टाऽऽचारी, कादर और निर्बल, तथा काने, गञ्जे, बुरे, नीतिरहित और निर्गुण, नपुंसक (ये सब) दैवकी इच्छासे राज्यको भोगते हैं ॥ २ ॥

समेती ॥ भाजी तासु बनाई पाई । स्वाद तासु कछु कहहु सुनाई ॥ कह महिदेव सकुच युति लाजा । सत्य वचन तो है यह राजा ॥ तुव फल पाय मोर मन ध्याना । यह सन नहिं कछु कुल कल्याना ॥ व्यय कर ताहि बिसाय अहारा । जाय जिमायो निज परिवारा ॥ तब द्विज वच सत जान नृपाला । फलित कपाला नच भूपाला ॥ भाऽभिमान भञ्जन नृप केरा । वेद वाक्य सत समुझ घनेरा ॥ है प्रधान कर्महि जग माहीं । विधिगति जान सकत कोउ नाहीं ॥ दोहा ॥ दैवयोग बिन कछु नहीं, दैवहि सकल प्रधान ॥ कहँ राम कहँ लछमण, कहँ अङ्गद हनुमान ॥ १ ॥ (राग मालकोश शूलताल में) सवैया ॥ कोउ कबहू नहीं मारि सकै अरु मीचहु टारि सकै न विधाता । कर्मप्रधान सदा जग में ललनौं बड़ काहिं सबै प्रकटाता ॥ हानिरु लाभ यशाऽयश जो दुख आनँद को तन के सँग नाता । गाढ़ परे धर धीर बने अब नाथहि हाथहि लाजकि बाता ॥ १ ॥ (राग हिंडोल तालशूल फ़ाख़्ता में) सवैया ॥ कर्महिसे धन धाम मिलै बल रूप कुटुम्ब रु अन्तर चारी । कर्महि के बश जगत बँधो ललनैपन ना हिय देख विचारी ॥ कोउ चढ़ै गज पीनस अश्वन कोउ स्वजन्महि केर भिखारी । विष्णुक कोटिहु कल्प भरै नटरै करनी फल भोग बिनारी १ ॥ बिगरीहु बनै बनिकै बिगरै सुधरै फिर हू जु गोपाल चहै । उन सों हित हेत लगाय रहै जु चहै सुख धीरज क्यों न गहै ॥ तरु सींचहि

फूलत फेर फलै महि पारत बीज सदा उलहै । यशुदाललनै वश प्रेम सदा यहि वेद पुराण बखान कहै १ ॥ दोहा ॥ यासों हरिहि समर्प पिय, दुख सुख धीरज धार ॥ चरणकमल गोविन्द भजु, श्रुति वच नीति विचार ॥ १ ॥ कह शिव शिवे नृपति त्रिया, सुत सों ह्वै अति आरि ॥ हरि विनवत परवश प्रबल, भरि भरि लोचन वारि ॥ २ ॥ [दम्पत्यूचतुः] (रागिनी झँझोटी तीनताल में) पद ॥ हमसों खल तारिहौ त्रिभुवनपति तब जानिहौं दीन हितू सुखिया । (अन्तरा) अति अधम अधर्मि अधीर्य अती अनरीति अनाथ अनादरिया ॥ १ ॥ कठ कूर कराल कुचाल कृती कुयशी कुसङ्गि कुकर्म कृतिया ॥ २ ॥ खुटचालि खलेशाधिपति खरो खोटो खराब खासो खसिया ॥ ३ ॥ गरियाउं गरे न गिलानि गहे गुरु गोविंद गौरनु गुत्तरिया ॥४॥ घन घोर घमण्ड घिरो घुमरो घामर घिनई घटिया घतिया ॥५॥ चित चेत न चौंध चकाय चको चतुराइ चिकित्सायन चुकिया ॥ ६ ॥ छन छाहन छोहन छैल छको छिन छीजत छार छको छकिया ॥ ७ ॥ जुवती जुहि जौन जुड़ाय जनौ जुलमी जग जोर जनावतिया ॥ ८ ॥ झिगरो झख झाँक झरोक्क झखै झमकाय झगा झिडझट झरिया ॥ ९ ॥ टिकि टेउँ टटोहन टोवन टंटनु टूटक टोननु टेंकरिया ॥ १० ॥ ठगइन ठहरात ठठै ठीकत ठुकरावत ठाकुर को ठगिया ॥ ११ ॥ डंडा डर डार डकार डटो डिम्भी डौलन डोलत डकिया ॥१२॥

ढब ढुलै ढिंढोर ढिलापन ढीमसों ढोटा ढिटइन ढूंढरिया ॥ १३ ॥ तप तेज तयो तृष्णा तरंगतन त्रसित तुजायो तांतरिया ॥ १४ ॥ थिर थकित थुकावत थानन थै थलको थलवत न थली थकिया ॥ १५ ॥ दर दर दर दुरवत दीर्घ दुतै दुखदायक देह दशा दिखिया ॥ १६ ॥ धृत धीर न धर्मनु धूर धिकै धर धावत धान कु धानरिया ॥ १७ ॥ निचलो न निहारत नीति निपट नारायणसों न नेह नतिया ॥ १८ ॥ परमारथ पेख प्रवाह परो पनपालन पीडित परवरिया ॥ १९ ॥ फतुवन फरेब फल फूल फल्यो फुनकारत फिरत फरेबतिया ॥ २० ॥ बुध बन्धु बहिर्मुख बाह्य बोध बड़ ब्रह्मबन्धु बुधि बौखलिया ॥ २१ ॥ भव भारन भारिहि भार भरो भृङ्गी भ्रम भूल भरो भरिया ॥ २२ ॥ मन मान मरोर महा महत्व मुख मञ्जन माँझ महावरिया ॥ २३ ॥ यदु यलि यदय यम योधन योगिक यारन याको यकायकिया ॥ २४ ॥ रिरियात रमै रति रीति रजो रुचि राधिकारमण रहित रसिया ॥ २५ ॥ लख लोभन लाद लदौ ललनै लौ लागि लबार न लम्पटिया ॥ २६ ॥ वनिता वश विषय विवेक विहय विस्मृत्ये वल्लभ वनमलिया ॥ २७ ॥ शम शील शुठै शठियात शनैः शनैः शोभनु शान्तिन शोभतिया ॥ २८ ॥ सदसतसों सून्य स्वभाव सृजो सन्तोष न सुमिरण साँवरिया ॥ २९ ॥ हित हेत हरी हिय हार हटौ हैरान हिरासहुँ हरबरिया ॥ ३० ॥ शरणागत त्राहि त्राहि माधव जनकी सुन विनवत ललनपिया ॥ ३१ ॥

(रागखम्माच त्रैतालमें) पद ॥ अब जन ओरि निहार दयानिधि बिलंब न करो करोरे । (अन्तरा) शरणागत की लाज निबाहन जो प्रण खरो खरोरे ॥ तौ करगहि जन वेगि उबारहु प्रमुदनु गरो गरोरे ॥ १ ॥ हूँ जानत पतितनुपति को पति प्रकटो घरो घरोरे । अजपाऽतपा थपा अघ-मनमें गति मति चरो चरोरे ॥ २ ॥ तृष्णा तरल तरङ्ग तृषानो ममता छरो छरोरे । मद माया माहिं मुहाय महा लोभाग्निसों जरो जरोरे ॥ ३ ॥ कामी कुटिल कराल कुकर्मी सुकरम झरो झरोरे । क्रोधी कठिन कुचालिनसों हित हेतु न टरो टरोरे ॥ ४ ॥ जहँ वेश्या प्रसङ्ग सुन पावत जा ह्वां ठरो ठरोरे । सुनत प्रपञ्च मगन हरि विधसों तोहिं न डरो डरोरे ॥ ५ ॥ लोचन निलज लाजको पानी सो सब ढरो ढरोरे । अघ अपार अब क्षमहु नाथ तुम विनको तरो तरोरे ॥ ६ ॥ अति अशङ्क अधर्म कर उन्नति जनि चित थरो थरोरे । जीव अलच्य अमित धरनीपर पायनु दरो दरोरे ॥ ७ ॥ छल बल धाय कमाय पाप पोटनु शिर धरो धरोरे । कबहुँ न पल छिन भजो नाम नारायण नरो नरोरे ॥ ८ ॥ मन्दमतिन को सङ्ग पिये मद विचरत परो परोरे । परद्रोही परकारज रिपु चाहत सुख फरो फरोरे ॥ ९ ॥ सुत दारा परधन धामन कहँ निरखत बरो बरोरे । निज सुख शठ चाहत कस बिधिहो अघ कृति भरो भरोरे ॥ १० ॥ मोहन मुदित रहै मदमातो मानन मरो मरोरे । सन्तन विमुख असन्तन हित समुझत इन यरो यरोरे ॥ ११ ॥ आन परो

कहुँ धर्म कार्य वाही छिन ररो ररोरे । मिलो न निज सनमान कहूँ लैं लाठिन लरो लरोरे॥१२॥ जगसों बैर बांध अनुचित रहे नित प्रति बरो बरोरे । किनकिन गुनन गिनाऊँ प्रभु नहिं वरनत सरो सरोरे ॥ १३ ॥ क्षमा करहु जन जान निवाजहु लै यश खरो खरोरे। ललन पिया आधीन शरण प्रभु मम दुख हरो हरोरे ॥ १४ ॥ (रागिनी खम्माच चारतालमें) कवित्त ॥ नरसी न नानक प्रह्लाद हूँ न पीपा सम शबरी सुदामा नाहिं को सम सहेरिये । द्रौपदी न नृग हरिश्चन्द्र अम्बरीष नाहिं सदनौ न मीराहूँ न कूबरी सी चेरिये ॥ ध्रुव ना धना कबीर यमलार्जुनौ मुनीश केवट न भील बलि अर्ज ये निवेरिये । बालमीकि ब्यास शूर तुलसी न केशो शुक नन्दके ललन मुहिं दीन जान हेरिये ॥ १ ॥ (रागिनी लच्छा शाख, रूपक तालमें) सवैया ॥ तनसों मनसों धनसों गुनसों हितसों चितसों विनवैं हरिको । कर जोरि निहोरि बहोरि बहोरि कहैं दुख दारुण अन्तरिको ॥ हरि होहु सहाय रुचै जचिकै तुममां मन लागि रहो घरिको । दय दर्श जनैं नँदके ललनै मम धीय वरो न मुरौ जरिको ॥ २ ॥ दोहा ॥ जो मम साँची लगन जिय, तुम चरणनै मुरारि । तौ मम वाञ्छित पूरिये, करुणागार खरारि ॥ १ ॥ [श्रीशुक उवाच] चौपाई ॥ गद्गद बैन नैन भरिवारी । होत विकल नृप तनसुधि टारी ॥ नृपति शिच दै ढाढ़स रनियां । कहत नाथ त्यज शोक निधनियां ॥ पूत कपूत होय जो जाके । देत न कोउ निकार दुराके ॥ यासों मो मति पीतम

लीजै । वाही के शिर सब धरि दीजै ॥ जो जस करब तैस फल पाई । हमैं तुम्हैं जग देन बुराई ॥ दम्पति पुत्र बुलाय सुनायो । तैं जानैं करु निज मनभायो ॥ सुनि पितु बैन विहँसि रुक्मैया ॥ मुखिया समुझि सुखी अधिकैया ॥ तात मनोरथ नाशि वही छिन । बुलै पुरोहित नापित नेगिन ॥ लीप अँगन पुरवाय चौक पुनि । विज्ञाननुसों बोलि कह्यो उनि ॥ लिखहु लग्न शिशुपालहि काजा । मम मंशा बुध पुरवहु आजा ॥ (राग जोगिया देश ताल तिवरामें) हरिगीतिका छन्द ॥ पण्डित विचारन लगे पत्रा निरखि हिय शङ्का गही । है दुलह अष्टम भानु भौम सुमृत्यु सम दुःखद दही ॥ षष्ठेश गुरु दातार रोग रु रारिरणकारक महा । शनि इन्दु द्वादश धन विनाशन शास्त्र ज्योतिष असकहा ॥ है मूर्ति राहु निषिद्ध नाह दुलाह तन पीड़ा करै । बुध शुक्र चौथे राज काज विनाशता गृह दुखभरै ॥ नहिं नीक नृपति विवाह यह तुव हेतु अतिदुखदाय है । दमघोष ललन बराति नातिन विपतिप्रद समुदाय है॥ पितु मातु बन्धु कुटुम्ब उभय महान चित चिन्ताधरै । तैं मान परम सुजान मम वच यह सगाई मतकरै ॥ दोहा ॥ रिसवत रुक्मैया कह्यो, इन बातनु कह हेत ॥ जौन हेत बुलयो तुम्हैं, तेहि हित नहिं चित देत ॥ १ ॥ चौपाई ॥ का तुम ईश ईश के दादा । चितवत मोर कुयश इत्यादा ॥ तुम अस वचन कहत शठताके । केहुसन धरे न जाँय उठाके ॥ द्विज ह्वै परे कुशल यह जानो । नहिं छुड़तौ वताय बतरानो ॥ उतके उत तुमहिं

सम लोगा । लखत न समय कुयोग सुयोगा ॥ मनमानी सो बकबे लागे । जो तुम्हरे आगे सो तागे ॥ चहि कोउ नीकलगै चहि नागा । निरखत किञ्चित पीछ न आगा ॥ मसल साँच यह जगत कहावत । ज्यों द्विज वृद्ध होत शठियावत ॥ सुनि सुत मुख वच द्विज निदरावन । तात मात पुनि लगे सिखावन ॥ "दम्पत्यूचतु :" द्विज कुल पूज्य जगत सब केरे । इन अपमानत दोष घनेरे ॥ विप्रन कहँ भगवन्तहु मानों । जो मानै सुख लह मन मानों ॥ दोहा ॥ ऐसहि भनत पुराण श्रुति युत सम्मत भगवन्त ॥ चार पदारथ सुलभप्रद, द्विज सेवा सुखवन्त ॥ १ ॥ (राग गौड़ सारँग त्रैतालमें) सवैया ॥ पद पूजत ना द्विज के जग जे तिन्ह त्यों पुर सुःख न भेंटतु हैं । पद पाय पुरन्दरते बढ़ पै दुख दारिद आन लपेटतु हैं ॥ अपमानत दान दया चितते मन धर्म न किञ्चि चपेटतु है । अपकीर्ति कटाच्छ कराकरती ललनौ धनहानि झपेटतु हैं ॥ १ ॥ द्विजद्रोह धरो जिनहीं चितते तिनको विधि वेग विनाश दियो । द्विजकाहिं निरादर जौन कियो तिन भौन दई दुख वास दियो ॥ द्विजको न नवैं ललनैपनते तिनको विधि सम्पति त्रास दियो । द्विज पूजन नाहिं जनैं जगजे विधि दारिद तौन अवास दियो ॥ २ ॥ (रागविहाग चारताल में) मनहरण कवित्त ॥ आवे जो अतिथि द्विज भौन जौन जाहीके सुआदरैं यथारथ उचित सनमान है । याहीते सुधर्म्म बृद्धि दृढ़ताको पावत है छुधितहिं तोषिबो जगत महादान है ॥ ललन

मुनीन्द्र वेद वदत पुराण नित दातबही नरहित करता कल्यान है । याचक बुभुक्षितहू विप्र ना जिमावे जौन तौन तिहुँ काल नर्क पावत निदान है ॥ ३ ॥ (राग विहागरा त्रैतालमें) सवैया ॥ जग जे पद पूजत विप्रनके अरु लेत अशीस सदा तिनसे । तिनके गृह सम्पति वास करै न टरै सुख सन्तति नातिन से ॥ ललनेश रहैं न दहैं दुख सों कुल बृद्धि लहैं बहु भांतिन से । अपकीर्ति कढ़ै यश कीर्ति बढ़ै हरिभक्ति दृढ़ै अहिबातिन से ॥ ४ ॥ (रागिनी परज शूलताल में) कवित्त ॥ कोपे जो अगस्त्यमुनि सिन्धु सब शोखिगये कोपत दुर्वासा यदुवंशिनको घातो है । कोपे जब शृङ्गी ऋषि नृपति परीक्षित पै शापतही कच्छ भच्छ तच्छक निपातो है ॥ कोपे भृगु राज भगवन्तहु के लात मारी नन्दललनहु द्विजसों रखत नातो है । ब्राह्मण सताये जरामूल से नशाय जात कबहूँ न पेट भर खातो ना अघातो है ॥ ५ ॥ (राग कान्हरा आड़ा चौताला में) सवैया ॥ ऋषिनारद कोप कियो जबहीं जड़देह मिली यमलार्जुन को । मुनि गौतम कोपत शाप भयो सुरराज सुधाकर दोहुन को ॥ विनशे सगरे सगरात्मज जे यदि कोप भयो कपिलै मुनि को । ललनेश सतावत ब्राह्मण जो कुल नाशत वेग सदा उनको ॥ ६ ॥ (रागिनी सोहिनी ब्रह्मताल में) कवित्त ॥ विप्रवन्दनाते अर्थ धर्म काम मोच्छ मिलै द्विजही दुखाये दुःख दारिद दृढ़ात है । विप्रपद पूजे पद परम मिलत और ब्राह्मण सताये जड़ामूल ते नशात है ॥ महिदेव

द्रोहे गये अर्जुन सहसबाहु नृपति नहुष पायो भुजगको गातहै । ब्राह्मण ते भूलहु न बैर बांधिये ललन विप्रनसे भगवन्त हू सदा डरात हैं ॥ ७ ॥ [ब्राह्मण उवाच] (लावनी रंगत वशीकरण) यथा ॥ होनी का होना होना होनी का है। होनी बस सुख दुख सदा वेद टीका है ॥ टेक ॥ होनी ने मिटाया राजतिलक रघुवरका । होनीने दिया वनबास बिछोहा घरका ॥ होनी पठवा मृगकंचन युवा उमर का । होनीने छुटाया साथ लषण सियवर का ॥ होनीने नँघाया रेख लषणजी का है । होनी बस सुख दुख सदा वेदटीका है ॥ १ ॥ होनीने रावण काहिं कुमति उपजाई । सोचा नहिं धर्माधर्म्म हरी सियमाई ॥ होनीने त्यहिउर अस हठि कठिन सुजाई । माना नहिं क्यहूकि कुलकी क्षय करवाई ॥ होनीने दुखाया जिय पियसियजी का है । होनीबस सुख दुख सदा वेदटीका है ॥ २ ॥ होनीने यदुकुल को मुनि शाप दिलाया । होनीने कौरवों के कुलको बिनशाया ॥ होनीने सतीका गूढ़ज्ञान बिसराया । होनीने दक्षतनया तनु भस्मकराया ॥ होनीने किया ब्याह पारबती का है । होनीबस सुख दुख सदा वेदटीका है ॥ ३ ॥ होनीने पठया पताल बलीराजा को । होनीने किया बलि अधीन रमण रमाको ॥ होनीने कौरो पांडवन खिलाया जूवाको । दिया द्वादशवर्ष निवास विपिन बासाको ॥ होनीने किया पति वियोग द्रुपदीका है । होनीबस सुख दुख सदा वेदटीका है ॥ ४ ॥ होनीने परीक्षित नृप मन भ्रम उपजाया । श्रृङ्गी

ऋषि के गलमें भुजङ्ग डलवाया ॥ होनीने मुनिसुत मुख नृप शाप दिवाया । होनीने भुजङ्गम से भूपतिहि डसाया ॥ जैविजै शाप मुनि भा फल होनीका है । होनीबस सुख दुख सदा वेदटीका है ॥ ५ ॥ होनी से हुई पाषाण गौतमी नारी । धरनारायण नररूप अहिल्या तारी ॥ होनीने जटायू गीधकी गती सुधारी । होनी की बड़ाई कहँ लग कहूँ पुकारी ॥ होनीवश जन्म नँदलल्लन रुक्मिणी का है । होनीबस सुख दुख सदा वेदटीका है ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ तात समुझि श्रुति वचन अगाधा । पुनि कृत करिय सो होय अबाधा ॥ जननि जनक द्विज बचन विचारा । पुनि बोला अस भूपकुमारा ॥ लिखहु लग्न द्विज त्यजबकवाई । बली पुरुष कहँ ग्रह न सताई ॥ देखहु बल प्रताप रावणको । पाटी बांधि धरेउ ग्रहगण को ॥ वह शिशुपाल बली सरताजा । जाके वश जगके सब राजा ॥ ज्यहि चहि तेहि नृप देय बहाई । अस प्रताप या तण त्यहि भाई ॥ अखिल भूप दस भेरें जासु की । चहैं मेहर ता सुख विलासुकी ॥ नृप भय मानगये सब पण्डित । वा बैनन कर सके न खण्डित ॥ लिखिहि लग्न इमि विप्रन भाना । कर धर भगिनि पुजाउ सुजाना ॥ नापित नारि बुलाय सुनावा । शीघ्रहि स्वसहि लाउ जतरावा ॥ दोहा ॥ नाइन गई बुलावने, लग्न पुजावन काज ॥ सुनि पछार खाई कुँअरि, बूड़ी शोक समाज ॥ १ ॥ सोरठा ॥ षोडश कलन समेति, बुधि बिहाय तन सुधि गई ॥ अधर नीलता नेति, वदन हवाई उड़न

लागि ॥ १ ॥ दोहा ॥ विरहानल की उष्णता, बाढ़ी वदन कराल ॥ तन पसेव दृग वारिभ्कर, श्वासा ऊर्द्ध विहाल ॥ १ ॥ चौपाई ॥ लखि अस हाल सुता को रानी । भावज व्यजन ढुरावति पानी ॥ छिरकें अम्बु गुलाब केवरा । लेपें इतर सुगन्ध मोगरा ॥ लेने के देने परि गयऊ । कोसत सकल रुक्मको भयऊ ॥ हाहाकार मच्यो गृह माहीं । रुक्मी क्यहु की मानत नाहीं ॥ इकलौती राजा रानीकी । रही अतिहि प्यारी प्रतिही की ॥ कछुक बार गत मूर्च्छा जागी । उरलै माता कहिबे लागी ॥ तैं क्यों संशय करत दुलारी । अधिक दुखित तैं होत बृथारी ॥ तोको भुजबल से गोपाला । लैजैहैं विवाहि नँदलाला ॥ तैं हित चित महेशतिय ध्याई । सो न तोर कह करब सहाई ॥ विरह व्यथित तब राज सुतानैं । लाज उतार धरी कुलकानैं ॥ सोची जो अब चूकत समया । तो मम विनशत काज शोभया ॥ इति श्रीरुक्मिणीपाणिग्रहणे भीष्मकप्रभाप्रार्थनाविहिते रुक्म्यनुज्ञया लग्नलेखनविधाने रुक्मिणीशोकवर्णनोनाम षोडशःसर्गः ॥ १६ ॥

[श्रीरुक्मिण्युवाच] (रागिनी सिन्धु खम्माच तीनतालमें) पद ॥ न भेजो मैया लग्न हेतु शिशुपाल । बरूँ मैं मन वच क्रम कर गोपाल ॥ (अन्तरा) हा हा करत कर जोर विनयवत जनि उर हमरो साल ॥ १ ॥ तुहि प्रिय लगत घोषसुत मुहिका लागत काल कराल ॥ २ ॥ विसरि गई मैया मति तोरी चलत अटपटी चाल ॥ ३ ॥ मम पति नन्दललन हितु साँचे सदा

भक्त प्रणपाल ॥ ४ ॥ चौपाई ॥ उन सम मोर न कोउ सहाई । मोरे धन जीवन यदुराई ॥ मान चुकी मैं उनको दुलहा । पुनि अब काहि बरूँ मन उलहा ॥ श्री गुरुवचन कौन विधि तोरूँ । निज प्रण लगि क्यहि मिस मुख मोरूँ ॥ नियम पतिव्रतको कस त्यागूँ । शठ रिपु भ्रात शिक्ष किमि लागूँ ॥ करत रुक्मि शिशुपाल बड़ाई । मो सन्मुख हरिकेरि बुराई ॥ कह तुव पूत भूत तन लागा । हानि लाभ नहिं लखत अभागा ॥ ह्वै पर मम भ्राता यहि लागी । निरख निपन्न करत दुखभागी ॥ जग जोहे ह्वैहैं बहु लोगा । पै यह सम न हठी शठ होगा ॥ जानत ना प्रभुको बल माता । गुरु बताय वेदन विख्याता ॥ पूर्ण ब्रह्म अवतार मुरारी । सर्वशक्तिनिधि सुयश अपारी ॥ (रागिनी गौड़ खम्माच तीनतालमें) पद ॥ कृष्ण राज महराजाधिराज गोबर्द्धन धरनेवाला है ॥ (अन्तरा) इन्द्रमान भञ्जन दुखगञ्जन ब्रजजीवन रखवाला है । गोपीनाथ मदन मोहन ग्वालन में ग्वाल गोपाला है ॥ १ ॥ मोरमुकुटवाला वंशीवाला दुष्ट विनाशनवाला है । दामोदर मुरलीधर माधव यादववंश उजाला है ॥ २ ॥ नन्दनँदन ब्रजराज साँवरो यशुमति कुँअर कृपाला है । वासुदेव देवकी नन्द मोहन मुकुन्द ब्रजवाला है ॥ ३॥ देवनपति श्रीनाथ दयानिधि दीनबन्धु प्रणपाला है । ललन शरण बुलाय चरणन प्रभु दी है दरश दयाला है ॥ ४ ॥ (तथा) पद ॥ कृपानाथ श्रीनाथ कृष्ण गौलोक स्वामि गोपाला है ॥

(अन्तरा) गिरिवर धरन लाल यदुपति त्रै लोक ईश ब्रजवाला है । भूमण्डल नरपाल पती शाहनपति शाह विशाला है ॥ १ ॥ जक्त मुक्तिदायक सब लायक नायक सुर सुखपाला है। सप्तद्वीप नव खण्ड भुवन चौदह दश दिश रखवाला है ॥ २ ॥ नारायण नरसिंह नरोत्तम निर्भय नितहि निहाला है। निराकार ज्योतिःस्वरूप आनन्दरूप उजियाला है ॥ ३ ॥ रविशशि पति चैतन्य दयानिधि दीनन हितू दयाला है । अमित प्रताप ललन गुण वाके जनवत्सल नँद-लाला है ॥ ४ ॥ (राग देश चारतालमें) कवित्त ॥ गिरिरूप धारिकै पुजायो ब्रजसों ब्रजेश शक्र भाग खायो सुरराज रिसमारुयो है। प्रबल बलाहकन बोलिकै सुरेश दल मूशल प्रवाह धार वर्षि अभिलाषो है ॥ राख्यो वाम अँगुनी पै गिरि यशुदाललन चक्र जल रच ब्रज रोम नाहिं नाख्यो है । ऐसो बलवन्त औ प्रतापवन्त मोर ईश वाही सों प्रपूर्ण प्रेम हौं तो करि राख्यो है ॥ १ ॥ (रागिनी झँझौटी त्रैताल में) सवैया ॥ सा अमरावति इन्द्र बलाहक लै अइरावत चन्द्र दिवाकर । वित्तरु रत्न अनन्त विभूषण वस्त्र सुकामदधेनु सजाकर ॥ पूजिस षोडश भाँति निहोरि परो प्रभुके शरणागत आकर । कै तिलकै ललनेश सुरेश धरो सुर नाम गुविन्द गदाधर ॥ २ ॥ चौपाई ॥ जो मुहि है दृढ़ प्रेम उन्ही को। तौ हुइहै मम चीतो जीको ॥ पै मम हीय शोच भय भारी। तैं मम जीवन धन महतारी ॥ सो तुहि का

भा जननि सयानी। तैं हूँ रुक्मी की रुचि आनी ॥ निखिल जन्म तैं सुरभी सेई । सो तैं हाथ बधिक के देई ॥ यासों विष मँगाय मुहिं प्याओ। पर शिशुपाल न सँग भमराओ ॥ तो सम मोर न कोउ दुखदाई । मुहि शिशुपाल देन रुचि लाई ॥ है रुक्मी हुक्मी प्रिय तोरा। तोर उदर का जन्म न मोरा ॥ अस उत्तरै कुँअरि जब दीना । औरहु भइ मन जननि मलीना ॥ तब त्रिय तीर परोसिन सारी। रुक्मिणि प्रति यह बात उचारी॥ [सर्वा ऊचुः] तुहि न उचित हठ राजदुलारी । शमहु क्लेश न उपाइय रारी ॥ दोहा ॥ जननि जनक सम्मुख कुँअरि, अस अनुचित बतरान ॥ तुहि न सुहत इमि कृत करत, धरत न हिय बिच ध्यान ॥१॥ सोरठा ॥ स्या नप सदन सदैव, धीरध्वजिनि अहो प्रिया ॥ काह भयो तुहि दैव, का रुचि रुचिर रुचीय मन : १ ॥ चौपाई ॥ तोरि कुशल यश सब कोउ चाहैं। तुव सुख सन हीं सुख सब का हैं ॥ नगर नारि नर कहँ यह लाहा। तुव सम सुघर मिलै तुहि नाहा ॥ अहर्निशा सब देत अशीशा। तुव सुख हित ध्यावत जगदीशा ॥ तैं न कौन जिय केर दुलारी। नगर सहाय तोर नर नारी ॥ तुहि तुव मात पितहि दुखि देखत। कोउ जिय कोउ कल कल नहिं लेखत ॥ हम क्यहुको वश नाहिं बिसावत। नहिं कोउ सन कछु कर बनिआवत ॥ तुहि मन मलिन विलोकत जोई । को न हिरास होत मन सोई ॥ हम सब सगे सगनते भूरा। तोर सहायक विधि भरपूरा ॥ जो सिख दिहैं सन्याय भाय

सों। नहिं अनीति विधि केर चाय सों॥ जचि यह जिय दृढ़ होत हमारा। सत विश्वास निवास अपारा॥ दोहा॥ जाति नाति भलि भाँति गति, जानत जोइ बड़ बूढ़॥ सो न सुता सुत समुझि सक, लाभाऽलाभ प्रपूढ़ ॥ १॥ चौपाई ॥ पुनि पितु मात सर्व अधिकारा। नीति सनातनि यहि संसारा॥ चहि ज्यहि सँगदें बिवहि कुमारी। तनया कछु नहिं सकत उचारी॥ का उनका नहिं इलक विचारा । वर गृह लखि न करिंह नतवारा ॥ हानि लाभ उनका न लखाई। तैं किमि प्रिया जात्त अकुलाई ॥ तैं तु जन्मि नहिं कुटिल कहाई । अब क्यहि हित अस करत ढिठाई॥ यहि अचरज हमका सब योगू। तुहि का भा चर्चब सब लोगू॥ हमहुँ सुता रहिं मात पिताकी। ज्यहि सँग ब्याह दई भइँ ताकी॥ यह न बानि भल तुव चतुराई। दुराचारि सब कहब लुगाई॥ तैं कुलीन गृहकी प्रियबेटी। पुनि न धारिये असमति हेटी॥ (रागिनी परज त्रैतालमें) सवैया॥ आनँददाय अनेकन रीति पुनीत प्रवाह बहै यश केरी। धर्म धुरन्धरि कर्म कलानिधि दान दया सुगुणों रस घेरी॥ प्रौढ़ प्रवीन नवीन बुधी नित शील सुभाव स्वभाव बसेरी। का ललनेपन ठान रही क्यहुकी सिख नेक न हीय धरेरी॥ १॥ (रागिनी खम्माच चारतालमें) कवित्त॥ रानिनपति रानी महरानी प्रतापवान तेरे भाग्य सों न आन दोऊ जग जानोंरी। दासन दयालि प्रतिकाल सब जानत सो सुन्दर सुयश रस चहुँ बगरानोंरी॥

मानो कवियन है प्रमानो गुनियन है सो मानों मानवारीं बहु भाँतिन दिपानोंरी। दीन सुधिले सुजान तोरी ये सदैव बान यशुदाललन भक्त मोर सिख मानोंरी॥ २॥ [रुक्मिण्युवाच] दोहा॥ समुझि सखी सिख दीजिये, सुनि मम वच न असत्य। मन वच क्रम भइ हरिशरण, मानि भाव पति सत्य॥ १॥ (राग विहाग चारतालमें) सवैया॥ हैं प्रण मोर सुनों सब गोरि न प्रीति गोपाल कि नेक त्यजोंगी। तात खिजौ ललने चहि मात न कानि कुटुम्बिन कान धरोंगी॥ लाज त्यजों न अकाज करों विष लाय पियों गिर सिन्धु मरोंगी। कोटि कहो मुहिं कोउ कुचालिन हों शिशुपालहि नाहिं बरोंगी॥ १॥ (राग कलौंगड़ा इकतालामें) सिंहावलोकन सवैया॥ बरिहों अस लाज गँवारिन से मम काज नशाय कहा करिहों। करिहों मन मानोहि काम महूँ नहिं शङ्क क्यहू कि हिये धरिहों॥ धरिहों कुल कानहिं चूल्हमहीं रुकमी रिपुसों न कछू डरिहों। डरिहों ललने नहिं प्राण गयेहु प्रणै मम नन्दललै बरिहों॥ २॥ (रागविहाग चारतालमें) सवैया॥ अलिको अस है जग माहिं अरी त्यजि माणिक काँच की चाह करै। कहँ देवतरु त्यज बब्बुर ठै सुरभी रुचि राखि न सेव खरै॥ सुख स्वर्ग सुधा बसुधा त्यज को विष नर्क विपत्तिनु आश धरै। शठ को ललनेश गोपाल हरै शिशुपाल खरै असुरै जो वरै॥ ३॥ (राग विभास चारतालमें) सवैया॥ मैं अरधाङ्गिनि हूँ हरिकी तरकी न करो तरकी तरकी।

जिय जासु लगै दुख जान वही सखि काहि कहूँ उर अन्तरकी ॥ हरि प्रीति भुजङ्ग डसी ललने न गती चलिहै कछु मन्तरकी । शिशुपाल करेज दवा यदि दे तौ मिटै उर दाह अभ्यन्तरकी॥४॥ (रागिनी बहार रूपकताल में) सवैया ॥ शिशुपाल चँडाल को नाम लिये उर दूगण दाह उपावत है । ग्रह काल कराल भयो रुकमी असुरै सँग बैरि विव्हावत है ॥ अपघात करूँ रिपु भ्रातपहीं ललनै कोउ नाहिं सुझावत है । भगिनी बध को हक नाहक ही यह पातक शीश चढ़ावत है ॥ ५ ॥ (राग वसन्त बहार रूपकताल में) सवैया ॥ हठिकै कछु लाभ न हो ललनै कर मींज बहू पछितावैगो हां । यदि मैं न रही तब काहि कहो शिशुपाल के संग विव्हावैगो हां ॥ खल आव स्वयंवर मध्य कहीं निज सो मुख लै उठि धावैगो हां । जयमाल गुपाल के भाल धरूँ दिखिहौं कह कौन बनावैगो हां ॥ ६ ॥ [सख्य ऊचुः] चौपाई ॥ यह सब सत भाषत तैं प्यारी । पै सुरीति चहि काज सुधारी ॥ हठिधर्मी कर काज विनाशै । इन बातन अपयशहि-प्रकाशै ॥ सबहि भाँति के जन जग जानो । लोकाचारहु उचित प्रमानो ॥ जो कुलरीति नीति ज्यहि गाई । तासु उलङ्घन जनि सुखदाई ॥ पुनि तैं तो बड़ चतुर बखानी । सकल सराहत तुहि पुर प्रानी ॥ सुयश पाय जो कुयश कमावै । ताहि चतुर कोउ नहिं अदरावै ॥ शिक्षित करण केर हम काजा । तुहिं भल लग तस करिय सलाजा ॥ सिख स्यानै हित नाहिं अयानै ।

धौं सिख वाहि जो आपुन मानै ॥ सुनि प्रिय बहुरि सिखावन वामा । कछु खिझि क्रुधित उचरि वहि यामा ॥ [रुक्मिण्युवाच] दोहा ॥ मम जीवन धन सुखद प्रिय, श्री गुपाल कमनीय ॥ तिन्ह अर्धाङ्गिनि पाव को, तिहुँ पुर को अस जीय ॥ १ ॥ सोरठा ॥ पामर अधि नर जौन, अणिमादिक सिद्धी सुखद ॥ उपय सकत नहिंतौन, तिहूँ काल चहि पचिमरै ॥ १ ॥ चौपाई ॥ वह निन्दित अति नीच अकाजी । हरि निन्दक जनुँ जासु समाजी ॥ हौं कुलोत्तमा सुन्दरि दारा । मम जग जन्म विदित परिवारा ॥ कोउ कुलीन अस वाम न होही । जो परिहर हरि आनहि जोही ॥ का समर्थ राखै रुक्मैया । जो मुहि वरै असुर सँग दैया ॥ भल मति भ्रात न धारत येही । कुशल न कर शिशुपाल सनेही ॥ पर प्रणनाशक जे जग माहीं । तिन्है नरक हो संशय नाहीं ॥ परव्रत विनशैं ते धिक् प्रानी । नियम विदारक धिक् अज्ञानी ॥ पर हित दलता धिक् जन जोहीं । सदा अनादर हो विधि सोहीं ॥ पर प्रतीति वाधक जे जीवा । निश्चय तिन शालत यम ग्रीवा । प्रीति पराइ विभञ्जन हारे । तिन्हैं न किञ्चित् सुख तिहुँ द्वारे ॥ दोहा ॥ पर सुख जौन विदारहीं, आपन आनँद हेत ॥ तिन्हैं सुयश सम्भोग सुख, मिलै न तिहूँ निकेत ॥ १ ॥ सोरठा ॥ पर उछाह हन ताहि, विघ्न उपासक जान ते ॥ पर सँयोग विनशाहि, तिन्है भलाइ न मिलहि जग ॥ १ ॥ चौपाई ॥ परदुख लखि ज्यहि दुख नहिं लागे । ते जन जानहु दुष्ट

अभागे ॥ दाहन यथा व्यथा पर माहीं । तिन्ह मितवत विपदा शक नाहीं ॥ पर सुकाज वाधक अभिमानी । तिन्ह गृह हानि करत महिमानी । पर अकाज जे चिन्तहि करना । चिन्तित रहैं कठिन भवतरना ॥ तात नगर कोउ सन्त न सज्जनु । दे विरुद्धि समुझाइ रुक्म तनु ॥ सर्वाचार रहित अपराधी । मम प्रण बाधत कमवत व्याधी ॥ मह मिथ्याऽभिमानि अन्याई । निज मति सों कुल नाश कराई ॥ अजितेन्द्रिय अविवेकी घोरा । गृह प्रपञ्च अनुचित बरजोरा ॥ है खलेश अघबेषि बहूता । छल बल छन्दन धारक बूता ॥ कुकृत करा अपरा खल साथी । सुकृत कदन शमनक सुख गाथी ॥ दोहा ॥ भरे पुरे मम पितु पुरहि, रजे पुजे बहु ग्राम ॥ द्रव्य रत्न पद राज्य लहि, कुल सम्बन्धि ललाम ॥ १ ॥ सोरठा ॥ शठ मतीश दुखदाइ, है अधर्म आलय अमित ॥ वधत वंश यश भाइ , अखिल कीर्ति कान्तिहि जनक ॥ १ ॥ चौपाई ॥ यासन बल ऐश्वर्य्य बड़ाई । कहिदो बहु न दिखावै भाई ॥ श्री गुपाल त्रैलोक्य अधीशा । उन बिन को मम हो सक ईशा ॥ रविभा त्यज नहिं आन प्रकाशै । को जग अस जो मम प्रणनाशै ॥ सत कृति हरि भुजाहि मुहि अँगि हैं । धनि वह दिवस भाग्य मम जगि हैं ॥ निखिल ब्रह्माण्डाधिप वनवारी । भार्या हौं तिन योग्य सुखारी ॥ जिमि द्विज विद्या विप्रहि योगी । आन प्रमोद सकत नहिं भोगी ॥ यासों उचित सहोदर आली । मुहि परिणावै सँग वनमाली ॥ है मुहि दृढ़

निश्चय सौं माता । पुरि है मम हठ रुचिहि विधाता ॥ यहि परिणाम जानिये साँचा । अग्र तुम्हार जो हौं प्रण बाँचा ॥ जो आपन पितु राज्य भलाई । चहै कुशल तो तजहि ढिठाई ॥ दोहा ॥ जो मम हित नँदललन को, बन्धु मितावै मोर ॥ सर्वानँद आ आदरैं, नतये नन्दकिशोर ॥ १ ॥ सोरठा ॥ प्रभु शरणागतपाल, प्रेम परायण वदत श्रुति ॥ कुल धर्मज्ञ गोपाल, तिन्हैं भजेहि सब सुख सदा ॥ १ ॥ चौपाई ॥ मम सिख त्यज विपरीत सँजोई । तौ पुनि विपुल विपत्तिहि होई ॥ शक्रवज्र चहि निष्फल जाई । धौं यमदण्डहु जाय बचाई ॥ पै त्रिलोकपति दीनदयाला । तिनकर कोप खलनदल ज्वाला ॥ भुलेहु रुक्मि शिशुपाल बुलावा । कहुँ बरात लै खल चलि आवा ॥ तौ मम प्रेरक अन्तर्यामी । युग अनुजहु अइहैं उहि यामी ॥ शर सम सुरपति वज्र कठोरा । तिन्ह बाणन हनिहैं खल घोरा ॥ बड़ बड़ फाँक ज्वलित मुहँ बाये । विषधर सदृस हलाहल छाये ॥ अटल अमोघ तिन्हैं कर बाणा । विषमज्वर सम हारकप्राणा ॥ काल रूप विकराल कठोरा । असत न जानिय कछु वच मोरा ॥ ते शर दमसुत कुल दलमलि हैं । युक्ति उपाय न कोउ कर चलिहैं ॥ दोहा ॥ प्रबल पराक्रमि पतिन पति, पुञ्ज प्रताप प्रधान ॥ दाहन दुष्टन दारुणै, दहिनै दास द्विजान ॥ १ ॥ सोरठा ॥ शूर बीर संग्राम, वैरिवृन्द विजयी विपुल ॥ ते शर कर धंसाम , धूम धरैंगे रण महीं ॥ १ ॥ चौपाई ॥ प्राण बचाय भागि बचि जैहैं । जे सन्मुख भिरि हैं

विनशै हैं ॥ बैठन उठन न सम्हरन पैहैं। यहि विधि शर वक्रता दिखैहैं ॥ ज्यहि तन लागब वारि न माँगब। महि पैवँद करिहैं शर यादव ॥ सब समर्थ शर तिनकर ऐसे। कोउ सुर अस्त्र न जानहुँ तैसे ॥ सर्पसुरूप भूप दल कोहीं। गरुड़रूप शर हनिहैं योहीं ॥ मोर स्वामि रिपुदमन सदाके। जग विख्यात सदृश ज्वाला के ॥ जिमि वामन जू त्रैपग धरिकै। लै बलिराज्य लियो छल करिकै ॥ तैसहि यक पल माँहि मुरारी। शस्त्रप्रहरिहैं बल हलधारी ॥ यदि दोउ नरसिंहरूप कराला। ऐहैं मम सहाय नँदलाला ॥ फिर न थमब कोउ शूर सयाना। युगल सिंह सम्मुख बलवाना ॥ दोहा ॥ श्री बल मूशल अचल बल, प्रबल पुष्ट गति गूढ़ ॥ रोष कोष ज्यहि च्रण समर, करन होहिं आरूढ़ ॥ १ ॥ सोरठा ॥ परिहैं देख न एक, दुष्ट विहीने मतिन के ॥ हाहाकार अनेक, सुनि मिलिहैं श्रवणन सबन ॥ १ ॥ चौपाई ॥ सूर्याग्नी सम तेजनिधाना। खल बल शोष जाँय इक बाना ॥ इमि सिख वचन सुनाय किशोरी। सावधान कीन्हिस सब गोरी ॥ सुमुखि मयङ्कप्रभा तनया की। प्रौढ़ित प्रण लखि गृह दृढ़ता की ॥ मन मन माँझ सकल सुख पागीं। आशिष अर्पि सराहन लागीं ॥ कहैं परस्पर परिकर वामा। धनि रुक्मिणि सत प्रणहि प्रणामा ॥ दृढ़ निश्चय धनि धनि इहिकेरा। विश्वासहि जग सुखद घनेरा ॥ समुझि श्याम बलधाम अथाहा। हरिदर्शन को भा उर लाहा ॥ कोउ दृग सों दृग

जोरि लड़ातीं। सैनन सखि हरिभक्ति बतातीं ॥ उर अन्तर हरियश गुण गातीं। वरहिं प्रिया प्रभु देव मनातीं ॥ प्रेमानन्द प्रफुल्लित स्यानी। निज निज तन मन दशा भुलानी ॥ दोहा ॥ आदिशक्ति लखि रुक्मिणी, श्री लक्ष्मी वपु पेख ॥ सकल सुहाग रु भाग प्रति, वदतिं बड़ाइ विशेष ॥ १ ॥ सोरठा ॥ रुक्मिणि मतिवति बाल, जकी चकी सी रहिगईं ॥ मन महँ महा निहाल, आशिष पुनि पुनि दें प्रियहि ॥ १ ॥ (राग विभास चार ताल में) कवित्त ॥ धर्मन की मेंड़ हौ सुमेंड पतिव्रत की हौ कर्म की कमोरी हौ ललन शर्मसारिका। मर्म अखिलेश हौ अमर्म गुण वेष रिपु निन्दक चलन छल बलन विदारिका ॥ नम्रता निकाई निधि भर्म्मता विहाई विधि पर्मता सिधाई सिधि आनँद विहारिका। प्रीति रीति कारिका हितून की अधारिका सुचातुरी प्रचारिका जियो प्रभाकुमारिका ॥ इति श्रीरुक्मिणीपाणिग्रहणेरुक्मिणीसखीसंवादेश्रीकृष्ण प्रतापवर्णनोनामसप्तदशःसर्गः ॥ १७ ॥

[रुक्म्युवाच] चौपाई ॥ रुक्मी सुनि रुक्मिणि की बातें। क्रोधित ह्वै बोल्यो अँगना तें ॥ भई सुता यह निपट निलाजी। शीश चढ़ायउ मात पिताजी ॥ होय परी मम भगिनि नहींतो। आनि होति छुड़तो नहिं जीतो ॥ कुल अनरीति करत कुल दोषी। कोउ न सुजन त्रिय नय संतोषी ॥ दुर्भागिनि नहिं कोउ उपदेशै। रचि उपाधि गृह बिच

निःशेशै ॥ शेष कोष भरि रोष अलापा । दोउलोचन कर अरुण अनापा ॥ कहि प्रोहितसों वचन सुनायो । नाई नेगिन निकट बुलायो ॥ लेहु लग्न तुम करहु पयाना । सज गज हय रथ पालकि म्याना ॥ बर करही जा देहु लगन को । है अवकाश न बार करन को ॥ भगिनि पूजि कैधहुँ बहिनोई । यहि में भेद न दूषण कोई ॥ दोहा ॥ रुक्मी देन लग्यो लगन, परी न द्विज के हाथ ॥ बिखरि गिरी महि निरखि जन, दुखित भयउ महिनाथ ॥ १ ॥ सोरठा ॥ युगल श्रोत धरि पाण, शोक सिन्धु बूड़्यो नृपति ॥ अब न होत कल्याण, निज मन व्याकुल वदत इमि ॥ १ ॥ चौपाई ॥ भा अशकुन सब भाषण लागे । नाति जाति बहु शोचन पागे ॥ तीर परोसी मेल मिलापी । पुरजन परिजन हू मति टापी ॥ पुनि पुनि बर्ज्यो रुक्मि अभागे । चली न कछु क्यहुकी त्यहि आगे ॥ करहिं सकल मन माँहिं अँदेशा । अग्र होत लखि परहिं कलेशा ॥ रुक्मि द्विजन पहँ चक्षु चढ़ाये । सावधान हो क्यों घबराये ॥ पुनि उठाय दइ लग्न द्विजै को । लिखि चीठी दइ दमघोषै को ॥ भूषण वसन रत्न धन नाना । मेवा मिसरी बहु पकवाना ॥ शकटन सिद्ध समग्रि अनेका । बे प्रमाण अनुमान न एका ॥ चाँगल चतुर दास अरु दासी । वाहन विपुल अमोल प्रभासी ॥ सकल वस्तु दै कहि समुझाई । विनय विपुल समधी हित गाई ॥ दोहा ॥ मोरि ओरि सों जोरि कर, पग शिरनाय सराहि ॥ कहियो नृप

दमघोष सों, लेउ सुतलग्न चढ़ाहि ॥ १ ॥ तुम लायक नहिं मैं नृपति, तुम सब लायक भ्वाल ॥ अपन जान अपनाइयो, हौं गरीब कङ्गाल ॥ २ ॥ सोरठा ॥ दै आशिष अनखाय, प्रोहित पण्डित नेगि जन ॥ मन ही मन पछताय, नृप आज्ञावत चलत भे ॥ १ ॥ चौपाई ॥ प्रमुद चँदेरि नगर मग शोधा । लै द्विज नाइन नेगिन योधा ॥ निज निज वाहन बैठि बिराजे । बसन विभूषण बहु तन साजे ॥ तिलक समाज आज बहु सङ्गा । नृप गृह पहुँचे चढ़े तुरङ्गा ॥ लखि दमघोष सकल सनमानो । सुत हित लग्न जानि हरषानो ॥ भौन भामिनिनु खबर कराई । नारि गारि व्यवहारि बधाई ॥ दमसुत तिलकागम निज जोहा । रुक्मिणि रूप माहिं मन मोहा ॥ रँग महलन बिच सबन निवासा । षट् रस भोजन दिय सुखरासा ॥ सुख की नींद निशा सब टारी । भोरहि नृप कुलजनन हँकारी ॥ इष्ट मित्र कुल बन्धु सँगाती । साज साज तन वसन विभाती ॥ नृपगृह अमित महीपति राजे । नाइन नेगिन बुधन समाजे ॥ (रागिनी गौरी त्योरा ताल में) सवैया ॥ चौकपुराय लिपाय घरे शिशुपाल सजे तन सुन्दर बागो । डारि पटा मलयागिरि को दमुको ललनै जब बैठन लागो ॥ छींक भई दिशि दक्षिणते तब तो कछु शोच सबै उर जागो । ताक सों ताक रहे सबके सब को अशकूनहि कीन्ह अभागो ॥ १ ॥ (रागिनी मुल्तानी शूल ताल में) सवैया ॥ भगिनी दमुकी रहि जाहिवरी सु हुतो चतुरा बहु

भाँति सयानो । त्यहि लेहु गुहारि कही सब नाह बुलावन किङ्कर ताहि पलानो ॥ ललनै त्यहि रूप कहा कहिये कनबुच्च रु गञ्ज शिरै पुनि कानो । वहि आवत देखि हँसे दइ तारि प्रणाम कियो नृप ने सनमानो ॥ २ ॥ दोहा ॥ जीजा जीय लगाय तुम, कह्यो नृपति दमघोष ॥ छींक प्रभाव कहहु सकल, जौन शुभाऽशुभ दोष ॥ १ ॥ [धृष्टक उवाच] (सादरा रागिनी धनाश्री शूल ताल में) सवैया ॥ कानन हाथ कह्यो धर काण गई मति तोर न बात विचारो । दाँतन जीभ दबाय रह्यो चुप होय छिनेक न बैन उचारो ॥ बोलत भा कनबुच्च सुनों सुतदायक दुःख तुम्हैं अति भारो । जो ललनै लइ कुण्डिन गे नृप होय बहूत बिगार तुम्हारो ॥ १ ॥ (राग पूरिया दिवसो शूल तालमें) सवैया ॥ यह छींक न नीक महीपति है रणकारक रोग उपावन सी । सुन नाह दुल्हा तन दाह दुनै सुख सम्पति मित्र विनाशन सी ॥ जनि चाउ विवाहु धरौ हिय में सजनेतिन वह्नि गिरासन सी । ललनै लइ कुण्डिनगे भ्किखिहौ लिखिराखु हमारि कहावन सी ॥ २ ॥ (राग सूहा सुगरई त्रैताली) पद ॥ नहीं भल जाना कुन्दन का । (अन्तरा) वो रुक्मिणि अर्द्धाङ्गिनि हरि की जन्म रमा तन का ॥ १ ॥ नरनायक गोपाल लाल नहिं उन बल जानन का ॥ २ ॥ और न कहु कोउ नृपतिकुमारी तो सुत ब्याहन का ॥ ३ ॥ मन मानो चहि जहाँ नात करु घटा न बालन का ॥ ४ ॥ नहिं मानै मम बात फेरि नृप पछितावे

मनका ॥ ५ ॥ तो वश की नहिं ललन लाड़िली त्यज गुमान धन का ॥ ६ ॥ (रागिनी खम्माच में त्रैताली) पद ॥ सुन शिशुपाल बुआपति बैनन दारुण रोष गहोरे ॥ (अन्तरा) लाल लाल लोचन कर गाढ़े भ्रुकुटी तान कहोरे ॥ तुम्हरी फुफा न आनि बानि भल करिबो क्लेश चहोरे ॥ १ ॥ हौं जानत तुम कृष्ण सँगाती प्रकटो भेद अहोरे ॥ हम सों नात घात मन तोरे सो छल प्रकट रहोरे ॥ २ ॥ अँगुरि उठाय कहत भूपन सों तुम यह चरित लहोरे ॥ निमक हमार खाय ग्वाल को गावत यश किन होरे ॥ ३ ॥ समय परे प्रकटै अपनापन सो अब लखो जहोरे ॥ ललन न जानहुँ मोहि तोर कृति ज्ञात न हीय दहोरे ॥ ४ ॥ [धृष्टक उवाच] (रागिनी भीमपलाशी शूल तालमें) सवैया ॥ रे शठ मोहि न लोह न द्रोह कहूँ सत बात विषाद विहाई । तैं कछु राखत भेद मनै छलिया छलि आनहुं काहि बताई ॥ है सच रीति जहान जही जस जो तस जानत सर्वहि भाई । तोहि बढ़ो ललनै अभिमान गुमान करै प्रभुसों न भलाई ॥ १ ॥ [यथा दृष्टान्त] (रागिनी गौरी चारताल में) सवैया ॥ एक समै हरिमानत भे अरजून प्रती सुकृती यशकी । कर्णहु सो ललनै न सुनो महदानि दया शमता तसकी ॥ भार प्रमाण सुहेमप्रदा नित सेवक सन्त ब्रती असकी । कृष्ण सखै सुनि मान भयो करि रीस नशी मदकी चसकी ॥ २ ॥ चौपाई ॥ सोइ यक मदभञ्जनी कहानी । तोहि सुनावत शृणु हित मानी ॥ हरिमुख सुन कृत कर्ण करेरी ।

अर्जुन कीन्ह रीस मद प्रेरी ॥ कञ्चन भार देत नित भयऊ। द्विज मुनि सेवा बिच मन दयऊ ॥
सत्सङ्गति गति साधि निदानी। कीन्ह प्रसिद्ध निजहि महदानी ॥ लखि जनमन मद अन्त-
र्यामी। पर्चो लीन्ह जाइ त्यहि स्वामी ॥ साठ सहस सँग लीन्हे चेला। पावस प्रबल परेख
कुबेला ॥ पुर समीप जा भे आसीना। सुनि अर्जुन मुनि मिलो प्रवीना ॥ युग कर जोरि डार
महिमाथा। ह्वै अधीन विनयो महिनाथा ॥ [अर्जुन उवाच] जो जो जन प्रति आयुष होई।
पठवहुँ प्रभु सामग्रिहि सोई ॥ [साधुरूपश्रीकृष्ण उवाच] सुन किरीटि मो ढिग सब सामा।
केवल शुष्क काष्ठ को कामा ॥ पठहि सकहु द्यो शीघ्र पठाई। मुनि सन्तुष्टहिं भोजन पाई ॥
दोहा ॥ सुनि भगवत बच पाण्डुसुत, हामि भ्रसित कर गौन ॥ शुष्ककाष्ठ नहिं पाय पुर, लजित
छिपान्यो भौन ॥ १ ॥ सोरठा ॥ मुनि गण आगम जान, कर्णहु तिन्ह शरणै गयो ॥ ऋषिपद
बन्द निदान, भर बिनोद इमि वदत भा ॥१॥ दोहा ॥ सेवा शुश्रूषा सकल, सहित विवेक विधान ॥
पार्थ कीन्ह हुइ है प्रभो, हो मुहि अस अनुमान ॥ १ ॥ सोरठा ॥ जो कछु सेवा शेष, हो मम
लायक कहिय प्रभु ॥ वरण्यो विहँसि ब्रजेश, कह्यो हुतो अर्जुनहुं सों ॥ १ ॥ चौपाई ॥ ईंधन
शुष्क चहिय कछु भाई। भेज सकहु तो भेजहु जाई ॥ पै वह चुपह्वै मौन विहारा। वह सन पुरो
न काज हमारा ॥ तोसन सधै टहल यदि एती। करु सत्कार सुप्रेम समेती ॥ [कर्ण उवाच]

जो अनुशासन अबहिं सिधावत। निरस दारु हौं शीघ्र पठावत ॥ जा गृह कर्ण खुदावन लाग्यो।
शकटन कड़िन भरावन लाग्यो ॥ श्री प्रभु तो प्रति अन्तर्यामी। जानत त्तणत्तण की
सब स्वामी ॥ निहरि नाथ दृढ़ सत रति बांकी। जन ढिग जाय दीन्ह निज झांकी ॥ करी
प्रशंसा युत सम्मानी। कह प्रभु कर्णातपरो न दानी ॥ तुव समान है तुहि जगराना। तो समता
करसकै न आना ॥ मैं केवल रुचि रखत प्रेमकी। उपरि भक्ति जानि मार्ग नेमकी ॥ हौं सब
बिधि प्रसन्न नृप तोसों। तैं शुभमति कछु मांगिय मोसों ॥ दोहा ॥ चरणकमल की शरण
गहि, मांग्यो नृप वर येहु ॥ जो प्रसन्न मोपर प्रभो, पादपद्म रति देहु ॥ १ ॥ चौपाई ॥
सतहि जांचि याचन रुचि भ्वाला। सह हित नाथ प्रसन्ने हाला ॥ एवमस्तु कहि नृप रुचि
पूरी। कर्ण सनाथ भयो भरपूरी ॥ जन मनरञ्जन श्री भगवाना। नृप सुख दै भे अन्त-
र्धाना ॥ सुनि यह समाचार सुखदाई। अर्जुन मन महँ ग्लानि समाई ॥ सुनु समुझा दमुसुत
धौं नाहीं। माधव सों मद दुखद सदाहीं ॥ आनि रीस बिन प्रेम न होई। तैं हरिसमता कारि-
यत सोई ॥ किन्ह कर मद सुख चैन उपावा। क्यहि मद नहिं भगवान नशावा ॥ मैं न रही
कोउ की जग माहीं। तैं निज सम कोउ समुझत नाहीं ॥ पितुस्वसेश वच सुन शिशुपाला।
लै कृपाण कर रोष कराला ॥ म्यान बिहीन कीन्ह तरवारी। फूफे बधन उठो वहि बारी ॥ दोहा ॥

पकर लीन्ह पितु सुत बहुरि, समुझावा हितलाय ॥ नृपन मनावा मान दै, रज्यो चौक पर जाय ॥ १ ॥ चौपाई ॥ द्विजन सैन दै लग्न पुजाई। देव मनाय मग्न अधिकाई ॥ लै कर लग्न उठो शिशुपाला। हरबराइ महि गिरि तत्काला ॥ प्रोहित दइ उठाय पुनि हाथै। लगे अराधन कुल सुरनाथै ॥ अशकुन देखि सबै सकुचाने। नृप भयते कछु बात न भाने ॥ लै दमघोष रत्न धन नाना। देन लग्यो द्विज रङ्कन दाना ॥ कुल सम्बन्धिन बहु सन्मान्यों। दियो दान सबहिन मनमान्यों ॥ कुण्डिनपुर के जो जन आये। तिनके सकल मनोर्थ पुजाये ॥ गज पीनस वृषयुत रथ घोड़े। भूषण बसन दुशालन जोड़े ॥ हीरन हार पिन्हाय पुरोहत। दिये अमित धन नेगिन विधिवत ॥ बिदा कीन सब को दमघोषू। मन प्रसन्न कुल जन सन्तोषू ॥ इति श्रीरुक्मिणीपाणिग्रहणे शिशुपालस्य तिलकारोपणे धृष्टकद्वाराऽपशकुनफलवर्णनोनामाष्टादशः सर्गः ॥ १८ ॥

दोहा ॥ बाजहिं अनँद बधावरे, नृप चँदेरिपति द्वार ॥ शिशुपाला फूलो फिरै, कीन्हे शुभग शृँगार ॥ १ ॥ (राग एमन कल्याण चार ताल में) मनहरण दण्डक कवित्त ॥ नौबत नगारे धुन्धकारे धूमधारे जनु गरजैं पयोद वृन्द भारे शब्दवारे से। तोरहीन तोरहीन शब्द तूरतूर करे झाँ झाँ झाँ झाँझन झर झिल्ली झनकारे से ॥ सहनै नफीर अलगोजा बीर बंसुरीक

ढोलकी ललन डफ ढिंढुरन धारे से। सारे मतिवारे रँगवारे रसियारे सारे परिहैं निहारे न्यारे भगत अपारे से ॥ १ ॥ दोहा ॥ हुकुम दियो शिशुपालने, नापितादिकन टेरि ॥ इष्ट मित्र सम्बन्धि नृप, बुलये सकल चँदेरि ॥ १ ॥ चौपाई ॥ सब देशन के नृप न्योतैयो। कृष्ण कुटिल को मती बुलैयो ॥ भ्रात यदपि मम वह ननसारी। पै रिपु मोर परम वनवारी ॥ जा सन बरज सुनाऊं तुमका। कोउ नृप शठ न बतावै हमका ॥ यहि विधि कहा महेश बखानी। प्रश्न कियो पुनि गिरिजा रानी ॥ [पार्वत्युवाच] ममा फुफेरो नात सुहानो। रिपुता को कह भेद बखानो ॥ भाइन भाइन बीच दुरापा। बहु अचरज जिय मोरे व्यापा ॥ सो करि कृपा कहौ पशुराई। जायँ सकल संशय बिनशाई ॥ [महादेव उवाच] नृप दमघोष चँदेरीवाला। तेहि गृह जन्म भयो शिशुपाला ॥ चारिभुजा हे लोचन तीना। लखि नृपसुत अति विस्मय कीना ॥ बुधन बोल यह हाल सुनावा। लाय द्विजन को कुँअर दिखावा ॥ दोहा ॥ बुध विलोकि बोलत भये, ग्रह फल पत्री जौन ॥ इक दृग दुइ भुज छुइ नशै, तुव सुतनाशक तौन ॥ १ ॥ चौपाई ॥ या सन हे नृप हम सिख लीजै। सरल उपाय कहत तस कीजै ॥ जो कोउ आगमनै तुव भौनै। त्यहिसन गात छुवैयो औनै ॥ परख परीक्षा करिय उपाया। जो कछु बनिआवै महिराया ॥ सुनि अस बिकट गाथ महिपाला। रानी तट जा सुनयो हाला ॥ दै धन यथाशक्ति युत माना। बिदा कीन्ह बुध

प्रोहित नाना ॥ जो जन कुँअर देखबे आवैं । ताहि तात सुततन परसावै ॥ यहि विधि बीति गये बहुकाला । यक दिन कीन्ह विचार गोपाला ॥ बहु दिन भये बुआ नहिं पेखी । चलहिं आज त्यहि आवैं देखी ॥ दोहा ॥ आये कृष्ण मुरारि तहँ, लीलानिधि ब्रजचन्द ॥ बुआ निरखि उठि पुलकि तन, लिय उर आनँदकन्द ॥ १ ॥ चौपाई ॥ फूफै बहु विधि लाड़लड़ायो । मनमोहन निज कण्ठ लगायो ॥ आगत स्वागत कीन्ह न थोरा । षट रस अशन जिमाय बहोरा ॥ श्री वसुदेव देवकी क्षेमा । श्री नँद यशुमति कुशल सप्रेमा ॥ श्री बल हलधर दनुजाराती । पूँछिस प्रभुतन कुल कुशलाती ॥ ब्रजजननायक दीनदयाला । नम्र स्वभाव सुखद जनपाला ॥ परम प्रवीन मनोरथ दाता । जड़ चैतन्य सकल जगपाता ॥ हरि हरेक हित पूँछ समोदा । दीन्ह दम्पतिहु हृदय विनोदा ॥ भाग्य प्रशंसत हिय न अघायउ । लै सुत प्रभु समीप बैठायउ ॥ परसतही हरितन शिशुपाला । दृग भुज हीन भयउ तत्काला ॥ दम्पति निरखि अतिहि दुखमाना । कुँअरकाल हरिहस्तहि जाना ॥ दोहा ॥ प्रभु चरणन गेरो सुतहि, बुआ विनय बहु कीन्ह ॥ यदुकुलभूषण श्याम तैं, मुहि न कबहुँ कछु दीन्ह ॥ १ ॥ चौपाई ॥ श्री प्रभु ज्ञापक घट घट केरा । तिन्ह रुचि जानि गये वहि बेरा ॥ कीन्ह श्याम हृदि बिच अनुमाना । यह मँगिहैं सुत जीवनदाना ॥ हौं वहि बधन हेतु वपुधारा । करिहौं खलदलि भव निस्तारा ॥

सोचि समुझि प्रभु मायाधारी । दुहुन कथन सुनि परम सुखारी ॥ कह्यउ विहँसि प्रभु कह तुहि चहिये । निर्भय ह्वै दृढ़ मोसन कहिये ॥ बहु प्रशंसि अस बुआ उचारी । तैं मम सुत सेहु प्रिय वनवारी ॥ है शिशुपाल तोर लघु भ्राता । करहि जो यह कछु अनुचित बाता ॥ क्षमा कीजियो यहि की खोरी । यह वर आशा पूजहु मोरी ॥ जन्म कर्म्म में यह यक बाता । हौं तोसन मांगत वरदाता ॥ मोरि ओरि लखि अपन अधीना । करहु कृपा छलछन्द विहीना ॥ [श्रीभगवानुवाच] सोरठा ॥ कह्यो श्याम सुख दान, कह यक बात सुजान बुअ ॥ दे शत गारि बखान, तहूँ न तुव सुत कछु कहूँ ॥ १ ॥ पर यहि दे समुझाय, सौ ते अधिक न खाउँ गम ॥ देहुँ तोहिं जतराय, पुनि न दोष मेरो कछुक ॥ २ ॥ चौपाई ॥ वहि क्षण जननि जनक गुहरावा । प्रभु वच कहि सब सुवन सुनावा ॥ लखु सुत श्याम केरि शुभकाई । बड़न उचित जस चहिय बड़ाई ॥ सो श्रीकृष्ण मोर हितलागी । प्रेमिनु प्रिय जनके अनुरागी ॥ मो रुचि रुचिर पुरइ विधिनेती । वरणत बनत न मो मुख सेती ॥ सदा सदा कुल हर्य तिहारे । श्री मनमोहन राजदुलारे ॥ इन सँग कबहुँ न करिय विरोधा । हम तुव कुशल यही विधि शोधा ॥ हौं यक वर तुहि हित सङ्केता । इन्ह कृपाल दिय शत वच चेता ॥ अस कहि मात सुतहि समुझाई । आशिष लै गृह गयउ

१ पूज्य ॥

कन्हाई ॥ शम्भु कहा सुनु प्रिया निदाना । तब सों दमुसुत हरि रिपु माना ॥ यहि मिस न्योता हरिहिं न सिरिजा । सावधान सुनिकै भइ गिरिजा ॥ इति श्रीरुक्मिणीपाणिग्रहणेशिशुपालजन्म वर्णनोनामैकोनविंशः सर्गः ॥ १९ ॥

[महादेव उवाच] दोहा ॥ अब जहँ जहँ न्योते दिये, नृप शिशुपाल विचार ॥ सो भवानि सुन वर्णिहौं, विधि संक्षेप प्रकार ॥१॥ (रागिनी पहाड़ी त्रैताल में) मनहरण—दण्डक कवित्त ॥ अलीगढ़ आवाधिप आजम अहिम्दाबादि अंमृत अम्बाला अजमेर अलमोढ़ा को । आगरा अयोध्यापति आंवला अटक आरा अर्बिया अष्ट्रेलिया अमेरिका अखाड़ा को ॥ अङ्ग वङ्ग आंभी अतरौली अवरङ्गाबादि आलम गढ़ेश आदि अधिपति आसा को । अदम्भानियां असाम ललन अमीरपुरि अमरावतीशाऽनन्तरामियां अन्दावा को ॥ १ ॥ सोरठा ॥ इन्दौरी इटलीश, इंग्लिस्तान इरानियां ॥ इलहाबादियाधीश, ईशानी इत्यादिकौ ॥ १ ॥ उदयपुरी उन्नाव, उम्दा नगर उड़ीसिया ॥ उज्जैनी उमगाव, उन्मत्ते उलहे उतै ॥ २ ॥ (रागिनी बरुआ, प्रबन्ध झप ध्रुपक ताली) कवित्त ॥ कूकू कनखर करनाटिकी कबीरपुर कम्पिलाधिपति कटिनौर काञ्चि काशी के । कोटा करनाल कड़ा मानिकी कुबेरपुरी कालाकांकरी ललन कुटरादि कूंची के ॥ कुरुक्षेत्र कोट कांगड़ा कनौज कन्नपुरी काशगञ्ज कैकै काश्मीरिया किरांची के । काबुल कमाऊ

कलकत्ता कामरू कलिङ्ग कोट कहिमारा कोंच कालपी कुम्हेटी के ॥ १ ॥ सोरठा ॥ कोयल कुँअर कुवाकि, कांकड़ेश कालाम्बुकी ॥ कोंकण केर कजाकि, कुन्तलपुरिक कतार कल ॥ १ ॥ दोहा ॥ खीरी खैराबादिया, खुरासानि खन्धार ॥ खण्ड खण्ड खैरीगढ़ा खासे खासे भ्वार ॥१॥ सोरठा ॥ गौड़व गुजरातीन, गोंडाध्यक्ष गुमानिया ॥ गाजियबादि प्रवीन, गयावाल गम्भीर गए ॥ १ ॥ दोहा ॥ घिरित घाघरावासिया, घमसन जिमि घन घोर ॥ घटिहा घने घमण्ड घर, घाती घात न थोर ॥ १ ॥ (राग कान्हड़ा नायकी आड़ा चौताला में) मनहरण—दण्डक कवित्त ॥ चाँगले चचेड़िया चित्तौरगढ़ चम्पावत चम्बुल चुनारगढ़ चीनादिक चूनिया । चिन्हट चिरान छपरा चँडाल चन्दगढ़ चकाबूह गढ़ीके चिनाबी चरखारिया ॥ ललन जुमीले जर्मनीश जहँगीराबादि जिन्दहादि जशवन्त जामनग्र जूशिया । जम्बूद्वीप जलन्धर जालौन जौन जैपुरेश जोधपुरी जावड़ा जगाधरी जँगीरिया ॥ १ ॥ चौपाई ॥ झूनागढ़हु झींद झांसी के । झुरमुट झब्बलपुरबासी के ॥ झुण्ड झालरापाटन पासी । झरि भुन्नार झुंझुनू वासी ॥ टीढ़ीदल दै टोंक नगाड़ा । टांडा टरकी टुंडला टाड़ा ॥ डुमरांवां डूंगर डुंड़वारा । ढाका पाटन केर भुआरा ॥ तिब्बत तिर्हुत तट तन्तारा । तिलकपुरी तैलङ्गी भारा ॥ तिलहर तियल तँबोरिक प्रानी । ताण्डव नगर तुरुकिस्तानी ॥ तीव्र तीव्र तन तेज दढ़ाने । निज निज विक्रम

बिच अभिमाने ॥ मींड़त मुच्छ उमेठत बाहू । ठोंकत ताल तमङ्क अथाहू ॥ मन्मथ मत्त पुरित उन्मादा । सोम दोम तन रूप बिवादा ॥ छल बल कपट कलानिधि न्यारे । अस्त्र शस्त्र गहि विविध प्रकारे ॥ (राग कान्हड़ा सादरा शूलतालमें) मनहरण—दण्डक कवित्त ॥ दागनग्र देहली दरियाबाद दानगढ़ धोंकलीय द्राविडीश दीर्घ दलवारेसे । धामपूर धौलागढ़ धौलपूर धारापति धौंश धहुँराराधीश धाये हलकारे से ॥ नैनीताल नीमच नजीमाबाद नागपूर नृपति नाटौर नव-रङ्गाबादि न्यारेसे । नासिकौ नृसिंह गढ़ नानपारा नांदग्राम नाभा नारनौलिका ललन नृप भारे से ॥ १ ॥ सोरठा ॥ नरवरि निपट निहाल, नैनी न्यायपुरी नरा ॥ नैपालीक नृपाल, नैपारे वारे बहुरि ॥ १ ॥ नन्दन नगरिक नेति, नागाधिपति निहासके ॥ निन्दाऽनूप निकेति, निकर निहङ्ग भटनयुत ॥ २ ॥ (राग बिलावल चारतालमें) दण्डक कवित्त ॥ पट्टन पेशावरीश पटनादि पाल-नेश पीलीभीत पूनाहू पिहानीपति पर्शिया । पन्ना पानीपत पुण्डरीक पिण्डवारि प्राग ललन प्रबल पुञ्ज पूरिरहे पौलिया ॥ फैजा फरासीसी फ्रांस फरुख फरीदपुर फत्तेगढ़ फत्तेपुर फन्दनफरे बिया । बीकानेर बलक बुखारा बिज्जनौर बाँदा बाँकुरे बिहार बदाऊँ बुढ़ान पूरिया ॥१॥ (सादरा रागिनी अल्हैया शूल ताल में) रूप घनाक्षरी कवित्त ॥ बम्बई बिलायत बरेलिया बुलन्द देश बाँसीबिल्लहरिक बुँदेलखण्डिया कुमार । बण्डा बँगलौरीहू बिठूरिया बटेश्वरीश बहिराची बँगला

बड़ौदा बहराम घार ॥ ललन बिजै पुरी बल्लाम पुर बाँकुरेश बिन्ध्याचलबासी बीर बिक्रमी बहू प्रकार । बिजैगढ़ बैसवार बिल्गराम बर्द्धवान बाराबङ्कि बिस्मा बितिया बनारसी भुआर ॥ २ ॥ (राग अड़ाना कान्ह तिवरा ताल में) हरिगीतिका छन्द ॥ भगवन्त पुर भूपाल भ्याँणी भोज पुरि भूटानुरी । भट भीलवाड़ा भर्तखण्डि भदौरिया भागलपुरी ॥ मुलतान मकामदीनियां मैंग लौर मर्दाबादिया । मेवाड़िया भँदराज मैथिल मैनपुरि मडवारिया ॥ माधोनगरपुर मालिती मुजफरनगर मानिकपुरी । मौसमाबादिक मेरटी महराजगढ़ मिरजापुरी ॥ मछरट महम्दा महि मुदा मुस्तिफा भकसूदादिकौ । मइसोर मिसर मुँगेर महिमन्पुर मुहक्मा बादिकौ ॥ मौराँय मगध महोवरा मरुदेश मालव मालिया । भँदशोर माधोगढ़ मरहिटा मालवा मन्दारिया ॥ मणि मुकुटपुर मैनक महेन्द्रगढ़ेश महत मिमांसपुर । मुक्केश मुकुरातीनगर बर मेखलापुर मोरपुर ॥ मुलतानगढ़ महिमापुरी मुर्शिदाबादि कमन्दपुर । मन्सूरिया मरहर मरहिरा मान मल्हन मूक पुर ॥ रंगून रावलपिण्डि रहिमाबाद याबूओरके । राठौर रुरकी रम्पुरी राजे नगर चहुँओरके ॥ रहिकमाबाद रुहेलखण्डरु राठ रीवाँ रूसिया । रतलाम रेगिस्तान रावलपूर रूम रसूमिया ॥ राघो गढ़ेश रजीतपुर पति रानिखेत रिवाड़िया । श्री राजघाट रसीदपुरिया रामसागर रींधिया ॥ रँगमहलिया रत्नरङ्क रहस पुरेश रजरमणीकपुर । लाहौरलद लन्धौर लछनापुर लखीम लली

तपुर ॥ नृप लहर लोचन लन्कनी लाठौर लुधियानापते । लाङ्कोलिया लङ्केश ललन सुपुर चँदेरी आवते ॥ बांगरामौ बंधानपुर वांसी विनहपुर विरदपुर । वाचालदेश विषयपुरी वितपुर वरहपुर वालपुर ॥ बैरारिवांदीकुँड बिराटी नृप बिदापुर बलकपुर । बालामऊ बालि कागढ़ बनियामऊ वियानपुर ॥ बादलामौ वरविन्दगढ़ वितपत्य पुरी बिभास पुर । बिन्ताक पुर वाराच बावागढ़ विरागी बाल्हपुर ॥ वाजीनगर विजलामऊ विस्तारपुरी बसन्त पुरि । वरवर्णवर्ण बिभूषण दिक वस्त्र शस्त्र बसइ बहुरि ॥ १ ॥ चौपाई ॥ सूरत सीतापूर सुदेशा । श्री नगरौ शहजहां पुरेशा ॥ शहबादादि सहारनपूरा । शम्शाबादी सूरज शूरा ॥ शिकुहाबादी साधनपूरी । सज समाज सरदारन कूरी ॥ सकरायां सहजाती सारे । सिंहलद्वीप सिंहपुरवारे ॥ सुघर सुघर सुन्दर गढ़ केरे । साजे साज समाज घनेरे ॥ शल्य पुरी सिन्धिया सयाने । सिन्धु समीपी दल मँडराने ॥ शल मल शोलापुरी नृपाला । सोमदेशिया सासनिवाला ॥ शिमला सुहृद सितारा सूँदल । सीतामढ़ि सुहागपुरिके नल ॥ सिकन्दरा सुवाकपुर भूपा । सौभाग्यी सातियापुर तूपा ॥ सांम्भी मांम्भी के सरदारा । शेखावाटिन बृन्द अपारा ॥ (रागिनी मल्हार त्रैताल में) गणितछन्द ॥ सीतामौ शण्डीलाधीशा सांगानेरी भ्वार । स्याहू शीवारा श्यूपूरी सूबा नगौभ्भार ॥ १ ॥ सिम्थसिम्री सुल्ता पूरी शाहामौ सर्दार । सम्भर्कन्दी सिर्दारौ पूरीके

योधान्यार ॥ २ ॥ दोहा ॥ हलदावर हलदौरिया, हलद्वानी हरद्वार ॥ हमिर हुशङ्गाबादिया, हैदराबादिक न्यार ॥ १ ॥ चौपाई ॥ इहि सम अमित दिशनते भ्वाला । निज गृह बुलवाये शिशुपाला ॥ जुरे असुर दल नृपति सनेही । धरि बहु विकट वेष अपनेही ॥ सूक्षम नाम बतावत तिनके । जे शिरोमणी अनगिनातिनके ॥ रात्रिंचर राक्षस क्रव्यादौ । कौणप खल अस्रपौ जमादौ ॥ निकषात्मज कर्बुर रात्रीचर । नैर्ऋत्या कटुवादी आशार ॥ यातुधान निश्चर नीराकी । दलयक्ष गति सर्व छलाकी ॥ यातुधीर शठ पुण्य जनै रव । दुष्ट दनुज दारुण दल दानव ॥ मायावी उन्मत्त प्रमादी । बङ्कट चालि कराल बिवादी ॥ छयालिस छोहनि दल भा माती । बुलवाये शिशुपाल बराती ॥ कहूँ प्रमाण छोहनी केरा । तम्बु कनात बिछायत डेरा ॥ (राग मालकोश धमार ताल में) हरिगीतिका छन्द ॥ इक्किस सहस अरु अष्ट शत सत्तर प्रमाणिक हों रथा । असवार आयुधबन्ध बांके जानिये कुञ्जर यथा ॥ यक लक्ष नौके सहस्र पैदल तीनसौ परुचाश इत । पैंसठ सहस्र सवार अश्वन छसौ दश आयुध सहित ॥ यह ललनछोणि प्रमाण आयुध द्विगुण तौ जानौं सही । बलबांकुरे बहु भीर वीर गँभीर धीर पती मही ॥ इति श्रीरुक्मिणी पाणिग्रहणेदमघोषगृहे नानानृपागमनवर्णनोनामविंशःसर्गः ॥ २० ॥

चौपाई ॥ नाना वर्ण सोहँ असवारी ॥ गज तृष उष्ट्र रथा दल भारी ॥ बेहद झुन्द अश्व शक-

टादी। पीनस पालकियां मर्यादी॥ म्याना मञ्जु मभोलि महाना। बोंचन छकड़न पुङ्गपुँगाना॥ तामझाम अभिराम अजूबा। हवादार छबि छाजत खूबा॥ निज निज यान ज्वान योधागन। अस्त्रशस्त्र बांधे प्रमत्त मन॥ आये सकल चँदेरि नृपाला। टिकये पुरलट बागन झ्वाला॥ षटरस विविध प्रकारिक भोजन। नृपगृह बुलये जीमन सोजन॥ जीमत नृपगण नृपगृह माहीं। निरखि नारि नर अति पुलकाहीं॥ रङ्ग रँगीलन छैल छबीलन। भूप रूप लखि छकित वामगन॥ गावहिं रँग रस रागन गारी। मुदयुत भूपन नाम उचारी॥ (गारी) आजकी घड़ियां सुहावनी रे साजन सुफल जन्म भयो मोर॥ पावन नृप गृह तुम कियो वारी दै दर्शन चित लालाजी चोर॥ १॥ हमरे भाग सुहाग बड़ जो साजन दरश दिये तुम आय॥ धनि नृप सुत ब्यह जानिये वारी तुमने कीन्हीं लालाजी सहाय॥ २॥ (रागिनी जिला कहरुआ में गारी) सुन ले बे सुन ले दमघोष मेरे राजे अपने तू भाग सराहु ये तो घड़ी सोनेकी। (अन्तरा) सुतमिस ब्याह नृपन करी करुणा चिरजिये कुँअर दुलाहु॥ येतो घड़ी सोनेकी॥ १॥ नृप तुव ललन परम बड़भागी तैं सुखसिन्धु प्रवाहु॥ येतोघड़ी सोनेकी॥ २॥ (राग वृन्दावनी शारँग में गारी) धनि धनि तेरो सुत शिशुपाल जन्म लियो सुभग घरी। (अन्तरा) जाके ब्याह बहाने आये भूपन दायाकरी॥ जन्म लियो सुभग घरी॥ १॥ धनि चँदेरि धन भाग तिहारो धनि हम

सब सुन्दरी॥ जन्म०॥ २॥ धनि तेरो ललन कुटुँब परिवारा ज्यहि गृह आनँद झरी॥ जन्म०॥ ३॥ चौपाई॥ यहि विधि नारी गारी गातीं। राजन रूप निरखि हुलसातीं॥ मुदित परस्पर हँसि बतरातीं। लखि शुभघरि दिन बलि बलि जातीं॥ भूप अहार सप्रेम अहारैं। घोषक बन्धु सबन सत्कारैं॥ जीम झूठ लै पान इलाची। दमु की प्रीति प्रशंसा माची॥ नृपन निवास जहाँ ज्यहि दीना। सोये तहँ सब नृपति प्रवीना॥ दमघोषहु निज सेज सिधारा। निरखे निशि दुःस्वप्न अपारा॥ चिन्ता व्यथित प्रात उठि धावा। निज कुल पूज्य सुबुधन बुलावा॥ [राजोवाच] पूछहुँ कह फल स्वप्नन केरो। है अन्देशित बहु चित मेरो॥ सुनि नृप वच अस बुध जन बोले। स्वप्न शुभाऽशुभ गुण अन मोले॥ भिन्न २ हम वर्णि सुनावत। ज्यहि विधि फल पुराण जतरावत॥ दोहा॥ प्रथम प्रहर यामिनि मधे, स्वप्न दृष्ट जो होय॥ ताको फल इक बर्ष में, प्राप्त करै नर सोय॥ १॥ अर्धनिशा में स्वप्न हो, तृतिय मास फल जान॥ तृतिय याम कर स्वप्न फल, एक मास में मान॥ २॥ शृणु महीप चौथे प्रहर, स्वप्न दृष्ट हो जौन॥ त्यहि फल दशवें दिवस हो, वृथा न जावे तौन॥ ३॥ प्रातकाल हो स्वप्न जो, मद्यहि फल दातार॥ शुभ निरखै जागत रहै, सोवै अशुभ निहार॥ ४॥ अथ सुस्वप्न वर्णत कछुक, सुनु भूपति चितलाय॥ जो जस यशदातार फल, सो सब कहैं सुनाय॥ ५॥

(रागिनी ललित चारताल में) जलहरण–दण्डक कवित्त ॥ सूर्य्योदय धूम्रबिनु ज्वलित अनल चन्द्र नदिनिधि तर्पि तारागण दरशन भल । ग्रहण गगन गौन प्रासादादि देव भौन राजगृह धैवो पटश्वेत को धारन भल ॥ सुरापान वसा मांस भक्ष दधियुक्त भात रुधिरैं हनैबो लेप बिष्ठा को बदन भल । रतन आभूषणादि दर्श श्वेत चन्दनको तन लेप स्वप्न कार्य सिद्धक ललन भल ॥ १ ॥ (राग बिलावल फरोदस्त तालमें) मनहरण दण्डक कवित्त ॥ देव द्विज भूप सित पुष्पदल इन्दीवर श्वेत रत्नभूषणहु ललन निहारिबो । बामगो पर्वत धहुँ प्राप्त पुष्पमाल्यकादि शीशा मांस को मिलन भल व्याधि टारिबो ॥ हस्ती हय दर्श सित अश्व-धौं चढ़ब भल वृषभगो गुरु स्वामी दर्श सुख सारिबो । वर्धक कुटुम्ब शुभ शिखर चढ़न बृक्ष मर्ण निज रोदनते सम्पती विहारिबो ॥ २ ॥ (रागिनी गारा त्रैताल में) सवैया ॥ सित व्याल डसै क्यहुके तनजो धन द्योस दसै महँ भौन भरै । पनिहा अहि काटहि अर्थ पुरै धन संतति हो कुलवृद्ध धरै ॥ विहरै जलसिन्धु तरै तरणी तत राज्य को लाभ हो नाहिं टरै । दल विकसित कञ्जनपै ललनै दधिक्षीर भषै तौ अनन्द करै ॥ ३ ॥ (राग खम्माच चारताल में) मनहरण–दण्डक कवित्त ॥ मानुष की खोपरी में मांस जो बनाय खाय अग्नि से घिरा विलोक वायु निज भ्वाल हो । बिप्रते इतर जन जाहि मद्यपान देहिं रक्तको पियावैं लउ प्राप्त धन माल हो ॥ दग्धित

वसन देखै आपन को बँधा धहुँ स्वप्न ये सुखेश जन धन सों निहाल हो । चढ़ै बृक्ष क्षीरी पर स्वप्नबीच निश्चै ही तौ सुःख पावै ललन को बहु धनवाल हो ॥ ४ ॥ (रागिनी सोहिनी चार ताल में) मनहरण–दण्डक कवित्त ॥ श्वेतवस्त्र धारे सित चन्दन प्रसारे शुभ साजे हो शृँगारै तनालिङ्गै अस बालको । धौं विष्ठान्न भोजन नखत मख प्राप्त पुनि खड़ग उपानत ते लाभ धन माल को ॥ क्षीर फेनपान जव धान्य सोम लता प्राप्त अग्गंजा कपूर दर्श श्वेत पुष्पमाल को । खण्डन हो वित्त सितपान दर्श मूस मुर्ग ये सुस्वप्न सम्पतिदा ललन विशाल को ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ यह सुखदाय स्वप्न भूपाला । कुछ कुस्वप्न वर्णत सुनु भ्वाला ॥ होहिं पतन नक्षत्र अपारे । रवि शशि कान्तिविहीन निहारे ॥ स्वप्न मध्य निशि निरखै जोई । रक्त बस्त्र धारै तन कोई । सहित प्रसून अशोक तरुवरा । लखहिं पलाश पेंड़ दुखकरा ॥ रक्त वस्त्रधारी अस वेषी । ता त्रिय सँग रति करहि विशेषी ॥ कबहुँ चढ़ै रथ मचे महिषहू । गर्दभ गाड़ि विराजे कतहू ॥ यह दुःस्वप्न मृत्युसम दुखदा । रोग शोक प्रद दाता विपदा ॥ रेंड़ी तिल्ली तैल घृत मर्दन । दर्श कपास रोग दायक तन ॥ दोहा ॥ धूरी ब्यारि विहीन नभ, उड़ति दिखाई देय ॥ यह कुस्वप्न अतिही दुखद, लखै जौन जग जेय ॥ १ ॥ बिन बादर बरसत जल देखै । बिन घन चपला चमकत लेखै ॥ लगै वह्नि को बृथा न सपना । व्यथित कष्ट सों हो कुल अपना ॥ बिन ऋतु बादल गरजैं बरसैं । ऐस

स्वप्न नृप जे आदरसैं ॥ निश्चय हाकिम सों भयहोई । वृथा न जाय कदापिहु कोई ॥ रक्त प्रसून प्रफुल्लित वारी । जाबिच विहरै निशा झँझारी ॥ धौं खरपै चढ़ि दक्षिण धावे । सो नर कछु दिनमें मरजावे ॥ चील काक कारो पट हेरै । नृप नशाहि धन रोग रगेरै ॥ मसि काजर कोउ वदन लगावै । तौ कछु कुयश निशङ्क उपावै ॥ बिरचि पुराण प्रमाण जतावा । भट्टाचार्य्य मतिहु इमि गावा ॥ तिन्ह कृत व्याख्या बरणत सोई । साहित विधि विधानवत जोई ॥ दोहा ॥ लखहि गिर्गिटै त्रिपकुली, गिद्द गिजाइन गोह ॥ रोग ग्रसित हो कलुक तन, धहुं द्रव्यहि दुखकोह ॥ १ ॥ (रागिनी झँझौटी त्रैताल में) किरीटी सवैया ॥ कानन शैलचरा त्यज वास छयें नृप देश मचाय कुलाहल । अर्धनिशा प्रति कागरु धेनु उचारहिं शब्द शृगाल दिनै थल ॥ कूप गरज्जन हो भुइँ चाल भये जतरावत अग्र व्यथादल । भङ्गहि देश निवास भनै ललनै द्विज वेदमता भल ॥ १ ॥ चौपाई ॥ ये कुस्वप्न दुखदा सबकाहू । तुम को स्वप्न लखे महिनाहू ॥ [राजो वाच] कहत सुनहु हे विप्र प्रधाना । हौं कुस्वप्न यहि निरखे नाना ॥ [महादेव उवाच] बुध विचारि बोले राजासैं । हैं दुखदायक स्वप्नप्रकासैं ॥ कोविदकथन श्रवणसन भूपा । मौनित ह्वै मनशोकनु तूपा ॥ भाँति विविध उरकीन्ह विचारा । सावधानह्वै बहुरि उचारा ॥ करहु शान्ति इनकेरि उपावा । समय बरात चलनको आवा ॥ सुतहित कुशल दान बहु कीन्हे । विप्रन बोल पूज नृप दीन्हे ॥ चलेबरात कह्यो

पुनि राजा ॥ सजहिं भूप सब साज समाजा ॥ जाइ किंकरनु नृपनु सुनावा । मे तयार नृप सुनि सुख पावा ॥ जुरे असुर शिशुपाल सनेही । बहु नामक कुरूप जिनकेही ॥ दोहा ॥ कह्यो शम्भु गिरिजा सुनहु , अब कुण्डिन को हाल ॥ पहुँचे नाई द्विज सकल, रुक्मी निकट निहाल ॥ १ ॥ चौपाई ॥ सकल व्यवस्था बरणि सुनाई । ज्यहि विधिसों नृप लग्न चढ़ाई ॥ दान दहेज दियो नृप ज्यहि सो । धरो रुक्मके अग्रहिं त्यहि सो ॥ निज आदर अवलोकि अनूपा । अहंमिति[1] रुढ़ भयो सुत भूपा ॥ अतिप्रफुल्ल मन प्रमुदित ह्वै कै । दाहिज देखि उमँग हिय दैकै ॥ दियो अर्प सबको रुक्मैया । लग्यो लुटावन मुहर रुपैया ॥ टेरि किङ्करनु सबन सुनायो । हलवाइन वैद्यन बुलवायो ॥ पाकौषधि पक्वान्न मिठाई । कह्यो बनावन तिन समुझाई ॥ वैद्यन औषधिरस बहु राचे । जिनके फल गुण जाहिं न बाचे ॥ पान करे हों रोग विनाशा । पुष्ट करैं तन तेज प्रकाशा ॥ सो वर्णन कर उमा सुनाऊँ । सरलै सूक्ष्म सबिधि कहि गाऊँ ॥ दोहा ॥ सुनि मृडानि शंकर कथन, भइ प्रसन्न अतिहीय ॥ हुइ यकाग्र[2] मन सुनन हित, सहरुचि रुचिर रुचीय ॥ १ ॥

इति श्रीरुक्मिणीपाणिग्रहणेशिशुपालतिलकारोपणेस्वप्नफलवर्णनोनामैकविंशःसर्गः ॥ २१ ॥

[महादेव उवाच] चौपाई ॥ हलवाइन नृपसुवन सुनायो । विरचहु सर्वपदार्थ सुहायो ॥

१–अहंकार । २–प्राप्त ॥

खाद्य भक्ष्य मृदु चर्व्य चबेनी। चोष्य लेह्य अरु पेय रसेनी ॥ प्रेम नेम हिय छलका छलका। सुन्दर स्यानप झलका झलका ॥ त्यहि इच्छा अनुगत हलवाई। दिव्य से दिव्य सुद्रव्य बनाई॥ बूरा मिश्री कन्द बतासे। खाँड़ खड़पुरी ओला खासे ॥ मावाकन्द सुगन्धित मेड़े। मेवा मिलि मनोहर पेड़े ॥ हैमिक रजतिक पना लसेती। बर्फी विविधप्रकार समेती ॥ पिस्तेकी पस्ते कद काटीं। गरीं गरीकी रँग रस छाटीं ॥ बादामी बहुदामनवालीं। घिया घुरीं घृत मधु रस घालीं॥ केशरिया रँग पीत रँगीसीं। सुधा घानि बिच मनहुं पगीसीं ॥ दोहा ॥ महा मञ्जु माधुर्य रस, मावा मिलीं महान ॥ नव नवनीत[2] सुवास युत, स्वादित अमित निदान ॥ १ ॥ चौपाई ॥ हिना इतरकी मिश्रित बर्फी। प्रति बर्फी को मोल अशर्फी ॥ श्वेत हरीं पियरीं अरुणारीं। चाँदी करि परातनु ढारीं ॥ मनु नभबिच बदरा रँगवारे। शोभित रूपराशि छबिधारे ॥ बरक बिज्जुली सी द्युति दीपैं। देखेइ भूँख भगै असमीपैं ॥ मोदक मैदादिक घृत साने। रवा बेसनी नुक्किनबाने ॥ मधुर मलाई मिश्री मञ्जुल। मुखमें धरत बिलाय जायँ घुल ॥ पिस्ता गरी बदाम किशिमसी। मिश्रित इतर इलायची पिसी ॥ मूँग मोयनी मोहन लड्डू। बूट बटेवाँ सोहन लड्डू ॥ हैयङ्गवीन भूर्जित माषाँ[3]। सिद्धे मोदक बहु अभिलाषा ॥ सुठि शुंठील कसारिकनीके। मेथिय मथित सुस्वाद

१-अनुसार। २-मक्खन। ३-उरद ॥

अमीके ॥ दोहा ॥ सद घृत शोधित मेल मय, मिश्री कणिका कन्द ॥ चारु चाशनी सरसयुत, सुभग सुगन्धित मन्द ॥१॥ चौपाई ॥ उरद बेसनी बूँदी दुरमा। खस्ता ताजे खाजे खुरमा ॥ अमृत बोरी सरस इमरती। सुवरण माठ मध्य करि भरती ॥ जर्चीं जलेबी पूरित पाका। साँचे ढले कन्दके प्राका ॥ रसडोबीं गुलाबजामिनियां। बालूशाही परम रमनियां ॥ कन्द चाशनी कपूरकन्दा। इतर सुगन्धिनु मञ्जुल मन्दा ॥ खस्ता खजुर शिरस्ता शीरी। नानखताई स्वाद अमीरी ॥ मालपुआ सद घृत्त चुआते। मोहन भोग नई नइ भाते ॥ कंकोरुह को पक पेठई। कदलि फलनु अलाम्बु कलिन्दई ॥ नीपैं प्रदीपैं नोखे नोखे। हलवा घलवा मलवा चोखे ॥ (रागिनी काफी त्रैताल में) कवित्त ॥ दानेदार ग्वाके सो मेवा मित पिश्ताके विशेषता छुवाराके न पारा वार पाइये। शालिचूर्ण मैदाके सुबेसनी कुम्हेड़ा[1] केर गाजरी गँभीर रामदानाके अथाइये ॥ जाफल जवित्रीतर केशर कस्तूरी लौंग ललन कपूर पूर सौरभ सुहाइये। सद्य नवनीतके कल्हारे सब गीतिकेर स्वादित पुनीतके सो कहाँलौं गनाइये ॥ १ ॥ चौपाई ॥ भूर भुरभुरी पपरी खस्ता। हलवा सोहन मोहन मस्ता ॥ तिलपट्टी गटियां भुरभुरियां। मखना मुरमुरान मुरमुरियां ॥ हिना गुलाब केवरा बसई। महक महक दूरहिते दिपई ॥ अरु दन्दानकड़ाके धाजा। तिलपपरी मन

१-कुम्हेड़ा। २-लौकी। ३-तरबूज़। ४-सुन्दर।

मने मसाला ॥ दूध मलाई केरि पूरियां । मिश्रित खोयाकी पकोरियां ॥ मेवाकी बहु विधि रँग-रातीं । कन्द चाशनी मिली सुहातीं ॥ घेवर घोर घृत्त रससानो । परम पुनीतिक स्वाद सुहानो॥ माखनबरा थरा शत कोटी । दिपत दूधिया वरविधि घोटी ॥ लौजातिक लौजात नवेली । महा मनोज्ञ सुभांति सुहेली ॥ मृदुल मोयनी शक्करपारे । गोभा अमित अँदरशा न्यारे ॥ दोहा ॥ सँवाँल बेसनी विविध वर, विपुल वस्तु नमकील ॥ मैदामोयन मिलित अति, उत्तम जाति रसील ॥ १ ॥ चौपाई ॥ सेव सलोने परम पुनीता । दालमौठ स्वादित सबरीता ॥ मुइन मसाले-दार तिकोने । मठरी शक्करपाल सलोने ॥ मठे बराबर मोइनवाले । अती मुलायम रूप रसाले॥ सेमीं शत शत भांति सुहाती । जिन्हहिं देखते भूख हिराती ॥ टिकियां सोंठ मसाले केरी । छुवत बिलाएँ जो लें मुख गेरी ॥ अधिया मोइनदार कचोरी । मिले मसाले स्वाद घनोरी ॥ गुने समोने गुने न जावें । लघुपापरी पुनीत सुहावें॥ निमकी पिश्ते चारु चिरौंजी । वर बदाम किशमिशी कलौंजी ॥ वर्ण वर्ण नमकीन समाना । भिन्न भिन्न स्वादिल रसखाना ॥ पुनि अब वर्णन करहुँ मुरब्बा । शर्कर मिशरी कन्द गुरब्बा ॥ (राग विहागरा झपतालमें) हरिगीतिका छन्द ॥ सहकार जामुन अनन्नास अरुणमुखा धात्रीफला । नव नासपाति छुआँर रम्भाफल सुसेवति रसथलां ॥

१-मनभावती । २-छुहारा । ३-आम्र । ४-करौंदा । ५-आँवला । ६-रसभरी ।

कलकेरु कलिता कूष्माण्डकि बीहि आर्द्रक बेलका । किशमिसि शिवां आलम्बु हरफारेवड़ी बहु-मेलका ॥ उर्दमिष्टिका वर नागरङ्गा बदरिफलहु चकोतरा । मृदु ऊख श्रीफल सेव कर्टुवदनो मञ्जु-निष्टा वरा ॥ कर्कटि कलिङ्गो पीतचर्मा हिमरसी मिष्टाङ्ग्या । पूगी फलादि कपित्थ जम्भा सविध ललन अलूचया ॥ भल भिन्न भिन्नहि स्वाद सबके सुधारस मानहुँ पगे । भरि हेमपात्रन मध्य राखे रुक्म अँग अँग अनुरँगे ॥ चौपाई ॥ वर्ण वर्ण विधि पयके पागा । रुक्मैया बनवावन लागा ॥ रवड़ी गवड़ी रस मधुमेवा । खुर्चन ललित परम सुखदेवा ॥ मृदु गोरस सुठि शकर समोखी । दही मही वर भांति अनोखी ॥ मृदुल मृदुल महमञ्जु मिलाई । बहु भांतिक मावा रुचिदाई ॥ तण्डुल धिया मखानन केरी । चन्द कन्द नुक्किनिक घनेरी ॥ मेवादिकनु सुगन्धन सोहीं । शुभ्र तस्मई वर विधि जोहीं ॥ सुभग सुभग शिकरिन रसराती । स्वर्ण रजत वर वर्क लसाती ॥ विपुल बसौंधि लौंधि मधु सेती । विरचीं सविधि विचार समेती ॥ पाकन पाक अमित रस श्रेनी । मण्डनु म-ण्डित पात्रनु फेनी ॥ निमकी अरु मिष्टान्न विधाना । निर्मित किये रुक्म विधि नाना ॥ (राग यामिनीक पूरिया रूपक तालमें) हरिगीतिका छन्द ॥ केशर कपूर सुभूर धूर कचूर शीतल

१-कसेरु । २-कम्हेड़ा-खबहा । ३-अदरक । ४-बड़ी हर्र । ५-लौकी । ६-गाजर । ७-नारङ्गी । ८-बेर । ९-खीरा । १०-मौलसिरी । ११-ककड़ी । १२-तरबूज़ । १३-खिरनी । १४-फालसा । १५-सहतूत । १६-कैथा । १७-नींबू । १८-सुगन्धित रवड़ी ।

चीनिहू । जातीफला जावित्रि सुभग लवङ्ग ललित नवीनिहू ॥ अस अष्टगन्ध सुगन्ध विधि-वत श्वेत अरुण इलाचियां । कञ्चन कमोरिन पुरित बिच भण्डार राजित राचियां ॥ जो वस्तु जौन पदार्थ योगिक तौन तिहि बिच मेलते । केवरा केतकि खस गुलाब सुवास इतर समेलते ॥ १ ॥ चौपाई ॥ उज्ज्वल मैदा मल मन रुचई । लुच लुचई बनवाई लुचई ॥ देखेइ हरे लेहिं मन पूरीं । नैनू नीप घान महँ पूरीं ॥ घोई मिलित मसालन सोंरी । कल कोमल सी बनी कचोंरी ॥ नाना विधि सों स्वाद सँभारी । शाक भाजि विरचीं बहुन्यारी ॥ धातुर्दा बृहती वरसरणा । सितनख शाक अनूपम वरणा ॥ कर्पालान अरु तिलाँन बथुई । सीताफल आलाबू अरुई ॥ पनस गोभि कचरी वर बण्डे । शुंठि सेंगरी मारू मण्डे ॥ कलित कली कचनार मसिण्डे । लुभिया छिया वाहवह टिण्डे ॥ कँबूरा सेमा अम्बादिक । सोया पालक शैर्वरि स्वादिक ॥ चणक प्रसून तिन्तिणीदलकल । अम्ल शाक सरसौं मरसाभल ॥ दोहा ॥ कुँदरु करेला काकरी, कँकोलकी पटोल ॥ रूसा रौंसा बाकला, कदलिफला अनतोल ॥१॥ चौपाई ॥ सूरण मूलक अनुप अदरखी । शकर कन्द बड़हरा कमरखी ॥ मटर काबुली और हरियला । कोमलाधिकौ मधुर करियंला ॥ कन्दकि खीरा फूट रतालू । लोल

१–जायफल । २–भिण्डी । ३–तोरई । ४–खन्त । रतालू । ५–सेमी । ६–लौकी । ७–भांटा । ८–आलू । ९–कटहल । १०–खरबूज़ा । ११–मेथी शाक । १२–इमली । १३–चूका शाक । १४–कालीमिर्च । १५–परवल । १६–जिमींकन्द । १७–मूली । १८–टेंटी ।

लभेरा सुठि सतालू ॥ चैर्म मकोय सुशीतिक शाका । भिटुह उदुम्बर वर छवि छाका ॥ आँपि नेत्रबाला चौराई । ललित लुन्हीया सहजन राई ॥ वास्तुक श्वेत रक्त शुभ श्यामा ॥ मोथा ताड़लीहु अभिरामा । चारु चचेड़े रामतोरई । हालों धनिय तिपतिक निर्मई ॥ कालँशाक गाजरकिन थोरा । कमलकन्द कुलफा लहसोरा ॥ मिष्ट तुम्ब विम्बट कँण्डूरी । सरलि ककोड़े भूसिक भूरी ॥ (रागपलास चारतालमें) घनाक्षरी कवित्त ॥ मेलके मसाले रेल पेल घृत डाले चहि मनन चुआले साग स्वादित निराले हैं । हींग बघराले मिर्च दक्षिणी कराले लौंग लसि धनियाले औ पुदीना प्रतिपाले हैं ॥ सुठि शुंठियाले मिथियाले जीरा श्वेत काले शोभित ललन कोई आदीरस घाले हैं । लोन समता ले सो न कम बहुता ले शोध शोधके सम्हाले धौं सुवासे स्वादवाले हैं ॥ १ ॥ चौपाई ॥ पुनि पुनीत बहु रुचिर रायते । बनवाये अति चाय भायते ॥ भल अलाम्बु कोंढा कुम्हड़ा को । बथुई अदरख पोदीनाको ॥ मधुर मखान मञ्जु निमकीले । स्वादन में जनु आम अमीले ॥ कोमल कदलिफला मूलीके । खीरा कर्कटीहु नुकलीके ॥ अमल पय घृत मिष्ट मिलायो । सौरभ अतर समेलि बनायो ॥ अर्क गर्क सौरभि सुन्दरसे । अमित सृजकै जन राचे करसे ॥ मिठे मिठे मिठुआ रस सेती । इक्षुरसाविप स्वाद समेती ॥ कटुकङ्कोल

१–पोयशाक । २–गूलर । ३–नारीशाक । ४–नारीशाककी जड़ । ५–बथुआ । ६–कड़रीशाक । ७–कर्मकल्ला । ८–कमलगट्टेकी कच्ची मींगी । ९–कटीले परवर । १०–कमलकीजड़ । ११–घुइयांकी डंठुल । १२–हलवाई ।

रसेश अपारा । सर्व अम्लरस सार निसारा ॥ अर्क हरीतकि गुणद अनन्ता । पाचनप्रद रुचि अशन सृजन्ता ॥ निमकी लवण समासम जोई । रचे अनूप तीव्र रससोई ॥ दोहा ॥ बैठो थैली खोलके, रुक्मि कह्यो अस भानि ॥ धरहु अचार विचार बहु, मँगये अमृतबानि ॥ १ ॥ चौपाई ॥ रचन लगे बहुभांति अचारा । गलका सिरका हड़ कचनारा ॥ बिल्व कचूमर किलहा कटहल । ढुरमा नींबू टेंटी बड़हल ॥ जिमींकन्द खरबुजा रतालू । शकरकन्द लहसोरा आलू ॥ सुमन सहंजन सेमा सेमी । गोभी बेर गुड़ंबा प्रेमी ॥ सोंठि अर्कनानाहु छालिया । धिया नूनचा आक-मूलिया ॥ अमरूदी कचरी कमरखदा । इमली अमलतास अदरखदा ॥ गाजर रँडखरबुजा कसेरू । गंडेरी कंकड़ के ढेरू ॥ खन्त आमला तूतु गिलोरी । अमराचारी अमित कमोरी ॥ जामुन दाख मुनक्का छुवारा । किशमिस चटनी करिल अपारा ॥ सोंठिक मिर्चिक जीरिक नाना । हींगिक लौंगि इलाचिक आना ॥ पोदीनिक अजमोदिक न्यारा । जावित्रिक जाफलिक अपारा ॥ अपरहु अमित अचार सुहाये । मिष्टिक नोंनिक रुक्मि सृजाये ॥ दोहा ॥ कहत शम्भु सुन भामि-नी, अब ऋतु फलके भेद ॥ जिमि नृपसुत संग्रह करे, खर्च दाम श्रम खेद ॥ १ ॥ चौपाई ॥ सुनहु उमा निज वशकर चेतू । फल फलैरिके कछु सङ्केतू ॥ भूमिजम्बुका मिष्ट सिंघारा । कर्कटि

१-नारंगी ।

विषवासालुबुखारा ॥ दन्तेशठहु सन्तरा बिजौरा । कर्कन्धू रसराज चँदौरा ॥ सेव आम अमरूद अनारौ । जामुनि कमरख केला न्यारौ ॥ मटरफली वर बिही फरेंदा । लीची बड़हल सोंधा सेंदा ॥ अनन्नास आड़ू खरबूजा । मौरफला भुट्टा तरबूजा ॥ मृदुल मकुइयां वनकरोंदरा । बेल्लि चिरौंजी फल चकोतरा ॥ नासपाति मिठमांस अमोले । फूट कंदुँकाङ्का रसघोले ॥ पनिहाले गुलाब जामनियां । हरफारेवाड़ि खजुल खिरनियां ॥ पिंड खजुर सहतूत अँजीरा । बिहिदाना लखवट गम्भीरा ॥ कुम्हड़े सरस सरीफा चारू । नरियल नीप सहित व्यवहारू ॥ दोहा ॥ रसवीर्यासद जन्तुफल, रोमाङ्का शूलाङ्कि[11] ॥ मिष्टमांसा[12] पितत्वचा[13], मृदुभञ्जिका[14] भृंगाङ्कि[15] ॥ १ ॥ हर ऋतुके प्रति देशते, फल बहु भांति बिसाय ॥ किये सुशोभित भवन महँ, समधी हेतु मँगाय ॥ २ ॥ झीने भीने इतर जे, सुमन सारसे सार ॥ रुक्मि नृपन हित संग्रहे, शुधे सुगन्ध अपार ॥ ३ ॥ (राग देश चारताल में) कवित्त ॥ गालिब गुलाब सो नायाब दइ दाब ताब आब आबदारसे निकारे इतरै नये । केवरा कदम्ब कचनार केतकी कुसुम कुन्ती कञ्ज कलँगा कनेर वासना लये ॥ मोतिया मही जुही निवारि मोगरा मरूअ मौरसिरी मालती ललन बास निर्मये । रेलपेल हेल मेल मेल मेल के चमेलि ठेल ठेलिके सभेल सोन भाजनों दये ॥ १ ॥ (राग नटनारायण चार

१-विषवसाला=खीरा । २-नींबू । ३-बेर । ४-गन्ना । ५-बेल । ६-अंगूर । ७-फालसे । ८-चिरौंजी फल । ९-गूलर । १०-कसेरू । ११-गाजर । १२-सहतूत । १३-खिन्नी । १४-बड़ा बेर । १५-सरदा ।

तालमें) कवित्त ॥ बेलाहू नवेला अलबेला अलबेला चारु चांदनी चुही चकोतरा निबू निवारिया । अम्बु नारँगी अनार हर्सिंगार चम्पा खस दोना दावदी पुदीनकी हिना गुढ़ारिया ॥ सेवती फिरंग गुलब्बु की दिनेशमुखी गुलाबांस रूसा गुल खैरा दुपहरिया । पियावास विष्णुकान्त आदिकौ सुभूर भूप ललन सृजाये शुभ अतर अपारिया ॥ २ ॥ चौपाई ॥ अनुपम कांचिक पात्र रँगीले । मणि मुक्ता नवनगन जड़ीले ॥ भाजन रजत कञ्चनी रूरे । चित्र विचित्र बिसाय प्रपूरे ॥ अमित कमोरिन तैल सुगन्धित । बेला चारु चमेलि हिनामित ॥ मञ्जु मसालन सार प्रपूरिक । कर्रा केवरादि कर्पूरिक ॥ अंबु गुलाब केवरन शीशा । कोटिन धरे मँगाय धनीशा ॥ अबिर गुलाल कुङ्कमा रोरी । कस्तूरी केशरा कमोरी ॥ बहुविधि रङ्ग सुगङ्ग सुहाने । रुक्मि नृपन हित निज गृह आने ॥ अस श्रम भूमिकरै दिनराती । खान पान त्यज भा कृशगाती ॥ जहँ जहँ जे पदार्थ सुनपाये । ते ते विपुल बिसाय मँगाये ॥ [शिव उवाच] अब सुनु पात्रन ज्यहिजस सिरिजा । सो तुहि वरणि सुनाऊँ गिरिजा ॥ (रागिनी पूर्वी ताल तिवरा में) हरिगीत छन्द ॥ बलटुहा बटुआ कलस कलशा थाल हांडे अबखुरे । डेगैं गँगाल परात तसले घंटि आदिक काटुरे ॥ थाली रकेबि गिलास चप्पन कलछि और कढ़ाइयां । चिमटे सँड़सियां चलनियां गङ्गाजलीउ कटोरियां ॥ पँचपात्र परम पुनीत अचमनियां सँपटियां कोंपलीं । अर्घादि आरति धूपदानि बिचित्र सुठि सांचेढलीं ॥

मखमली गौमुखियां सुरङ्ग बिरङ्गि बहु रत्नन चुनी । कल कार्चोबी आसना बसनौ ललन उत्तमउनी ॥ १ ॥ (राग सोरठ चारतालमें) कवित्त ॥ चांगिले चँगेरदान पावनसे पानदान इन्तहा न इत्रदान खासदान खासेसे । यूथ युजदानके गिलौरिदान पीकदान हाटकी हुलासदान बे प्रमान बांचेसे ॥ नीक नीक निम्कदान शमेदान सुःखदान कञ्चनी कटोरदान दीसवान आछेसे । मन्दिर मैदान ठये भीष्मक ललन नये पायेदान मुकुरी सिंगारदान राशेसे ॥ १ ॥ (राग मल्हार त्रैतालमें) नाराच छन्द ॥ सुचौघड़े बड़े बड़े मढ़े जड़े रँगीन सो । सुगङ्ग यामुनी गुलाबपाशिहू नवीन सो ॥ सुझारियां झरोखदार झाँझरीं झलीं झरीं । मणी कणी सुहीर पन्नगीहु माणिकी खरीं ॥ नईं नईं निकोर नाल नाल नालकीं नईं । सुपालकी त्रिपालकी सुचालिकीं छटा छईं ॥ पुनीत पीनसैं पुरन्दरौ न प्राप्त प्राप्तसो । सुडौल सुःखपाल सोन रूप रत्न व्याप्त सो ॥ जिते चँदोवये विचित्र चित्रकारिया रचे । तमङ्क तामझाम धूम धामके भले भले ॥ समान सावधानि से बिछायतैं वरौ वरौ । रुकूम राणधीर बीर मोल लै धरे घरौ ॥ सु शुभ्र शामयान हूँ सुनील पील नानिकी । कनात पांति जाति पाति नात हेत आनिकी ॥ तँबूह व्यूह ताड़से उतंगता गहे महा । विचित्र वस्त्र मामुली कलाबतूनियां अहा ॥ प्रबल्लपाल पुंज मंजु मंजु भा सुहावने । सुछन्द डेरयान के बहूत भांति भावने । खरे खरे सुखेम हू सुखेमहू पटौ मढ़े । छटी छटी सु छौलदा-

रियान वस्त्र भा बड़े ॥ दरीं दराज दारुणी बुनी रँगीन धागनों । चमंक चारु चांदिनी सि चाँदनी प्रभागनों ॥ गुलैगुले गलीच ऊनियां च सूतिया बहू । दरीचियां दला दिपैं सुरेशमी रँगीनहू ॥ महा अमोल मखतुली सुमस्नदैं विराजती । तकीय ताशबादलान कामके भले अती ॥ तमाश हू सि तोशकैं तहैं तहैं धरावतो । बिछायतैं बिशाल बेलि बूँटि सों छपावतो ॥ मशेरियां महीन रेशमी सुकापड़ों सुहैं । पलङ्गपोश पावने भनें न जात जी मुहैं ॥ पुरे पुनीत पारदे नगों जड़े जगा मगें । जमासु यूथ जाजमैं अतीहि भावती लगें ॥ पलङ्ग पञ्चरत्नि हाटकी हजार रूपके । बुने निवार तागनौं कलाबतू अनूप के ॥ सु चौकियां पषाण सिंहमर्मरी मुसाहकी । सुचन्दनी गयन्द दन्त सोन चांदि चाहकी ॥ करोर कुर्सियां अनेक धातुकी ढलीं भलीं । घड़ौंचियां घनी घनी बनी ठनी सुआवलीं ॥ जिते समान बेप्रमान ठाटबाट ठाटकैं । ललन रखे रुकूमने घेरै सुपाट पाटकैं ॥१॥ (अथ आभूषण बर्णन) चौपाई ॥ छहर छटाधर छपका छाजें । बन्दीं बिज्जुल सी द्युति गाजें ॥ बेना बहु बिशाल सुबरनियां । टीका नीका जड़ित नगनियां ॥ कटियां कुन्दनीय रत्नारीं । पटियां परम पुनीत प्रचारीं ॥ शीश फूल सोहैं नइ भाते । अपनि प्रभाते आप दिपाते ॥ किंचित कमनहिं घटा छटाते । बेनी पान बने रँग राते ॥ झिल मिलाहिं झूमड़ झिलमिल से । दिपैं दीप इमि नगगण बिलसे ॥ पात पन्नगी मुक्तन गूँधे । हेमी हीर जड़ाउन रूँधे ॥ बाली

बहु चालीकी आली । सादा सोन जड़ी नग झाली ॥ छिचकनियां मनियां द्युति भासे । शुधे सोनवाला बाला से ॥ झाले झले ढले ढलाउके । जड़े जड़ाउ अनेक भाउके ॥ दोहा ॥ गढ़े सुनारन सोवरण, वर्ण वर्ण विधि ठानु ॥ कर्णफूल भा भावनी, दाबति दामिनि भानु ॥ १ ॥ चौपाई ॥ झुमकनु हेम घूंघरू झूमैं । बैन मैन दुन्दुभी पुरूमैं ॥ बुन्दे वर बहु दामन वाले । जर-गरे[1] सृजये नगन निराले ॥ महा मनोहर मञ्जु मछलियां । मीनावर्ति मणि कणि जड़ धरियाँ ॥ खौर सुढार बाल शशि रेखा । धौं चञ्चला कला बिनु लखा ॥ मकराकृत कुण्डल अनमोला । मुक्ता गजमणि दिपति अतोला ॥ तीव्र तेज तरकियां थिरातीं । मञ्जु मुरकियां नइ नइ भातीं ॥ कील कील कीलित गजमुक्ता । पना चुनी बिरोज वर युक्ता ॥ अथ नथ गोल सुडौल सुहाईं । बेशर बेशकीमती भाईं ॥ लटकन ललित सजावट चोखी । विरचि बुलाकें छटा अनोखी ॥ मुहैं मोरनिनकी सुघराईं । तादृश मनहुँ मयूरिन थाईं ॥ दोहा ॥ गोफ गजब कारीगरी, अजब सुढरित बनाउ ॥ ठहुँ ठहुँ दीपैं तड़ित जिमि, झलकत रत्न जड़ाउ ॥१॥ कुटिला कुटिल जुटिल जुटा, भरे पुरे भा माहि ॥ खरे खरे हाटक गढ़े, जड़े नगासुप्रथाहि ॥ २ ॥ सोरठा ॥ गुञ्ज पुञ्ज गुलुबन्द, कण्ठा कोटिक कण्ठिका ॥ जुग्नु भांतिका चन्द, दीपित चित्र विचित्र नग ॥ १ ॥ दोहा ॥ सतचित

[1] नग जड़नेवाले ।

आनँद एक रस, तोड़ा कबहुँ न होय ॥ सोइ जँजीर शुभ कृति सृजीं, हित रुक्मिणि हरि जोय ॥ ३ ॥ चौपाई । दुलरिं गङ्ग यमुनी छवि लेखीं । तिलरिं त्रिवेणी सम फब पेखीं ॥ चौलरिं श्रुती कृती अनुमानो । कणि प्रस्तार पुराण बखानो ॥ पचलरिं पञ्चबाण द्युति धारी । लखे न तृया होय उरकारी ॥ छहलरिं विधि षट शास्त्र अनूपा । लसैं कड़ी व्याख्यानिक रूपा ॥ सत लरिं सातहु बार बरेरी । अपन अपन छवि छई करेरी ॥ वसुलरिं अष्टसिद्धि भा नीपी । निज निज कलन सरस छवि दीपी ॥ नव ग्रह बरीं नौलरीं जानहु । धहुँ बकशीश नवहु निधि मानहु ॥ सोइ द्युति कला अनोखीं चोखी । लखे हर्ष लें शोचन शोखी ॥ दोहा ॥ दशलरियाँ दश दिशिप्रभा, मनहुँ करैं विख्याति । रुद्रलरीं रुद्राक्षवत्, द्वादश रवि वरदाति ॥ १ ॥ चौपाई ॥ बुलय बुलय कारीगर जरगर । बनवाये वर भूषण परिकर ॥ तोड़े सौ सौ तोड़े लागे । कठुला कल कल कान्ति सुजागे ॥ चारु चन्दनी हारसोनई । मञ्जु मोरनी हार कंघई ॥ जवकृति हार सुभग अनमोली । दीर्घ विपुल बहु मञ्जु मभोली ॥ उजर पियरगङ्गा यमुनीसे । दानहार मनभाते ही से ॥ दहक दहक धुकधुकी दमङ्कैं । मीनाकारी रत्न चमङ्कैं ॥ तमक तबीज तीव्र रन्नारे । प्रभा प्रपूर्णिक परम हि प्यारे ॥ निज निज मूल्य अमोल जनाते । दर्शहिं उत्तम बिज्जुप्रभाते ॥ दोहा ॥ नई निराली नाँदिली, नोखे चोखे रङ्ग ॥ सुहैं सुन्हैले काम पुहिं, रेशमि डोर सुअङ्ग ॥ १ ॥ बनी ठनी बहु

अनगिनी, चुनी चुनी माणि लाल ॥ बर्ण बर्ण विवि बाँकुरी, सृजीं मनोहर माल ॥ २ ॥ (रागिनी झँझौटी रूपक तालमें) हरिगीत छन्द ॥ विद्रुमी माल विशाल मोती माल महा मनोहरम् । माला मृदङ्गी रुद्रअक्षी मुहनमाल महावरम् ॥ बनन वनजाकार विधिवत गुँधन पुहन सुशोभितम् । धनियई कमरखि माल सृजी सुचाल ढाल ढली परम् ॥ हीरा पना पुखराज माणिक नीलमणी अमोलरी । विद्रुम फिरोजा लहसुनी मुक्कई नव रतनी खरी ॥ दोलरा तिलरा चौलरा पँचलरा षटलर सतलरा । बढ़ी बहूत विशाल बाँकी बनन चुनन बराबरा ॥ चित भावनी चिकनी चुनीहि चुनी चुनी च चिती चही । चाँगली चम्पाकलीं चपलासे चमङ्कन चबही ॥ कचकरीं कल कल तीख झल झल हासुलीं हैकल अलल । उरबसीं उग्र अनन्त सकरीं सोनई हों झलाझल ॥ तैंतीं लसैतीं तीव्र छवि फब कण्ठसिरीं विचित्र हीं । गहिने गरे गरके बरे बहु विधी ललन अनूप हीं ॥ सूकरी सीपी दरी करी भुजङ्ग माही मुक्कई । षट षट सुमुक्का मेल वैजन्ती हु माला निर्मई ॥ वनमाल बहु बाना बनाय चुनाय चाउनसों रजा । करपूर भूर डबान में राखीं सो सन्दूकन सजा ॥ १ ॥ चौपाई ॥ जोशन जगमग ज्योति प्रकाशी । नवरत्नावलि भल छविराशी ॥ चौकी चारु बजूबँद बाँके । भूर सुभुजबँद जायँ न आँके ॥ अङ्गद अजब अनन्त अनूपे । इक्के तिक्ले शोभनु तूपे ॥ नूतन

कृत नौनगे निराले। टड़ियां ठोस ठठीं बहुताले॥ वृन्द बहूंटे बंगलियां वर। जांगीरियां जगा-मग सुन्दर॥ नौगिरही नवरीतिनु साजीं। बांक बांकुरीं बहु छबि छाजीं॥ मञ्जु मथानी महा पुनीता। तितरपङ्खियां गढ़ीं सुरीता॥ तूल तिलकड़ी के दुतियाले। छन्न सुभिन्न भिन्न परिकाले॥ विविध भांति तोड़ा करकञ्जू। जड़ित जड़ाउ रत्न अति मञ्जू॥ भासित भाह भूर तिन पाहीं। नेकहु दृष्टि ठहरावत नाहीं॥ दोहा॥ पुञ्ज पुनीत पछेलियन, कँगनी कँगन अपूर्व॥ कञ्चनि मूँगिक धनियई, पहुँचिनु शुभ कृति पूर्व॥ १॥ चौपाई॥ मरदानी मनमानी सोहैं। चुहेदती चितचोरनि जोहैं॥ बांके कड़े कोटि कृति कारक। नाक सिंहदहँ सुभग प्रचारक॥ हीर तराश नकासी[1] वारी। दामसंकाटीं चूरीं न्यारी॥ हाटकिया हथफूल गढ़ाऊ। रत्न मुकुर आरसीं जड़ाऊ॥ अँगुरिन अँगुरिनकी मुँदरीहू। नगयुति गूँठीं कुँदन करीहू॥ छटे छटाके छला छलैं मन। पुरीं पोरियां जड़ीं नगनगन॥ कारीगरी करीं करधनियां। चांदी सुवरण वर विधि बनियां॥ क्षुद्रघण्टिका बनन खरीसी। दिपहिं दीपसी नगन जड़ीसी॥ द्युति काढ़ीं बाढ़ीं छवि गाढ़ीं। मनु तड़िताभा तिनपै माढ़ीं॥ चखु चकात थिरात न दृष्टी। चमत्कारकी हो इमि वृष्टी॥ सोरठा॥ पावन पाउँन काहिं, कड़े छड़े सुतकड़ेकल॥ कढ़े चित्र तिनमाहिं, अद्भुत अद्भुत भांति भल॥ १॥

[1] १—एक प्रकारकी नकाशी का नाम है।

चौपाई॥ झांझ झांझरींदार झमकनी। मञ्जु मरहटी चर्वे चमकनी॥ अति सुलच्छने लछा लछीले। अद्भुत अनुपम छविन छबीले॥ पायजेब दें जेब अनूठी। पुञ्ज पहूंटे कथन अभूंठी॥ सकरे सुभग छागलैं छापैं। पगन पुनीत पलनियां थापैं॥ बोर विशाल अनवटा न्यारे। मटर महावर बिछुवे भारे॥ गंज गूजरी चारु चुटकियां। तुरियां छड़ियां कड़ियां नहियां॥ बल भलकल पकवान पचँगले। अछी लछी पग छले चांगले॥ जेहर तेहर नव नव जाती। जिनकी वर विधि कही न जाती॥ बराबरा बहु प्रभामन्दरा। वित्त लगायउ वित्त बाहरा॥ औरहु नखशिख अमितजे-वरा। भीष्मक ललन सृजायउ सुघरा॥ दोहा॥ शम्भु कहत गिरिजा सुनहु, बसन विधान अनेक॥ रुक्मिणि ब्याह सुकाज हित, ज्योंनृप सृज सविवेक॥१॥ चौपाई॥ पगड़ी शमला ताज पुनीता। चीरा चारु भँदील सुरीता॥ टोपी रोपीं नगन निरालीं। टोप ओप मणिनीलमझालीं॥ महिंगे मोलन केर मुरैंठा। कल कलँगी कटि फैंटा ऐंठा॥ नीमा नेति यूथ जामाके। जरी तासबादला पटाके॥ वृन्द बगल बन्दीं वर न्यारीं। अचकन अजब कटाव सँवारीं॥ कढ़ीं कढ़ाउ मञ्जु मिरजैयां। अबा अनूठ अँगा अधिकैयां॥ टँके सलमकी बँद जिन्हमाहीं। छबि चुचुआतिं सु-हाति अथाहीं॥ चोगा चित्र विचित्रहि भारे। कुर्तनु काम कलित रुनारे॥ चपकन चितचोरनी फतोई। सदरी सुभग कोट पतलोई॥ युगल परदई वस्त्रहु न्यारे। टँके यथोचित बटन अपारे॥

दोहा ॥ सीपी चीनी पीतली, लोह काष्ठ कृत बेति ॥ सूती कांचिक सनमिटी, ऊनि रेशमी नेति ॥ १ ॥ रबड़ सींगई तारिया, कमें चाम पाषान ॥ पोत यथोचित दन्तिगज, टीनिक भिन्न विधान ॥ चौपाई ॥ चांदी चिते सोनई सोहैं । मुँगा मुक्कई हीर प्रमोहैं ॥ बटन बड़े बढ़िया रत्नारे । ललित लसैं जंजीरन तारे ॥ दुहर दराज डुपट्टा सुघरे । टँके किनार छपे रँग सुघरे ॥ कढ़े झालरैं मढ़े जड़े नग । पड़े बेल बूटे जालिउमग ॥ चिकन चादरे चुने चहीते । रचे रुमाल रसाल रुचीते ॥ धूम धमाकनवालीं धोती । घने घिरील घुटन्ना कोती ॥ पञ्जाबी पैजामा आंटे । पड़े इजारबन्द छवि छांटे ॥ गुलूबन्द गम्भीर गहिगहे । दाढ़ी मुँछबँधनाहु लहिलहे ॥ ऊनी पट बहु शाल दुशाले । पुञ्ज पंबई परम रसाले ॥ अमित अस्तरी भल अलवाने । धुस्सा लोई बहु रँग साने ॥ दोहा ॥ जोड़ जनाने जगमगे, साज सजाये नेति ॥ ऊनी रेशमि टसरकी, ज़रदोज़िक पट केति ॥ १ ॥ चौपाई ॥ लसैं बादला घोटा घूटे । सँदला कँदलाकारी बूटे ॥ सलमा सुहैं सितारन जूटे । कलाबतू झालरियन छूटे ॥ किरनकलित रवि किरण प्रभासी । झिल मिल झिपैं चन्द्र चपलासी ॥ कैतूनी गजरइ चुटकीले । गुखरू गँसे सुडोर ढँगीले ॥ गोटा पठा पुरे धनुषोंहीं । जड़े माणिकन बहु नगसों हीं ॥ लहँगे घेरघिराले लहते । काम करे ज्यहिमें जस चहते ॥ होत हरे हिय हेरत जिनको । चोरि धरैं चित रँग जातिन को ॥ डुपटा डौल सुडौलिक भूरे । काम कार्चोबिया

सुपूरे ॥ कुर्ती कशल कटाउ सुहेलीं । कञ्चुकियां बहुमेल सुमेलीं ॥ सारीं जरतारीं सारींसीं । ओढ़नियां औरहु न्यारीं सीं ॥ सोरठा ॥ रेशमीन रङ्गीन, जाल बेल बूँटिक बिपुल ॥ चौखनिं चारु नवीन, बसन व्यसनवत बनन ठहिं ॥ १ ॥ चौपाई ॥ झँगुलीं झार अझीनी झीनी । किञ्च न क्यहुकी आभाहीनी ॥ झगा तगा प्रति तगा सुहेले । रङ्ग रूप जिनकेर नवेले ॥ शोभित सुभग सुढंग सलूका । जड़े नगन द्युति उठैं भभूका ॥ पीतांबर रेशमी नवीने । मुकटा मञ्जु महारँग भीने ॥ कोरा कुल कल रंगन माते । उनी रेशमी बहु पट भाते ॥ सुथरी सुत्थन चुन्नी चारू । चूनरि चादरि अमितप्रकारू ॥ थैली बटुआ पुरे पिटारन । रंग बिरंग अमुल अलगारन ॥ तियल पियल परिपूरण राचे । तेवर बेवर को कहि बाचे ॥ समधि समधिनी नाति बराती । जाति पांति सम्बन्धि सँगाती ॥ सबहि योग्य सब वस्त्र बनाये । नाइ नेगियन हित बिन थाये ॥ दोहा ॥ थोक थान थाने थलहि, बहु प्रकरण अवरेज ॥ नेग योग समधीन हित, वर सुबराति दहेज ॥ १ ॥ दोवई छन्द ॥ आवरमा अलपाकाऽडा अतलस्य अमोअक आदि । आन अछे उन्नावि ऊदई अति उत्तम अनवादि ॥ १ ॥ काशमिरा कुलटी किरमीच कमीच कमखिहु कार । काटरई ककरेजि काहिया कुतनू कल कृति झार ॥ २ ॥ काम करे कमुदानिन के कढ़ कारचुबी कपड़ाहु । खूब खरे खिमखाफ खापग खुब खासहु खमसाहु ॥ ३ ॥ (रागिनी भूपाली

इकताला में) मनहरण कवित्त ॥ गंज गुलबदन गुलाब गजरानु गरे गिमटी गिरंट गजि गाढ़ा गलतानके । चूनरी चटापटहु चूनिया चमंकवत चूरिया चिकन चुने चट्टा चारखानके ॥ छहरैं छटा सुछई छांट छांट छालटीन छाजते छपे छपाउ बृन्द छीट थान के । जामदानियां जुलूसदार जीन जालीयूथ जरबाफ्तिया ललन जमक जटानके ॥ १ ॥ (राग कल्याण शूल तालमें) मनहरण कवित्त ॥ टीप टीप टूल टाल टापटी टसरि ठठू डोरिया सुमाधो राधा नगरी ढखा पटा । तासबादला तमाम तूसिया तयूसि तूसी तामड़ा तुलीं तँजेब तीव्रसी तटा तटा ॥ धारीं धूम धामी धाम धूपछांह धानी धज धोतरीं धरीं धमंके धोईं धुबिया घटा । नैनसुख न्यारे नेति नैनू औ नखूना नृप ललन नगीनानीक नीला निर्मये पटा ॥ २ ॥ (राग एमन फाका तालमें) सवैया ॥ दीर्घ द्युती दरियाउ दिली दरियाइ दरेश दुफर्दहु दामी । पीकि पिलाम पुरे परमट्टहु पापुलयेन पुनीत पयामी ॥ फर्द फरासिसि फूलवरी फहरैं फब फूललयेन फवामी । बूंद बुकों बिलरा ललनेश बनात बनारसि लाल ललामी ॥ ३ ॥ (राग श्यामकल्याण शूल तालमें) सवैया ॥ शुभ्र शुहा सिमटी सुरखा शुभ सासनलेट सुदामनवारी । शोध सुन्हैलह सर्वति सब्जहु सांठ सलीतहु स्यालु सम्हारी ॥ शाल सुसंगि सुडोल सबी सुठि सूसि सिकीयहु सांच सिहारी । साज सजे ललना सुख सों सब साटन सुन्दर सोहत सारी ॥ ४ ॥ (राग भैरव चार

तालमें) मनहरण कवित्त ॥ मोमिया मरीना मञ्जु माठहू पिलाम दल मलमल महीन मारकीन सो मनोहरी । माशी औ मलीदा मूल मभिलैन मंदराजि मुटरू मख्तूल मोतिया महा अमोलरी ॥ मैनाफल माधोनगरी सुमीसुरू मसीना लीला लम्दराजिया लहरिया लुंगीलरी । लाखों लंकलाट लाट ललन सु छांटि छांटि राखे भौन पाट पाट बसना अमन्दरी ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ अद्दी रेशमि [illegible] छा पतनी । कशमीरा किलाट सीठनी ॥ बाबरलेट मुसज्जर न्यारे । मिलटिन कशमीरा हु अपारे ॥ टुइट कशमिरा गुलशन लेटा । कैंषल्लेटहु बाबरलेटा ॥ सैनू ग्राण्डील बहु जाती । मक्खी बूँटी परम सुहाती ॥ खद्दा जरदा क्राटन सर्जहु । अंगोला पलेन बड़अर्जेहु ॥ गाच फलाल्यन कमरखि न्यारी । नाट फलाल्यन दुवेज भारी ॥ किरकिट फलालैन कालीको ॥ छाल ग्रंट परिकर सिमटीको ॥ गुलदाउदी अरस लैलनको । गिरलाग्योपलेन जीननको ॥ मक्खन जीन जीनसाटनके । सुन्दरबेल पूप अनगनके ॥ दिलपसंद बहुदामनवाले । नईनवाबी रंग निराले ॥ सोरठा ॥ बिदरि तौलिया कॉंप, दस्ताना झारन मुजा ॥ यहिविधि अमित अनाप, बिसइधरे पट रुक्मिगृह ॥ १ ॥ दोहा ॥ सकल समिग्री रुक्मि ने, बहु विधि युतउत्साह ॥ खरच अमित धन सृजि धरीं , गृह हित भगिनि विवाह ॥ १ ॥ चौपाई ॥ बहु बजंतरी लिये बुलाई । विपुल वाद्यवर रवध्वनि छाई ॥ उमँग उछाह

प्रमोद समाई ॥ नौबत निज गृहद्वार धराई ॥ वंदी विरद उचारहिं न्यारी । बजैं बधावे मंगलकारी ॥ नटी नटा बहु नृत्य रचावें । वेश्या विमल विहार जतावें ॥ ढाढ़ी डोम डफाली वंशा । नृप द्वारे आभनैं प्रशंसा ॥ बाजीगर बहु हुनर जनैया । बहुरूपी परिहासक छैया ॥ नाई नेगी याचकजाती । देंय हाजरी सब दिनराती ॥ दासीदास अथाह कमेरे । दास्यकर्म में रहैं घनेरे ॥ सेवाटहल महलकी करता । अनप्रमाण चाकर जलभरता ॥ गण गुलाम नइ भरती कीन्हे । ते सब दृग दृष्टी रहँ चीन्हे ॥ दोहा ॥ नात नतेरन समधि हित , अमित वरस्थल रूप ॥ विकट बनाव सजावटन , साजे साज अनूप ॥ १ ॥ चौपाई ॥ कारीगरिक सुकाम निराले । ललित प्रलेपन रँग ढँगवाले ॥ धवल धवल भल अटा अटारीं । कोठा कलित ललित तिदवारीं ॥ कहुँ यकदरा दुदरा दिपाते । कहुँ चौदरा अनूप सुहाते ॥ पचदरियाँ दलान सुप्रथाके । सृजित अड़ाने पुञ्जप्रभाके ॥ लगे अष्टधाती वर जँगला । छहरैं छटा बने बहु बँगला ॥ नइ नइ छवन छविन छहरीली । पटन पटनु बहु रङ्ग रँगीली ॥ भिन्न भिन्न शौचालय थाने । मर्दाने गृह पृथक् जनाने ॥ ठहुँ ठहुँ न्हानालय हिम्मामी । नर नाही न्यारे वर वामी ॥ पूजन निलय पृथक् पुण्यालय । भण्डारी कुठार मल्हालय ॥ बालबोध विद्यालय न्यारे । परिकर पाकागार प्रचारे ॥ दोहा ॥ तोसाखाना अनुप अति, कहूँ खजानागार ॥ सैन्यालय रसकेलि गृह, सुघर सुशोभित न्यार ॥ १ ॥

चौपाई ॥ मोती शीशमहल नृत्यालय । गन्धर्वस्थल बहुवाद्यालय ॥ योधालयन अखाड़े आँटे । पलटन पुलिसभौन छविछाँटे ॥ भृत्यालय अनेक विधि राचे । सुभग हाजिरी भौन अकाचे ॥ अजब मालखाननैं बनावट । बनी कचहरीं सुभग सजावट ॥ दल दिवानखानेहु चहुँओरा । विश्वकर्म्म कृतमनु चितचोरा ॥ पान सुवासहु सन्मानाला । सम्मति सदन इकान्त विशाला ॥ कहुँ अहेरआ-लय इमि जोहैं । झरना झरैं शैल छवि दोहैं ॥ झील झावरा कृत्रिमसरिता । सुहैं सघन तरु बेलि प्रसरिता ॥ यूथ जवाहिरखानेसोहैं । जिन्हैं देखि मुनि मानुष मोहैं ॥ सुमन वाटिका बाग बगीचीं । कहुँ कहुँ वापी सरहद खींचीं ॥ दोहा ॥ चहुँदिशि कूप अनूपतट, अंबुथला कलघाट ॥ बहु बैठकी चबूतरा, सुहैं सुहावनि बाट ॥ १ ॥ चौपाई ॥ बिहद बालदे घर घुड़सारी । हाथीखाने अजब बहारी ॥ गोशाला अनगणित सुजेवा । गाड़ीखाने पुरित अथेवा ॥ खगनिलयादिक सो चित-चोरन । चहकैं पच्ची वृन्द करोरन ॥ अस अस भवन अनेक प्रकारी । कांचिक साजन सज छवि-कारी ॥ चित्रित चहुँ ढिग चित्र विचित्रा । छत्रधारि अवतारन चित्रा ॥ नरांयाम सम मुकुर प्रपूरित । दर दर दिपैं यवनिका स्फुरित ॥ जो बिलास सुखकेर उपायन । कीन्ह सुशोभित सब बिधि आयन ॥ कुल सम्बन्धी सकल बुलाये । ह्वै प्रसन्न सब कुणिडन आये ॥ टिकय दिये प्रति

१-नहर । २-आदम कद । ३ चिक-परदा । ४-गृह-मकान ।

भवन बिहारे। यथा योग्य नृप ते सत्कारे ॥ धूमधाम अस कुण्डिन छाई। कान धरे नहिं परे सुनाई ॥ इति श्री रुक्मिणीपाणिग्रहणे वैवाहिकोपाख्याने नानोपायनसंग्रहवर्णनो नाम द्वाविंशः सर्गः ॥ २२ ॥

(शुक उवाच) दोहा ॥ अब चँदेरि चर्चा सुनहु, कहत उमासों शम्भु ॥ कुण्डिन कहँ शिशुपाल जिमि, गमन करत आरम्भु ॥ १ ॥ भोरहि उठ शिशुपाल को, भावज निकट बुलाय ॥ लै यकान्त में कहत भइ, सीख उचित समझाय ॥ २ ॥ (भ्रातृजायोवाच) * चौपाई ॥ देवर कह दुर्मति भइ तोरी। जान कहत कुण्डिन पुर ओरी ॥ बुद्धिवान है होत नदाना। बैठे बैठे कह मन आना ॥ को शठ तुहिं अस दीन्ह सिखावन ॥ समुझ्यो नैक न ऊँच नीच मन ॥ वह रुक्मिणि अर्द्धाङ्गि हरी की। हरि अनुरागिनि मूर्ती श्रीकी ॥ सो तैं ताहि विवाहन चाहै। यह अनुचित बहुतिक तुहिका है ॥ यासों तोहिं बुलाय इकान्ती। अपन जान तोसों यह भान्ती ॥ जबसों कलसों सुनी ये बाता। तैं देवर कुण्डिनको जाता ॥ मिलो न कोइ अवकाश कहन को।

* कालञ्जरस्य कन्या या नाम्ना चैव सुमालिनी ॥ दन्तवक्रस्य भार्या सा कृष्णभक्तिरता सदा ॥ १ ॥ तयोक्तम् ॥ भोराजन् त्वं पूर्णतमम् परमोत्कृष्टम् श्रीकृष्णस्य माहात्म्यं न जानासि किं यं सर्वदेवा नमन्ति ॥ इत्युक्तवती ॥ अर्थ–सदैव श्रीकृष्णभक्ति में तत्पर कालञ्जर की पुत्री और दन्तवक्रकी सुमालिनी नामवाली स्त्री है। उसने शिशुपालसे कहा हे राजन्! तुम पूर्ण, परमउत्कृष्ट, श्रीकृष्णके माहात्म्यको क्या नहीं जानते हो? जिनको कि सब देवता नमस्कार करते हैं। यह कहती भई ॥

नहिं हौं देति न चढ़न लगनको ॥ यासों अब तुहि बरज कहतहौं। तेरो भलो हमेश चहत हौं ॥ तेरे यह बलको न बिवाहा। और करौ चहि जहँ मन माहा ॥ (रागिनी बरुआ में) जलगर्जल छन्द अर्थात् ग़ज़ल ॥ करे श्याम की सरवर न तू लला। तुझे याद हो या न याद हो ॥ गया भूल तू सारा वो माजरा। तुझे याद हो या न याद हो ॥ १ ॥ तनके छूते हि श्यामके सुन भला। तेरा नाशाथा यक हग दो भुजा ॥ तबतो कुछ भी न उनका तू करसका। तुझे याद हो या न याद हो ॥ २ ॥ गइ छल कर बिनाशी सो पूतना। कागा तृणा बकासुर अघाहना ॥ मारा मथुरामें जा करके कंस था। तुझे याद हो या न याद हो ॥ ३ ॥ था ये उनका हि काम करालिया। जो गोबर्द्धन को करपै उठालिया ॥ तब तो चारा न इन्द्रका कुछ चला। तुझे याद हो या न याद हो ॥ ४ ॥ जब के बांधा यशोदा ने ऊखला। यमलाअर्जुन का हरिने किया भला ॥ ये तो उनके हि बलका है जलजला। तुझे याद हो या न याद हो ॥ ५ ॥ जरासन्ध तो सत्रा समय लड़ा। जीता कालयवन जो बली बड़ा ॥ ये तो ज़ाहिर जगत में जरा जश। तुझे याद हो या न याद हो ॥ ६ ॥ तू जो औरों के बलपेहै फूलता। ये नादानी न कर तू है भूलता ॥ जिनके बलपे तू भूला वो चीज़ क्या। तुझे याद हो या न याद हो ॥७॥ जो तू चाहे ललन अपना है भला। तबतो लेके बरात न कुण्डिन को जा॥

मेरा मानले देवर ये इतना कहा। तुझे याद हो या न याद हो ॥ ८ ॥ [शिशुपाल उवाच] (राग देश त्रैतालमें) पद ॥ अरी क्या बकै भौज बैना। मेरे बलको तू जानै ना ॥ (अन्तरा) वह गँवार ग्वालाक्यहिलायक मम संग नृपसैना ॥ १ ॥ छिनमें जीत रुक्मिणी ब्याहूं तैं भय मानै ना ॥ २ ॥ मम प्रताप जाहिर जगमें कह वाहि विदित है ना ॥ ३ ॥ सुनहि कदापि गमन कुण्डिन मम कबहुँ वो आवै ना ॥ ४ ॥ जानत वह हमका भल रीतिन तैं कछु सकुचै ना ॥ ५ ॥ नन्दललन कछु विघ्न करै तौ जियत न जा ऐना ॥ ६ ॥ [भ्रातृजायोवाच] (रागिनी झँझौटी त्रै तालमें) पद ॥ यह शठपन शिशुपाल लाल त्यज जिय गुमान मत धारैरे। (अन्तरा) गर्व न रह्यो देखु रावणको ज्यहिबल वंश अपारैरे ॥ भयो विनाश हाथ रघुवरके विदित सर्व संसारैरे ॥ १ ॥ दुर्योधन अभिमान्यों हरिसों त्याग कीन्ह वहि वारैरे ॥ जाय विदुर आश्रम प्रभु राजे कीन्हों शाक अहारैरे ॥ २ ॥ वो प्रभु भक्ति भावरस माते तोर तो नातेदारैरे ॥ एतेहु पै नहिं चेतत तेरो है कछु बिगरनहारैरे ॥ ३ ॥ जो तैं रूपवती बहू चाहै मम पितु लघुसुता हैरे ॥ ता सँग तोहि बिवाहूँ लाल वह रुक्मिनि की उनिहारैरे ॥ ४ ॥ लिख पठऊँ बाबुलको पतियां मत कछु सोच विचारैरे ॥ ललन मानले सीख मोर यश यहिमें तोर प्रचारैरे ॥ ५ ॥ [शिशुपाल उवाच] (रागिनी काफी त्रै तालमें) पद ॥ तोरी गइ कह मति बौराय अरी। किन दियो तुहि भौज

डराय अरी ॥ (अन्तरा) जो मैं भुज बल सों अपनै ना। लाऊँ रुक्मिणि ब्याह घरै ना ॥ तौ धरिये नाम फिराय अरी ॥ १ ॥ तैं कछु मोहि न जानिय ऐसो। मनमाने चहि करूँ सो तैसो ॥ जगनृप मोर सहाय अरी ॥ २ ॥ नन्दललन तृण सम नहिं जानूं। शङ्का नहिं क्यहुकी उर आनूं ॥ तैं जानै न मोर सुभाय अरी ॥ ३ ॥ रुक्मिणि बरूँ डरूँ नहिं काऊ। चहि तन रहै प्राण चहिजाऊ ॥ यह प्रण कहूँ सुनाय अरी ॥ ४ ॥ [सुमालिन्युवाच] चौपाई ॥ वरण भांति हौं तुहि समझायो। तैं शिशुपाल न कछु चित लायो ॥ रिसपाकी भइ दुखित मलीना। हरिमाया हरिही आधीना ॥ रे देवर दुर्मति अन्याई। यह हठको फल अग्र जनाई ॥ जोतैं ना कर मल पछितावै। उलट रोय फिर घर नहिं आवै ॥ मोर कहन को फल जनि पावे। जो जग में पत तोर न जावे ॥ धन मद वैभव जो न नशावे। शेखी शान न धोय बहावे ॥ जो रुक्मिणि तुव हाथ न आवे। करे धरे कछु जो न बिसावे ॥ भल विधि तोर न होय खराबी। तौ फिर मोहिं न कहिये भाबी ॥ अपन जान तुहिं बहुत चिताई। तेरे चित नहिं एकहु आई ॥ है कोइ तोर शायतै खोटी। तबतो यह मन गहि हठि मोटी ॥ दोहा ॥ देखु अजहुँ जा मान प्रिय, मम सिख सुठि धरु ध्यान ॥ अपन ओरि लखु बावरे, गहु जनि मन अभिमान ॥ १ ॥ चौपाई ॥ अबहुँ नहीं कछु हानि दिखावे। प्रात भुलो गृह साँझै आवै ॥ वाको

नहिं कोउ देत बुराई । अन्त उपाजत जगत भलाई ॥ चूक बड़नत्यहु होत न शङ्का । शोच सुधार लेत मति बङ्का ॥ यहि को कछु विचार जनि कीजै । भ्रम अज्ञता ग्लानि तजि दीजै ॥ जो कछु कियो ताहि बिसरैये । मनमोहन सों चूक छमैये ॥ वह हरि वशीभूत भक्ती के । बिन दामहिं वश जनजक्तीके ॥ तैं जानत होगो महिपाला । ऋषि कौंडिन्य तपस्वी हाला ॥ त्यहि बनवास अवास समीपी । ही शिवसुत प्रतिमा छबि नीपी ॥ लै नित नव दूर्बा दल जेही । नेम प्रेम युत पूजहिं तेही ॥ यकदिन मुनितिय इमिअभिलाषी । स्वामि कहा यह कृत तुम भाषी ॥ ॥ दोहा ॥ कहुँ रीझत सुर दूबते, वृथा परिश्रम लेतु ॥ सुनि मुनि भामिनि बैन रति, भाव जचावन हेतु ॥ १ ॥ चौपाई ॥ दल दूर्बा उठाय मूरतते । दै त्रियसों कहि यह सूरतते ॥ अबहिं पुरन्दरपुरी सिधैये । मम वच शक्रहि जाय सुनैये ॥ यह दूर्बादल भर कर हेमा । दिजिय सुरेश वेगि निधि छेमा ॥ गहि पति आज्ञा मुनि तिय धाई । शीघ्र सुराधिप निकट हि आई ॥ कीन्ह समर्पण सुरपति दूर्बा । ताभर मांग्यो सोन अपूर्बा ॥ सुनि मुनिपत्नी कथन सलाजू । महाश्चर्य मान्यों सुरराजू ॥ उहि छिन कञ्चन किञ्च मँगावा । तखरि धारि दूर्बा हितु लावा ॥ त्यहि सम तुल्य न भयो बहोरी । और भँगै तुलयो बरजोरी ॥ तहुँन बराबर भाग दृढ़ानो । अपर अमित सोबर्णहि आनो ॥ तबहुँ न समता भई तासुकी । गुम गइ इन्द्रै होश हवासु की ॥ २४४

जितक सोनहो भौन खजानै । अखिल ठयो नहिं भयो समानै ॥ दोहा ॥ तबतो सकुच सुरेश निज, मित्र कुबेर बुलाय ॥ बरणि व्यवस्था अखिल विधि, कहि कछु करहु सहाय ॥ १ ॥ सोरठा ॥ सुन वच इन्द्र अजेश, भरि धनेश हामी चले ॥ जाय स्वर्ण कुल कोश, दूब सरिस नहिं कर सके ॥ १ ॥ चौपाई ॥ दोउ मन ग्लानि महान दृढ़ाई । उर आश्चर्य कीन्ह अधिकाई ॥ भेद न खुला न तुला तुलाई । अकुला डुला मनैमन ध्याई ॥ कै थिर चित्त सुरत हिय लाई । सुरत दिब्यदृष्टिते लखि सुरराई ॥ श्री मुनि पूर्ण प्रेमबल लेखा । पूरण भक्ति प्रभाव परेखा ॥ लज्जित ह्वै मुनि बरणि बड़ाई । ऋषि त्रिय सविधि पूजि शिरनाई ॥ धनपति धन्यवाद बहु दीन्हा । मुनि रतिको प्रणाम तिनकीन्हा ॥ धनि धनि श्री साधन कर साधन । धनि हरिभक्ति भक्त आराधन ॥ सुन सुरपति कुबेर कर बानी । भक्ति भावकी अगम कहानी ॥ मुनि भार्यहि भा ज्ञान गँभीरा । लै आज्ञा गइ निजपति तीरा ॥ गहि शरणागत मुनिवर केरी । भक्तिभाव कृतिजची घनेरी ॥ दोहा ॥ यासन देवर मानु मम, सुयश तोर अवदात ॥ नाथ नात रतिको निरखु, भा मद शक्र निपात ॥ चौपाई ॥ तिन प्रभुते तैंकर रिपुताई । को फल तुहि मिलिहै अन्याई ॥ ऊँच नीच अरु नीति अनीती । हानि लाभ यश कुयश फजीती ॥ धर्म्म

१—उज्ज्वल ।

अधर्म्म सुकर्म्म कुकर्मा। सर्वाचार विचारिक मर्म्मा ॥ शठता पन्थ सुजनता केरी। सौम्य सभ्यता रीति घनेरी॥ नीक अनीक सबै तुव जानी। है न ललन जो करत नदानी। ममा फुफेर भ्रात कर नाता। पुनि तैं लहुर ज्येष्ठ हरिभ्राता॥ भाइन भाइन बैर मलोना। तैं यह रूप रचै अनहोना॥ यह रँग रैनी नाहिं चढ़ैगो। हारि हरिय नहिं रँग उतरैगो॥ यह रँग रँगु जामें रँग बाढ़ै। दूसर रङ्ग न तापरचाढ़ै॥ यह फीके रँगपै मदमातो। वृथा फिरत तैं गाल बजातो॥ इति श्रीरुक्मिणीपाणिग्रहणेशिशुपालस्यभ्रातृभार्याशिक्षायांभक्तिभाववर्णनोनामत्रयोविंशःसर्गः॥ २३॥

[श्रीशुक उवाच] दोहा॥ शिशुपाला को भ्रातृ जो, दन्तवक्त्र त्यहि नारि॥ बहु शिच्यो मान्यों नहीं, उलटि रिसान्यों भारि *॥ चौपाई॥ सुनि अस भौज बैन रिसमातो। बरबरात उठि भा अकड़ातो॥ धाय आय बिच रङ्गन महिला। भूषण बागो सज्यो सुनहिला॥ नृपति चँदेरी

*श्लोकः॥ खलो मृगयते दोषान् गुणपूर्णेषु वस्तुषु॥ वनेपुष्पफलाकीर्णे पुरीषमिव शूकरः॥ १॥ अर्थ–चाहे सम्पूर्ण गुणसे भरी हुई कोईवस्तु होय तौ भी जो दुष्टजन मूर्ख हैं उसमें कुछ न कुछ दोष जरूरही लगाय देतेहैं जैसे वनमें फूल फल लगरहा होय शूकरजोहै वह वन का रहनेवाला भी है परन्तु वह विष्ठा ही की तारीफ करैगा तैसेही खलजन जोहैं वह पराये दोषही निहारा करते हैं भलाइयोंकी तरफ किंचित् नहीं देखते जैसे कोई किसी परिडत की कथा सुनने को गये और जाकर कहने लगे गुणी तो हैं परन्तु आवाज़ अच्छी नहीं है गये तो कथा सुनने और नारायण के गुणानुवाद जो परिडत के मुखसे कहे हुये उनको ही दोष लगाने लगे पुण्यकी कमाई करने गये और पापकी पोट लदायलाये इसीतरह खल शिशुपाल को सब कुछ भावज ने समझाया परन्तु उसने श्रीकृष्ण को दोषी और तुच्छही समझकर एक न माना॥

को सरताजा। कह्यो बजन्त्रिन बाजहिं बाजा॥ दासन बोलि कह्यो अस बाती। साजहिं पुरजन सकल बराती॥ जाय किङ्करन नृपन सुनावा। दमु आयसु सुनि भूपन भावा॥ निज निज वाहन अस्त्र शुधाये। अतिहि मनै मन सब हर्षाये॥ नाना विधिवत शुभग शृँगारा। सजन लगे सब भूपकुमारा॥ कोउ तन सजे सेवती बागे। सुर्ख संदली पहिरन लागे॥ कोइ तन जामें नीले पीले। मुक्केसी जरकसी रँगीले॥ नूतनरत्न जड़ाउ जड़ीले। दामिनिसे चौगुन भड़कीले॥ (रागिनी रामकली आड़ा चौताला में) कवित्त॥ ऊदेहु उन्नाबी आबदार ऊजरे अजीब अर्गजी अनोखेरँग चोखे से अपारसे। ललन गुलाबी गहगहे गन्दुमी गँभीर अलिसया अबीरी अमरूदी रँगदार से॥ कंजई कपूरी क्युलई कराल किर्मिचीय किस्मिसी कसीसी गेंदई सु गुलेनार से। चम्पई चुहीले रँग सोहत रँगीले से रसीले से छबीलेसे फबीले सौ प्रकारसे॥ १॥ चौपाई॥ यहि विधि भूप रूप बहु साजे। सोहैं सुन्दर सुभग समाजे॥ मागधपति अति ही बलवाना। जरासन्ध दल कीन्ह पयाना॥ नौ छोहनि दल प्रबल अथाके। दुर्योधन सँग योधाबांके॥ भीष्मपितामह द्रोणाचार्यहु। महाबली दल किरपाचार्यहु॥ शकुनी कर्ण दुशासन वीरा। तिनके सङ्ग महा रणधीरा॥ पौण्ड्रक प्रबल प्रताप जनायो। लै दल दारुण सङ्ग सिधायो॥ देश देश के भूप अनन्ता। सजन लगे निज साज सुहन्ता॥ नानाविधि कर आयुध धारे। सो सब वरणि

बताऊँ न्यारे ॥ (राग भीम पलाश झूमरा ताल में) चतुर्विंशाक्षरिक निषङ्ग छन्द ॥ गदा ढाल तलवार तुपक बन्दूक़ तमञ्चा । नेजा तीर कमान खड्ग छुरिपाट निमञ्चा ॥ बाँक भुजाली चक्र गडांसा खांड़ा बल्लम । बिछुआ बाना दस्ताना झूला नाराचम ॥ बखतर तबल कटारी तोमर बहलौ शक्ती । ब्रह्म गरुड़ अहि पवन रुद्र अग्नी शरस्की ॥ बरछी सुवरणमई शक्ति संगीन रु मूशल । भिण्डिपाल पट्टिश त्रिशूल खट्वाङ्ग पाश हल ॥ सैफ भुशुण्डी सारँग छुरक पिनाक अनेका । अस्त्र शस्त्र लिय मस्त बली बहु यकते एका ॥ कोउ मियानसे लिये भुजाली नङ्गी काढ़े । मूछन फेरैं हाथ लिये खांड़े मद माढ़े ॥ कोउ हा हूहू करत मच्यो दल हाहा कारा । कूकुर ज्यों भुङ्करत मच्यो जनु शोर सियारा ॥ चौपाई ॥ अपनी अपनी करत बड़ाई । कृष्णचन्द्र की करत बुराई ॥ जो कदापि कुण्डिनपुर ग्वाला । आय परो कहुँ ह्याँ गोपाला ॥ तौ मन मानो दाँव निसारैं । बर्छिनु छेद कुल्हाड़िनु मारैं ॥ कोउ नृप कह अस मारब शूली । एकहि हूली तन सुधि भूली ॥ कोउ कह तुम दिखियो बल मोरा । तुम सम्मुख मरिहौं नँद छोरा ॥ अस्त्र शस्त्र कछु छुइब न हाथै । मारि मुष्टि धर फोरिब माथै ॥ धरि पटकब घूँसन धरणी पहँ । वासन कम कछु हम करणी महँ ॥ हमका कछुक परत अस जानी । वाकी मृत्यु आनि नगिचानी ॥ वर्ण वर्ण की बोलत बानी । महामूढ़ कायर अभिमानी ॥ नगर चँदेरि केरि सब जाती । बन ठन नृप सँग

चले बराती ॥ ब्याकरणी ज्योतिषी पुरानी । वेदान्ती सबहि गुणखानी ॥ दोहा ॥ वैद्य हकीम जराहगण, जोशी सथिये स्यान ॥ निज निज वेष सजाय भल, भयउ सुशोभित आन ॥ १ ॥ चौपाई ॥ बहु यन्त्रिन मन्त्रिन के यूथा । कर्मकाण्डिन केर बरूथा ॥ बहुतिक विज्ञ राजदरबारी । बृन्द विदूषक सङ्ग सवारी ॥ चारहु वर्ण पूज्य महिदेवा । पञ्चगौड़ परिकरा अथेवा ॥ सारस्वत विद्वान् महोदल । कान्यकुब्ज मैथिल उद्दल भल ॥ आदि गौड़ गूजर श्री सोहैं । पोषरना गिरिनारा जोहैं ॥ श्रीमाली सिकवार दिगम्बर । सहचोरा कश्मिरी उदम्बर ॥ छन्याती सनौड़िया साजे । भटनागर अवधीच समाजे ॥ पल्लीवार चतुर चौबीसा । बाला तैलङ्गी बाईसा ॥ जेसर मेलिय बिकानेरिया । वृन्द गूगुली भट्ट भूरिया ॥ नागर साठोदरा अपारा । नाबड़ बीसल नगरा भारा ॥ दोहा ॥ विष्णोरादिक व्यास वर, नेनि उपाध्या लोग ॥ ओझा तिरहुत देशिया, पण्डयादिक सब योग ॥ १ ॥ चौपाई ॥ माधव उत्कल विप्र कटारे । उड़िया बङ्गाली बहु न्यारे ॥ भट्टाचार्य चटर्ज्जयनी के । बाडज्जय गङ्गोलि अतीके ॥ घोघुअ मोढ़ अडाल्जा जतिया । जेसरमेलि नगोरिय नतिया ॥ चतुर्वेदिया भोजिक बालम । पुरे पहाड़ी आलम झालम ॥ तीर्थ तिवारी अमित अरोड़ा । कामरूक कोटिकहि गड़ोड़ा ॥ माथुर चौबनको झुरमोटा । मुण्डित शीश रखायेचोटा ॥ अङ्ग यमुनरज मथ सिंधरोटा । पानकरे बिजया के गोटा ॥ टेढ़ी पाग काँध धर सोटा । गंज भङ्ग

के बाँधे पोटा ॥ अटपट पटुका तन परकोटा । जङ्घ जाँघिया कसे लँगोटा ॥ उढ़ना ललित झलित बिछनोटा । कूँडी बगल हाथ में लोटा ॥ बहु कृशतन गण बहुतन मोटा । बहु लम्बित तन बहु ठिगनोटा ॥ मल्लयुद्धज्ञाता मित जोटा । बल मदमत्त किये दुख ओटा ॥ माखन मिशरी दुग्ध अधौटा । चाखि जाहिं दश बीस मलौटा ॥ रजे पुजे क्यहु वस्तु न टोटा । कमर लगे मुहरनके टोटा॥मनु अलमस्ता बृन्द बघोटा । कँधा लठा लै बहु सँग ढोटा ॥ लसित बिशाल भाल नजरौटा । भल ढिटौन सुन्दर कजरौटा ॥ भङ्ग छके कर गहे भँगौटा । झूमत चलैं निज किये जमौटा ॥ दोहा ॥ क्षत्रि बंश ठाकुर युथप, विपुल बिक्रमी बीर ॥ सिन्ध भाटिया बृन्द बहु, बेहद बटुरी भीर ॥ १ ॥ चौपाई ॥ तरि परोसी वैश्य विनीता । व्यवहारिक बोधक सब रीता ॥ सकल सराफा जौहरि लोगा । वृन्द बजाजनके बहु योगा ॥ प्रबल प्रतिष्ठित बहु नगरीशा । साहूकारा सर्व धनीशा ॥ लै बहु वस्तु सुगोटेवाले । पश्मीनेवाले बहु चाले ॥ ठाठे ठाठनु ठीक ठठेरे । गन्धकार त्वष्टादि[2] कसेरे ॥ गण ब्योकार आयुधा धारे । शिल्पी सम्हरे लै दल न्यारे ॥ पंसारिन सँग पुरित किराना । परचूनी लै चले दुकाना ॥ घृतरु तैल वणिक लै सामा । ताम्बूलविक्रेतनु[5] लामा॥शकटन नागरबेलदला भर । मघइ दिशौरि आदि बँगलावर ॥ निर्णेजक पटुमल शोधै को।

१- गंधी । २-बढ़ई । ३-लुहार । ४-लकड़ी का चित्रादि बनानेवाला । ५-तँबोली । ६-धोबी ।

चले कमैबे धरि मोदैको॥ दोहा ॥ लै बिसाँति बाना बिपुल, शाकवणिक लै भाजि ॥ नाडिन्धमौ नकासिये, जिलाकारिये बाजि ॥ १ ॥ चौपाई ॥ जड़िये दर्जी रफूगरादा । हूण कुम्भकारो[3] इत्यादा ॥ तन्तुवाय[4] बहु धुना बरूथा । शौचिक[5] शस्त्रमार्ज[6] जुर यूथा ॥ कुर्मी कोली कोल किराँती । गण बालाइ लुहाना जाती ॥ बिड़िया माझि नाविकहु[8] पूरे । कणभुञ्जक गण कृषक[10] प्रपूरे ॥ थवई कसगर बहु मेमारा । बहु वैतनिक[11] विवर्ण[12] अपारा ॥ चित्रकार[13] रंगसाज जमाती । सुराजीवि[14] लै मद बहुजाती ॥ चर्मकार बँसफोड़ अनन्ता । पाँटव[15] पथरचटा अत्यन्ता ॥ शैलाली[16] मृगयू[17] गम्भीरा । बहु बाँगुरिक[18] शाँख्खिक[19] भीरा ॥ आरा घरहु काष्ठकेलागन । काष्ठ बिदारक तरु अलगारन ॥ अजापाल[20] आभीरहु[21] काछी । लोधे चले समिट विधि आछी ॥ दोहा ॥ बहु रखवरिये धानुषा, पाशी पुञ्ज मलेच्छ ॥ वैतंसिक[22] यूथप श्वपंच[23], बटुरे विमल यथेच्छ ॥ १ ॥ सोरठा ॥ बुझिया मुटिया केत, धरे माँष सह आश हृदि । धन उपार्जन हेत, चले रले मन भले करि ॥ १ ॥ चौपाई ॥ मालाकार[25] नापितो[26] जाजक । पत्र पातरी सूजका बालक । पनिहारे परिकर दोउ बरणा । चर्मकार[27] लौहक[28] जलभरणा[29] ॥ ढाढ़ी डोम डफाली वंशा । वाराङ्गना कथिक सह मंशा ॥ मार्दङ्गिक[30]

१-सुनार । २-कंजर । ३-कुँभार । ४-जुलाहा । ५-छीपी । ६-शिकिलीगर । ७-भील । ८-मलाह । ९-भुर्जी । १०-किसान । ११-मजूर । १२-नीच । १३-तस्वीर बनानेवाला । १४-कलवार । १५-पटवा । १६-नट । १७-बहेलिया । १८-बिड़ीमार । १९-मनिहार । २०-गड़रिया । २१-अहीर । २२-मांसवणिक । २३-चाण्डाल । २४-अभिलाषा । २५-माली । २६-नाई । २७-चमार । २८-लुहार । २९-कहार । ३० मृदङ्गबजानेवाले ।

वैपिंक बहु वाद्यक। भांड़ भगतु आगण युत साध्यक ॥ मागध वन्दी सूत चारणा। चले अमित जन लखन कारणा ॥ नृप दमघोष लदाय खजाना। रुपया मुहर रत्न बिधि नाना॥ शकट सहस्रन जिनस भराई। अनमित भांतिन अन्न मिठाई॥ सँग भण्डार और भण्डारी। सकल समग्रि केर अधिकारी॥ हलकारा हलवाहन केरे। विपुल सुवाचक नृप सँग हेरे॥ बहु मशालचिया मशल सम्हारे। मुर्छलिया व्योरक चौंरारे॥ बल्लमिये आसिश अनेका। छत्रदण्डिकाधिप प्रत्येका॥ दोहा॥ दम घोषात्मज व्याहकी, सुन सुन धूम कराल॥ विपुल विदेशी आभिरे, लै सँग निज निज माल॥ १॥ बहिंगा कन्ध कहार धरि, चले देत हुंकार॥ निज निज वाहन नृप चले, सुनिय उमा विस्तार॥ २॥ (रागिनी परज तिवरा तालमें) हरिगीतिका छन्द॥ गज वाजि बहिल मियान पीनस पालकी कोइ नालकी। रथ तामझाम मझोलि उष्ट्र सवारिलै सुख पालकी॥ कोइ हवादार सम्हार बैठे सज शृँगार बहारमें। कोइ लढ़िन गाड़िन डोलि बोचन चढ़े छकड़न झारमें॥ बहु विधि सम्हार सजाय सुन्दर नृपति ने शिशुपालको। निकरौंसि को दियो हुकुम वन्दी विरद भाषहिं भालको॥ जब चलो नृपसुत बहिन देहरी रोककै ठारी भई। तत्काल माया दैव की लखु उसै रजं जारी भई॥ भौजाइ काजर देनलागी बहक कर अँगुरी

१—बीणा बजानेवाला। २ बाजेबजानेवाले। ३—रसोइया। ४—दंखाडुलानेवाला। ५—आसावाला। ६—छत्रछड़ीबरदार। ७—मासिक धर्म।

गई। सो प्रथम मुख स्याही लगी अशकुनहिं यह देखहु दई॥ लै कलश ठाढ़ी भइ कहारी औ-चक पग लगि ठोकरी। बहि रक्तधार चिंघार महि पहँ विकलह्वै ता छिन परी॥ कहुँ दैवयोग प्रमाण उतते छींकती धौं दाइ भइ। भरि रोष लै शिशुपाल खड्ग नाक वाकी काट लइ॥ अस निरखि अशकुन व्यथित भूपति शोच हिय बाढ़ो महा। शिशुपाल चल भा भवन बाहर गुणि अखाड़ा जहँ रहा॥ १॥ चौपाई॥ सुन्दर साज समाज सजायो। फीलवान लैके गज आयो॥ त्यहि पहँ रज्यो प्रफुल्ल अगाथी। फुफाकाण तट बैठो साथी॥ दै डंका सब कीन्ह पयाना। छयालिस छोहनि दल बगराना॥ चलत दलहि धरती धुँधकारी। परो शोर चहुँ हाहाकारी॥ भूरि धूरि यहिभांति उड़ानी। अन्धकार रवि ज्योति छिपानी॥ कर फैलायउ सूझत नाहीं। पशुगण चाल पवन गति जाहीं॥ राजा महराजा सरताजा। यकयक सँग बहु भटन समाजा। ज्वानी यौवन जोम जभेला। बलमदमत्त अतिहि अनखेला॥ बने सबहि यक यक ते छैला। ज्यहि देखो त्यहिको मन मैला॥ चलि बरात पुरबाहर आई। सो बहु अशकुन दर्शे धाई॥ इति श्रीरुक्मिणीपाणिग्रहणे शिशुपाल वैवाह्ययात्रावर्णनोनाम चतुर्विंशःसर्गः॥ २४॥

[श्रीशुक उवाच] दोहा॥ दल दहिने तर्शित लिये, विधवा तैलिक पात्र॥ अग्रभाग आदर्शही, ज्वांरि उदासिन गात्र॥ १॥ चौपाई॥ नग्नि नरातन खुले केशहू। असित वस्त्र अस सजे

वेषहू ॥ विहरैं भस्म मले तन योगी । उतै नपुंसक दल गण रोगी ॥ यानन्ह गिद्ध विराजन लागे । गोह गिरगिटादर्श अभागे ॥ कहुँ खोजा खवास आदरसे । ढेंढ़ कसाई खूसट खरसे ॥ उततै शून्यपात्र शिरधारे । आवत लखे वैद्य रिपु न्यारे ॥ चाम काष्ठ के भार विशेषा । अशुभ धूम्रयुत अग्निहु देखा ॥ चिकवा तेली भुरजि शरावी । अन्धा नकटा काण अभावी ॥ मांस लवण के बेचनहारे । विहरहिं योगी अतिथि अपारे ॥ मसि विक्रेता लै मसि डोलैं । कोउ कुवाक परहानिक बोलैं ॥ लखि बराति नृप छवि मन मोलैं । कूदैं अँगुरि नचाय कलोलैं ॥ दोहा ॥ अरुण वसन तन धारहीं, देखि परहिं बहु जीय ॥ रजक अशुचि पट शिर धरे, पेखि सँकोचत हीय ॥ १ ॥ चौपाई ॥ दल अग्रे कोइ तैल लगाये । मैली पाग पटा तन लाये ॥ कोइ शिर खोले लखैं बराता । महिषारूढ़ डफाली जाता ॥ रजोवती त्रिय गर्भाधानी । छिन विलसैं बन शूकर आनी ॥ धेनु छींक हों प्राणन घाती । मिलैं मलाह अशुभ बहुजाती ॥ अग्निकोण पै लखेउ खड़ैंचा । दावानल भयदाय अड़ैंचा ॥ दक्षिण दिशि लखि रोग उपावै । नैऋत लखे चोरि धन जावै ॥ उत्तर दिशि लखि सफर करावै । दुख ईशान दिशा लखिपावै ॥ अस अस अशकुन देखि बराती । दहलन लगी सबनकी छाती ॥ करहिं परस्पर नृप बहु खेदा । खुलै न क्यहु सन खुलये भेदा ॥ देखत बनै न कहि बनि आवै । छण छण शोच नृपन उर छावै ॥ दोहा ॥ चलत

चलत जब दिवस थिर, यक सर जल थल पेखि ॥ अमिल भयउ तहँ सकल दल, भ्वाल बराति अलेखि ॥ १ ॥ चौपाई ॥ किङ्करगण सब वहि छिन माहीं । अवनि अखिल शोधिनु चहुँ ठाहीं ॥ गड़गे अमित तम्बु अरु डेरा । कोसन बीच दियो महि घेरा ॥ बजन लगे बहु भांतिनु बाजे । गान तान वर नृत्य समाजे । तंत्रि तमाशक हासक जेई । जे समुदाय विदूषक तेई ॥ निज निज रुचिर रजैं कृति सारी । विमलैं विपुल बजावैं तारी ॥ परम पुनीत मनोहर पागा । करत रसोइया जागा जागा ॥ हलवाइन व्यञ्जन बहुँ भाँतिनु । सकल बनाये हेत बरातिनु ॥ जब सब वस्तु साँउटी कीन्ही । तब राजन हित गुहरन दीन्ही ॥ गये सकल जीमन नृप जबहीं । चली महाघोराँधी तबहीं ॥ आगमनी जोइ नामक मारुत । ते कछु बर्ण सुनाऊँ विधियुत ॥ (राग नट तिवरा तालमें) हरिगीतिका छन्द ॥ श्वसनौ स्पर्शन सदागति वर वायु आशुग बलप्रदा । शुभ मातरिश्वा गन्धवह पृषदश्व अनिल विशोकदा ॥ मारुत मरुत नभस्वान वात समीर पवन भयावनी । पवमान शीतलवान दाहन प्राण भक्षि डरावनी ॥ विहरन लगीं अति चण्डगति सन जगत्प्राण समीरणे । व्यारी प्रभञ्जन गन्धवाह प्रवाह कृमि संकीरणे ॥ हहरानि शूनाशानि भय बल खानि हाहा कारुनी । आँधी प्रकम्पन अन्धकारिणि धूरि धारिणि दारुनी ॥ दश दिशिहि विहरा प्रबल झञ्झावात जल बरसावनी । गति मन्द रहित

सुगन्ध तनु दुख रोग शोक बढ़ावनी ॥ हृदि प्राण कण्ठ उदान नाभि समान गुदा अ-
पानको । दङ्ग भ्रष्ट रोमहि रोम व्याप्त ललन प्रधानिक व्यानको ॥ १ ॥ चौपाई ॥ धूरि धुन्धु
तहँ अधिक उड़ाई । सब व्यञ्जन बिच खेंह मिलाई ॥ एकहु ग्रास असान नहिं पावा । बिल-
बिलाय भागे धरिधावा ॥ वीर धीर रँग रूप बिहाने । होश हवास न नेक ठिकाने ॥ गिरत
परत प्रति देत हुँकारी । ठोकर ठवत उठत चिंघारी ॥ उखर उखर सब डेरा न्यारे । अर र र
करि महि गिरेउ अपारे ॥ अन्धकार चहुँ ओर दढ़ाना । कर फैलाये परै न ध्याना ॥ वच सुनि
पराखि परहिं प्रति लोगा । दढ़ित हृदय प्रत्येकनु शोगा ॥ प्रति डेरन हो अग्नि सँचारा । भा
सँयोग पुनि पवन प्रचारा ॥ दहक उठीं बहु नामकि अनला । निज निज बल उपचारक प्रबला ॥
जिन्ह कर रोष महा दुखदाई । सब विधि प्रदा हानि समुदाई ॥ अग्निनामानि वर्णनम् ॥
(रंगत लँगड़ी में) ख्याल ॥ विविध वर्णकी अग्नि अमित गति नाम निकर बर्णन करता ।
पञ्चतत्त्व में शिरोमणि मोक्षप्रदा सङ्कट हरता ॥ (टेक) बीतिहोत्र वैश्वानर वरणी वह्नि वायु-
सख बर्हिबरा । बृहद्भानु वा जातवेदारु धनञ्जय ज्वलन तरा ॥ शुष्मा कृष्णवर्त्मा हुतभुक
कृपीटयोनी शुचि अपरा । शोचिष्केशी उषर्बुध आश्रयाश अरु बसुन्दरा ॥ तीव्र तनूनपात
तेजस्वी रोहिताश्व जीवन भरता । पञ्चतत्त्वमें शिरोमणि मोक्षप्रदा सङ्कट हरता ॥ १ ॥ पावक

अनल कृशानु आशु शुक्षण हिरण्यरेता ह बली । शिखावान वर हव्यवाहन दमना रु शुक्र
प्रबली ॥ चित्रभानु सप्तार्चि दहन अप्पित्त विभावसु दुतावली । वाड़व गाढ़व और्व आशङ्क-
नीय बड़वाअनली ॥ बहुज्योती ज्वालाऽर्चि ज्वालजालिनी कुलाहल अनुसरता । पञ्चतत्त्व
में शिरोमणि मोक्षप्रदा सङ्कटहरता ॥ २ ॥ स्फुलिङ्ग इस्तो शुचि कण वास्ती शीतलता नाश-
कनी । कील कठोरी हेति हननीय सर्वभक्षिणी घनी ॥ वृत्ति समान भावनी बिच देदीप्त जगत
विष्णुवदनी । भव भूतादिक भरण तारण कारण प्रत्यक्ष तरनी ॥ नरभस्माङ्ककरा पुनीत
लै चिता भस्म शिव अँग धरता । पञ्चतत्त्व में शिरोमणि मोक्षप्रदा सङ्कटहरता ॥ ३ ॥
महाकाल विकराल ज्वाल उन्नती अमित बलवान महा । शक्तिरूपिणी प्रतापी प्रबलाहि
तेजनिधान महा ॥ धर्म्मराजकी भगिनि होलिका पूजनीय परधान महा । जक्काराधी देव
मुनि जनन प्रदा कल्यान महा ॥ ललन मती अनुमान कोष कृत मान नाम शुचि उच्चरता ।
पञ्चतत्त्व में शिरोमणि मोक्षप्रदा सङ्कटहरता ॥ ४ ॥ चौपाई ॥ बाँधि अगम आतङ्क आपने ।
लै दल अनल प्रबल अनापने ॥ तीव्र तेज तापन अधिकारी । सनक भरीं विहरीं वहि बारी ॥
स्वाहा स्वधा आहुती योगिक । वस्तु नृपन की लखि सम भोगिक ॥ प्रकटि प्रपूर्ण रीति दल
माहीं । लहकन लगीं लच्छि चहुँ छाहीं ॥ पजरन लागीं तम्बु कनाती । मनहुँ होलिका कौ

हहराती ॥ धौं डेरा पजरैं बहुजाती । मनु मरघट चहुँ शिखर जराती ॥ आनि कि आनि प्रभागति व्यापी । पुञ्जप्रकाश अवनि नभ नापी ॥ ठहुँ ठहुँ ज्वालमालकी सनकैं । लखि उनवैं नृप नहिं कछु मनकैं ॥ चलै न कछु चारा लहचारा । कर मलि मलि रहि जांय मुआरा ॥ हिय अकुलान दहन बिन थाहा । धड़कन लाग हृदय प्रति नाहा ॥ दोहा ॥ चौकोसे पँच कोशके, ग्रामनिवासी जौन ॥ लखि उजियार अपार विधि, करैं प्रशंसा तौन ॥ १ ॥ चौपाई ॥ कहैं परस्पर परम निहाला । ब्याहन आयउ नृप शिशुपाला ॥ ठौरैं सरतट त्यहि पितु आजी । छुटवाई कस आतशबाजी ॥ पन्थहि में अस ठाट ठटायो । कुण्डिन करब सो जाय न गायो ॥ धनि सह खरची नृप अवसाना । धनि उछाह भूपति मनमाना ॥ वारण उष्ट्र वाजि वृषटोली । पजरैं इत रथ शकट मझोली ॥ म्याना पालकि पीनस न्यारी । दघतै पशुगण भगैं चिंघारी ॥ हाहाकार मच्यो दलमाहीं । कोउ काहूको बूझत नाहीं ॥ अपनी अपनी कुशल मनाते । कोइ शिर धुनैं रोय चिल्लाते ॥ गये हुते भूपन सँग पाण्डव । उनहु तम्बु विलसित सह बान्धव ॥ उनके तम्बु आँच नहिं लागी । वै प्रभुपदसेवक अनुरागी ॥ दोहा ॥ जैसे भारतरण महीं, भरइ अण्डजहि काँय ॥ समरघण्टिका गेर कर, गोविंद कीन्ह सहाय ॥ १ ॥ चौपाई ॥ ललन कृपाल कृष्ण जिन केरा । घण्टा टूट गिरो त्यहि बेरा ॥ तस पाण्डवनै कीन्ह सहाई । अग्नि ब्यार तनु छुई न राई ॥

१–पच्छियोंकी । २–काया–शरीर ।

कहत शम्भु सुनु प्रिया भवानी । दियो निमन्त्रण नृप इन्ह आनी ॥ तब कुन्ती निजसुतन बुलावा । दियो सबन समुझाय जतावा । जो कदापि कुण्डिन हरि आवैं । ये नृप चहि सगरे फिरि जावैं ॥ तुम प्रभुकी शरणागत गहियो । पुनि यक घड़ी न इन ढिग रहियो ॥ बने बगती आये सकलहिं । पर इन बास रह्यो नित अलगाहिं ॥ नित प्रति हरिको रहैं अराधे । सदा भक्ति हरिपदकी साधे ॥ भक्तन वश सदैव व्रजनाथा । रहत सहाय सदा जन साथा ॥ देख प्रताप उमा हरिका तैं । जनसुख सदा खलन दुख घातैं ॥ दोहा ॥ भस्मित भइ रहि बस्तु कछु, ज्यों त्यों अग्नि सिरानि ॥ त्यहि क्षण विपुल वलाहका, गगन घुमंडे आनि ॥ १ ॥ आकाशनामवर्णनम् ॥ सोरठा ॥ व्योम नाक आकाश,द्योह अभ्र नभ वियत दिव ॥ द्युः पूरित जलराश, अन्तरिक्ष सुर वर्त्म ॥ १ ॥ दोहा ॥ गगन विहायो विष्णुपद, बदर विहायस भूर ॥ पुष्कर अम्बर शब्द ग्रह, वैन प्रकाशक मूर ॥ १ ॥ सोरठा ॥ अस नामक नभमाहिं, गरजैं वृन्द बलाहकौ ॥ तड़िता वच तड़काहिं, रोष कोष भ्यानक तनौ ॥ १ ॥ मेघविद्युत्नामवर्णनम् ॥ (राग मलार चार तालमें) मनहरण दण्डक कवित्त ॥ अभ्र मेघ बारिवाह जलद तड़ितवान जलधर स्तनयित्नु जीमूत सघन जे । वारिद वलाहक मुदिर धूमयोनी अंबुभृत जलमुच धाराधर प्रसरणजे ॥ अभ्रिय जा मेघमाल कादम्बिनि स्तनित सो गरजित ललन तीव्र शब्द गर्जन जे । शतह्रदा तड़िता

बिज्जुली क्षणप्रभा शम्पा विद्युतहु सौदामिनी चपला ललन जे ॥ १ ॥ दोहा ॥ प्रवह धार बरसे बदर, चमकी चपला गूढ़ ॥ शीत भीत पाला पड़ो, हरिवैरिन रिपु पूढ़ ॥ १ ॥ शीततुषारनाम वर्णनम् ॥ (रागिनी भीमपलाशी चारताल में) मनहरण दण्डक कवित्त ॥ अवश्याय हू नीहार तीव्र तुहिनौ तुखार प्रालेय मिहिक महा पालासो हिमानी से । हिम समुदाय जूड़ शिशिर सुषीन जड़ शीतल अगार शीत सो हिवार खानीसे ॥ कला गलाते महान नृप ललनाऽकुलान बिल-बिलान दला खलबला भा घोर पानी से । बचे ब्यार हानीसे सो घोर धूरधानी से ताड़ित पुञ्ज पानीसे दुखे सो शीतग्रानी से ॥१ ॥ चौपाई ॥ कम्पित तन लगि बाजन दाँती । हुचकत रुदत भूप बहु भाँती । प्रथम अग्नि तापनहिं तपाने । पुनि जल मेघ शीत शीताने ॥ गेजर पजर वस्तु पट सारे । जामा तन कोउ शीश उघारे ॥ कोउकेतन रहिगइ यक धुलिया । क्वौ उघार तनु शीश न टुपिया ॥ कोउके शीश अधजरे सेला । मनहुँ मलिगन्ह बटुरे मेला ॥ क्यहु यक ओर मूछ जरगई । क्यहुकी दाढ़ी पजरत भई ॥ फिरैं भूप सरलट अँग नांगे । मनहुँ भूत गण खेलन लागे ॥ अपने अपने प्राण बचाये । इत उत फिरैं भूप घबराये ॥ थम्यो जबहिं कछु जल नृप हर्षे । सोइ ऊपरसे ओरे वर्षे ॥ दैव आमसम डारे ओरे । खलन बरातिनके शिर फोरे ॥ दोहा ॥ रह्यो बार नहिं एक शिर , कर धर करैं गुहार ॥ कोई आतन जहँ तहाँ , दें सुत चचन

पुकार ॥ १ ॥ चौपाई ॥ हाय हाय कर अस निशि टारी । उदित दिनेश भये ज्यहि बारी ॥ रहिगे जो पट बचे बचाये । सो दिनेश की धूप सुखाये ॥ जो नृप हुते भक्त हरिकेरे । अथवा डरे जौन उनसेरे ॥ सो सब लौटि भवन निज आये । अस कुसङ्ग केरे फल पाये ॥ सम्मति सब राजन मिल कीनी । कहत भये भइ पति अति हीनी ॥ अब कछु सोचसमुझ नृपराया । कौन चही सुठि सुखद उपाया ॥ दमघोषै बुलाय सब भाना । तुम बड़ बूढ़ हमार प्रधाना ॥ हमरे तो मनमें यहि भावत । रुक्महिं खबर करे बनिआवत ॥ लिखि चिट्ठी सब मिल उहि बारा । बुलयो यक साँड़िनि असवारा ॥ कहो जाय रुक्मीसों हाला । तोर बरातिन भा बेहाला ॥ सोरठा ॥ सुन साँड़िनि असवार, लै चीठी धावत भयो ॥ गयो रुक्मदरबार , बरणि बतायो हाल सब ॥ १ ॥ इति श्रीरुक्मिणीपाणिग्रहणे शिशुपालवैवाहिकयात्रायां मार्गव्यथावर्णनोनाम पञ्चविंशःसर्गः ॥ २ ५ ॥

[श्रीशुक उवाच] चौपाई ॥ सुनि रुक्मी अति ही दुख पायो । दै दिलास किङ्कर ठहरायो ॥ सुनी जबहिं रुक्मिणि यह बाता । आय गई शिशुपालबराता ॥ मूर्च्छा खाय गिरी अकुलाई । तन मनकी सब दशा बिहाई ॥ ऊर्ध्व श्वास भइ अतिहि बिहाला । भइ चैतन्यगये कछुकाला ॥ ध्यावन लगीप्रभुहि अकुलाती । तुम बिन नहिं कोउ मोर सँघाती ॥ मैं मन वच क्रम युत कर नेमा । तव चरणन को मुहिं दृढ़प्रेमा ॥ तुम्हरो बल भरोस मुहिं स्वामी । तुमहीं जनरक्षक वसुयामी ॥ तुम

बिन आर सुनै को मोरी। हौं तौ शरण गही प्रभु तोरी ॥ जो तुम दीनबन्धु प्रणधारी। बेग सहाय होहु वनवारी ॥ यहि विधि रुक्मिणि आकुल गाती। मौन गहे मनमोहन ध्याती ॥ (रागिनी खम्माच चारताल में) मनहरण दण्डक कवित्त ॥ थिरित मलीन वस्त्र धारिणि अजिर माहिं कीन्हिस उपास दीन दुर्बलिक रोगमें। ऊँधी रूँधी श्वासन सन्तप्त मनो शुक्ल-पक्ष द्वितिया शशीसी रेख सूक्ष्ममूर्ति सोगमें ॥ अनला धौं धूमजाल मूँदित प्रकाशहत अम्बुज सरित बिन कीचर संयोगमें। आनँद की आयनहूँ दुःख में परायन हूँ नन्दके ललन सुधि बेग ले बियोगमें ॥ १ ॥ मृगाङ्कुण्ड बिछुरीधौं मृगी श्वानवृन्द घेरी व्याकुल बिलोकै मग साँवरे सुजान की। कृशअङ्ग कमलाक्षि पूर्ण शुभ्र शशि मुखी आपुन प्रभाते दीप्तिकारिक दिशान की ॥ सिन्धुभा सलोनी भाग्यवतीयों प्रतिष्ठित सो ललन रतीकी रतीरम्य प्रिया प्रानकी। नियत भू-शय्या अर्थ विषय सन्देह युक्त परी प्रिया गेर धौं मिली ऋधीसमानकी ॥ १ ॥ चौपाई ॥ लाभ हीन प्रतिहित आशा सम। सिद्ध विघ्नयुत बुद्धि मिश्र भ्रम ॥ मिथ्याभूत कलङ्क कीर्ति ज्यों। पति बिन बल हत लसि अकीर्ति ज्यों ॥ चक्षु अश्रु नदि अथह बहावति। शोकसमूह तिमिर घन छावति ॥ वर्षाकाल बलाहक माहीं। मनहुं मयङ्क मुद्यो न लखाहीं ॥ अनभ्यासके कारण सेती।

१-भाग्य। २-यश। ३-विनाशित।

शिथिल रहत विद्या जिमि जेती ॥ जिमि व्याकरणज संसकार से। हीन वचन अरु अर्थ चार से ॥ दहत हृदय नहिं बनत बतावत। उछल बूड़ मननिधि नहिं थावत ॥ उमँगि प्रणष्ट आश मिलबेकी। लौ अन्यत्र न मन धरबेकी ॥ मदनविरह सन्तप्त शोकनों। हरिपद मन मति मिलित ओकसों ॥ यहि कारण तनु प्राण स्थापे। नतु को जियै व्यथा इमि ब्यापे ॥ दोहा ॥ आचारी धार्मिक यशी, सुन्दर कुल उतपन्नि ॥ खल दुष्कुलसंयोग पर, होतिय दुख तिमि गन्नि ॥ १ ॥ चौपाई ॥ हरिदरशन प्यासी जिमि प्यासा। पौशाला जोहत धरि आशा ॥ जिमि नृप राज्य हीन महि टोहत। तिमि प्रिय हरि आगम मग जोहत ॥ पै आश्चर्य मोर मन येही। प्रिया सो बिन हरि किमि जीवेही ॥ प्रभुहित दुष्कर कर्म्म अधारे। आन न जिअब मरैं उहि बारे ॥ शीत बधित कमलिनि सम प्यारी। कृपणदशा सुख बिनहि निहारी ॥ मज्जनरहित अलङ्कारादी। मलिन वसन वियोग आबादी ॥ चकित मृगीसम चहुँ दिश हेरै। दुख लहिरन निधि शोक बगेरै ॥ जिमि श्रद्धाबिन आदर भाई। तिमि मलीन भीष्मक की जाई ॥ जस परिक्षीण बुद्धि सुख नाहीं। भङ्गाज्ञा भे जिमि जिये दाहीं ॥ अग्निलगी दिश दीप्तित जैसी। राहुग्रसित राकाशशि तैसी ॥ दोहा ॥ शूर प्रहारी समर महि, जिमि नदि बहत सुखान ॥ चाण्डाला छुइ

१-स्थान = अन्तःकरण।

वेदिका,बुभी वह्निद्युति जान ॥ १ ॥ चौपाई ॥ हस्तिझुण्डमर्दित दुखसानी । कञ्जविहीन नदी जिमि भानी ॥ शशि बिन जिमि निशि कृष्ण भयावनि । गजगण बिन हस्तिनि अकुलावनि ॥ ध्यान शोक उपवास समैनी । अल्प अशन धारक तप स्वैनी ॥ याचक सम आरत सम दहना । जिय पिय रट मिलबेकी चहना ॥ यहि विधि विह्वल प्रिया प्रबीना । त्राहि त्राहि भइ श्याम अधीना ॥ आरत वचन नैन भरि वारी । हा हरि हा पुनि पुनिहि पुकारी ॥ करुणासिन्धु गुविन्द गुपाला ॥ सन्तसहायक दीनदयाला ॥ हे अमोघशायक सुखदाना । तुम लग टेर मोर भगवाना ॥ वेगि दयाधर मम ढिग हेरिय । यह अघ दुर्नदते निर्वेरिय ॥ ज्वै इमि इन्दुमुखी कुशलायन । बार बार टेरी नारायन ॥ दोहा ॥ त्यहि क्षण बूढ़ो एक द्विज , हरीदास त्यहि नाम ॥ आयो प्रभाकुमारि ढिग , नृप भीष्मक के धाम ॥ १ ॥ सोरठा ॥ दय आदरसम्मान , सिंहासन आसन अरचि ॥ हरिजन विप्रहि जान , मृतकहि प्राणप्रदानमिल ॥ १ ॥ चौपाई ॥ ब्रह्मभक्त रुक्मिणि अतिभारी । लखि द्विज दृग भरि लाई वारी ॥ पेखि प्रिया द्विज परम उदासा । विकलित ह्वै यह वचन प्रकासा ॥ [द्विज उवाच] किमु मलीन मन आज दुलारी । बरणि कहो यह बात विचारी ॥ द्विजदयालता निरखि रुक्मिनी । विनय सनीति बात यह भनी ॥ महिसुर सम दयालु कोउ नाहीं । तुम्हैं वेद भगवान सराहीं ॥ द्विजहि दयालु उदार विप्रही । सरल स्वभाव सनातन

द्विजही ॥ कर्म्म धर्म्म सञ्चारक एवा । विद्या सुख सुप्रदा महिदेवा ॥ ब्राह्मणही षट् कर्म्म विधानी । पूजित सर्ववर्ण जगप्रानी ॥ सुमतिसदन नित परउपकारी । सञ्चित नेह समान प्रचारी ॥ चतुर्वर्ण अधिपती प्रवीना । सत्य परायण असद्विहीना ॥ दोहा ॥ विप्रै बोधक विविध विधि , ज्ञानखानि वरदाय ॥ तुमहिं पूज्य महिदेव जग, विपतिहरण समुदाय ॥ १ ॥ चौपाई ॥ भूत भविष्यत वर्तित ज्ञाता । चतुर्वेदके द्विज अधिपाता ॥ शान्ती त्तमाधैर्य निधिसाई । लोभरहित द्विज प्रिय हरिकाई ॥ कहँ लग विप्रन करहुँ बड़ाई । तुम सम तुमहि न अपर जनाई ॥ द्विज परार्थसाधक सुखदाई । द्विजहि सदा ईश्वरहु डराई ॥ करी कृपा तुम दर्शन दीन्हा । आज सनाथ भई हौं चीन्हा ॥ कर हरि सुधि भरि ऊर्ध्वा श्वासा । दृग भरि वारि सुवचन प्रकासा ॥ मो उर हरिदर्शनकी आशा । तो कस मोर पुरै अभिलाशा ॥ हो कछु कृपा तुम्हारी मर्जी । तौ यक हरिको लिखदूँ अर्जी ॥ सो मम बिनय पत्रिका स्वामी । द्वारा पहुँचावहु हरि ठामी ॥ सुनि द्विज करुणामय प्रियबानी । हामी भर लइ बुध विज्ञानी ॥ दोहा ॥ अरी प्रिया यह बात कह, मो बल जौन बिसाय ॥ सो तन मन सों मैं करूँ , तोर कार्य हितलाय ॥ १ ॥ सोरठा ॥ लखि द्विज करुणा छत्र , प्रिया मग्न भइ अखिल विधि ॥ लइ मसि लेखनि पत्र , कै थिर चित प्रभु चरण लगि ॥ १ ॥ (रागिनी पीलू तिवराताल में) हरिगीतिका छन्द ॥ भइ लिखत पाती प्रेम

पूरित दृगनसों लागी झरी । कर कँपत लेखनि परत गिरगिर हुचहुचिन बँधगइ लरी ॥ सिद्ध श्री ब्रजराज मम शिरताज धर्म्म शिरोमनी । श्री जयति जयति गुपाल गोविंद गिरिधरे यादो धनी ॥ जन वश्य प्रबल प्रताप तापन तापहारी हे हरे । तुव चरण शरण प्रणाम जय जयकार जन सुखसागरे ॥ हो दीनदयाल कृपाल मोपर चेरिचरणन जानिये । तुम सकल घट घट केर ज्ञाता कहा लिख तुहि मानिये ॥ ज्यहि दिनसों द्वादश अक्षरी गुरुमन्त्र तुव हित मुहिं दियो । मन वचसों कमसों तबसों पति मैं मान प्रभु तुमकहँ लियो ॥ मम भ्रात मात रु तात निदरि बुलाय शिशुपालहि लियो । ग्रह हुक्मि रुक्मी भयो शठ मुहि असुरको चाहत दियो ॥ अब लाज नाथहि हाथ तोरे वेगि मोहिं उबारिये । प्रणपाल वत्सल भक्त स्वामी दया तनु उर धारिये ॥ भइ बिरह दारुण दाह अबतुम बिन न मम कोउ नरहरी । तुअ सिंह चेरि गऊ गरीबिनि गीदड़न घेरी हरी ॥ नरसिंह केहरि भाग कहँ भखि लेन गीदड़ शङ्क है । जगमें हँसाई हो नहीं तुव यश लगै न कलङ्कहै ॥ त्यज गहर वेग पधारिये नाहिं प्राण अब मम जायँगे । जो वार करु नँदलाल तौ जगलोग मोहिं हँसायँगे ॥ बिन तोर मम नहिं को सहायक यह समय ब्रजनाथ है । ल्यो किंकरीको उबार अब लखि पूर्वजन्मिक साथ है ॥ घट घट निवासी सबनके तुमसों न प्रभु किञ्चित दुरो । गज द्रौपदी यमलार्जुनादिक सम उबारो मत मुरो ॥ तुहिं बिरचि

कहा जनाइबो नहिं ललन ज्ञाता जकि के । बस इतक में लखि थोरलिख बहुमान जो वश भक्ति के ॥ १ ॥ दोहा ॥ विनय विलोकि अधीनकी, अपनैये मुहिं नाथ ॥ मम जिय कुशल चहो यदिहि, अइयो द्विजके साथ ॥ १ ॥ (रागिनी धनाश्री चारताल में) घनाक्षरी कवित्त ॥ आयो शिशुपाल सङ्ग लै दल कराल सप्तद्वीप नवखण्ड भौनचौदह भभेर है । जरासन्ध जुल्मी दल द्राविड़ ललन लिये सङ्ग दुर्योधनहु बाँकुरो घनेर है ॥ द्रोणा अरु कृपाचार्य भीष्म पितामह कर्ण दुःशासन २.कुंती हु वीर रण केर हैं । श्रोहनी छियालिस लै चालिस कुण्डिन नाथ कीजै ना आलस भो कथन चालिसलेर है ॥ १ ॥ बाँकुरे बहुत खल बगरे मही मँडन दैत्य दानो दनुज दैतेय इन्द्र आरि से ॥ शुक्र शिष्य शस्त्र लिये विपुल बलातकारि अतुल बलीश धाये असुर अपार से ॥ दितिसुत [illegible] पूर्वदेवपूर्णबल लै लै दल पाँहि दल सिमिटे सम्हार से । माते अकड़ाते उमठाते भूल [illegible] बातैं ललनपनाते बाज आतेना लबारसे ॥ २ ॥ (रागिनी मुलतानी मादव शूलताल में) [illegible]या ॥ नृप जोम भरे सगरे उभरे अपनी सम नाहिं गिनैं बलना । ललनेश प्रताप न तोर [illegible]नैं अभिमानभरे उचरैं दलना ॥ बिगरैल बड़ो रुक्मी रिपुनेमुहिं राखि अभै लग तो छलना । [illegible]पाल चँडाल बुलाय लियो अब वेगि सहाय करो बलना ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ तात मात तो [illegible] सब पागे । कछु नहिं चलत रुक्मिके आगे ॥ हाहा कर सब बिधि हिय हारे । महि शिर

पटक हटक हठवारे ॥ दइ सिख उचित वचन उपचारे । भय दिखाय दय बहु ललकारे ॥ तीर परोसि नारि नर न्यारे । हड़े विनय कर सज्जन सारे ॥ कौ कछु कहत लरत त्यहि साथा । मारण मरण हु उद्यत नाथा ॥ मम रिपु भ्रात मोर जिउ लीहे । का तुमसों मुहिं मिलन न दीहे ॥ कुण्डिनपुरके निखिल निवासी । सब तव दर्शन के अभिलासी ॥ नाथ विनय मम धरु निज काना । करिये कुण्डिनपुरिहि पयाना ॥ जनि विस्मय कछु यह चित दीजै । हौं अकेल वे बहु कह कीजै ॥ ताहित सरल उपाय सुनाऊँ । लिख पत्रोमें सकल जनाऊँ ॥ (रागिनी अल्हैया चारताल में) घनाक्षरी कवित्त ॥ मोरे कुलरीतिसो प्रतीति कर जानिये न नीति नई नेकहू भुठाय कै जनाय हौं । घोस एक आगे व्याहके सखीनु सङ्गलइ बाहर पुरैके गौरि पूजनको जायहौं ॥ लाइयो न सङ्ग दल कीजियो कछू न बल अम्बिकाके भौन तट जो ललन पायहौं । लाइहौं न बार शङ्क खायहौं न कानि कुल नाथ तोहिं पाय साथ तेरेही सिधायहौं ॥ (रागिनी झँझोटी त्रैताल में) पद ॥ तिहारे बिन रूप नगरिया उजार ॥ (अन्तरा) एकहु गृह न बसत गृहिजन कोउ शून्य किये घर बार ॥ १ ॥ लेप न लेश इतर अलकन बिच परस न कंघी बार ॥ २ ॥ गुँथत न जूड़ न छुअत धाग तनु तुम बिन सुख न सुधार ॥ ३ ॥ भाल न मृगमद टीक ठीक गति दियो दृग अंजन टार ॥ ४ ॥ नाक न नथ नकबेसर कोऊ मुख न पान

अधिकार ॥ ५ ॥ दशनन मुखमंजन अधरन रुचि चिबुक न बिन्दु विहार ॥ ६ ॥ श्रवण त्यजे अँग अँग भूषण तन बसनहु अरुचि अपार ॥ ७ ॥ हा बिन श्याम ललन पिय मोरी बात न पूँछत शृँगार ॥ ८ ॥ (तथा) पद ॥ रखो प्रभु शरण गहेकी लाज ॥ (अन्तरा) तेरोहि नेम प्रेम हित चितकर औरनसों नहिं काज ॥ १ ॥ तुम जनको मनकी सब जानत भक्तन के शिरताज ॥ २ ॥ दीनानाथ दयाल दमोदर श्रीपति श्री व्रजराज ॥ ३ ॥ ललन के जीवन धन तुम मोहन मुहि जन जान निवाज ॥ ४ ॥ (रागिनी खम्माच त्रैताल में) पद ॥ सकल सुखनिधि भक्त हितकारी रे ॥ परम प्रभु न्यायी, अधिक सुखदाई ॥ (अन्तरा) मुनिन मन रञ्जन । सकल दुख गञ्जन ॥ खलनदल भञ्जन । महिमा अपारीरे ॥ १ ॥ अगम वरदाई । निगम नित गाई ॥ न गति काहू पाई । ऐसी कृति भारी रे ॥ २ ॥ सुयश प्रभुताके । भनत मुनि थाके ॥ प्रजापति रमाके । दुख प्रहारी रे ॥ ३ ॥ सुफल वर देही । अपन जनकेही ॥ ललन प्रिया सेही । क्यों न प्रीति पारी रे ॥ ४ ॥ (तथा) पद ॥ जय जय अनन्दकारी तुम्हारी सुचालियाँ ॥ तुम प्रीति सुख सुधाके, निधि प्रेम की छुधा के ॥ (अन्तरा) द्विज दीन हितू अयसे । जिमि नीर नेह पयसे ॥ नहिं न्यारे होत तयसे । तेरी गति निरालियाँ ॥ १ ॥ महिमा तुम्हारि भारी । विस्तारी सो संसारी ॥ हितकारी हौ सुखारी । मुनिजन विशालियाँ ॥ २ ॥ ललन प्रिया

अनाथा । देउ ताहि दर्श नाथा ॥ मुहि कीजिये सनाथा । करिये वहालियाँ ॥ ३ (रागिनी झँझोटी त्रैतालमें) पद ॥ मोरी यह टेक रखो महराज ॥ (अन्तरा) तेरोही सब जग जानत मुहिको । धूमरही यहि आज ॥ १ ॥ गावति तोर गुणानुवाद प्रभु नित प्रति यहि मुहिकाज ॥ २ ॥ जहँ ज्यहि योनि जन्म जग पायो तुमहिं सज्यो ब्रजराज ॥ ३ ॥ सदा सदा प्रभु भक्ति तिहारी ललन यही रुचि राज ॥ ४ ॥ (रागिनी खम्माच त्रैताल में) पद ॥ तन जहान उरु गृह गृही इन्द्रिय मन नृप जीवन नेहरे । शक्तिरूप चैतन्य विहारन सम चित श्रेष्ठहि ए हरे ॥ (अन्तरा) सो अर्पण मन करत तोर हित धारत सम्पति देहरे ॥ तो मायें किञ्चित निर्दइ ना निठुर निमोही तेहरे ॥ १ ॥ नय निबहत मैं मान सुजीवन हे आनँदघन मेहरे ॥ बरसो कृपा कटाच्छन धारन ललन प्रिया उर गेहरे ॥ २ ॥ (तथा) पद ॥ तुमने नाम निशान जगत में हितको रखो न आँकरे ॥ (अन्तरा) कपटन प्रीति रीति रीती कर निहचय की हानि नाँकरे ॥ उर गृह गृही चाउ निठु इशन न शई ललन पिनाँकरे ॥ १ ॥ मन मंशा मनोर्थ आशा चित धरत न हितनु बटाँकरे ॥ ललन पिया कम की साँचो नेह नात दिये टाँकरे ॥ २ ॥ (रागिनी पूर्वी त्रैताल में) सवैया ॥ होय अयान तिन्हैं सिख दे न हितू तुम सो जगमें सरनाम है । पीर प्रसूतिक जान कहा जग जौन निगोड़िन बाँझिन बाम है ॥ हौं तुम्हरे हित हाथ बिकी ललनै

पनते सुमरो तुव नाम है । नामकी टेक तुम्ही रखिहो पति मो तुम्हरे करमें घन श्याम है ॥ १ ॥ (राग कान्हड़े की बहार इकताला में) पद कीजिये कृपा निधान किंकरी पै दाया । मैं मन वच क्रमसों पति तुमको अपनाया ॥ (अन्तरा) अर्पण सब कर्म धर्म तो हित मम काया ॥ कौन लाग जान नाथ मुहिको बिसराया ॥ १ ॥ तुमतो प्रभु भक्तपाल वेदन मुनि गाया ॥ फिर तो मम वार इतक बिलँब क्यों लगाया ॥ २ ॥ मम से किये अमित काज ज्यहि जन तुहिं ध्याया ॥ तुमहि जननकाज नाथ गिरिहि कर उठाया ॥ ३ ॥ दलता विधि मान तुही इन्द्र मद नशाया ॥ द्रौपदी निवारण दुख गजके सुखदाया ॥ ४ ॥ तुमरोहि नँदललन बल भरोसा यदुराया । दीन बन्धु जान तोहि शरण मन लगाया ॥ ५ ॥ दोहा ॥ कोटिकान से विनय मम, सुनिये श्रीभग- वन्त ॥ अर्थ अत्त मम हेरिये, समुझि दासि दुखवन्त ॥ १ ॥ यदपि पात्र पूरत तदपि,मन लिख पूरत नाहिं ॥ पूरतही बनि बिवश प्रभु, अब करु जस चित चाहिं ॥ २ ॥ चौपाई ॥ यहि विधि लिखि रुक्मिणि प्रियपाती । दै खरचा मइ द्विजहि जिमाती ॥ षटरस विविध प्रकारिक असना । हेम पात्रन साज स व्यसना ॥ धरे द्विजाग्र लाय भखचोले । विरचि स ब्राह्मण वचन अमोले ॥ श्री कुमारि मैं नहिं अस योगा । जोइन भाजन करूँ मखभोगा ॥ सब विधि अङ्गिकार तव अ- दना । पैनपावुँ बिच सोन बासना ॥ सुनि द्विज वचन भैष्मिकी बोली । टेर खवासिन अलि यह

बोली ॥ जाय विपिन द्विजराजहि काजा । लाउ शीघ्र रंभादल ताजा ॥ प्रिया कथन सुनि दासी धाई । कदलिपात एक सद्य ले आई ॥ धोय धाय युगखण्डे कैकै । धरो एक विप्राग्रै लैकै ॥ पंडित लखि खंडित दलमाना । अहो पुत्रि सुनि परम सुजाना ॥ दोहा ॥ यह अशुद्ध पल्लव पहीं, भोजन वर्जित वीर ॥ हौं न अहारूँ याहिपर, दोष होय गम्भीर ॥ १ ॥ * तत्पूरणदल कुमरि मँगावा । तापर भोजन द्विजहि करावा ॥ तब प्रसन्न धायो द्विजराई । तनमनकी सब दशाविहाई ॥ गृह न गयो न सँदेश पठावा ॥ आपुन भेद न क्यहु जतरावा ॥ मनही मन निज करत बड़ाई ॥ पूर्व्विक कर्म सराहत जाई ॥ रूम रूम प्रफुलित बहुरंगा । फूलो नाहिं समावत अंगा ॥ शोचत समुझत हँसत हँसावत । पग पग पाहिं गुविन्दहि ध्यावत ॥ चहुँदिशि लखत श्याममय सर्बा ॥ बार बार इमि भनत अगर्बा ॥ रुक्मिणिके कारजहि बहाना । मिलिहै दरश श्याम सुखदाना ॥ हुइहै सफल जन्म जग मोरा । जो मुहि मिलि हैं नन्दकिशोरा ॥ हरिगुण गावत प्रमुदित विप्रा । गमन्यो पवन गतिहुसे छिप्रा ॥ (रागिनी झँझौटी त्रैताल में) पद ॥ प्रणमु परत्माम परम पर बीन ॥ (अन्तरा) जगदीशा त्रिभुवन प्रतिपालो सृष्टी रचना कीन ॥ १ ॥ विदित विभू विश्वम्भर

* यथाश्लोकः ॥ सदण्डं कदलीपत्रं वामभागाग्रसंयुतम् ॥ निर्दण्डं च निराग्रंच पशुचर्मसमम्भवेत् ॥ १ ॥ अर्थ ॥ वाम भागिक अग्रभाग से युक्त दण्डी सहित केला का पात शुभ है और वामाग्रभागरहित दण्डी से हीन पशुचर्म की तुल्य होता है ॥ १ ॥ अर्थात् पूर्णाङ्ग पत्रपर भोजन करना महान् पुनीत है ॥

नायक सदाभक्ति आधीन ॥ २ ॥ प्राणपती प्रभु नित्य निरन्तर सकलेश्वर रहे लीन ॥ ३ ॥ भक्ति परा भगवन्तहिकी उर ललन प्रिया वरलीन ॥ ४ ॥ दोहा ॥ साँझ समै तट पयोनिधि, लियो विप्र विश्राम ॥ प्रात न्हाय कर नित्य विधि, सुमिरत भा घनश्याम ॥ १ ॥ इति श्रीरुक्मिणीपाणिग्रहणेश्रीकृष्णायरुक्मिण्यापत्रप्रेषणनिरूपणंनामषड्विंशःसर्गः ॥ २६ ॥

(राग वसन्त त्रैतालमें) हरिगीतिका छन्द ॥ द्विज मनै ते सुखासिन्धु गोकुलचन्द्र तट पहुँचत भयो । अति मुदित स्वस्तिक विनय वाचन वदत भो तनमन दयो ॥ महराज मुहि यह ज्ञात हो यहि रुक्मिणी सिय आदि हीं । जिन्ह वरन हित भे राम अब इन हेतु हरि अवतारहीं ॥ हे बलोदधि महि थल बली दशचतुः सहस निशाचरा । भय भीम ज्वाला अग्निसम बलवृन्द तुम मारे खरा ॥ हे दीनबन्धु दयालु दानवदलन दिनपति अतिवरम् । तुम इनहि हित खरदूषणादि त्रिशिर असुर बिनश्यो परम् ॥ हे परमगति खलप्रदा गति यक अत्ति कीन्ह जयन्तहू । मारीच मारि हराइ त्रिय अद्भुत चरित नाहिं अन्तहू ॥ इन हेतु प्राण जटायु त्यज लहि स्वर्गगति कल्याणकी । पुनि जाय कपि मिल मित्रता सुग्रीव सोंह प्रमाण की ॥ श्रीपते इनहि निमित्त तुम बलवान बाली वध कियो । रावण समानै वीर्यवान कबन्ध खल सुरपुर दियो ॥ प्रभु इनहिं हेतु विराध भयनिधि रामतनधर तुम हन्यो । जिमि शक्र शम्बर असुर मारयो धारिकै विक्रम

घन्यो ॥ दुर्द्धर्ष पालित बालि वानर राज्य सुग्रीवहि वरो। जन लखि अभय कर सुखसहित यह विदित तिहुँ पुर यश खरो ॥ हरि यहि विशालाची निमित हनु श्रुति सौ योजन फाटनिधि । तव कमलचरण प्रताप च्चण महँ गे उलंघ सरलहि विधि ॥ पुनि तव प्रताप प्रताप त्यहि सब लङ्क जारी हनुमते। सुन कुशल प्रिय लै वृन्द मरकट सेतु बँधयो रघुपते ॥ जनमानप्रद इनहितहि मित्र बिभीषणहि कर मान दे । मनमणी हित सुखघणी तुम कियो लङ्कपति सन्मान दे ॥ हे धर्मनिधि तव बल प्रतापहिके प्रभावहि जानिये। नहिं पाद अङ्गद तिल हटो गो हार दशमुख मानिये ॥ सुखसदन प्राणाधार काजहि कुम्भकर्णहु मेघनाद । प्रचण्ड खलदल मारि रावण मोक्षगति दइ त्यज विषाद ॥ सिय जीत अवध विलास जनसुख दीन्ह नित अवतार भव। तौ ये कहा बड़ काज प्रियकी वेगि करिहौ सहाय अब ॥ मुहि निश्चयही कि एक ढिग त्रैलोक्य राज्यहि सब धरै। नहिं तदपि भीष्मकनन्दिनी सम भाग षोडश लखि परै ॥ किमि हेतु यह श्री धर्म्मशील महात्मा भीष्मकलली। नित पतिव्रत की मेड़ प्रिय नँदललन द्रवहु क्षमावली ॥ १ ॥ दोहा ॥ श्याम नाम चिन्हित हिये, हरिगुण करत अलाप ॥ गमनत भा द्विज द्वारिका, प्रभुचरणन मन थाप ॥ १ ॥ (रागिनी खम्माच त्रैतालमें) पद ॥ जग करतार सुखार परम परमेश्वर दीना नाथ खरोरे । (अन्तरा) सुखस्वरूप जगपति अनूप यश अनन भांति चहुँदिश प्रच-

रोरे ॥ महा कृपाल महा करुणानिधि महा प्रभू परताप घनोरे ॥ १ ॥ परम पुनीत अजीत नीति वर सकल रीति भर पूर बनोरे ॥ सर्वोपरि सब विधि प्रमाण वेदन पुराण श्रुति सत उचरोरे ॥ २ ॥ सबलायक सतरूप सकल मुनिजन गुन नेति नेति वरनोरे ॥ हौं जानौं जब दीनबन्धु तुहिं कुमति मोर प्रभु दूर करोरे ॥ ३ ॥ देखूंगो प्रभुता कि प्रबलता समय यही यक जाँच परोरे ॥ आरत अनाथकी अरज गरज सुन ललनप्रिया को भक्ति बरोरे ॥ ४ ॥ चौपाई ॥ उतर उदधि के द्विज भा पारा। शोभा निरखत भयो अपारा ॥ हरित भूमि मखतूल समाना। बन उपबन द्रुम बेलि बिताना ॥ ढिग ढिग कूप बावली रोपिस। उत्फुल्लाभार्गवी चहुँ दिश ॥ छँदन कुशादल अंकुरान कल। लता लहिलहीं लहलहायँ भल ॥ शष्प यवस मुख शोधक बेली। प्रफुलित सोमवल्लि अलबेली ॥ कहुँ नीलिका मयूर्का सोहैं। मूर्वा मञ्जु मृदुल मन मोहैं ॥ ठहुँ ठहुँ सोहैं सुन्दर सरवर। फूलित फलित फवित छवि तरुवर ॥ नघ्र कदम्ब जम्बु कचनारा। कहुँ तिन्तिणि अमरूद अपारा ॥ पीतत्वचा कन्दुकाङ्गा कहुँ। विष्वक्सेना दाम्बिकादि चहुँ ॥ संकफरा[१२] चित्रिका सन्तरा। मनोकामिनी गण चकोतरा ॥ सरौं सुहाते बृन्द हरौंदे । कठल बढ़ल नारँगी करौंदे ॥

१-फूली दूब। २-पत्ता। ३-हरीकोमल घास। ४-पकी हुई घास। ५-गुरुच। ६-निर्गुराडी। ७-लटजीरा। ८-लता विशेष। ९-गौंदनी वृक्ष। १०-दाड़िम वृक्ष। ११-शमीतरु। १२-अरराडतरु।

दोहा॥ शाण्डिल्यः[1] कहुँ श्रेयसी[2] अमृता[3] तुवः[4] प्रकाश ॥ धातुवर्द्धकः[5] कौशिकः[6], पातिन[7] पिलक सुवास ॥ १ ॥ चौपाई ॥ पारिभद्र श्रीफलद खजूरा । कहुँ कपित्थ केवरा प्रपूरा ॥ कहुँ शाल्मली[8] शरीफा कमरख । न्यग्रोधा[9]ऽथ अश्वत्थ[10] भूमि लख ॥ अनन्नास अङ्गूर अजूबा । अलूबुखारा अञ्जिर खूबा ॥ असगन्ध आकामड़ा अगस्ता । आबजोश अखरोट सुलस्ता ॥ आडू अमलतास अंबारा । अर्जुन अरणि अतीस अपारा ॥ अकरकरा अजमोद अशोका । अगुइ अगथुआ अजान थोका ॥ आबनूस आसाढ़ा ऐला । आखोटा तुरिया बिच गैला ॥ असना तरु अलगारन सोहैं । अमित जातिका अम्बु प्रमोहैं ॥ रंग रँगीले रसन रसीले । स्वादन अमवा आम अमीले ॥ बीजी कल्मी न्यारे न्यारे । नव नव शोभा सिन्धु अपारे ॥ अथ चतुर्दश मात्रिक अनन्द छन्द ॥ कहुँ अनन्नासिया आमिन । अंगूरि अमिरती नामिन ॥ अमठा अनारिया नीके । अडुआ बम्बई अफीके ॥ ईंगुरी इलैचिय कहुँ कहुँ । इमलिहा ऊदिया ठहुँ ठहुँ ॥ कठ बकल कमाल करेलई ॥ कोइलिया सुँघाक्यवड़ई ॥ ककरिहा कन्द मीसरिया ॥ कँद कूजा कहुँ केसरिया ॥ कतिकिहा कदलहा काही । कचमिठा कलुअ हमराही ॥ कसरुहा कहूँ करौंदहा ।

१–बेलवृक्ष । २–बड़ी हर्रवृक्ष । ३–छोटी हर्र । ४–बहेड़ा । ५–आँवावृक्ष । ६–गुग्गुल तरु । ७–नीमतरु । ८–सेंभर । ९–वटवृक्ष । १०–पीपलवृक्ष ।

खासा खरबुजहा खबहा ॥ खीरई खिरनियां खसरस । गिजरई गुठिलहा अस अस ॥ गुड़रसा गेंद गाजरिया । गेंदहा गिलास गिल्हरिया ॥ गोपाल भोग स्वादेशा । कहुँ घटावार बेरेशा ॥ घामड़ा चमेलिय चपटा । चितली बम्बई अचपटा ॥ छैला छुन्छुनहा जोई । जुहिहा जाली बँद कोई ॥ जाफरान जाफरि गोला । जमुनिहा जोगिया चोला ॥ जग पसंद कहुँ जंगाली । कहुँ कहुँ जलेबि नव चाली ॥ झखरहा झुतरहा भारी । कहुँ टिढुही और टिकारी ॥ ठर्रिया डुँगरहा ढिलहा । तरबुजहा कहूँ तुर्शहा ॥ तोतइ तिरंगिहा ईषा । तुरहई तमंचा तीषा ॥ थपरहा दशहिरी आला । दूधिया दुधमखनियाला ॥ दल बादलि धमेड़िया सा । नायाब नरियला भासा ॥ निंबुआ नरंगिया कंदी । नौधा नव्वाब पसंदी ॥ कहुँ निपटै अम्बु नुकीला । पथरहा पौधहा पीला ॥ परसुही पहाड़ी आमा । पातुर पसन्द अभिरामा ॥ पिंजरि पन्सेरवां पोहे । कहुँ फकीरवाला सोहे ॥ फुलहा फलसहा बतसहा । बरछी बहादुरा बिलहा ॥ बेगम पसन्द बिल गठिया । कहुँ बोंड़ीदार अकठिया ॥ बेहदना वज़ीर पसन्दित । बादशह पसन्द सुगन्धित ॥ बिर्रावाली आमिनियां । बीजी बम्बई अमनियां ॥ बम्बई बेल बम्बइवर । भूरा बम्बई मनोहर ॥ भंगहा भौंरहा भदैयां । भूरा भुजपुरी सुहैयां ॥ मन्सेरवा मलिहाबादी । मेवई मिसिरिहा आदी ॥ माल्दह मुनौरी सुरुखा । मिसरी कँद माधुर दुरुखा ॥ कहुँ मोहन भोग मलाई । मन मिठास लेहि लुभाई ॥ मनभरा मखनिया आला

भँदराजी आम निराला ॥ रसभरा कहुँ रसराजी । कहुँ रसाउरी सरताजी ॥ रस कुप्पी कहुँ रत भरना । लखनौआ पसन्द वरना ॥ लँगड़ा लासानी लँबुई । लिचहा लिलकण्ठी ललुई ॥ लड्डू लहसोरी लाटी । लटकन लाखिया लुखाटी ॥ लाखौरि लखू लावाली । सुइया आमिन निरयाली ॥ कहुँ सुर्खा स्याह सदाफल । सर्दा शर्बती सुहावल ॥ सेवती सन्दली सफरी । कहुँ सेव सफेदा समरी ॥ कहुँ शहतकुजा कहुँ सोया । सिलहट सहितूती गोया ॥ कहुँ आम्र सरेहा जाती । कहुँ शंतरहा लोजाती ॥ सावनियाँ कहुँ सहाबी । सी सकरसौरभी आबी ॥ सरदहा शकरिहा प्यारा । शहबादिक आम्र हजारा ॥ कहुँ शहतकुपी सुन्दरिया । कहुँ सिखरनिया से परिया ॥ हपसी हेसमी हरेरे । हरदिया दुतीश घनेरे ॥ कहुँ हंसपेटि हाथी भूल । हर दिल पसन्द बहु अनमुल ॥ दोहा ॥ टोरू टीका कार कहुं, शुभ्र सुहेला सर्द ॥ लसिला ललित सआब चहुँ, गुलवा हलवा जर्द ॥ १ ॥ चौपाई ॥ अनगन अमित सुभलित कुसलिया । स्वाद मिगीला सादश घरिया ॥ आलूचा अजवायन केरे । वृन्देलाचिन बहु वन हेरे ॥ इँगुआ उरई इन्द्रजवा तरु । कोंचरु काग किमाच कुसुम अरु ॥ काकुन कुन्द करील कैफरा । कन्दराल कुटकी कचूमरा ॥ कूट काकरासिंगि कसुंबा । कोरौं कूरो कहुँ कटुतुंबा ॥ कामि काकडोंडी कङ्कोला । कत्थ कैम कारी अनमोला ॥ कटचप्पा कनैल बहु भांती । कहुँ किसमिस कलौंजि बहुपांती ॥ खरबर

कांस कपास सुहाते । खैरसार खम्भार प्रभाते ॥ गुलाचीनि गुलमेंहदि अमनियां । गुदरु गुलरु गुलाब जामिनियां ॥ गज पीपर परकरा प्रसारे । फूलन फलन सहित छबिधारे ॥ दोहा ॥ गोरखमुण्डी गुञ्जिका, घिउ कुआर अनगन्त ॥ चँदन चिरौंजी चिलगुजा, गांजा चीतानन्त ॥ १ ॥ चौपाई ॥ कहुँ चिकिडुआ चिरचिरा चीड़ा । चारु चिराता नाशन पीड़ा ॥ छये छिहोरा छिउला छारा । छवित छतावर जीवक न्यारा ॥ जावित्री जमाल गोटाऊ । जाफर झरबेरी झरझाऊ ॥ टिकुइ ढांक तुम्बा तुन तारा । तेंदू तिनिस तलीसहु झारा ॥ ताल मखान तितरपङ्खीके । तीक्षण थुहर तमाल सुनीके ॥ देवदारु कहुँ हरदीदारा । दारचिनी दूधी अलगारा ॥ नींबू[1] कागदि कल जँमीरी । गंगुलियहु कर्ना अकमीरी ॥ अमल बेंत सारङ्ग बिहारी । बिपुलबिजौरा वृक्ष अपारी ॥ निकर नामशतीन्ह निसोथा । नींदेई नव नागरमोथा ॥ नागकेसरा नासुदआला । नरई नरकुल लोचनवाला ॥ दोहा ॥ पारस पङ्खि पलाश कहुँ, पीलू पाँडर पोय ॥ पुरे पिंदार पटेल पुनि, पुञ्ज पतिजिया कोय ॥ १ ॥ सोरठा ॥ पिश्ता पोश्त पतङ्ग, पाकर लोध पठानियां ॥ फरे फरेंद सुरङ्ग, बेरि बिजैसारादि बहु ॥ १ ॥ बबई वृन्द बिजौर, बनकट बबुर बकायनौ ॥ बड़हंसा प्रतिठौर, बंश बिपुल बहुबर्ण के ॥ २ ॥ दोहा ॥ बच बकुची

१-नारङ्गी ।

वनतोरई, वनभाटा वनमुङ्ग ॥ बायबिरङ्गहु बरियरा, ब्रह्मी बेत सुतुङ्ग ॥ १ ॥ भोज मिलावा पान भिट, भँगरा भङ्ग न थोर ॥ म्योंढ़ी भागा भाट बहु, मालककूनी घोर ॥ २ ॥ चौपाई ॥ महुआ भैनी मीठमखाना। मिरच मुरेठी मुरहरि नाना ॥ मौरायन मदार मन्दारू। माजू मैन मुनक्का चारू ॥ मोर शिखा मजीठ मुरभ्कनी। रेंड़ि रएड रीठा रोहनी ॥ मौरसिरी रसभरी रसौंतहु। रैसौं रूसा रार रिसं भखहु ॥ रेंड खरबुजा लोध लहसोरा। लुन्हिया लिचि लुकाट चहुँ ओरा ॥ लाल चँदन लवङ्ग सिरसादा। सिसइ समालु सिहोरेत्यादा ॥ सीसम साखू स्योरा ठहुँ ठहुँ। चहुँ सागौन सैजना कहुँ कहुँ ॥ सङ्खाहूली सौंफ सनाई। सरफोंका सन सनई छाई ॥ सकरकन्द सनफल सहदोई। हर सिंहार हड़ हरदि सुहोई ॥ सुहै सारिवा सेब सुपारी। सरदा सर्फारेउड़ी न्यारी ॥ दोहा ॥ सिंसिपाहु ताकीर तरु, सोहनि अरर चिलोल ॥ बकुल तिलोकोरनि विटप कोविदार अनमोल ॥ १ ॥ चौपाई ॥ अरुण करसरैया तिनि सादी। चुन्ना पाडर बहु मर्यादी ॥ तिलक नाग तरु ताल शतावरि। किरवारादि अगेथु ढाँक हरि ॥ हरि चिरौंजि सहतूत विशेषा। फूलित फलित सुवृक्ष अलेषा ॥ विहरैं वनचर कुञ्जर बाजा। उष्ट्र वृषभ गो सिंह समाजा ॥ बाघ तेंदुए पाढा चीते। शूकर ऋक्ष भेड़िया कीते ॥ बानर बिज्जू महिष सियारा। गेंडा मेंढ़ा

१-कांटेदार।

हिरन हजारा ॥ नील सुरागो भ्कांख सौंजहू। वनबिलार गीदड़ रासभहू ॥ कहुँ केहरि गुलबघान थोका। अजा भेड़ि गण परम अशोका ॥ बरहसिंह रोहू हय सम्हर। वनखर श्वान लोखरी परिकर ॥ कहुँ मार्जारि लोमरीं खरहा। खरगोशास्यागोश मुदमहा ॥ दोहा ॥ स्याहू शार्दूलादिका, नील बँदर लंगूर ॥ घूँस मूष विलसैं नकुल, अभय अनन्दित भूर ॥ १ ॥ चौपाई ॥ पाथ भ्कील चहुँ भरी पुनीता। खलचर विचररहे बिन भीता ॥ कच्छप गोह नाक घड़ियाला। मेढ़कादि सुसुआर कराला ॥ वनमानुष बगोंधि मुड़हीना। उदवासेहि भीन पाठीना ॥ वृश्चिक कौंतर खनखजूर अहि। विषखापर विहरैं मोदित महि ॥ कहुँ आवर्तोदकी विशाला। पुरित सुगान्धित सलिल रसाला ॥ दर विदारिका कहुँ कहुँ राजैं। स्वादिकांबु गुण अमि सम भ्राजैं ॥ ढिग ढिगपै उदपान अनोखे। बनी विनाहिं पषाणन चोखे ॥ कहुँ पुनीत पुष्कर जलपूरे। दिपित घाट चहुँ शोभन रूरे ॥ तटतटपै तड़ागपद्माकर। निर्मलनीर रोगहरतावर ॥ सुवर सुगन्धित सियर सुहावन। बलदा क्षुधा अजीर्ण नशावन ॥ दोहा ॥ अरविन्दनके वृन्दपर, विहरत वृन्द मलिन्द ॥ बैनऐन सुखदैन मनु, रटत नाम गोविन्द ॥ १ ॥ चौपाई ॥ रचित विश्वकर्मा कृत कीधौं। अति अपूर्व चहुँ घाट घटीधौं। सिंह मर्मरी सित स्यहमूसा। सङ्गजरादि

१-जलकुएड। २-चोया। ३-कूप। ४-पक्की जगत। ५-चौकोना ताल।

अनूप अदूसा ॥ बिल्लौरी सीपी कृत काँचिक । कहुँ कहुँ भवन रजितमय हाटिक ॥ जड़े
जड़ाउ रत्न रमणीया । मुक्तामणि माणिक कमनीया ॥ जलज हीरपन्ना पुखराजी । विद्रुम
नीलक लहसुनि छाजी ॥ चित्र विचित्र अमित नामा नग । बेल जाल बूटा तिनके लग ॥
बुरज बुरज जनु कुन्दन कलई । मनु चपला गण चौंधन दिपई ॥ भुरजैटा स्यह तीतुरन्यारे ।
पनडुब्बी सुरखाब सुखारे ॥ तलबुड़िया उलूक लिदुकाहू । पीलु लहबुड़िया सिकराहू ॥ बबइ
बैगमा कुर्रि करारी । कल गुँजान ढोरसा अपारी ॥ कटनासा डुँड़पुँछी जटाई । लावागरिल
चँडूल कटाई ॥ मैनि मुसरिहा बनमुरगादौ । तालसरादि कोकिला वादौ ॥ दोहा ॥ नील-
कण्ठ डमरूलिगण, मुसकैटा भँगराज ॥ डोंज ठिकरई ठेंगरी, टुइयाँ बहिरी बाज ॥ १ ॥
सोरठा ॥ श्वेत अरुण शुक पाखि, होरिल गौगाई समन ॥ मुरुक मनोहर लाखि, खूंसट डोमा
ढोंक बहु ॥ १ ॥ चौपाई ॥ बरगेली टिटहरी भुजङ्गा । बटई चकई चकवा सङ्गा ॥ लघड़ फाक्का
शक्करखोरी । टिकुइ टटीरी बरहि करोरी ॥ ललगन्दी जुगुनुई ललामा। काँकुल जलकुक्कुटाभिरामा ॥
श्याम चिल्हर करियली कुलङ्गा । जल मुर्गाबी भिंगुर पतङ्गा ॥ मुरगाबी काँकड़ा पतेरा ।
चिमगादर मारची ततेरा ॥ भवँर कुरङ्गी बुलबुल श्यामा । मगचिकनी कोयल घनिघामा ॥ शुतर-
मुर्ग कहलक खड़ैंचा । फ़ीलमर्ग महरी कुल कैंचा ॥ फूलमुर्ग चिरकुटा विहङ्गम । टपरहिली

दुबचरानु सङ्गम ॥ सीने बाज कराकुल बीना । पेपा शील बाज परवीना ॥ कुमरि भटूली
दीलदिलाई । सहसदास्ता सोन चिराई ॥ दोहा ॥ मुरग कर्करा बन्थरा, सीमुर्गादिक
यूथ ॥ करवानक दोवा चरज, वृन्द बुँदीला गूथ ॥ १ ॥ सोरठा ॥ खञ्जन कुञ्जलि काक,
चिनक कुम्हारी घाघरा ॥ पतियाना हुसुवाक, कठफुरवा गिव जुम्मसौ ॥ १ ॥ दोहा ॥ सुन्दर
सुकुमारी सुआ, खण्डरङ्गिया भाट ॥ खिलहा खीरी खजुरिहा, लमदुमकी नहिं घाट ॥ १ ॥
सोरठा ॥ पिलखा सारस हंस, ढंच खैरुई गौरिआ ॥ रामचिरैयन वंश, गलकण्ठी खन्तैल
भल ॥ १ ॥ चौपाई ॥ पुञ्ज परेवा वाइस वासा । धूती धुबइन कौंडिलरासा ॥ धापी बेहना बया
बेसरा । अनीफूल नकटाहु जलागरा ॥ लहटोरा मोरनी जुरगली । खुटखुट बढ़ई गोरखा-
वली ॥ फुलसुंही ककरील कञ्जरी । कन्दुल किनिआं फुदुकचीलरी । महर ममाख महूक कर-
मुही । जलासिन्ध सनपिड़खी निकुही ॥ दुलहि गिरगिटी कलपुछि बञ्जुल । दोंगलि छपका
बिजू मछाकुल ॥ बरगुल बीरी बरकुल बुटही । टून्ताकी ककेर दुमचिरही ॥ बिदकि बिलाही
बिजहा भूरी । बदहिं बिसातिन बैन सहूरी ॥ गूना गिल गिल गुलइ गहागा । भानत बैजन
वच सुख पागा ॥ गरदल गुजरी गण गुन्दीला । घसियारी घमठई घमीला ॥ दोहा ॥ गदर
गुलबदन घेतली, घुग्घू घून्नइ एव । घुनुखात्रा प्री सूंघनी, चंगुल चँदरा तेव ॥ १ ॥ चौपाई ॥

चूचूँ घरिल घुरीला चीना । चिमरखि ढाकर छिकुहि प्रवीना ॥ छिन्नपङ्खि छांगुली छुरि नखी । तरकिल थिर कुरील तितीलखी ॥ थल बीजल तिमकुई तरकुली । गण गुन्दीला रोमपंखुली ॥ टीढी, सौंला पिदकि पतारी । सरफुल मुगही मीना न्यारी ॥ भृङ्गि पिपीला भद्रकुलादी । मंडूका मुँगेल इत्यादी ॥ भटकूई भामिनी फलेना । मान सरोवरि मालिनि मेना ॥ मुरहारी चिनगिहा मुखमुरीं । मयूरपङ्खीहु राजांगुरीं ॥ सुरभुङ्गा मांगुली महोवर । सनकन राधावरी मनोहर ॥ मञ्जु मन्हूसी मटकुल सूरी । सुहैं सनकुनी बाघर हूरी ॥ राजाजी रहिगर रतमासी । रूरू रवरव अरु रैदासी ॥ बावर बटा वृन्द मुचीला । रांभा वच रतवका बरीला ॥ सुघर सुगन्धिकादिका ज्ञासू । लिजुकुन हसन हुसेन बिलासू ॥ दोहा ॥ रटै रबीना हरीहर, सुघर ससैना शीउ ॥ हलुआङ्गी हुद हुद हमिर, होंजी हांजी पीउ ॥ १ ॥ सोरठा ॥ लिलख लंदूरा लैन, हब्बू हिसकिन हरदिया ॥ सुभग सुनारी ऐन, बहु कपोत संकुल कला ॥ १ ॥ (राग पूरिया शूल ताल में) कवित्त ॥ काबिली कमाऊ केरु कालेहु कलांक कल क्योडई कमखीं काही कलसिरे किनारिये । कलुदमे कपासी काकरेजीकंजई कनौत कड़ीबाज कागदिये कासनी कपूरिये ॥ कत्थई कसीसी कचकमरे कौड़ील कुल किर्मिची कुसुम्भी कलपोटिये कुम्हारिये । कुन्दनी कवसीया कमरबन्द किशिमशीहु ललन कलोलें कहि कृष्ण कान्ह कुम्मिये ॥ १ ॥ खाखी खूब

सूरत खिरकेबन्द खुर्दनुखे खैरिये खतङ्गे खिम्से खिर्निये खरेसे हैं । खोपरे खडील खीरी खाखसी खजूरियेहु खञ्जनी खसीस खाजी खम्सई खुलेसे हैं ॥ गिरेबाज गोले गुंजा गन्नई गुलाबी गण गेंदई गुटरं गूंगूं गाजें गजरे से हैं । गंडेदार गुलदार गुलेखार गन्दुमिये ग्युँहे गुलेनार गूढ ललन गुने से हैं ॥ २ ॥ चीनी चप चित्तीदार चूरिये चमेलिये चचँद्मुखे ललन चुन्नई चुटील चालिया । चम्पई हू चाँदनिये चौंरी चानतारा चारु चित्तले छतीले जाग जरचेहू जोगिया ॥ जङ्गली जलौनी जरदक्खेहू जलंधरीक झप्पेदार टाटी टारू टीकेदार टकिया । ठाठिया ठियरे ठकठक् ठीक ठीक डंडबाज डीलदार डोंगे ढिठयारे ढब ढाँकिया ॥ ३ ॥ तामड़े तिलक्खे ताखी तालमार तहेबन्द तीरा तूसी तेलिया तमोलिया तमीले हैं । तीतुरी तिलेचा ताजी थिरोड़ान ललनजू देल्हीवार दोंगेहू दुवाजसों दमीले हैं ॥ दुम्मे दरखंब दुपहरिये धुरील धूमे नीरजी निसाउड़ी निलाम्बरीक नीले हैं । पंबई पिलक्खेहू पेशावरीक पायमोज फाक्सी फतोईदार फुलपराँ पपीले हैं ॥४॥ विद्रुमी बदामी वर ललन बगूलईक भूरेभूर भमरीले भद भद भाँगई । मूंगई मिथील मौठई मकोई मोतीचूर मोचे मानू मैनाजाद मोमीमय दूमई ॥ मासल मटीले मक्सी मुखी मखियारे मञ्जु मोजेदार मामुली ममोले हू मुँगेरई । मोजेगर्क रामपुरी एलचिये हरे ललाँख लाखी लाल लीले लपलप् ललसिरे लँगूरई ॥ ५ ॥ सालिसी सुरङ्ग सीमतनिये

शजाँहपुरी सेवती सिराजी स्यह सोसई सुहाने हैं । सुन्दरा सहावी सुहे सीनेबाज शर्बती सुन्हैरा
शेख सन्दली सँजाफदार स्याने हैं ॥ सुर्ख सब्ज सिर्जि सुलेमानी सोसनी सुफेद सुर्मई संगीन
शुभ्र ललन सुबाने हैं । सुन्दर सलोनिया सकील सान सोहैं सर्व श्यामा श्याम श्यामा श्याम
सुमरन साने हैं ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ अरगजि अदराखि अलिसय आबी । अगरइ अञ्जनीय अफता-
बी ॥ असमानी अकरोटि अनारी । अनारदाना अर्बि अपारी ॥ अंगूरी अंजीरि अब्रिया ।
अम्बइ अंबरि अम्बरसरिया ॥ इलेमासिये कहुँ इँटियारे । इँगुरि इलैचिये इतरी न्यारे ॥
ऊखिय उरदी उदे उनाबी । उजरे कालपिये चैनाबी ॥ काँटदार कलचोंचिक घाघर । खुलेहरे
गन्धिकी मनोहर ॥ गुलाबाँसिये गफूरिये से । गलफुल्ले चौधापरियेसे ॥ चहुं चिनङ्ग छुट परे
छतीले । जर्द जलन्धरि बहु झमकीले ॥ झप्पेदार तिलबहे तिर्रे । तिलचढ़ और तिलक्खे बिर्रे ॥
दुहरेकाँटेदार दुबलिये । दुपरे नलीबन्द बादलिये ॥ दोहा ॥ पिना पटैत बरेर बड़, परेअकाँटेदार ॥
भक्से रेशमिपरे बहु, याहु लँगोटवार ॥ १ ॥ लक्के लोटन लमदुमे, ललगर्दन इकपाँख ॥ सिंहसरदये
सुल्हपरे, बाइस परे तिलाँख ॥ २ ॥ चौपाई खगा लखोरा परिकर घोरा । चहुँदिशि चहकैं पंक्ति
करोरा ॥ सनकनि साज पतारी सौने । बोलतकैरा वर्जित मौने ॥ द्वारापुरिमग अद्भुत शोभा ।
द्विज बिलोकि गाचक मनलोभा ॥ चलत चलत द्विज परम थकानो । श्रमवश निद्रालस लपटानो ॥

लखि नारद गे कृष्ण समीपा । विप्रागमन कह्यो विधिनीपा ॥ वेगि विमान पठावहु स्वामी । वहि
समर्थ नाहिं अन्तर्यामी ॥ सुनि प्रभुनारद वचन विनीता । गणन बोलि कह बैन पुनीता ॥ लै
विमान धावहु यहिवारा । द्विज सोवत वनखण्ड मझारा ॥ सोवतही त्यहि बेगि लिआवो । नगर
समीपहि शयन करावो ॥ गण शिर धरि हरिआयसु धाये । तत्क्षणविप्र निकट चलिआये ॥
सोवतही द्विज यान चढ़ायो । तुरत द्वारिका ढिग पहुंचायो ॥ दोहा ॥ जागतही महिदेव तब,
चकित भयो मनमाहि ॥ पूछन लग्यो निवासिनै, कौन धाम यह आहि ॥ १ ॥ [नागरिका
ऊचुः] सोरठा ॥ नगरद्वारिका नाम, कहो विप्र तुम कौन हौ ॥ आये कौने काम, सो कृपाल वर्णन
करहु ॥ १ ॥ [द्विज उवाच] दोहा ॥ हरिदर्शन अभिलाष लग, आयोहौं यहि हेत ॥ नन्दल-
लन अनुकूल मम, यहिआशा मन लेत ॥ १ ॥ चौपाई ॥ दे आशिष पुरवासिन काहीं । चल्यो
विप्र पुनि पुनि पुलकाहीं ॥ निरखि नगर छवि परम छकोरी । कञ्चन मय कोटा चहुँ ओरी ॥ फ-
टका फटिकमणिन रुतारे । चारुचँदन के लगे किवारे ॥ सुवरण कलश तीव्र छवि छाजें । नौबत
भेर नगारे बाजें ॥ कीन्ह प्रवेश पुरी द्विजराई । गृह गृहकी छवि अमित सुहाई ॥ सकल नारिनर
रूप अनूपा । जनु विधि यहि पुर शोभन तूपा ॥ प्रतिभवनन हों मङ्गलचारी । विविध वाद्यधुनि
परम सुखारी ॥ रोशन चौकी मौहरमाला । बीन मृदङ्ग चङ्ग मुहनाला ॥ तबला तबल तालडफ

ढोलक। बेणु रबाब सरोद अमोलक। मृदु मुहचङ्ग खंजरी दाग। सुरशृँगार बाँसुरी सितारा॥ दोहा॥ डफला ढोल बिगुल बरा, तासे नवनक्कार॥ कहुँ तायूस जुलूसिया, बजैं नफीरि चिकार॥ १ ॥ चौपाई॥ कहुं सरङ्गिन ध्वनि करतारा। कहुँ मौहर नहिं वारा पारा॥ शङ्ख झांझ घड़ियाल मजीरा। तानपूर यकतार गँभीरा॥ विजयघंट घण्टा स्वरवाला। थाली हुड़क घड़ौंच विशाला॥ जलतरङ्ग नसतरङ्ग न्यारी। चहुँ दिशि शब्द परमसुखकारी॥ कहुँ भारत भागवत पुराना। घरघर कथा श्यामगुणगाना॥ गृह गृह द्विज सुरभिन की सेवा। होम हवनविधि दान अथेवा॥ निरखि दिव्य प्रतिभौन प्रणाली। कर्म्म धर्म्म सतवादि विशाली॥ श्रीव्रजराजाधिप रजधानी। देखेहि बनै न बनत बखानी॥ मनमोहन के मोहन सदना। ठहुँठहुँ अमितप्रकारिक भवना॥ कहुँ देवालय अरु सन्तालय। पुञ्ज पाठशाला धर्म्मालय॥ दोहा॥ वृन्द बालदे गजनिलय, गोशाला घुड़सार॥ कहुँ सन्मानालय सृजे, संमत्यालय न्यार॥ १ ॥ चौपाई॥ खानि खजानालय बहुरूपा। न्यायालय नइ रीति अनूपा॥ सैन्यालय सोहत भलभूरे। भृत्यालया अथाह प्रपूरे॥ कहुँ योधालय शोभन साँटे। युद्धालयन अखाड़े आँटे॥ गन्धर्वालय बनन अजूबा। गानालय बहु सिरजित खूबा॥ नृत्यालय निर्मये नवीने। कहुँ वाद्यालय बने रँगीने॥ तोशाखाने परम सुहाने। कहुँ बनरहे जवाहिरखाने॥ दिपित दिवानखान ठहुँ ठहुँ पै।

चित्रालय शुभ सोहत कहुँ पै॥ पुरे मालखाने अलगारन। हाजिरि खाने सुहैं हजारन॥ कहुँ कहुँ पै रथ गाड़ीखाने। बने अमित पक्षीगण थाने॥ शिशुक्रीड़ालय व्याख्यानालय। शोभित महामञ्जुविद्यालय॥ दोहा॥ वामालय शयनालया, अशनालय कोठार॥ रजत रचित भण्डार अति, सुन्दर पाकागार॥१॥ सोरठा॥ पुण्य पूजनागार, कहुँ मज्जन मोतीमहल॥ सीसमहल छविकार, वापी कूप तड़ागयुत॥ १ ॥ दोहा॥ सुमनवाटिका घाटिका, गृह बहुमजल सुहाय॥ नहर लहर परिकोटिका, बहु सुरभी समुदाय॥ १ ॥ (राग भैरव चारतालमें) मनहरण कवित्त॥ कारी कजरारी कमलायनी कुलाहली सुकंपिला करीमुखीसी कञ्जई करालसी। धौलशृङ्गवारीधौंरी धूमरी धुआँरी धेनु शुक्लाङ्ग सरोजईनैचक्री विशालसी॥ ललन पुनीत पीली लहिकनी लाली लीली भूरी भँगही हिरन्नखुरी गजचालसी। गौर गेरुई अरुण खिमशी सुवृत्ता नवसूतिका निराली शाली शूकरा रसालसी॥ १ ॥ (राग बिलावल त्रैताल में) पद॥ नैचक्री चितकबरी शबला धवला शृङ्गनवारी॥ (अन्तरा) कमलायनी कुलाहलकारी कपिला करि अनुहारी॥ कारी पीयर धौंरी धूमरि हिरनखुरी हरिप्यारी॥ १ ॥ गोदावरी चपल चिन्तामणि लपकन बहु लतियारी॥ हिचकनि बिचकनि वर घनदूधी सूधी परम सुखारी॥ २ ॥ लाली ललित लीलई लहकनि भूरी भँगहीभारी॥ गजगामिनी गँभीर गेरुई कलकञ्जी अरुणारी॥ ३ ॥ गौरभि गौर सुवृत्ता सुन्दर

सुखसन्दोहान्यारी ॥ वर वेहतसन्धिनी शोभिता उपकार्या सुखकारी ॥४॥ शालि शूकरा बहूसूतिका नवसूतिका प्रचारी ॥ चिरप्रसूतई समांस मीना धेनुषादि छविधारी ॥ ५ ॥ पीवरस्तनी द्रोणा चीरा श्यामा नामाधारी ॥ ललन लड़ैती चीर सृजैती हरिकी हरहितकारी ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ विहरत विहरत यहि विधि गौरी । पहुँचत भयो विप्र हरिपौरी ॥ इन्द्र सरीखे सुरपरिकरसे । हरि पौरी राजें किङ्करसे ॥ बजहिं दुन्दुभी घोर नगारे । आनँद मङ्गल श्रीहरिद्वारे ॥ हेम कलश रवि शशि द्युतिकारी । ध्वजा पताका बन्दनवारी ॥ भीतर भौन जात पैं अटको । पर न विप्रको काहुन हटको ॥ प्रविशो हरिगृह जोइ द्विजराऊ । गृह छवि दिपत देखि हर्षाऊ ॥ पौरि पौरि मखम-लिबिछायतें । भीतन रत्निकजालभायतें ॥ मणि माणिक मोतिन झालरियाँ । सुवरणपातन बन्दन-वरियाँ ॥ रत्नसिंहासन सेज सुहाई । त्यहि पर राजैं श्रीयदुराई ॥ दोहा ॥ निरखि रूप गोविन्दको, द्विजसुधिगई हिराय ॥ भीत चित्र जिमि लिखितभा, लोचन निमिष न लाय ॥ १ ॥ चौपाई ॥ औचक दृष्टिपरी जोइ हरिके । विप्र जान उठ सादर करिके ॥ हस्तपाणि गहि तट बैठायो । सुन्दर निर्मल नीर मँगायो ॥ चरण धोय चरणामृत लीन्हा । विविध विधानन पूजन कीन्हा ॥ षड्रस भोजन सरस जिमायो । पुनि पलँगा विप्रहिं पौढ़ायो ॥ लगे पलोटन पग यदुराई । द्विजकी सकल थकार मिटाई ॥ सावधान महिसुर लखिलीना । बोले श्याम वचन रँग भीना ॥ जहँ तुम बसहु

कुशल नृप सोई । दीन्हकृपाकर दरश भलोई ॥ को तुम कौनकाज कर आये । सो कर कृपा कहो समझाये ॥ सुनि रस प्रेम सनी हरिबानी । कही विप्र सब वरणि कहानी ॥ कुण्डिनपुर बिच बिदर्भदेशा । तहाँ बसत भीष्मकहि नरेशा ॥ दोहा ॥ सुता तासुकी रुक्मिणी , शीलसिन्धु अभिराम ॥ तुव हित प्रभु मुहि पत्रि दइ, सह विधि विनय प्रणाम ॥ १ ॥ चौपाई ॥ ता सँदेश लैकर हौं आवा । अहोभाग्य तुव दर्शन पावा ॥ भयो सनाथ आजहौं नाथा । मम कुल कोटिन बंश सनाथा ॥ सुफल सुखद सुन्दर दिन आजू । पूर्ण भयउ सब मो मन काजू ॥ धन्य दीन पालता तुम्हारी । दास जानि मुहि कीन्ह सुखारी ॥ इमि द्विज विनति बिरचि शिरनावा । प्रिया पत्रिका दै सुख पावा ॥ प्रियाकेरि पाती लै मोहन । उरलगाय लीन्ही करछोहन ॥ चिठी खोल हरि बाँचन चाहीं । प्रेम पुलक दृग झर बरसाहीं ॥ विरह तप्त पाती त्यहिकेरी । हरि अँसुअन सियराई फेरी ॥ बोले हरि द्विजसों यह बाती । तुमहीं पढ़हु प्रियाकी पाती ॥ प्रभु आज्ञा द्विज बाँचत भयऊ । हरिपाती सुनबे चित दयऊ ॥ इति श्रीरुक्मिणीपाणिग्रहणे द्वारावत्यां ब्राह्मणद्वारारुक्मिणीप्रेषितपत्रिकाऽऽगमनवर्णनोनाम सप्तविंशःसर्गः ॥ २७ ॥

[श्री शुक उवाच] ॥ दोहा ॥ रुक्मिणि विरचित पत्रिका, जिमि नृप सुनई तोहि ॥ तिमि द्विज भाषी कृष्ण प्रति, यक यक अक्षर जोहि ॥ १ ॥ चौपाई ॥ विनय बहोरि विप्र बहु भाषी । जानि

प्रिया दर्शन अभिलाषी ॥ द्विजहि जनाय कह्यो घनश्यामा । सत्य कहन प्रिय द्विज अभिरामा ॥ है रुक्मी रिपु बहु अभिमाना। शिशुपाला शठ खल हौं जाना॥ चलिहौं तोर सङ्ग द्विजराई। प्रिया केरि चलि करहुँ सहाई ॥ ये सगरे खल रण केहि काजा। आयेहैं कुण्डिनपुर राजा ॥ तहँ तलवार गहौं द्विज ऐसी । तुमने देखी सुनी न तैसी॥ जरासन्ध को भञ्जहुँ माना। मार रिपुन करिहौं खरियाना ॥ वाहीछिन सारथी बुलायो। दै आज्ञा रथको सजवायो ॥ अस्त्र शस्त्र लै चक्र कृपाना। सज्यो शृँगार शुभग भगवाना ॥ यह सब हाल रेवती जाना। है कोउ कुण्डिनको अनुमाना ॥ कहि न जनायो क्यहु के आगे। ससुरारी द्विजहित हरि पागे ॥ दोहा ॥ शम्भु कह्यो सुनु हे उमा, निरखिश्याम की प्रीति ॥ ससुरारी सबकाहिं प्रिय, यही जगत की रीति ॥ १ ॥ श्रीमाया हित रूप रस, विभव मान सन्मान ॥ सबहिन को प्यारे लगैं, इन कारण हरिजान ॥ २ ॥ चौपाई ॥ गरुड़ध्वज रथ परम सुहायो। श्यामकर्ण अश्वन जुतवायो ॥ करगहि प्रभु द्विज रथहि चढ़ाई। अर्धरात्रिके समय कन्हाई ॥ गिनी न कछुकहु बार कुबारी। तिय हित कुण्डिन गये मुरारी ॥ निरखि शून्यगृह बिन यदुराई । पूछत भे त्रिय सों बलराई ॥ कहाँ गयो मम भ्रात गोपाला। वहि बिन लगत भवन मुहि काला ॥ लखि पिय विकल रेवती उचरी। आयो यक द्विज बृद्ध भइ घरी ॥ कुण्डिनपुर त्यहि कह्यो निवासा। जहँ को भीष्मक नृप गुणरासा॥ तासु सुता है रुक्मिणि

नामा । रूप शील गुणनिधि अभिरामा ॥ द्विज भाष्यो त्यहिकेर स्वयंवर । ब्याहन आये अमित भूपवर ॥ समाचार यह विधि भूदेवा। रह्यो सुनावत हरिहि अथेवा ॥ दोहा ॥ हौं अनुमाने कहत सो, गेहरि द्विज सँग ताँहिं ॥ प्रियतम पूर्ण प्रतीत दृढ़, होत मोर मन माँहिं ॥ १ ॥ चौपाई ॥ अपर न हरिगति जानन योगू। साँच जाँच मम किधौं अयोगू ॥ [श्रीमहादेव उवाच] त्रिय वच सुनि बल बहु घबराये। नाना दल योधन सजवाये ॥ तालध्वज रथ सजै पुनीता। आयुध बाँधे सबै सब रीता ॥ वहि छिन धाये श्रीबलराई। बीचहि मगके लिये कन्हाई ॥ कह्यो भ्रात तुम यह कह कीन्हा । रिपुदल को अकेल चल दीन्हा॥ यह कह मति तुम्हरी यदुराई। क्यहिने तुहि यह सीख सिखाई ॥ अर्धरात्रिको समय कुसमया। निद्रा त्यज कुण्डिनै चलभया ॥ सुजन धाम इज्जत सों जैये। बिन इज्जत पद्धति नहिं पैये ॥ जासों निशि ह्याँ बसहु कन्हाई। कछुक सैन्य लेउ सङ्ग लगाई ॥ तब कुण्डिनपुर करहु पयाना। तोस भरोस अपन सुखदाना ॥ दोहा ॥ उपवन तहँ यक सघन लखि, कह बलभद्र बखान ॥ निशि बिताइये भ्रात ह्याँ यह रमणीक स्थान ॥ १ ॥ (रागदेश त्रैतालमें) हरिगीतिका छन्द ॥ पुष्कर प्रफुल्लित कमलयुत शोभित विमल जल अमिसमी। अलि अवलि विमलित नाद वादित सुखद हृदि हारकतमी ॥ बहु वर्ण विलसित विटप द्रुमगण फलित फूलित भावने । बकुरैं विहङ्ग अनन्त कोकिल कीर

हंसादिक घने ॥ लावण्य लता लहाहिं लहि लहि पुहुप सनित सुगन्धिका । गृह विद्यमान विचित्र काञ्चन रतन अमित प्रबन्धिका ॥ नदि भील भावर भरित भरन अथाह प्रवल प्रवाह की । मनु क्रुधित पतिपर्यङ्क त्यज रुठि चली चमक चकाह की ॥ कहुँ उलटि बहि अन्यत्र धावति सरल बहि पुनि अस लही । जनु बन्धु मनय लिवाय धाये मुदित पिय परसन बही ॥ अपशीत सोहनि श्रेष्ठ मरकति कृतिम वापि विराजहीं । चहुँ घाट घटी अनूप हैमिक तड़ित द्युति लखि लाजहीं ॥ वन विपुल विरचित विश्वकर्मा वृक्ष छत्राऽऽकारसे । तरु थलह सुवरण रजतमय भावत बनेउसुप्रक.रसे॥ चहुँ चम्पु चन्दन रुहनि केसर कुसुम मन्दारक कदम । जावित्रि जाफल लवँग पूगी लाचि लोलित भा परम ॥ मृगगण विभूषित शोक सन्तप्ताग्नि रहित विहारते । कहुँ शार्दूल सियार शूकर सिंह ऋच्छ दहारते ॥ गति दिव्य त्रिविध समीर सुखदा ताप तीनिहु परिहरै । सब ऋतुन फूलन फलन हारे तरुवरा दीपित वरै ॥ ऋतुराज फवन फवाति मनु वन बनाबन भूषण सजे । साक्षात नन्दन चैत्ररथ वन सम अशोकित भारजे ॥ बहु पुरित फुल नक्षत्र सम मनु अन्य नभ उपशोभितम् । देदीप्य रत्नन रम्ययुत मनु उदधि सोहत पञ्चसम् ॥ सुप्रसून माल अनेक गन्ध बहावकौ बहु सुन्दरम् । मनु गन्धमादन गिरि अपर कैलाश धौं भाषित वरम् ॥ अवलोकि प्रभा पुनीत मारग मनहुँ दृग द्युति चोरतीं । आनन्द आलय हरण

दुख श्रम ललन सब सुख जोरतीं ॥ १ ॥ [श्रीमहादेव उवाच] सोरठा ॥ शोभास्थल अस भूर, जहँ मन रमत रुचाय सुख ॥ श्रीहरि बल सुखमूर, बसे तहाँ धनि वह अवनि ॥ १ ॥ सर ॥ वर तरु वर धन्य, सुमन सु मन दायकहरष ॥ धनि खग सुकृत अरन्य, जे हरिदर्शन पावते ॥२॥ दोहा ॥ इत हरिपुरि बाहिर रजे, उत सर तट शिशुपाल ॥ शम्भु कहत सुनु भामिनी, कुण्डिन केर हवाल ॥१ ॥ (रागिनी टोंड़ी लहचारी चारताल में) कवित्त घनक्षरी ॥ चौठी लइ साँडिया सवार शिशुपालकेर हालजा सुनायो सब हुतो जौन तालको । भीष्मक ललन सुनि दारुण विहाल पुनि बोलि पुरवासिन मँगायो बहु मालको ॥ नाजन बुखारी खोल भुर्जिन भुँजाय बोल लादिन लदै अतोल लै नृप करालको । चोपदै नगारा साज सुन्दर शृँगारा रुक्मि आपह्वै अगारा लेन चालो शिशुपालको ॥ १ ॥ चौपाई ॥ नाना वस्त्र बिसाय मँगाये । जो पुरमें जहँ तहँ जस पाये ॥ कियो बजाजा बसत रहितिया । सबके बिक गय माल रहितिया ॥ राजेश्वरी सुरूप सजाये । सेवक श्रेणी सङ्ग लगाये ॥ वारण वाजि उष्ट्र रथ नाना । नालकि पालकि पीनस म्याना ॥ यथा योग्य असवार सँगाती । इष्टमित्रगण गोती नाती ॥ लिय नृपवृन्द तालके तटपर । समधिहि मिल करि राम रमोश्वर ॥ ठाट बाट लखि रुक्मी केरा । नृपन कियो मन लजित घनेरा ॥ रुक्मिहु तिन्हैं देखि दुख माना । भृत्य समान सबन सन्माना ॥ शकटन

भरि चर्वण सुठि सतुआ। अर्पे कलुकै बने गुड़पुआ॥ मुठि मुठि भरलै बाँट चबेना। पाय प्राण बचयेनृप सेना॥ दोहा॥ नृपन योग कछु अम्बरा, दिये महीपन काहिं॥ जरकासि मखमालि पशिमने, काम किये तिन्हमाहिं॥ १॥ चौपाई॥ कोइको चादर डुपटा धुतिया। कोइको जामा गौंछा पगिया॥ दिये पात्र जलको बहु लोटा। यक यक महिरन काज लँगोटा॥ घोषसुवन हित परम ललामा। केशरिया पटुका अरुजामा॥ छत्रोपानह दिय हर्षाई। मणि माणिक रत्नन छबिछाई॥ यहि विधि सब सम्मान उचारा। चलु भा सो भा कुँडिन भँझारा॥ मनुजहि पर आपड़त कलेशू। शूर वीर नहिंकरैं अँदेशू॥ अवशि बात हो पुनि कह कीजै। करेधरे कछु होय करीजै॥ बिहँसि रुक्मि पुनि दमुप्रति भाना। शिशुपालैं नृप चहिय न्हवाना॥ लै मैदाजल तैल मिलाई। उबटन हित केशर पिसवाई॥ दैव योग उगि कुकृतिक ककरी। केशर सँग कहुँपिसगइ मकरी॥ दोहा॥ सोइ बटना शिशुपाल मुख, मलवायो नृपभान॥ देखतही देखत बदन, फरिगा कुष्ट समान॥ १॥ सोरठा॥ लखि दमघोष नृपाल, कुँवर दशा आकुल भयो॥ वैद्य वृन्द हे नाल, बोल पठायो तिन्ह सत्रन॥ १॥ चौपाई॥ आन वैद्य दमसुत अवलोका। व्यथित बिहाल प्रपूरित शोका॥ कह्यो वैद्य दुख वेगि नशैहै। औषधिलगि मुख स्याही ऐहै॥ सुनि नृप कह्यो न यह कछु हानी। दुख दूरै सोइ करहु निदानी॥ तबतौ वृद्ध वैद्य विद्वाना। करि सम्मति अस कीन्ह

विधाना॥ कज्जल तैल मिलाय दवाई। शिशुपाला मुख दीन्ह लगाई॥ ह्वैगा मुख लङ्गूर समाना। गौरगात मुख असित सुहाना॥ करि सहाय सम्मान समेता। अशन वसन कछु दे यश हेता॥ रुक्मी नृपसों माँगि बिदाई। रथ चढ़ि कुण्डिन चल्यो पराई॥ राजसमाज सङ्ग सब लोगा। प्रविशत पुर हृदि मुद बहु योगा॥ नगरनिवासिन आयसु भाना। सजहु सुहाट बाट विधि नाना॥ दोहा॥ आये सज्जन समधि मम, लय शिशुपाल बरात॥ जस सहाय कर सक करो, रखो जो मोसों नात॥ १॥ चौपाई॥ रुक्मिवचन सुनि कह पुरलोगू। आगमनो शिशुपाल अयोगू॥ किञ्चित सकुचित क्रुधित अरुचि मन। कलुक मुदित कछु विस्मित भे जन॥ पैगति प्रथम जौन विधि सारिहि। सो सब जची हुती नर नारिहि॥ पठइ पत्रि दमघोषभुवाला। लै आवा सवार ज्यहि काला॥ लिख आयउ जो नृपन हवाला। पुरजन विदित रह्यो सब हाला॥ धन विनशे वाहन मर्य्यादी। दग्धे पशु पट आभरणादी॥ क्षुधा तृषा सन्तापित भूपा। भाजन भोजनरहित कुरूपा॥ धूरी धिके समीर दुखाये। वह्नि व्यथित घनदृष्टि सताये॥ उपलन उभे शीत सियराने। प्रमुदोमङ्ग शान्त दुखसाने॥ छ्यालिस छोहनि यूथ बराती। आवत सुने नृपति कुल नाती॥ दोहा॥ बहुरि रुक्मि करतूति जो, सो सब लखी विभूत॥ दुशतक चर्वण सतुअ लदि, ही दमु सैन अकूत॥ १॥ (रागिनी काफी त्रैतालमें) सवैया॥ पूर्ण अहारकवृन्द नरा

तिनु नास सुँघावन जातलहा । दात विलोकि कहैं ललनौ क्यहि काह दिहै न लजात अहा॥ भीर भुआलन की बहु भाँति सुनावत दुःखितगातमहा । बाँट लँगोटि न एक मिलै अपनीपतिसोवन जात कहा॥१॥[श्री शुक उवाच]दोहा॥ वदत रहे इमि मनुजगण, सोइ रुक्मी नृप आन॥ मन्यो सजावन हाट पुनि, विहय विलम्ब निदान ॥ १॥ कछु भय भीष्मकपुत्रको, हित कुण्डिनपति केर॥ कछु निजपति कछु लाज निज, पद्धतिभय अवसेर ॥ २॥ चौपाई॥ विभव दिखावनहित कछु आपन । दमु जतरावन नृप अपनापन॥ समय पुरातनकेरि कमाई। दादा पर सर नगड़ददाई॥ ले बहु नगगण मणी बहूता । वराम्बरावलिजड़ित अकूता॥ रुक्मैयाके डरके मारे । सजन लगे सब शुभग बजारे॥ कहुँ गजमुक्तन मोतिन लड़ियाँ । कीन्ह सुशोभित मुक्तन मणियाँ॥ कमल पर्वतारे तारेसे । गहिर गोसवारे न्यारेसे॥ पुञ्ज पोलकी तुरमलि भाती। विपुल वनासपतीं वर जाती॥ हीर हजारन पना पुनीता । लगये लाहुन लाल सुरीता ॥ मणी माणिका चुनी सुहातीं । कहुँ कहुँ माणि वैदूर्य दिपातीं॥ कहुँ चिन्तामणि चारु मरकतीं। नीलक पीलकप्रभा भवकतीं॥ दोहा॥ फव फिरोज पुखराज कहुँ, लसैं लहसुनी नीक॥ लाजवर्द गोमेदकी, कहुँ तामड़े हकीक ॥ १ ॥ चौपाई ॥ पुरित पितुनियां सुसन्सितारा । अधाधुन्ध धुन्धा नगभ्मारा॥ हाटदुकानन इमि छवि छाई । मनु विधुवृन्द प्रकाश सुहाई॥ पट सूती रेशमी चुहीले । सुरँग रँगीले रत्नजड़ीले ॥ मढ़े

मकान दुकान दिवारन । छये छजा छापरा अटारन ॥ उत शिशुपाल बरातिनवृन्दा । यक यकसों महमत्त मलिन्दा ॥ सजसज साजसमाज शृँगारा। जोइ कुण्डिन चलभये भुआरा॥ आनि अभित अशकुन आदरसे। इतुत रमैं मार्जारिडगरसे ॥ अग्नि अँगारन ऊपल धारे। नेत्रविहीन एक चषवारे॥ लवण लिये तन तैल सुहाते । अशकुन अस अनेक दरशाते॥ विपुल कुवेषित वृन्द निशाचरि । चीकर्ति कीकर्ति दरशिं प्रमुद अरि ॥ (राग एमन कल्याण शूलतालनें) घनाक्षरी कवित्त ॥ एकाक्षी कुनामा प्रावरणवती वामा पद साना श्वानपदी पादचूलिका हयोदरी । यकवादि पृथुवादी पादहीना बकवादी शिरगल चुपवन्ती कोदरी मलोघरी॥ बहुबदनी कुचेष्टी दीर्घ नकी हीनदृगी अतिरसना विहीननासिका भगोदरी । भने द्विज ललन बिहद बावरी मलीना नील पीत मुखभारी प्रबल भयंकरी ॥ १ ॥ कुब्बरी यक्षकी अक्षकी बिना श्रुती खड़ाँखनी कुभाल नाकआलीहू विशालिका । बृहत शरीरी दीर्घमुण्डी लम्बितादि दीर्घओष्ठि खौरई अकेशी गञ्जीहू कुचालिका॥ ग्रीव बारवारी श्रुति लम्ब माथभारी कुचलम्ब ओष्ठ दाढ़ी मुख जम्बुपी करालिका । छोटी मोटी खोटी जोटी ललना लवाहरूपी ठींगनी ठठीं विकृतवदनी विहालिका ॥ २॥ विकराल रूपी बहु बामनीं डरावनींसी मूँटुटी प्रबल्ल अति पीतनेत्र धारिका। क्रोधिका कलाह प्रिया लोह लोखरीसी शूल कूट मुद्गरायुधाहु गीध मृग शारिका ॥ शार्दूली

माहिषि छाग स्यारिसम तुल्य मृगी उष्ट्र घुड़पगी मुखनासा शिरहारिका । गोवृषभ बक काक गिद्ध बानरा खरासी बड़ श्रुती बड़नकी टेढ़नकी बारिका ॥ ३ ॥ बेनकी बिलाही गज शुण्डी हीन नाकवती गजकर्णि एक गोड़ी सौपगी बखानिये । गोपदिक केशपदी बड़शिरी कुचबाढ़ी बड़मुखि युत शृङ्ग एकहथी जानिये ॥ दीर्घाची बृहजिह्वा सो छाग धेनु आननी हु शूकर टकाही वाजि वाजिमुही मानिये । उष्ट्रमुखी गर्दभी हु धूम्रकेशिनी वितुण्डि भनत ललन इमि निशचरी प्रमानिये ॥ ४ ॥ दोहा ॥ खला विवर्णा कायकृश, कृपणतनी परिचण्ड ॥ कुल बिहण्डनी मुख बये, खादर हुकैं कुदण्ड ॥ १ ॥ चौपाई ॥ नग्नवदन शिर केश उघारे । मलिन जीव छींकतै निहारे ॥ अस अस अशकुन लखत नृपाला । आये पुरतट वृन्द कराला ॥ सुनि सुनि मनुज बरात अवाई । भीष्मकपुर महँ परी हहाई ॥ साजि साजि साज मनोहर बाला । वसनाभूषण विविध विशाला ॥ वीथिन वाटन हाटन माहीं । घाटन घुमड़ रहीं चहुँ घाहीं ॥ छजन छैल छत्तन परछाईं । दुलह बरात लखन अतुराईं ॥ नृप चँदेरि दल अग्र ललामा । झण्डि झुण्ड बहु दग्धितलामा ॥ भद्दर भद्दर बच बाजैं त्राजे । अग्निदहे जल भीजित बाजे ॥ प्रविशि नगर बिच प्रबल बराता । कोउ गज रथ हय पिनस सुहाता ॥ राजत वेष नृपन नव भाँती । कोइ तन वसन नगिन कोइ गाती ॥ चतुर्विंशमात्रिककौतुकि छन्द ॥ कोइ पाग पेंच सजाय । शिरसे मुरैठा लाय ॥ तन साजि

जामा कोइ । जामा अजामा सोइ ॥ कोइ अधजरे तन बस्त्र । बाँधे बिपुल विधि अस्त्र ॥ गण अग्र प्यादन केर । असवार अश्वन फेर ॥ तिन्ह पीछ रथन सवार । जिनको न पारावार ॥ दुर्बल कोई बहु मोट । कोइ लम्ब ढिगन अजोट ॥ तनदग्ध कसे लँगोट । कोइ शीश घोटम घोट ॥ बहु हब्शि कारे कोल । होंठस्थुली दृग गोल ॥ पुनि सुहत कस छवि नैन । कछु ललन कहत बनै न ॥ जिमि पियनि पिण्ड तमाल । युग पीत कौड़ि दुचाल ॥ शिर यक न बार लखाय । मनु आये शीश मुड़ाय ॥ घुड़मुहा महिपति न्यार । बहु बन्दरन उनिहार ॥ नकहीन नकचपटाहु । पशु खुरनका कुबराहु ॥ विकलाङ्ग पंगुल मूक । भृगुबांशि सदृश उलूक ॥ शिर गञ्ज कञ्जेकेत । दृग छड़ फुलीन समेत ॥ बहु अन्ध मन्द मतीश । बहु नृप नपुंसक दीश ॥ परिकर अविन्निक भूप । यूथप जनानन तूप ॥ बहु ओष्ठकटा प्रपूर । कनबुचा कैंचा पूर ॥ पोपले अरदा भार । बहु सितत्वचादि तुँदार ॥ बहु खूतरे हकलेहु । बौरा अभ्रू तुतलेहु ॥ १ ॥ दोहा ॥ चण्डूबाज अफीमियाँ, खस धतूर धारक ॥ सुरापान बिषताड़िया, मदकि चरसिहाथक ॥ १ ॥ चौपाई ॥ पुञ्ज गञ्जगुम्मानि गँजेड़ी । भीर भराभर भरे भँगेड़ी ॥ छई पीनसी वात रोगिया । अतीसार संग्रहणि ओगिया ॥ नृप अर्धाङ्गहि लकवा मारे । छजन अकौआ स्यहुआँ वारे ॥ बनरफियाखाजिया दादिया । लरकी कछुइक बवासीरिया ॥ पियर अंबुसम अङ्गन जोई । हैं बहु आमबातिया सोई ॥

बहु मुछमुण्डा दढ़ीजरेला। मनहुँ मलङ्गन मेला हेला ॥ जनहुँ दाहदे शिवरन आये। दाढ़ी मूँछन मुण्ड मुड़ाये ॥ गावें वेश्या समधिन गारी। गमी भये जिमि रोदें नारी ॥ ता पाछे दूल्हा को हाथी। कण कनबुच्च फुफा त्यहि साथी ॥ राजत गजपर ऐंठो ग्वैठो। नील बँदर ढिग जनु गिध बैठो ॥ दोहा ॥ अति विचित्र दोउ की छटा, समता यहि लखि पोढ़ि ॥ राम बनाई जोरि भल, यक अन्धा यककोढ़ि ॥ १ ॥ चौपाई ॥ हँसैं दुलहा लखि सब नर नारी। लरिकन लु लु लु लु कर दइँ तारी ॥ नारि प्रशंसहिं दूलहि काजे। धनि तुव रूप कागहू लाजे। जात लजाय लोखरी स्यारा। आबनूस हो मन्द अपारा ॥ धनि तुव मात ऐस सुत जाये। बड़े पुण्य कर तुमका पाये ॥ धनि रुक्मैया जो तुव सारा। जिन तुम्हरे संग नाता पारा ॥ हमैं परत कछु जच असि हाला। तुम हब्शी कर जाये लाला ॥ सुनि अस वामबैन शिशुपाला। मुख पटओट कियो तत्काला ॥ बहु लरिकनने कीन्ह हँसाई। यह गति लखि रुक्मी रिस खाई ॥ रथ त्यज उतरा दे ललकारा। लैकर साँटी शिशुन प्रहारा ॥ हक्मि अनीति देखि सब नारी। कोस कोस दें गारि उचारी ॥ (रागिनि मांझगौरी त्रैतालमें) पद ॥ बनरा आया विवाहन नीका ॥ (अन्तरा) तन उजियारा मुँह जिस्का कारा जनु जाया हब्शी का ॥ १ ॥ विधि प्रतिकूला भया अनुकूला दियमुख अजब छवीका ॥ २ ॥ धनि उन भाग ऐस सुत पाया बड़ तप पितु जननी का ॥ ३ ॥ दिपत बदन लंगूरी

शोभा वासी वन कजरी का ॥ ४ ॥ कागों की साया स्यारों नताया अंश कि धौं लुखरीका ॥ ५ ॥ धनि दमु ललन सुहद शिशुपाला जन्मा तू कौन घड़ीका ॥ ६ ॥ दादरा—नाटकी धुनिपर ॥ धनि धनि धनि बनरे शिशुपाल तेरी छवि न्यारी परबलिहारी ॥ (अंतरा) श्यामता तेरे मुख जैसी, न कजरामें कारिख तैसी ॥ न देखीसुनी सुरतऐसी। निरख होरहीं दंग नारी ॥ १ ॥ जचैं तोरी मातु छिनरिया घोर। लिया कोइ हबशीसे हित जोर ॥ उसीका अंश दिपै मुख तोर। नगर तोरे वारी वारी ॥ २ ॥ नहीं तैं निज कुलकी अनुहार। न सरवर भीष्मक प्रियपरिवार ॥ नृप ललनकहैं तो कौन प्रकार। हमें यहि सोच पोच भारी ॥ ३ ॥ दादरा ॥ रागिनी बरुवा ॥ बना कैसा कैसा बन्ना मजेदार, देखा सुना न जैसा तैसा लीजे नैन निहार ॥ (अंतरा) मुख लंगूरी पै क्या नूरी आबनूसी बहार। अँग अँग पै लालमा कालमा मुख पै तरेहदार तरेहदार तरेहदार ॥ कैसा कैसा बन्ना मजेदार ॥ १ ॥ प्रभा ललन रुक्मी बड़ भागी तो सों नात सचार। हमहुं सबन कर्मन गति जागी मूर्ति बिलोकि तुम्हार बलिहार बलिहार ॥ कैसा कैसा बन्ना मजेदार ॥ २ ॥ (रागिनी जिला सारंग में) दादरापद ॥ दमघोषतेरे बन्ने पै वारीरे। जिसकी सूरत सबी जग से न्यारीरे ॥ (अंतरा) गोर अंग मुख श्यामता ऐसी लजत कोइलिया कारीरे ॥ जिसकी सूरत सबी जग से न्यारीरे ॥ १ ॥ लोखरि स्यार न कर सक सरवर कागन गति मति हारीरे ॥ जिसकी सूरत

सबी जग से न्यारीरे ॥ २ ॥ आब उदास आबनुस केरी कजर कालिमा धारीरे ॥ जिसकी सूरत सबी जग से न्यारी रे ॥ ३ ॥ अलि अहिनारी धौं अँधियारी कहुँ तुहि क्यहि अनुहारी रे । जिसकी सूरत सबी जग से न्यारीरे ॥ ४ ॥ ऐस ललन बड़ तप कर पैयत नृप बड़ करनी भारीरे॥ जिसकी सूरत सबी जग से न्यारीरे ॥ ५ ॥ दोहा ॥ है अधर्मि अति दुष्टमति, हा यहि किञ्च न ग्लानि ॥ असुरै वरै कुमारिका, निरखत लाभ न हानि ॥ १ ॥ चौपाई ॥ अधमै लाज न कुल की काना । ऋषि वच मेटि भयो अभिमाना ॥ रुक्मिणि गौर वर्ण हंसी सी । देत काग वहि कह भ्यासी सी ॥ कल्पवल्लि कहँ बबुर बिरौना । शशि च राहु कहँ गङ्ग खरौना ॥ यहि विधि पुरजन शोचन पागे । दुलह देखि पछितावन लागे ॥ आये पाण्डव सबन पिछारा । यकसों यक छवि रूप अगारा ॥ राजें रथ पीनस असवारी । कोउ तुरङ्ग गज बिच अम्बारी ॥ नाना अस्त्ररु शस्त्रन धारे । साजे सुन्दर शुभग शृँगारे । अतिही तेजस्वी बलवाना । मनो मोहिनी रूपनिधाना ॥ भूषण वसन वदन रँगराते । महाबाँकुरे वीर जनाते ॥ छकहिं रूप लखि हो चकताई । कहत परस्पर सकल जनाई ॥ यहि बरात बिच भूप कुमारा । अरु सब नीचहि नीच निहारा ॥ दोहा ॥ सकल सराहत लोग पुर लखि पाण्डवन सुगात ॥ धनि पुर गृह जहँ जन्मे ये, धनि इन तातरु मात ॥ १ ॥ चौपाई ॥ सब नर नारी कहैं सकाये । ये इन दुष्टन सँग कस आये ॥ पाण्डव पाछे द्रोणाचार्या

जरासन्ध पुनि कृपा अचार्या ॥ दुर्योधन अरु शकुनी करना । दुःशासन को कम परिकरना ॥ भीष्मपितामह कुन्तल ईशा । औरहु नृपति अमित नगरीशा ॥ भीष्मकपुर छवि निरखि सिहाते । निज निज दशा देखि सकुचाते ॥ सादर रुक्मी करि अगवानी । मुदित मनहिं मन अति अभिमानी ॥ बोलत बकत हँसत बतरावत । पुर बाहर दल सँग भा आवत ॥ बसे दिये बहु बाग बगीचा । टिके बराती तिन्हके बीचा ॥ सकोजाय बहु कान्त निहारे । जग दिखाउ हित हिम्मत धारे ॥ तात मात कछु नहिं अदरावे । निज बल मदमें बहु हुलसावे ॥ इति श्रीरुक्मिणीपाणिग्रहणेकुण्डिनपुर्यांशिशुपालस्यवैवाहिकाऽऽगमनवर्णनोनामाष्टाविंशतितमःसर्गः ॥ २८ ॥

[श्री शुक उवाच] दोहा ॥ आगम लखि शिशुपालको, रुक्मिणि बाढ़ो ताप ॥ असुर अङ्ग खल कुमतिगृह , मग्न रुक्मि मन आप ॥ १ ॥ भइ गद्गद बिन हद कुँवरि, मन वच क्रम हित लाय ॥ हरिहि अराधति अमित विधि, नैनन नीर बहाय ॥ २ ॥ (रागिनी पहाड़ी त्रैतालमें) सवैया ॥ टेर सुनी गजकी जबहीं तबहीं तुम नाँग्यहि पायन धाये । कूबरि दीन वचै भनिकै तुमसे वर पाय सुगात लगाये ॥ हौं ललनै पनते शरणागत नाथ तुम्हैं बनिहैं अपनाये । चूक क्षमा

करिये मम जौन द्रवौ करुणानिधि क्यों बिसराये ॥ १ ॥* चौपाई ॥ रुक्मिणि शोचकरण अति लागी । श्री मनमोहन पद अनुरागी ॥ हाय दैव दुख दारुण छायो । विप्रहु भेज्यो सो नहिं आयो ॥ मोसम त्रिय कोउ नाहिं अभागी । क्यहि अपराध कृष्ण मुहि त्यागी ॥ मो सम नहिं कोउ भाग्यन हेटी । अजहुँ न हरिदर्शन ते भेटी ॥ पूर्वपाप मम उदये भारी । तब तो मोहिं

---

* तदुक्तं श्रीमद्भागवते दशमस्कन्धे ॥ श्लोकः ॥ भीष्मकन्या वरारोहा कांक्षन्त्यागमनं हरेः ॥ प्रत्यापत्तिमपश्यन्तीद्विजस्याचिन्तय त्तदा ॥ १ ॥ अर्थ-भीष्मक की कन्या (कृष्ण भगवान् को) वरनेवाली भगवान् यदुनन्दन हरिजी के आगमन को चाहती हुई व द्विजके प्रत्यागमन को नहीं देखती हुई चिन्ता करने लगी ॥ १ ॥ अहोत्रियामानन्तरित उद्वाहो मेऽल्पराधसः ॥ नागच्छत्यरविन्दाक्षो नाहंवेद्म्यत्र कारणम् ॥ २ ॥ अर्थ-कि अहो मुझ मन्दभाग्यवाली का विवाह तीन पहरके बाद होनेवालाहै और कमलनयन भगवान् आये नहीं हैं मैं नहीं जानती कि क्या कारण हुआ ॥ २ ॥ सोपिनावर्त्ततेद्यापि मत्सन्देहहरो द्विजः ॥ अपि मय्यनवद्यात्मा दृष्ट्वा किञ्चिज्जुगुप्सितम् ॥ मत्पाणिग्रहणेनूनं नायातिहि कृतोद्यमः ॥ ३ ॥ अर्थ-जो कि मेरे सन्देश (विनयपत्र) को लेजानेवाले विप्रदेवजी भी नहीं आये या निष्कलङ्क भगवान् ने मुझमें कुछ कलङ्क देखकर मुझे विवाहने के लिये आनेका उद्यम नहीं किया ॥ ३ ॥ दुर्भगाया न मे धाता नानुकूलो महेश्वरः ॥ देवीवाविमुखा गौरी रुद्राणी गिरिजा सती ॥ ४ ॥ अर्थ-या यदि दुर्भाग्यवाली मुझपर ब्रह्मारुष्टहैं या महेश्वर अनुकूल नहीं हैं वा मुझसे गौरी गिरिजा, सती, नाम्नी अम्बिका जी विमुख (रुष्ट) हैं ॥ ४ ॥ एवं चिन्तयती बाला गोविन्दहृतमानसा । न्यमीलयत कालज्ञा नेत्रेचाश्रुकलाकुले ॥ ५ ॥ अर्थ-इसप्रकार गोविन्दसे हृतमनवाली बाला (रुक्मिणी जी) चिन्ता करती हुई (व मनसे भगवान् के आगमन के कालको न जानती हुई) आंसुवों से पूरित लोचनों को मूंद लेतीभई-अर्थात् भगवान् का हृदयमें ध्यान करने लगी ॥ ५ ॥

ब्रजराज बिसारी ॥ समुझ परत कछु कारण भारी । मोहिं ब्याहन आये न मुरारी ॥ विधि शिव दुर्गा हू प्रतिकूला । मम अघवश नहिं हरि अनुकूला ॥ अस अस करत विचार विचारी । लहचारत छिन छिन लहचारी ॥ छिन आँगन घर बाहर द्वारी । छिन नीचे छिन चढ़त अटारी ॥ मनमोहनकी बाट निहारे । लोचन अँसुअन बहत पनारे ॥ दोहा[1] ॥ निशि निघटी रोदन करत, भीष्मकसुता बहोरि ॥ आलसवश निद्रित भई, तनसुधि रही न थोरि ॥ १ ॥ चौपाई ॥ लख्यो स्वप्न त्यहि समय किशोरी । आन मिले हरि हिय हर्षोरी ॥ पकरि पाणि प्रिय अङ्कहि लीन्हो । पियप्यारी मुख चुम्बन कीन्हो ॥ कत पावत दुख हम चलि आये । श्रीबलदेव सहित गण धाये ॥ पिय परसनके मोद मँझारा । गईं खुल दोउ अँखियाँ उहि बारा ॥ स्वप्न समुझ मन मैं अकुलानी । हा विधि यह कछु जात न जानी ॥ का फल यह स्वप्ना दर्शै है । सत्य सत्य ह्वै है कि न ह्वै है ॥ पै ज्योतिष भाषत यह नीती । सुखद प्रातको स्वप्न सुरीती ॥ यासन हो विश्वास हियाको । करिहै सुफल स्वप्न मन्शाको ॥ सुखद स्वप्न जच राजदुलारी । दान[2] देन रुचि हिय बिच धारी ॥ अशन वसन धन रत्न यथावत । सामा सकल सँजोय तथा-

---

१ दोहा-हो पिय प्यारे सांवरे, कहा करी अनरीत ॥ सोवत में दर्शन दियो जागत में विपरीत ॥ १ ॥

२ यथा श्लोकः-दानमेव परं श्रेष्ठं सर्वपुण्यतमेषु वै ॥ दानेन नश्यते पापं सर्वं दानेन लभ्यते ॥ अर्थ—सब श्रेष्ठ पुण्यों में उत्तम है तो

वन ॥ दोहा ॥ गुप्त दान करती भई, श्री रुक्मिणि त्यहिकाल ॥ विप्र बोलि दीन्हो हरषि, हीरा मोती लाल ॥ १ ॥ सवैया ॥ देतहि दान सुजान द्विजै प्रभु आपहि अङ्गिहिकार कियो। दुख जौन वियोग प्रियातन हो नँदके ललनै सब जान लियो ॥ अति आतुर ह्वै ब्रजराज तबै मन माहिं अभै वरदान दियो। हरि प्रातहि सैन्य सजाय निजै तट कुण्डिन पाथहि जाय पियो॥ १॥ दोहा ॥ यक योजन कुण्डिन निकट, पोखर पेखि पुनीत॥ बलदाऊ हरिसों कह्यो, गयो याम दिन बीत ॥ १ ॥ चौपाई ॥ मज्जन करिये यहि सर माहीं। पुनि चलिहैं कुण्डिनपुरि घाहीं ॥ उतर परे रथते दोउ भाई। द्विजहि न्हवाय जिमाय कन्हाई॥ कह द्विज सों तुम कुंडिन पधारो। दै सन्देश प्रियादुख टारो ॥ लै हरिआज्ञा विप्र सिधावा। बेगहि तट कुण्डिन के आवा ॥ इतै प्रिया वियोग दुखमाती। हरि द्विजागमन हित अकुलाती ॥ कबहूँ महि शकुनौति सँचारै। पिय आवनको शकुन विचारै ॥ है कछु दाल माँहि कहि काला। सोई नहिं आये नँदलाला ॥

केवल एक दान है; दान से सब पाप नष्ट होते हैं और इसीसे सब कुछ प्राप्त होता है ॥ अथ दानमाहात्म्यम् ॥ श्लोकः ॥ अभिगम्य कृते दानं त्रेतायां हूय दीयते ॥ द्वापरे याच्यमानन्तु कलौसेवा प्रकीर्तिता ॥ १ ॥ अभिगम्यतु यद्दानम् सहस्रगुणमुच्यते ॥ आहूय दीयते दानं शतगुणं चोच्यते बुधैः ॥ २ ॥ याच्यमानं तदर्द्धन्तु सेवादानं निरर्थकम् ॥ अर्थ–सतयुगमें ऐसे दान दिया जाताथा कि चलकरके दे आवतेथे त्रेतामें बुलाकर देतेथे द्वापरमें मांगने से देतेथे और अब कलियुग में सेवा कराके देते हैं ॥ १ ॥ जो चलकर के दान दिया जाताहै उसका हजारगुणा फल होताहै बुलाकर देनेसे सौ गुणा फल बुद्धिमानों ने कहा है ॥ २ ॥ मांगने पर देने में पचास गुणा फल होता है व सेवा टहल कराकेदान देना निष्फल है ॥

हरि बिन जीवन जन्म वृथाही। खाय मरूँ विष यह मन चाही ॥ अधरन प्राण आय रहि जावै। छिनछिन माहीं मूर्च्छा धावै॥जोइ द्विज नगरि बीच पगधारा। सोइ रुक्मिणि शुभ शकुन निहारा॥ फरकन लाग जङ्घ भुज नयना। चुरियां दरकन शकुन सुअयना ॥ पुनि रुक्मिणि सगुनौती काढ़ी। सोइ यक रेखा सगुनित बाढ़ी ॥ सोरठा ॥ आयो कछु उर धीर, श्याम श्याम कहिबे लगी॥ हरी प्रिया हरि पीर, दियो दर्श द्विज आनि सोइ ॥ १ ॥ विप्र अशोक विलोक, भई मुदित मन रुक्मिणी ॥ मनु तनु मृतक समोक, दिये प्रान सम्मान पुनि ॥ २ ॥ (रागिनी आसावरी टोंड़ी त्रैताल में) पद ॥ बटोही द्विज आयो आनँद की खबर सुनावन ॥ (अन्तरा) प्रीति प्रतीति दगनसों दरशत सुन्दर रूप सुहायो ॥ १ ॥ जानि परत शुभ घरि तिथि सायत भाग उदय उपजायो॥ २ ॥नन्दललन पिय दरशन माती सो मनुँ दैव दिवायो॥ ३ ॥ चौपाई ॥ जच गइ सिद्ध काय मम शरती। पर शङ्कावश प्रश्न न करती॥ प्रश्न किये जनु काह कहैगो। अमी द्रवै धौं गरल दहैगो॥ मनहुँ वह घरी प्राण प्रियाके। विलसै जा द्विज बिच जिह्वाके॥ कह द्विज तुव पिय राजदुलारी। आये बल दलयुत वनवारी॥ द्विज वच सुनि सुख भा नहिं थोरा। यहिसम कोउ न सहायक मोरा॥ द्विजहि मनहि मन कुँवरि सराहा। उचित दत्त दीबो त्यहि चाहा॥ दगन उठाय चहूँ दिशि देखा। विप्र योग्य धन तिहूँ न पेखा ॥ भइद्विज चरण

शरण शिर नाई। हाथ जोरि बहु विनति सुनाई॥ तुम लायक धन नहिं जगमाहीं। जो दै उऋण होउँ तुम पाहीं॥ [द्विज उवाच] मोहिं प्रिया सर्वश तुम दीन्हा। भा सनाथ हरिदर्शन कीन्हा॥ यहि सम सुखद कौन करतूती। तव करुणा मोहिं मिली बिभूती॥ दोहा॥ आज तईं वहि बंशमें, कोइ द्विज होय न दीन॥ वा सम को बड़ भाग्य ज्यहि, शीश रमा पग दीन॥ १॥

इतिश्रीरुक्मिणीपाणिग्रहणेसद्विजकृष्णागमनवर्णनोनामैकोनत्रिंशत्तमःसर्गः॥ २९॥

[ऋषिरुवाच] चौपाई॥ दै सँदेश द्विज निज गृहगयऊ। सुन्यो भूप हरि आगम भयऊ॥ मुदित मनैमन अति नरपाला। फूलो अङ्ग समाय न भ्वाला॥ हुते भक्त जन जे हरिकेरे। इष्ट मित्र जो हितू घनेरे॥ तिनहिं सबनको बोलि पठायो। प्रफुलित गात भवन पुनि आयो॥ सुबरण थारन वस्तु सजाई। प्रभुपूजन हित मन चित लाई॥ लै गाजा बाजा बहु राजा। चल्यो दरशहित श्रीब्रजराजा॥ हरिचर्चा मग करतो जाई। मनहीं मन निजभाग्य बड़ाई॥ हरिदर्शन करि जिय दुख टरिहौं। दोष क्षमापनहित पग परिहौं॥ प्रथमहिं सुत सन कहा रहा मैं। न्योतो पठय दीजिये श्यामैं॥ वहि हरिकर मम सिख नहिं गाही। अब मोहिं लज्जित होन पराही॥ दोहा॥ पै श्रीहरि जानत सबहि, छिप्यो न उनसों किञ्च॥ जनअघहारक सकलविधि, पर्वत राई रिञ्च॥ १॥ चौपाई॥ जो कछु मम अपराध न पैहैं। तौ प्रभु वेगि दया उर लैहैं॥ पहुँच्यो

सर हरि तट नृपराई। भीष्मक आवत लख्यो कन्हाई॥ सादर उठि हरि बल नृप लीन्हो। आदर भाव सबनको दीन्हो॥ भीष्मक हरि बल पग शिर परशा। विविध यथावत पूजन दरशा॥ भूषण वसन अर्पि बहु जाती। नृपन विनय कहि समय सुहाती॥ [राजोवाच] तुम कृपालु दासन सुखदाई। हमहिं सनाथ कियो यदुराई॥ निरखि श्याम नृप साँचो नेहा। भीष्मकको सराहि कहि एहा॥ [श्री भगवानुवाच] तुम नृप सज्जन कुल अवतारा। भेटे हि जानि परै व्यवहारा॥ सज्जन कुलकी है यह रीती। बिन बुलये आये अति प्रीती॥ भूप कहा हरि मोहिं न लजैये। है न लाग कछु होय क्षमैये॥ दोहा॥ चलिय नाथ मम पुरहि कहँ, धरिय दास पहँ हाथ॥ नगरनिवासिन दरशदै, करिये सबन सनाथ॥ १॥ चौपाई॥ धनि यह समय दिवस धनिधन्या। धनि यह घरि क्षण सुखद अनन्या॥ मैं पावन भा मम कुल पावन। पावन मित्र सबै सुख छावन॥ भा पावन नरगात हमारा। भाग्य सुफल सब बिधिहि निहारा॥ पावन भइ मम सब रजधानी। कूर भूर ज्ञानी से ज्ञानी॥ नाथ चरण अब तव पुर परिहैं। जड़ जङ्गम सबही उद्धरिहैं॥ श्रीहलधर कह सुनिय नृपाला। हमहिं न अन्य काज यहि काला॥ तोर सुतामख दिखबाहि काजू। चलि आये हम नृपसरताजू॥ तव पुर आये अतिसुख पाये। चलहु पीछसों हमहूं आये॥ लै हरि आज्ञा गयो भुआरा। हरि दल साजे सुभग शृंगारा॥

भूषण वसन विशाल सम्हारे । योधन आयुध लीन्ह सुधारे ॥ (राग नायकी कान्हड़ा शूलताल में)घनाक्षरी कवित्त॥ आबिया अबीरी आफताबी अञ्जनी अजीब अब्रई अँगूरी आसमानी अ-मरूदिया। अग्रई अनौआ अकरौटी अम्बई अनूप आगी अलवानी आफसानी अब्ध अलिसया॥ अरुणअंजीरी अर्गजा अपूर्व अम्बरीहु अलबुखारिया अतैवअद्रकी अनारिया। अल्किया अनन्त अंबराभिराम अङ्ग अङ्ग ललन अलमस्त अँगे आयुध अपारिया ॥ १ ॥ (तथा) रूपघनाक्षरी कवित्त ॥ कुन्दनी कपूरिया कसुम्भिया कपासी कल क्योड़ई करीली काकरेजी कञ्जई कराल । कन्नेकी कमरखी कारी कीरी[2] कुल क्योंलई हु कमलगटी कनीजी कस्तूरी काही कमाल ॥ कासनी कसरि काँचकी कचूमरी कसीसी कत्थे कचनारी कब्सई कनेरी कौड़ियाल । किर्मिची करेली किरिमसी कदम्बई ललन कोटिन के कापड़े केशरिया कमीचवाल ॥ २ ॥ (रागकेदाराचारताल में) मनहरणकवित्त ॥ नील पीत सुन्हरा गुलाबी हू सुहाबी हरा लाल काशनी कपूरिया सुरङ्ग आला है । बैंजनी नरिंजी जाफरानिया बदामी वर पिश्तई अँगूरियाहु ललन विशाला है ॥ गुलेनार सुर्मई अबीरी अगरई श्वेत ऊदाहू सहाबी आबी सर्दई रसालाहै । प्याजई ऊनाबी आसमानी फाकताई कोउ साजे काकरेजी साज ठाट बाटवालाहै ॥३॥(राग हमीर चारतालमें)

१-सोनेकाखा रंग । २-तोतई

दण्डक कवित्त ॥ आयुध रसाल गदा ढाल तरवार तोप तीरन कमान पाट नेजाहू छुरी खरी । बाँधे है बन्दूक खड्ग खाँडा औ भुजालि चक्र ललन गहे तमञ्चा संगीन सँगीनरी ॥ बाना बाक बिछुवा कटार तोमरौ तबल दस्ताना नाराच पाणि पास भिण्ड भिन्नरी । बख्तरादि बल्लमहु पट्टिश त्रिशूल सैफ छर्रा छुरुक बर्छी दलता दला अरी ॥४ ॥ दोहा ॥ निज निज साज समाज सब, भरेउ प्रमोद जहाज । राजे महाराजे रजे, गज पीनस रथ बाज ॥१ ॥ (राग एमन कल्याण चारतालमें) मनहरण दण्डक कवित्त ॥ ताजी तिलगानी तुर्किस्तान आरब्बी ईरानी हब्शी हरियाने मन्दराजी फिरगानियाँ ॥ गौड़वी गँधारी गुंडे गर्रे गुजराती अश्व कोटि भुज्ज भोटिया बनोटिया भिवानियाँ ॥ मागधी खँदारी काशमीरिया पँजाबी पुनि बल्लकी बुखारा कच्छी मच्छी खुरासानियाँ। मौरँगी पहाड़ी पीनपानचालि मारवाड़ि जङ्गली पिशौरी सोहैं ललनरँगीनियाँ॥१॥ (राग जैतसामन्त चारताल में) मनहरण दण्डक कवित्त ॥ चंचल चलांक चन्द चाँदनी से चारु चम्क दून दामिनीसे द्युति सोहत सुरङ्ग हैं। तेलिया कुमेद सिर्गा नुक्रई समन्द चन्द सेली दार गर्रे टर्रे जातिकी कुरङ्ग हैं ॥ तामड़ा बदामी मुश्की चीनिया तयूसी धानी सर्दे हर्दे जर्दे पञ्चकल्यानी दबङ्ग हैं । ललन मतङ्ग बल उन्नती उमङ्ग भल कुदत उतङ्ग चाल बायबी तुरङ्ग हैं ॥ २ ॥ (राग गन्धार रूपक ताल में) मनहरण दण्डक कवित्त ॥ काछिया कपूरी कुम्न

नूरिया दुरङ्गे बहु औरब्बी अँगूरी अब्लखी अजीब रङ्गहैं। पिल्लखा सफेदा सब्जा सुर्खा इले-मासिया से कासनी कसीसी किश्मिसी भरे उमङ्ग हैं॥ ललन सुन्हैला सङ्ग लाखी लीलिया सुरूमि सेवती सहाबी सूहा बुल्बुली सुरङ्ग हैं। हिंसत हुमक्कत हिमक्कत हिरक्कत थिरक्कत मुरक्कत कुदक्कत तुरङ्ग हैं॥ ३॥ (राग रायसा कान्हड़ा सादरा शूलताल में) मनहरण दण्डक कवित्त॥ दुल्दुल दमीले से दमीले दामवार दीर्घ दादुरी दिलावर दबङ्ग द्युति दामें हैं। दीनला दुराते दरशाते दमखम्दराज दन्तिया दुदन्त दपट दामिनी दवामें हैं॥ दूधी दूबी दुलराते दौर दुलकी दुनाते दुन्दत दताते दीप्तवान दिव्यतामें हैं। दुम्मन दवामें दुबराइयां दहामें हैं दगन दम्दमामें ललनाई दिखरामें हैं॥ ४॥ दोहा॥ गरुड़ध्वज रमणीक रथ, रत्नजटित कमनीय॥ आच्छादित पाटंबरा, जरकसि काम अतीय॥ १॥ गरुड़नामवर्णनम्॥ गरुत्मान नागान्तकौ, वैनतेय नागारि॥ गरुड़ तार्क्ष्य पन्नगाशन, खगपति सुपरण भारि॥ २॥ माधवयान खगाधिपा, अहिभक्षका खगेश॥ यानध्वजा यहि नामकी, त्यहि रथ रजे ब्रजेश॥ ३॥ चौपाई॥ श्यामल गात मोहिनी मूरत। मोर मुकुट शिर शोभन पूरत॥ भाल सुभाग्य शालि अनहोना॥ तिलक केशरी कजर ढिटोना॥ भ्रुकुटि बंक इन्दीवरनैना। विलसित वशीकरण दृग सैना॥ शुकनासा कपोल अरुणारे। पीक लीक कलकण्ठ विहारे॥ अधरन लखि विद्रुम भा लाजैं।

हीरन पंक्ति दशनछवि छाजैं॥ मन्द हसन मनुँ सुमना बरसैं। मृदु बोलन अमिभ्भर आदरसैं॥ भूषण अँग अँग अमित रँगीले। मणिमाणिक बहु रत्न जड़ीले॥ पीतांबर कटि ऊपर काछे। मनु घनदामिनि लपटी आछे॥ सजधज बनाबने वनवारी। लखि छवि सुरत्रिय मुनि बलिहारी॥ रचि रचि वनमाला वैजन्ती। गुहि गुहि कलित कञ्ज छविवन्ती॥ सौरभपुष्पहार सुखमातीं। बिहँसि बिहँसि हरिहृदि पहिरातीं॥ कमलनामवर्णनम् (रागिनी सोहिनी चारताल में) मनहरण दण्डक कवित्त॥ पद्महू पाथोज पङ्करुह कञ्ज पुण्डरीक पङ्कज कैरव कुशेशयहू तदन्तरा। कोकनद कमलबिस प्रसून रक्तोत्पल जलजाता जलजात जलज राजीवरा॥ वारिज नीरज नलिनाम्बुजहू अम्भोरुह ललन अम्भोज अरविन्द चन्द्रअपरा। सरसीरुहा सरोरुहा सहस शतपत्र सरसिज औ सरोज जानिये इन्दीवरा॥ १॥ सोरठा॥ अस अस कमलन माल, सह हित सविधि बनाय कै॥ पहिरावैं सुरबाल, श्रीगिरवरधरलालगल॥ १॥ दोहा॥ तालध्वज रथपै सुहैं, गौर वर्ण बलराम॥ रोम रोम छवि फव निरखि, लजहिं कोटि रतिकाम॥ १॥ (राग एमन कल्याण चारताल में) मनहरण दण्डक कवित्त॥ मदन कन्दर्प काम मन्मथ मनोज मार मीनकेतु सुस्मर औ अनंग बखानिये। पञ्चशर प्रद्युम्नरुदर्पक हू शम्बरारि मनसिज अनन्यज रतिपति मानिये॥ मकर ध्वजारु ब्रह्मसू हु कुसुमेषु पुनि आत्मभू ह मैन पुष्पधनुवाँ प्रमानिये। विश्वकेतु

मनोभव कामदेव श्री ललन राम श्यामभापै जलकेतु भा न आनिये ॥ १ ॥ दोहा ॥ मनज मार भूतेशरिपु, मनभव अरु मनजात ॥ रोम रोम बल प्रभा पै, कोटि काम बलि जात ॥ १ ॥ सोरठा ॥ नीक वसन तन नील, छटा निराली सुखद अति ॥ श्री बल सागर शील, लखिछवि मोहित देव मुनि ॥ १ ॥ जय जयकार उचारि, भनैं विमल दोउभ्रात यश ॥ दै अशीस नर नारि, डारहिं महि तृण तोरि कर ॥ २ ॥ (रागिनी परज रूपकतालमें) पद ॥ जयति जय जय जयति जय जय वीर श्री हारिहलधरे ॥ (अन्तरा) बलदाऊ श्रीबलभद्र बल अच्युताग्रज तालाङ्करे ॥ राम रेवतिरमण रोहिणिसूनु श्री बलदेवरे ॥ १ ॥ कामपाल प्रलम्ब अरि सङ्कर्षणो छवि सागरे ॥ मुशली हली हलायुधो नीलाम्बरे मनसुमिररे ॥ २ ॥ अहो कालिन्दी भेदने सीरपाणि जगादरे ॥ मन्दमते सुमिर अहर्निशि नन्द ललनाग्रज अरे ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ बहुविधि हरिसमाज सबसाजे । बाजहिं विविध मनोहर बाजे ॥ नभ दुन्दुभि धुनि भेरि नगारा । शङ्ख तूर तासा घरियारा ॥ अ नँद बधावे सुरत्रिय गातीं । मनमोहन श्रीबलहि रिझातीं ॥ सावधान भा बल दल घोरा । हरि आवनको भा चहुं शोरा ॥ नगरनिवासिन नगर सजावा । रत्नजड़ित वस्त्रन चहुं छावा ॥ भाँति भाँतिके चित्र अनोखे । काँचिक साज सजे अति चोखे ॥ परिकर मुकुरनके चहुंओरी । हाँडिन झाड़ झबा द्युति जोरी ॥ दिपौं दिपौं सब करहि बजारा । मनहुँ मयङ्कवृन्द उजियारा ॥

छतन छतन पुरि भामिनि छाईं । हरिदर्शन कारण अतुराईं ॥ सजि पट भूषण जेहर तेहर । वृद्धा नवल कुमारी सुन्दर ॥ दोहा ॥ हाट अटारिन वीथिनै, विहरैं रूप सजाय ॥ यकसों यक छवि आगरी, नगर नारिसमुदाय ॥ १ ॥ (रागिनी अल्हैयाचारतालमें) मनहरण दण्डक कवित्त ॥ आईं अलमस्त अङ्ग आँगियां अनूठी आँगि अरुण अँगुरिया अंजीरीं अंबईसी हैं । अँबरी अबीरी अमरूदी अर्गजी अनूप आदरे अनारी अकरोटी अग्रईसी हैं ॥ अर्ध अलवानी आसमानी अलूसिया अजीव आबी आफताबी अंजनी अबरईसीहैं । अलंकृत ललनाभिराम आभरण अस अप्सरा अनोखी अलगाँय अतिहीसी हैं ॥ १ ॥ (राग जोगिया रूपकतालमें) म० ह० द० कवित्त ॥ इन्दुमुखि इन्दुतन इन्दुभाल ईंगुरी सु इतरैली इतरी इको इकाल कावली । इमृतसरी इमारती इजार इच्छावत ईरानी इजारबंद ईमली इमासली ॥ इन्दीवराक्षी ललन इष्टितहु इलमदार इक्षुवदनी हू इलेमासियाम्बरामली । ईखी ईसपातिया इलैची ईंटियारी इमि इस्तेमालिया इमान इन्द्राणिनसी भली ॥ २ ॥ (राग हिण्डोल धम्मार तालमें) म० ह० द० कवित्त ॥ उत्तू दार ऊदिया उरोजनी उरोजन पै उन्नती उमङ्गता उमङ्गती उरातरी । उल्लहे उरूज उमराई उमदाई उग उभ्र उभ्र उम्भरान उत्तमोजियाररी ॥ उदयति उरदी उल्लाहनी उनाबी उग्र उलकापुरीक ऊजनी उसूल उत्तरी । उज्ज्वल उजागरीक उर्वशी सी भा उन्मत्त

ललना उलहैती उम्र ऊपर उदार री॥ ३ ॥ (रागिनी मुलतानी शूल तालमें) म० ह० द० कवित्त ॥ कुमकुम कलईक कुन्दन कनक कलश कञ्ज कै धौं कामदेव काया कुच कान्तसी। कञ्चुकी कपूरी क्युलई किनारदार कोई कञ्जई कमखी कत्थई करेलि कीकसी॥ किर्मिची कपासी कबसई कुसूमि कुन्दनीहु किशिमसी कसीसी कारि काहिया कदम्बसी। कामिनी ललन कोई कोमल करै कथन कामकी कलाको करे डारतीं कुदरसी॥ ४ ॥ (राग मालकोष शूलताल में) म० ह० द० कवित्त ॥ खैरई खुलासा खम्सई खजूरिया खरेति खासे खामसूई खुले खप्रई खँवा रिया। खाकी खीली खर्बुजई खोपरई खिर्नियां हु खीमखापी खारूयेक खाकसी खरखासिया॥ खञ्जनी खसीस खीरी खन्ती खीरिया खमीरी खजूलई खलीतेदार खुर्मई खड़ीलिया। खिल्खि लातीं ललना खुशी से खुस रंग खूबै खींच खींच खड़ी खरी खिलतैं खुशहालिया॥५॥(रागिनी धनाश्री चारताल में) मनहरण दंडक कवित्त ॥ गुञ्जई गुलाबी गुलेखैरा गुलेहिनादिक गुल्दुपाहरी गलेसप्तालुआ गिरंटई। गेहुँआदि गेरुआर गुलेचीनियां गुमील गन्दुमी गुलेहजारी गुल्शबो गुलतुर्रई॥ गुल्फिरङ्ग गुलेनार गोलई गंधकि गुलाबांसिया गोमई गाजरी गहीर गङ्गई ॥ गन्नई गँभीररङ्ग गेंदई गसे सुगात ललन गुपाल गुनगाय गाजें गर्भई ॥ ६ ॥ (राग नायकी कान्हरा शूलतालमें) मनहरण दंडक कवित्त ॥ गोरे गोरे गातनु गुराई गहिरी गँभीर

गोल गोल गालन गुलाबन गती गई ॥ गोरी गुलबदन गजब गजगामिनी गहीर गरभील गुण गूढ़ ग्राम गुनई ॥ गोलमोल गोरोदर गुलैगुली गादी गुल गर गुलूबन्द गुञ्ज गयन्दी गोहरई। गहे गोदललन गिरएटपट गात गसे गएडेदार गोटा गुठे गजरई गुञ्जई ॥ ७ ॥ (राग कान्हरा झपताल में) जलहरण दंडक कवित्त॥ घोर घोर घांघरे घिरील घुघचील घने घुटन्ना घुमारदार घिरित घुमाऊ घन। घुनुक घुनुक घुघुरू घमोरैं घरिटक्षुद्र घनन घनन घानानाना घानानानानन॥ घुँघुटा घिरात घनघोरिया घमएडघर घुसीं घुँघुआरी घातैं घरनी अजगरन। घाले ललनांग घबरान घातकी घमरड घोटन घुटे घमील घमसन घेतलन॥ ८॥ (राग बघेश्वरीकान्हरा आड़ा चौताल में) मनहरण दंडक कवित्त ॥ चुन्नई चकोतरई चम्पई चमङ्कवत चूनई चुनरियांहूं चन्दनी चुभीलियां। चीकने चनाकी चीर चिञ्चिनीक चोरैं चिंतै चन्द्र चांदनीहूँसी चादरियां चुहीलियां ॥ चांवली चिरायतई चूरिया चमाकेदार चारखन चाकल चौतनियां चहीलियां। चम्बूली चिनाबी चुस्त चोलियांललन चुभी चञ्चल चलांक चारु चतुरा चर्बीलियां॥ ९ ॥ (राग दरबारी कान्हरा फाक्ता ताल में) सवैया॥ छहरैं छितपै ललनै पनकी छबि छाजतियां छहरायछला छइ॥ छनकैंरि छुये छहँ छोर छड़ीलिहि छर्लछटील छजाति

१—मोती मुक्ता।

छकागइ ॥ छमकैरि छमाक्यहुदार छड़ा छड़ छागलियांहुं छजीलि छलापइ॥ छपकाहु छलैं छनकील छलाछन छैल छमङ्क छमङ्क छटा नइ ॥ १० ॥ (राग जंगला चौताल में) मनहरण दंडकं कवित्त॥ जोगिया जचील जाफरानी जामुनी जमङ्क जालई जँभीरिया जंगाली जामूदानियां । जुगनई जरील जरबख्तिया जुलूम जोते जर्कसी जुलूसी जाली जौजई जुगानियां ॥ जूफई जमाकेदार जोंकई जमीनी जनु जामी जीरकी जहूर जोमती जवानियां । ज्योतिकी जुन्हाई जानो जाम नीश जग्मगात ललना जमीली जोश जोबन जुरानियां ॥ ११ ॥ (रागिनी बरुआ झपतालमें) मनहरण दंडक कवित्त ॥ झांझरी झरोखे झुकि झूम झूम झाँक झाँक ललन झकावतीं झमक झिझकीलीसी । झीनो झीनो झकाझक्क झालरो झगा झमङ्क झुलनी झमाकेदार झिलमिलि झक्कीलीसी॥ झाँझ झनकारदार झनक झखोरा सम झोरती झुमाइ झोंक झुंझुनी झँपीलीसी। झुलैझुली झुमड़ झूमका झुलन्त झाँकी झक झला झल झला झली झरना झरीली सी ॥१२॥ (रागिनी पीलू इकतालमें) म० ह० दं० कवित्त ॥ झलझल झलक्कीं झींद झन्नाकी झमाकेदार झामई झमङ्क झक झड़दार झाउकी । टूली टसरीक टापटी ठुठूत्र ठप्पेदार डोरियई ढाँका पाटनीढुलीढराउकी ॥ ललनदुधीलि दूबई दरेशदार दारमी दमङ्कैं दाखियाहु दम्दमाउकी ॥

१ – पैजनी । २ – पात ।

धारे धूपछाहीं धोती धानियाँ धमार धर धीहें धीरवन्त धूम धामी धक्धकाउकी ॥ १३ ॥ (रागिनी धनाश्री चारतालमें) म० ह० दं० कवित्त ॥ नर्गिसी नखूनई नई नई नवावी नेति नैनसुखी नैनू नीमई नयाब नीलकी । नोखी नोखी नीली नीप नारिंजी निराली नव नूतनी नुकीली नीक नेहे नजरीलकी ॥ पीयरी पलाशी पापुलैनियाँ पतङ्गी पुनि पोहिया पियाजी पाक पानड़ी पिपीलकी । पन्नई पुदीनिकी पिंडोरि पिश्तई ललन पुःखराजी पञ्चरङ्गि पटका पुरील की ॥ १४ ॥ (रागिनी गौरी चारतालमें) म० ह० दं० कवित्त ॥ फलालैनी फुलबरीक फरासीसी फाकताई फालसई फावती फवन फहरानसी ॥ बैंजनी विशाल बूँदवार बदलाई वर बादली बदामिया बसन्तीहू बखानसी ॥ भैंगई भभीरी भड़कीली भड़कीली भीम भोलीभाली भली भली ललना भावानसी । मूंगई मँजीठी मुलतानियाँ मयूरपङ्खि मासिया मलीदी मखतूलिया महानसी ॥ १५ ॥ (रागिनी मुल्तानी चारताल में) म० ह० दं० कवित्त ॥ तीखे तीखे ताखी तीव्र तूसिया तमाली तिली ताम्बूलिया तोंबई तारीफिहू तलीसिया । तोरई तुरङ्गी तूनी तीतुरी तयूसी तूली तोफा तिलिस्माती तासबादलाई तूतिया ॥ तेजपाती ताँबईक तीतुली तिलोरपँखी तामड़ई तेवरा तमङ्कैं तिम तेलिया । ललना तरङ्ग तुली तोरतीं त्रिताली तानैं तेजसी तपस्वी तीव्रतर तरुणी तिया ॥ १६ ॥ दोहा ॥ माठपिलामी मलमली, मञ्जु मरीन मटेल ॥ मोमी

माँजी मानकी, मुंगिमोतिया मेल ॥ १ ॥ रोरि रुपहली रोचकी, रावी रङ्ग रँगेर ॥ ललन लहरिया लीलई, लाखी लाल लुँगेर ॥ २ ॥ हरित हजारी हिर्मिजी, हरताली हरदेल ॥ हैमी हुरमतिया हिये, हीरन हार हमेल ॥ ३ ॥ (राग केदारा चारतालमें) म० ह० दं० कवित्त ॥ साज स्यातरी सफेद सोसनी सुन्हैरी सब्ज सर्दई सिंगर्फी सुर्ख सोनई सुझालुकी । सेवती सिंदूरी सहतूती सुही सन्तरई सन्दली सहाबी सुलेमानिहू सप्तालुकी ॥ सीपिकी सिराजी सर्वतीसो स्याह सुन्दरसी सूसी साठनी सुरङ्ग सोमई सुढालुकी । सलमकी सितारी सारी सोहैं सिंगारवारी ललन सुहेलि सोहैं सागरी सुचालुकी ॥ १ ॥ चौपाई ॥ निज निज शोभायुत कामिनियां । मानहुँ दम दमायँ दामिनियां ॥ हरि दर्शन अभिलाषी सखियां । निमिषरहित तकरहिं मग अखियां ॥ कोउ इत उत बिलोकि सक रहहीं । चकित चित्रवत् कोउ झक रहहीं ॥ उचक उचक झुक झुक मुर दुर कोउ । श्रुति दै भइ सम ध्यान बहुरि कोउ ॥ पग अँगुष्ठ बल ह्वै कोउ ठाढ़ीं । दग उठाय निरखैं हित बाढ़ीं ॥ कोउ कर अँगुरि उठाय सयानी । दिखरावति नभ धूर उड़ानी ॥ कहहिं परस्पर सकल जनाई । वह लखु प्रभुदल आवत धाई ॥ फहरैं प्रबल पताका भारी । समुझ परत सोइ श्याम सवारी ॥ आवत श्रुति कछु बज बाद्यादिक । होत अलाप नाद संवादिक ॥ यहि विधि सकल जनावहिं प्रीती । श्याम सनेह सनीं सब रीती ॥ दोहा ॥ जय जयकार चहूँ दिशा,

परी भूप पुरबीच ॥ भीष्मक प्रभा प्रफुल्ल तनु, नहिं दुख क्यहू नगीच ॥ १ ॥ चौपाई ॥ गृह गृह मङ्गल चारु बधाई । कोटिन वाद्य बजैं सुखदाई ॥ [श्रीशुक उवाच] आये जे नृप श्याम सँगाती । कहौंसो निखिल बखान बराती ॥ देव मनुज सुर वधू नदीसुर । मुनि सागर ग्रह शक्र महीसुर ॥ विष्णु शेष गिरि पर्वत आदी । श्रुति स्मृतिरु सुशास्त्र दुर्गादी ॥ पुनि पुराण उप पुराण जोऊ । कर्म्म धर्म्म तिहुं तीरथ सोऊ ॥ प्रथम समाज अग्र सुर वामा । सजे शृंगार सुगन्ध ललामा ॥ ⊛॥ मदन मतङ्ग सुअङ्ग सुहाईं । गौर सुश्याम वर्ण छबिछाईं ॥ बिलसहिं विविध नृत्यगति लातीं । विमल विनोद बधाई गातीं ॥ उच्च स्वरन अलाप अतिनीका । आरोहण अवरोहण हीका ॥ सुभग सुरीले बैननसेतीं । देव मनुज मुनिमन हरलेतीं ॥ (रागकेदारा चारताल में) म० ह० दं० कवित्त ॥ रम्भा रमणीया उग्र उर्वशी तिलोत्तमा हु अप्सरा अनोखी दल अग्रित अपारसी । मेनका मनोजनी सुकेशी सुखवेशी शुठि प्राणदुरि घृताचीहु नृत्यतीं सुनारि सी ॥ मञ्जल मँझेरि गजगामिनी गँभीर गण मैना मानवारिका सुबैनी सुकुमारिसी । प्रमुद मातङ्गिना सी मञ्जु घोषादिक प्रिया ललना लसैती सो अलापतीं सुखारिसी ॥ १ ॥ सोरठा ॥ गण गन्धर्व अथाह

⊛ —(राग मलार चारताल में) म० ह० दं० कवित्त—पुष्प गन्ध नामकी सो परिमलकी पुनीत कस्तूरी इत्यादि गन्ध आमोदहि जानिये । आवै गन्ध दूरहीते ताहि समाकर्षी कहैं अतीगन्ध नाम सुरभिः सुगन्ध मानिये ॥ गन्ध करपूर ताम्बुलादिक शोधक मुख त्यहि को आमोदी मुख बासना बखानिये । इतरारगजा गन्ध अष्टगन्धानन्य आदि ललन सुगन्ध एती श्रेष्ठी प्रमानिये ॥

चरितन डोम डफालियनु ॥ विरचैं गति अवगाह, गानतान स्वर तालले ॥ १ ॥ दोहा ॥ हहा तुरङ्गवदन हुहू, मयु किन्नर गन्धर्व ॥ आगमने किंपुरुषगण, तोमर तुम्बुरु सर्व ॥ १ ॥ सोरठा॥ सुरपतिधाम समान, भीष्मकपुरी अनन्दसो ॥ मनु सुख जनम्यो आन, कुण्डिन करन विलास हित ॥ १ ॥ तेंतिस कोटिक देव, भच्च अमीरस नालमें ॥ निज निज यान अथेव, कोउ मनमौजि पदाति बहु ॥ २ ॥ दोहा ॥ सुधा अमीरस अमृत अमि, संजीवन पीयूष ॥ अमर करा आयुषधरा, देवन पान अदूष ॥ १ ॥ देवनामानि वर्णनम् [अथ] (राग सारङ्ग चारतालमें) घनाचरी कवित्त ॥ निर्ज्जर सुरौ अमर विविधहु सुमनाह त्रिदिशि सुपर्व्वा और दारुण दिवौका से । त्रिदिवेश दिविषद् अदितिनन्दन बीर आदित्य अखिल सोहैं अस्वप्न सुदेवा से ॥ ऋभुलेख आमर्त्य आदित्तेयू अमृतान्धा से परम प्रवीन ऋतुभुक हू मुखिया से । गीर्व्वाण बर्हिमुखसुदानवारि वृन्दारक भले भले भूर देव ललन अलावा से ॥ १ ॥ (रागिनी अमनी चारताल में ॥) घनाचरी कवित्त ॥ प्रमुदित आदित्य तुषित वसु आभास्वर महाराजि कहुँ विश्व अनिलौ अपारी हैं । सोहैं दल दैवत समाज सम साध्य रुद्र अजर अमर राजे सबही प्रकारी हैं ॥ वृन्द सुर स्याने नन्दललन के गुण माने विद्याधर किन्नर सङ्गीत सिद्ध भारी हैं । गुह्यक गन्धर्व सर्व अर्व खर्व चर्वचर्व पूरित पिशाच भूत रच्च यच्च भारी हैं ॥२॥ दोहा ॥ देव कोटि तेंतीसहू, निज

निज यान सवार ॥ तिन्ह वाहन वर्णत कछुक, सुन्दर सूक्ष्म प्रकार ॥ १ (रागिनीखम्माच चारतालमें) म० ह० द० कवित्त ॥ कोकिला करारी कुर्री काकातुआ कीर काक कौडिल कटाई कटफूर्वा किनियानपै । कांकुज्ञ कुरङ्गी करियलियाकरारी कल कंजरीककेर कैली कौंकड़ा कुजानपै ॥ कमुँही कुलङ्ग कङ्कनास कुंजलौ कपोत कल्पुञ्री कुम्हारी ककरील कर्कशानपै । कहलक कन्दुल कराकुल कर्वानकादि ललन कलोलैं कोई कूमरी कँधानपै ॥३॥ (तथा) म० ह० कवित्त ॥ खञ्जन विराजैं कोई खूसटपै राजैं खण्डरंगी औ खन्तैल चढ़े खुट्खुट बढ़ीनपै । खासरपै खाँपरपै खजुरिहा खाँखरपै खिलि वलात खिलहापै खँगित खीरीनपै ॥ खैरुईपै खमखम खमाखम खमाखम से खुर्दनुखिया खतंगखुरी खाकसीनपै । खाकी खुश रंग खिलैं खेलैं खूब खूब खेल खुशहाल ललनहु देवता खुशीनपै ॥ ४ ॥ (रागिनी भूपाली चारतालमें) म० ह० द० कवित्त ॥ गए गउगाई गोरखा गरिल गौरियान गिद्ध गिरगिटी गूना गुंजरी गहागरी । गुलई गुँदीला गारादिल गुलबदनादीगाहे गिल गिल गरदनियाँ गहवरी ॥ घाघर घुरीला घसियारी घमछई घामा घुग्घू घुनखावा घन्नई घरीब घोररी । घुड़हा घेतल घोसलीक घीसुँघी घनेहि घनश्याम ललन घोषे घरी घरी घरी ॥ ५ ॥ (रागिनी झँझौटी त्रैताल में) सवैया ॥ चकवा चकई चिल्हर चिरई चढ़ चाल चकोरन चाँगलिया । चिमगादर चिर्कुट चर्ज चपे चुचुकारहिं चंगुलहू चिरिया ॥ चँदरा

चिनिश्रादि चँडूल चढ़े चखवैं चट चाबुक चिर्भिखिया । चितचोर चितौन चितै चुरवैं ललनौ चतुरादिक चाकरिया ॥ ६ ॥ (रागिनी भँझौटी चारताल में) जल ह० दं० कवित्त ॥ छाँकर छजोहैं छैल छपका छबीले छज छाँगुली छिकूई छुरिनखी छिन्न पछीपर । जुम्मस जोमित जल-कुक्कुट जलासिन्धुन जल्लमुरगाबी जुगुनुई जुर्रा जल्लगर ॥ झीने झींगुरी झँगार झमकैं झगा झमक्क झीनी झीनी झालरैं झखोरती झला झलर । द्विग्यौं टिकुई टटीरी टिपरैली टिटिहरी टीप टीप टीपित ललन टेर टेर हर ॥ ७ ॥ (रागिनी सोहिनी शूलतालमें) म० ह० दं० कवित्त ॥ ठुमुक ठुमुक ठनकत ठये ठीक ठीक ठोकर ठकत ठर ठहर ठहरकै । ठिकरई ठेंगरीन ठाठ ठठकै ठठैत ठनक ठनक ठनकैं ठुनुक ठरकै ॥ डमरूली डोमा डाँज डुड़पुँछी डेंगरीन डोलें डौल डाल डटे डटाडट डरकै । डाँगरे न डाँगरे डिगै न डगडग डारे डोरीही डाकोरजीसों ललन पियरकै ॥ ८ ॥ (राग देश मल्लार चारताल में) ज० ह० दं० कवित्त ॥ तीतुर ततेर तारु तितिलिखी तेंदुश्रान तोतन तिलोरी तूती त्रियन तल बुड़ीनु । तर्किल तिन्कूई तूस तिन्दुइन तर्कुलीन ताउन तमङ्कत तुरङ्ग तीव्र तुरक्कीनु ॥ दहिंगलौ दूबचरा दोवा दविला दमील दुमचि-रिन दीप्तवान दादुरीन दुलहीनु । दिल्दिलाई दुम्कनीन दुल्दुलान दीपैं देव देवकी ललन दुल रावें दै दिलावरीनु ॥ ९ ॥ (राग शंकरा चारतालमें) म० ह० दं० कवित्त ॥ थिरक थिरक थिर

कत थिरकी ललन थरर थरर थोम्भ थिर्थुनङ्ग थाँभियां । दिव्य दिव्य दिग्गज दुदन्त दन्तिया द-राज देवदल दामिनि ते दूगुण दिपादियां ॥ धूतीयां धमकैं धाय धापीहू धपाहैं धर धुबयन धाकैं हैं धड़ाके धूम धामियां । नीलकण्ठ नकुलीन नील बांदरान नाक नकुचा निकूही नाग नेहैं निग रानियां ॥ १० ॥ (रागिनी रामकली चारतालमें) म० ह० दं० कवित्त ॥ पीलक परेवा पाखी पन्डुब्बी पतारी पाहिं पिडुखी पतेरा पाढ़ा पेपन पयामसे । पिलख पतङ्गा पतियाना पिदकी पिपील पाण्डूक प्रपुञ्ज प्रभु प्रणवैं प्रणामसे ॥ फुल्सुँघी फलेना फूलमुर्ग फुदकून फरे फीलमुर्ग फाकतान फाँदते फड़ामसे । फुलालैन फुल्वरीक फरासीसी फर्दपट फतुई फवेल फवें ललनाभिरामसे ॥ ११ ॥ (रागिनी आसावरी चारतालमें) म० ह० दं० कवित्त ॥ बुलबुल बिहङ्गम बृन्ताकी बवरीला बाज बहिरी बटेर बया बबई बवालनौ । बैगमा बुँदीला बोधि बेसरा बिलंगनीहुं बावर बगैली बनमुर्ग बगरेलनौ ॥ बटई बिलाही बरकुल बैजना ललन बन्थर बिसाँतिन बकासर बंजूलनौ । बीना बिजहा बुँटही बरटान बदकादि बेहना बाइसा बासा बासैं बरगेलनौ ॥ १२ ॥ (रागिनी जोगिया चारतालमें) म० ह० दं० कवित्त ॥ बाँकुरे बराहसिंह बाघन बलीन बृन्द बिज्जुन बहूत बैठ बीर बकरानपै । बाँदरा बृकोदरानु बली वृन्द बनठन बिहरैं बराहपै बिलारन ब्या-लानपै ॥ बीछी बिषवारे बिषखापरानु बिकराल बिल्लिन बगौधी बनमानुष बखानपै । वृषन

बिराजैं बाजे बिमलैं ललन बाजे वर्ण वर्ण बाहनौं विहारते विमान पै ॥ १३ ॥ (रागिनी अल-ल्हेश्वरी टोड़ी चारतालमें) म० ह० दं० कवित्त ॥ मोरी मोर मुनियां मराल मैना मैनी मान-पुष्करी मुरग मगचिकनी महान हैं । महरी मक्राकुलहू मूंगिया महूक मुद मुरमुरी मुसरिहा माँडूक मँडरान हैं ॥ मालिनी मयूर पङ्खी मुरुक मनोहरीन मुँगही महोवर मुचीला मटकुलान हैं । मांगली मन्हूसी मुरगाबियां ममाख मञ्जु ललन महत्त्व मोद माधोपै मुहान हैं ॥ १४ ॥ (राग विहाग चारतालमें) म० ह० दं० कवित्त ॥ लावा लमदुम्मी लाल लाल लाल लाल-सर लाखों लहहोरा लहबुड़िया लसालसे । ललगन्दी लग्घड़ादि लालसुआ लीलकण्ठ लि-टुआ लँदूरा औ लवोराहू ललाखसे ॥ रव रव राजांगुली रामचिरई रबीना रूरू रयदासी रत-बकाआँका हूरसे । रैगशादि रतमासी रोमपंखी राधावरी राजाजी ललन राम राम रटलाग से ॥ १५ ॥ (राग चन्द्रकोश चारताल में) म० ह० दं० कवित्त ॥ संकुली सुगन्धिका सुनारी सैसना संबल सनकुनी सनकन सूरी स्याह तीतरा । सौंला सुरभृङ्गी सोनचिरई सुआ सफेद स्युला सनपिड़की सुआ सुवाक सुन्दरा ॥ सुठि सुकुमारी सुरखाब सो सकरखोर सीलबाज शुतर्मुर्ग श्वेत श्याम चिल्हरा । सीनेबाज सारस सीमुर्ग सिकरा समन श्यामा श्यामही ललन सुमिरैं सुखागरा ॥ १६ ॥ (राग कलाँगड़ा रूपक तालमें) सवैया ॥ हंस हँसैं हिसकैं हिसकन्न

हबू हबुआयँ हजारनहीं । होरिल हेरि हजारहु दास्तह हुदहुद हास्य हमीरन हीं ॥ होइ हितै ललनेश हरीहर हर्दिय हूकन हुकरहीं । हेल हुकैं हलुआँगि हरेक हुलासनहीं हरषैं हरहीं ॥१७॥ सोरठा ॥ जगत पितामह स्वामि, आगमने आनँद भरे ॥ सुमिरत श्री घनश्याम, आयउ शिर नायउ सबनु ॥ १ ॥ [अथ विधिनामानिवर्णनम्] (राग दरबारी कान्हरा चारतालमें) ज० ह० दं० कवित्त ॥ आत्मभू विधाता ब्रह्मा विश्वसृज वेधा विधि विधना विरञ्चि वर चतुरमुखै नमामि । स्वयम्भू कि धौं द्रुहिण अब्जयोनि वेदानन कमलासनादि स्रष्टा सुरज्येष्ठ बुद्धिधामि ॥ अजहू हिरण्यगर्भा विष्णुनाभिजा लोकेश सिर्धना द्रुनी को नीको पिता शारदाभिरामि । सुजकहु करतार प्रजापति परमेष्ठी नेति नेति ललन ऐसे पितामहै प्रणामि ॥ १ ॥ (रागिनी झँझौटी त्रैतालमें) सवैया ॥ जैति सुशील सुभावनिधे सुठि साँच सनेहिन गेहि उजागर । ज्ञान गलीयन गूढ़ गती बसि धर्म्म धुरन्धर कर्म्म प्रभागर ॥ जे गुण गाथ सुहाथ मनो ललनेश बुधीश महान दयाधर । जै जनजीवननाथप्रभू नित भक्तनु भुक्ति सुमुक्ति प्रदावर ॥२॥ दोहा ॥ मोक्षधाम वैकुण्ठ पति, श्री विष्णू भगवान ॥ आवाहन त्यहि विलसयउ श्रीपति परम सुजान ॥१॥ [अथ विष्णु नामानि वर्णनम्] (रागिनी झँझौटी तीन तालमें) भजन ॥ वनमाली विश्वम्भर विष्णू विष्टरश्रवा वासुदेवा हो ॥ (अन्तरा) बलिध्वंसी विधु व्राटरूप सुखदाता वीर विश्व कृपाहो ॥ १ ॥ विष्वक्सेन

वैकुण्ठविलासी विमलबुधा विमलावरणा हो ॥ २ ॥ स्वंभूसो श्रीपति शुभ्रशार्ङ्गी श्रीवत्सलाञ्छन सुदर्शना हो ॥३॥ नारायण नरकान्तक नरहरि कैटभजितहु कन्त कमला हो ॥ ४ ॥ हर्षीकेश हिर ण्यगर्भेश्वर हरी हमेश हानि हरताहो ॥ ५ ॥ पुण्डरीकाक्ष पुराणपुरुष पीतांबर पद्मनाभ करताहो ॥ ६ ॥ पाञ्चजन्य प्रिय शङ्ख प्रबल ध्वनि चतुर्भुजा शुभशस्त्रधराहो ॥ ७ ॥ अच्युत अलख अद्वितीय अधोक्षज गरुड़ध्वज पूजित अमराहो ॥ ८ ॥ यज्ञ पुरुष जलशायी जनार्दन जगजीवन यशसिन्धु यदा हो ॥ ९ ॥ सुमति उपेन्द्रावरज चक्रधर चक्रपाणि चिन्तामणिया हो ॥ १० ॥ तीव्र त्रिविक्रम द्रवहु ललन पहँ तारहु तृष्णा तमक तपाहो ॥ ११ ॥ दोहा ॥ श्रीवैष्णव कुल मुकुटमणि, नन्दी वाहनशम्भु ॥ भैरव भूत पिशाच युत, राजैं अरिदल दम्भु ॥ १ ॥ [अथ शिववाहन नामानि व०] (रागिनी झँझौटी त्रेताल में) पद ॥ जय जय भृङ्गी जय जय भृङ्गी जय जय जय वाहन शम्भुसदा ॥ (अन्तरा) तुण्डी तेजस्वी रमणीयं रिटि नंदिक नेह निधान मुदा ॥ १ ॥ नन्दीगण नम्र स्वभाव नन्दिकेश्वर नित नूतन यशादिपदा ॥ २ ॥ वृषराज द्रवौ महराज ललन जनकी करुणाकर हन विपदा ॥ ३ ॥ [अथ शिवनामानिवर्णनम्]॥ (रागपञ्चम चौतालमें) सवैया ॥ जय शम्भु पशूपति ईश शिवो गिर ईश इशान महेश्वर जू । हर भूतपते मृड मृत्युजिते प्रमथाधिप श्री शशिशेखर जू ॥ शितिकण्ठ कपालभृते महदेव त्रिलोचन त्र्यम्बक

ईश्वरजू । भव भीम उमापति हे ललनौ दीजिये हरिकी रति शंकर जू ॥ १ ॥ (राग हमीर चारताल में) सवैया ॥ निलकण्ठ कपर्दिहि उग्र भवे स्मर धूर्जटि सोशिव भर्ग वरा । त्रिपुरान्तक शूलि हि शर्व हरौ अजगव्वधरा शिरगङ्गधरा ॥ वृषध्वजहु अन्धरिपू क्रतुध्वंसिहु रुद्र उमा सुखदा बनरा। विरुपाक्ष सदा सरवज्ञ द्रवौ ललनौ अमराधिपहै तुम्हरा ॥ २ ॥ सोरठा ॥ शिवसुत परम प्रवीन, मूषकबाहन संस्थिता ॥ सङ्ग गणन गण लीन, सोहैं कृष्णसमाजिया ॥ १ ॥ [अथ गणेशनामानिवर्णनम्]॥ (रागिनी भीमपलाशी चारतालमें) सवैया ॥ सुखगेह गणाधिप विघ्नदला द्वयमातुर चातुर एकरदा । गणईश विनायक विघ्नपती नवनिद्धि हि चाष्टहुसिद्धि ददा ॥ गणराज गणेश गजानन शुभ्र लँबोदर चारिभुजा वरदा । निधि मङ्गल मूल प्रसन्नमुखेश उमा ललना सुख पूर्ण प्रदा ॥ १ ॥ दोहा ॥ राजित श्रीवरकीर्त्तिसुख, स्वामिकार्तिकसङ्ग ॥ कोबरणै तिन छवि छटा, छटावन्त नवरङ्ग ॥ १ ॥ (रागिनी झँझौटी त्रैतालमें) पद ॥ जय जय जय जय शैलसुतासुत जननि जनक जीवन धन प्यारे ॥ (अन्तरा) जयति वृषध्वज तनय षडानन हेरम्बाग्रज परम दुलारे ॥ १ ॥ महासेन सुस्कन्द अग्निभू कार्त्तिकेय अत्यन्त सुखारे ॥ २ ॥ पार्वतीनन्दन सेनानीश्रीबाहुलेय नाशन अघ सारे ॥ ३ ॥ तारकजित बिशाख शिखिवाहन षाण्मातुर श्रीशम्भु ललारे ॥ ४ ॥ अहो कुमार क्रौञ्चदारण कल कीरति वीर शूर सुखदारे ॥ ५ ॥ जय श्रीस्वामिकार्त्तिक स्वामी शरण

रहस नित ललन तिहारे ॥ ६ ॥ दोहा ॥ अग्निदेव प्रज्वलित कला, सुन्दर तेज महान । धर द्विज तन सुखमा सदन, हरि सँग विलसेउ आन ॥ १ ॥ [अथ अग्निनामानिवर्णनम्] (रागिनी प्रभाती षट्पदी इकतालामें) भजन ॥ वैश्वानर वह्नि अग्नि वीतिहोत्र मानी ॥ (अन्तरा) धनञ्जय कृपीटयोनि ज्वलन अनूमानी ॥ जातवेदा बर्हिशुष्मा कृष्णवर्त्मानी ॥ १ ॥ आश्रयाशु बृहद्भानु उषर्बुध बखानी ॥ शोचिष्केश तनूनपात रोहिताश्व मानी ॥ २ ॥ वायुसख हिरण्यरेता दहन शिखावानी ॥ आशुशुक्षणिं हव्यवाहन हुतभुक सनमानी ॥ ३ ॥ चित्रभानु शुक्र अनल पावक दमनानी ॥ अप्पित शुचि विभावसू सप्तार्चि कृशानी ॥ ४ ॥ वड़वानल अर्चि और्व बाड़व बलवानी ॥ ज्वालकील हेतशिखा स्फुलिङ्ग तानी ॥ ५ ॥ चालल आँचवास्ती अपूर्व बलनिधानी ॥ तेजवान प्रबल ललन मुक्ति रु वरदानी ॥ ६ ॥ सोरठा ॥ महिसुर वेष बनाय, वसन अनूठे साज तन ॥ आयउहिय हुलसाय, श्रीदिनकर तमहर सुखद ॥१॥ [अथ रविनाम माहात्म्य वर्णनम्] (रङ्गत बहिर लँगड़ीमें) ख्याल ॥ नमः सूर्यनारायण स्वामी सूर्य अर्यमा विभाकरे ॥ द्वादशात्मा प्रणम आदित्य दिवसमणि दिवाकरे ॥ (टेक) भास्वान विवस्वान अर्क सप्ताश्व ब्रध्न हरिदश्व दिपे । विकर्तने वर मिहिर मार्तण्ड तेज लखि शत्रु छिपे ॥ उष्णरश्मि श्रीभानु अरुण हेमणी मित्र रवि ग्रहन नृपे । चित्रभानु इन तरणि पूषा विरोचने तपन त्पे ॥ विभावसू त्विषा-

म्पती भग अहर्पती श्री अहस्करे । द्वादशात्मा प्रणम आदित्य दिवसमणि दिवाकरे ॥ १ ॥ हंस सहस्रांशू सविता प्रभु जगच्चक्षु खद्योति धनी । लोकबान्धव त्रयीतनु लोकबन्धु प्रद्योत्तनी ॥ कर्मसाक्षी सदा अंशुमाली अपूर्व छवि शिरोमनी । धीर धाम निधि अब्जिनीपति दृगदीपक नभ अवनी ॥ सूर्य पार्श्ववर्ती माठर दँड पिंगल निरन्तर तपाकरे । द्वादशात्मा प्रणम आदित्य दिवसमणि दिवाकरे ॥ २ ॥ रथ रमणीय नीलमणि माणिक मूंगा मोती हीरजटन्त । सरिस समीरम गमनगति कल तुरङ्ग शोभित बलवन्त ॥ दृढ़ासने आरूढ़ सारथी करतलि पर बहुनामकवन्त । गरुड़ आग्रज सूर सूतारुण काश्यपि अनुरु दिपन्त ॥ शोभायक सुरध्यायक भायक सबलायक वाहना करे । द्वादशात्मा प्रणम आदित्य दिवसमणि दिवाकरे ॥ ३ ॥ कोटिकान्त कर किरण उस्र दीधिति मयूख घृणि गभस्ति वर । अंशु रश्मि अरु मरीची भानु खानि शोभानु निकर ॥ दीप्तिमान द्युति अनेक ज्योतिन प्रभा भा सुछवि रोचि अपर । प्रकाशातपो द्योति नामकी घामदाता सुख वर ॥ हे प्रत्यक्षदेव सुक्षेम कुशलता सदन श्री प्रभाकरे । द्वादशात्मा प्रणम आदित्य दिवसमणि दिवाकरे ॥ ४ ॥ हेम शिशिर बसन्त ग्रीषम वर्षा सरदी षट ऋतु कारन । पोषण करता जक्तजीवन अघ हरन तरन तारन ॥ जे जन उठ प्रभात शुचि ह्वै पूजें प्रभु करें नेम धारन । ते दरिद्र दुरि मिलें श्री धी भूसुत सुख साधारन ॥ रवि प्रताप जग थाप उदित सुर नर मुनि वेदहु भनाकरे ।

द्वादशात्मा प्रणम आदित्य दिवसमणि दिवाकरे ॥ ५ ॥ नीर सुरसरी अर्पण ते तृष्णा न तीर आगमनैहै। रक्त अरगजा अर्चतेहि रूपवानहो जगमैहै॥ तण्डुल दै त्रैकाल ज्ञान तिल दिये न तमगुण दरशैहै। रक्तपुष्प दै राजपद मिलै सदासुख बरसैहै॥ मधु मेवा नैवेद्य निवेदे षटरस भोजन मिला करे। द्वादशात्मा प्रणम आदित्य दिवसमणि दिवाकरे ॥ ६ ॥ धूप दिये हो सुगन्ध तन आरती उतारे निर्मल ज्ञान। भवनिधि उतरैं सरलही जे नर धरैं निरन्तर ध्यान ॥ रवि सिवकाई मुक्तिप्रदा गुरु नन्हेमल करता कल्यान। भित्तू कूँच फरक्काबाद पूजनिय श्री हनुमान॥ ललन शरण प्रभु चरण चाकरा करहु कृपा श्री भास्करे। द्वादशात्मा प्रणम आदित्य दिवसमणि दिवाकरे ॥ ७ ॥ दोहा ॥ चुनी चातुरी चांगली, चन्द कन्द सुख सीम॥ द्विज तन धरि हरि दरश हित, आयउ लखन मुहीम ॥१॥ [अथ चन्द्रनामानिवर्णनम्] दोहा ॥ ग्लौ जैवातृक इन्दुविधु, चन्द्र सोम शुभ्रांशु॥ कुमुदबान्धव चन्द्रमा, निशिपति अब्जहिमांशु॥१॥ सोरठा॥ शशधर नक्षत्रेश, औषधीश द्विजराज अरु॥ जयति सुधांशु क्षपेश, मृगलक्ष्मण वर कलानिधि॥१॥ [अथ कुबेरनामानिवर्णनम्] दोहा॥ पुण्यजनेश्वर ऐड़ाबिड़, श्रीद गुह्यकाधीश॥ यक्षराज राजेश्वरौ, आयउँधर्मा धीश॥ १ ॥ (रागश्यामकल्याण चारताल में) सवैया॥ कयलास गृहे नलकूबर पितु सदा अलकापुरिवासि वरा। सखत्र्यम्बक धीपति किन्नर नाह सुचैत्ररथे अतिही सुघरा॥ पउलस्त्यहु

वैश्रवणो धनदा नरवाहन पुष्पकयानकरा। यक पिङ्ग धनाधिपते ललनो पहँ हेर कुबेर सुधर्म्म नरा ॥ १ ॥ दोहा ॥ हरिसमाज सुखमा सदन, लखन पौन आगौन ॥ विहर विलोकत चकितचित, मुदित मोहि भा मौन॥१॥ [अथ वायुनामानिवर्णनम्] (बहिर लँगड़ीमें) ख्याल॥ अलख परै नहिं लख न दृष्टिगोचर में रूप समानाहै। सूक्ष्म गती अति प्रबल गति जानत सबी जहाना है॥ (टेक) पञ्चतत्त्व में है प्रधान प्रत्यक्ष वायु जीवन दाता। जिसके बलसे जीव निज निज जीवन का सुख पाता॥ श्वासा श्वासा में जिस्का वासाहै ये खुलासा दिखलाता। नहीं पौन बिन जीव जीसके दममें दम चलजाता॥ जीवनमूर जक्त जीवनकी शुचि समीर सुखदानाहै। सूक्ष्म गती अति प्रबल गति जानत सबी जहाना है॥ १ ॥ है शरीर में समीर ही का चमत्कार ऐसा भारी। शब्दसृजन्ती प्रकाशक वचन अर्थ शिक्षाकारी॥ रङ्ग रङ्ग से रंगी अँग अँग में अँगी फबी न्यारी न्यारी। प्रति इन्द्रिय बिच विलासी सुखरासी तन हितकारी॥ नभ जल थल जड़ जीव पशू पक्षी बच बीच स्थाना है। सूक्ष्मगती अति प्रबलगति जानत सबी जहाना है॥ २ ॥ है नरतनके हृदय विराजत शोभित पवन प्राण पोहै। कण्ठ किलकती कोकिला सी बानी उदान वो है॥ नाभि निरन्तर अनिल अनोखी चोखी गति समान सोहै। गुदा स्थली अधोगमनी जीरणि अपान जो है॥ रोम रोम रमिरही परमपावनी नामिनी व्याना

है। सूक्ष्मगती अति प्रबल गति जानत सबी जहाना है॥ ३ ॥ नहिं आगमनै मुख मग हुइतौ मूक भया जानो नर नारि। श्रवण द्वारहो न बिहरै तौ बहिरा कहता संसारि॥ नासा बिच नहिं हो विलास तौ गन्ध कुँधका न हो विचारि। गुदा मार्गके बन्ध होते ही फिर हो जीवन दुशवारि॥ ऐसी मरुत महोत्तम तन बिच प्राणी रक्षक प्रानाहै। सूक्ष्म गती अति प्रबल गति जानतसबी जहानाहै॥ ४ ॥ जो है बोलता पवन वही है बोधक शब्द विधाताहै। सर्वतत्त्वमें अपूर्वहि विहित भाव सरसाताहै॥ श्रीनन्हेमल गुरुप्रताप जिनका गुण चहुँ दरशाताहै। भरद्वाज कुल बाँशि वसु सारस्वत विख्याताहै॥ श्री ज्वालाप्रसादसुत विरचित ललन छन्द भलभानाहै। सूक्ष्म गती अति प्रबल गति जानत सबी जहानाहै॥ ५ ॥ (अथ जलपतिनामानि वर्णनम्) दोहा ॥ रजेउ प्रचेता अप्पती, यादसाम्पति वारु॥ नीरप्रदा घनरसपती, सदा अवस्था चारु॥ १॥ तोयेश्वर पानीयपति, शम्बरेश अपिनाथ॥ मेघपुष्प नह अमृत पिउ, जीवनेश पतिपाथ॥२॥ वनाधीश पुष्करपती, उदक नाह नीरेश॥ आप्यभूप शोभित ललन, जलनायक जिवनेश॥ ३ ॥ चौपाई ॥ सोहैं अष्टव-सूयकयेका। धारेउआयुधपाणि अनेका॥ रुद्र यकादश सर्व विलासे। अजयकपाद अहिर्बुधनासे॥ कापाली कराल बलधारी। हर हरिभक्ति गहे सुखकारी॥ बहुरूपा छवि परम अनूपा। त्र्यम्बक तीव्रबली शुभ रूपा॥ अपराजिता अनोखि हि रीती। वृषाकपी बलभौन सुनीती॥ शम्भु सुहावत

प्रमुदित वदना। काल कपर्दी हरि रिपुकदना॥ राजत रैवत रोषित मोदा। हरीस्मरणैं सहित विनोदा॥ घोरबलीरणधीर महन्ता। महावीरदल दानव हन्ता॥ अतुलित गदाभार अत्यन्ता। धारेउ पाणि रजै हनुमन्ता॥ मन प्रमोद अति छल बल त्यागे। भनत सुयश हरिहित अनुरागे॥ आयउ धर्मराजयुत दूता। यकसों यक विक्रमी बहूता॥ वदत परस्पर कुशल सँदेशू। कीन्हप्रणाम सदेव सुरेशू॥ [अथ यमराजनामानिवर्णनम्] सोरठा॥ समवर्त्ती यमराज, यम कृतान्त यमुनाग्रज॥ धर्मराज महराज, श्राद्धदेव बैवस्वते॥ १ ॥ शमन पितृपति काल, प्रेतराट अरु दण्डधर॥ अन्तक बली कराल, ललन यथा फलदा करम॥ २ ॥ दोहा ॥ विहय पुरन्दर निजपुरी, सजि मणि माणिक हीर॥ वसनाभरणअनूप छवि, वज्रपाणि गम्भीर॥ १ ॥ आगम लखि सुरराज सुर, नामावलि त्यहि गाय॥ विरची विनती विविध विधि, प्रेमसहित शिरनाय॥२॥ [अथ मघवा नामानिवर्णनम्] (राग मालकोश चारतालमें) म०ह० कवित्त॥ पाकशासना ऋभुक्षा पुरुहूत सुनासीर जिष्णु इन्द्र मरुत्वान मघवा पुरन्दरौ। वृत्रहा वज्री वासव वास्तोष्पति बलाराति वृषा वृद्धश्रवा शक्र विड़ौजा वन्दे सुरौ॥ गोत्रभित् शतमन्यु दुश्च्यवन सुत्रामाहू संक्रन्दन तुराषाट स्वराट सुरेश्वरौ। आखण्डल सहस्राक्ष मेघवान श्रीललन हरिहय जम्भभेदी प्रणम शचीश्वरौ॥ १ ॥ ललन पुलोमजाधनी को धौं शचीश नम इन्द्राणीपती को अमरावतीविलासी को। वज्रसो

कुलिश स्वरु शम्ब विदुर्शतकोटि पवि अशनि दम्भोलि ह्रादिनीधरा नीको ॥ अभ्र मातङ्गी कोयान अभ्र वल्लभी को शुभ ऐरावणि पीको ऐरावत वरकरीको । मातलि से सारथी को नन्दन फुलवारिईश उच्चैःश्रवा श्रेष्ठ है यानेशमहारथीको ॥ २ ॥ दोहा ॥ सकल शरीर सहायकहु, सर्व शक्ति बलवान ॥ आगमनी आयुधवती, अमितरूप छविखान ॥ १ ॥ [अथदुर्गानामानिवर्णनम्] (रागजैति श्री झपताला में) हरिगीतिका छन्द ॥ अपराजिता अजिता जया विजया सु उद्योतिन उमा । मालाधरी शाङ्गिनि त्रिनेत्रा यशस्विनि यमघण्टमा ॥ कालिका शाङ्करि द्वारवासिनि पुनि सुगन्धा चरचिका । अमृतकुला शारदा घण्टा चित्रघण्टा चण्डिका ॥ श्रीमहामाया धनुर्धरि कामाख्या मँगला शिवा । जै भद्रकाली खड्गिनी नल कूबरी नीलग्रिवा ॥ वर वज्रधारिणि दण्डिनी अरु अम्बिका शूलेश्वरी । पुनि महादेवी शूलपाणी कामनीय कुलेश्वरी ॥ प्रिय पूतना ललिता भगवती श्रीमती कामेश्वरी । वर विन्ध्यवासिनि नारिसिंही मह बला तेजेश्वरी ॥ दल दंष्ट्राहु करालनीया ऊर्ध्वकेशिनि पार्वती । कुल कालरात्रि स्थलनिवासिनि मुक्टेश्वरि पद्मावती ॥ चूड़ामणी ज्वालामुखीयअभेद्या वागीश्वरी । अरु धर्म्मधारिणि वज्रहस्ता शोभिनी क्षत्रेश्वरी ॥ युत योगिनी नारायणी चक्रिणी इन्द्राणी सती । मृदु महालक्ष्मी भैरवी यूथप जयन्ति धुमावती ॥ काली कपालिनि हिंगुलेश्वरि सुधा स्वाहा भावते । श्री

शीतला दुर्ग्गा विधात्री सहस्रपाणि नचावते ॥ शुठि शैलपुत्री ब्रह्मचारिणि शत्रुशंसप्रजालिका । कूष्माण्डे स्कन्द कात्यायनीमाता करालिका ॥ महगौरि भीमा आदिशक्ती अन्नपूर्णा नन्दनी । लसिं ललन आयुधपाणि पूरित आगमनि जगवन्दनी ॥१॥ चौपाई ॥ महिषवाहिनी श्री वाराही । अस्त्र शस्त्र लै परम अथाही ॥ प्रेतसंस्थिता चामुण्डाजी । सँग समुदाय पिशाचसमाजी ॥ गजवाहना सु ऐन्द्री राजै । कोटिन करिबल गातविराजै ॥ गरुड़ासना वैष्णवी आजै । ज्यहि प्रताप लखि खलदल लाजै ॥ वृषारूढ माहेश्वरि प्रीया । जासु प्रताप पुञ्ज कमनीया ॥ मयुरसंस्थिता कौमारी सो । साज समाज साज अतिहीसो ॥ पद्म आसना लक्ष्मी वामा । रोम रोमछवि अमित ललामा ॥ ईश्वरि वृषवाहना अभिरामा । अचल अखण्ड पराक्रम धामा ॥ ब्राह्मी हंससमारूढासो । सुमति सदन बलमत्त महा सो ॥ सङ्ग सहायक नव दुर्गादी । श्रीमनमोहन दलमर्यादी ॥ सोरठा ॥ तीरथ तिहुँ पुरकेर, द्विजन वेष धरि धायऊ ॥ वन हरिचरणन चेर, प्रभुशरणागत आर जे ॥१॥ [अथतीर्थनामानिवर्णनम्] दोहा ॥ अवधपुरी मथुरापुरी, द्वारावति हरद्वार ॥ काशी काञ्चि अवन्तिका, व्रज वृंदावनभ्मार ॥ १ ॥ तीरथ राज प्रयाग पुनि, चित्रकूट निमिषार ॥ बैजनाथ कुरुक्षेत्र पुनि, गया जनकपुर न्यार ॥ २ ॥ श्रृङ्गीथल पूर्णागिरी, कुरुहरीहर क्षेत्र ॥ पद्मजनार्दनलषणभ्मूल, सणीकर्णिका जेत्र ॥ ३ ॥ (राग एमनकल्याण षट् तालमें) घनाक्षरी कवित्त ॥ नैनीनयपालिका

दधीचिपर्शुराम कुण्डनीलगिरि माधोनग्र जगन्नाथ पावनो। महोदधि सेतु गङ्ग पञ्चवटी पम्पापूर ऋष्यमूक हृषीकेश गोदावरी भावनो॥ देव गङ्ग शेषाधार वसिष्ठ आश्रम म्यार रामनाथ सेतुबन्ध श्रीरँग सुहावनो। रत्नागर सागर कैलास गिरिनारगढ़ ललनललित क्षेत्र गोकर्णआ गमनो॥ १॥ दोहा॥ हयग्रीव कामाख्या, अमर पशुपती नाथ॥ रुहनि कुण्ड मलियार पुनि, ओंकार गण साथ॥ १॥ त्रियुगिनरायण बद्रिका, केदार स्थल आदि॥ गङ्गोत्री यमुनोत्रिहू, ज्वालामुखि इत्यादि॥ २॥ पिण्डनरायण गोपिसर, मुक्तनाथ हिंगलाज॥ मानसरोवर लोहगिरि, पुष्कर-आबूराज॥ ३॥ देवरु कर्ण प्रयागजी, ब्रह्मावर्त बिठूर॥ रामटेक श्रीनाथसे, सोरों आदि प्रपूर॥ ४॥ वियद्गङ्ग सुरदीर्घिका, रजैं सुरनदीमात॥ स्वर्ग थली मन्दाकिनी, भुक्ति मुक्ति अवदात॥५॥ गङ्गा यमुना नर्मदा, सरस्वतीहु त्रिवेणि॥ कावेरी गोदावरी, गण्डकि कृष्णाश्रेणि॥ ६॥ सोरठा॥ सरयू भद्रा जौन, तापी तापविनाशिनी॥ गोमा सफरा तौन, ऐरावती शतद्रुहू॥ १॥ ताम्रहुवर्णी आन, रामगङ्ग रमणीयतन॥ शशिभागा छविवान, अलकनन्दहू सुखभरी॥२॥ दोहा॥ क्षीर क्षार मधु इक्षु घृत, सुधामृतोदधि ख्यात॥ आगमनेउ नरदेह धर, सुभग सागरा सात॥१॥ शेष सुखेश बलोशवर, पागे श्याम सनेहु। सेनायुत आवतभयो, सुखमासिंधु बनेहु॥ २॥ [अथसर्पजातिनामानि वर्णनम्] (राग कल्याण तिवरातालमें) हरिगीतिका छन्द॥ श्रीसर्पराज समाज वासुकिवंश शोभित

अमितदल। आगमन षोड़श गोनसादि तिलित्स अजगर शियु प्रबल॥ अलगर्द वाहस मातुलाहि रजीक पनिहा डुण्डुभौ। जलव्याल राजिल मालुधानहु मुक्तकञ्चुकसे शुभौ॥ निर्मुक्त भुजगप्रदाकु आशीविष भुजङ्गम विषधरा। चक्री सरीसृप कुण्डली अहि गूढ़पाद फणीवरा॥ चक्षुश्रवा काकोदरौ व्यालौ भुजङ्ग बिलेशया। भोगी जिह्मग पवनाशनौ पन्नग दन्दशूकादया॥ दर्वीकरौ कञ्चुकी कुम्भीनस उरग आहेयपति। हर दीर्घपृष्ठ पुनीत फणधर लेलिहान्निर्मोक गति। द्विरसन सर्पौ भोगधर गोकर्ण नागकरालसे। हरिसँग समाज सुहात सुन्दर ललन लहत निहालसे॥ १॥ [अथ] नवग्रहनामानिवर्णनम् (रागिनी गौरी त्रैतालमें) सवैया॥ जै गुरुदेव बृहस्पति स्वामिन चित्र शिखण्डज जीवजना। देवअचार्य प्रबीन महावर आङ्गिरसौ सुबुधीसदना॥ श्रीनमुवाच अधीश प्रभो सुकृती धिषणौ सुप्रताप घना। मन्दमतीहर ज्ञानकरा बधि पूर्णप्रदा ललनादि धना॥ १॥ दोहा॥ शुक्र दैत्य गुरु काव्य कवि, उशना भार्गवदेव॥ सौर शनैश्चर प्रबलग्रह, करियत मुनिजन सेव॥ १॥ श्री प्रतापवर तेजमय, सुयश सुमङ्गलरूप॥ रवि रमणीक मयङ्क छवि, षोड़शकला अनूप॥२॥ अङ्गारक महिसुत कुजे, लोहिताङ्ग भौमाय॥ रौहिणेय श्री सौम्य बुध, वर विधिसाज सजाय॥ ३॥ विमल विधुन्तुद वक्रसुर, सौंहिकेय बलवन्त॥ राहुतमः स्वर्भानु वर, ग्रह नव सब सुखवन्त॥ ४॥ [अथ ऋषिनामानिवर्णनम्] (रागिनी वागेश्वरी टोंड़ी चारता

लमें) म० ह० दं० कवित्त ॥ कश्यप दधीचि कौनडिन्य याज्ञवल्क्य भरद्वाज गौतमादि जमदग्नि पराशरसे । विश्वामित्र सनक सनन्दनो सनत्कुमार शौनकात्रि कपिल बाल्मीकि व्यास दरशे ॥ च्यवन वसिष्ठ शुकदेव जू मुनीश ब्रह्म भृगु गर्गगोत्रि नारदादिपरि करसे । अङ्गिरा मरीचि शुक्राचार्यसे ललन सन्त पुलहा पुलस्त्य क्रतु वृन्द मुनिवरसे ॥१॥ [अथगिरिनामानिवर्णनम्] दोहा॥ गोत्र अद्रि पर्वत गिरी, अचल शिलोच्चयशैल ॥ शिखर महीध्र क्ष्माभृत, चक्रवाल अनगैल ॥ १ ॥ लोकालोक अहार्यधर, ग्रावावृन्द अनन्त ॥ डूँगरादि बड़डीलिया, प्रफुलित मन अत्यन्त ॥ २ ॥ (रागिनी सोहिनी चारतालमें) सवैया ॥ उदयाचल अस्त गिरी हिमवान प्रसन्नित लै दल आन जुरे । विंधयाचल औ गँधमादनसे हरि ब्याह लखै हित आ बिथुरे ॥ मलयागिरि मालयवान युथौ हिमकूटरु चित्रकुटौ बटुरे । मँदरादि त्रिकूट सबै नँदके ललनै शरणागत आनि पुरे ॥ १ ॥ दोहा ॥ मुकुटमणी हाटकधनी, शुभ गिरिमेरु सुमेरु ॥ रत्नसार हेमाद्रि सुर, आलय गृह सुख केरु ॥ १ ॥ सोरठा ॥ कर्म्म धर्म्मयुत नेह, हरिदर्शन अभिलाष सों॥ धारि विप्रवर देह, आगमने आनन्दभरि ॥ १ ॥ (रागिनी विलासनीटोड़ी तीनतालमें) म० ह० कवित्त ॥ सत्य सोई मुख्य धर्म्म जीव जग हेतु कह्यो दानके समान पुण्य धर्म अन्य भायो ना । भन्यो कृतश्रेयःसनमान धीर्य शान्ति पर्म सुकृत सुधर्म्म कामना देत अघायो ना ॥ सदाबर्त नित प्रति दातव्यता नई

नई यान धाम वित्तमहि भोजनान्न थापो ना । मखी वृष धर्म्म कह्यो वेद ब्रह्म हू ललन जेहिको अनन्तफल पार कोऊ पायो ना ॥ १ ॥ चौपाई ॥ यजुः अथर्वण ऋक सामादी । पुरे चतुर्वेदी मर्यादी ॥ आत्मनिरूपण कारनहारे । वेदान्ती सो सर्व सिधारे ॥ प्रकृती पुरुष निरूपण करता । सांख्य शिरोमणि धीरज धरता ॥ कर्मकाण्डी यज्ञकरैया । मीमांसकी सुसुख उपजैया ॥ करत करावत मखवसु अङ्गा । योगशास्त्री पुरे अभङ्गा ॥ गौतम काणमत जाननहारे । नैयायिकीसमाज अपारे ॥ प्रोगानुष्ठानादिक ज्ञाता । मन्त्र शास्त्री सो विख्याता ॥ शास्त्राचार्य ज्योतिषी पूरे। चतुराश्रमी सूपूरित भूरे ॥ वृन्द ब्रह्मचारी बिनलेखा । गणगृहस्थ नरपाल विशेखा ॥ वानप्रस्थी परमहुलासी । पुरे पुनीत ब्रह्म संन्यासी ॥ दोहा ॥ अध्यापन अध्ययन पुनि, याजन यजन विधान ॥ षट् विधिकारक ज्ञापकहु, दानाऽऽदान निदान ॥ १ ॥ चौपाई ॥ सप्ततन्तु क्रतु याग अध्वरा । मखी सत्र मख सुपट्विधिकरा ॥ यज्वा बहु मखकरा ढँगीला । बारम्बारी इज्याशीला ॥ सौनामक मखकरा बृहस्पति । सर्व धनद मखकरादिशुभमति ॥ साङ्गोपाङ्ग यज्ञ अनुसरिता । नाम सर्ववेदाःसचरिता ॥ अनूचान मखकरा अनूचा । अतिथि अशनदा यज्ञसमूचा ॥ महामखी सुरयज्ञी जोऊ । मानुष मखी पचाख्यो सोऊ ॥ पितृमखी मनमोद बढ़ायउ । भूत यज्ञिया वृन्द सुहायउ ॥ हव्य हवनियां कव्य होमिया । समाव्रती गुरु शिक्षितहु प्रिया ॥ पाठ होम पूजन बलि तर्पण । अति-

थिपूज्य धर्मज्ञनके गण ॥ गोदानी गजत्यागीन्यारे । हयविहायती परिकर भारे ॥ दोहा ॥ महिवि-सर्जनी भूपवर, अन्नवितरणी अन्य ॥ रस उत्सर्जनि भामिनी, विश्रतिवृन्द अगन्य ॥ १ ॥ चौपाई ॥ भूषण प्रादेशिनी विशाला । धनस्पर्शिनीयूथ रसाला ॥ रत्नहु प्रतिपादिनी गँभीरा । यानकर्म वचदा बहुभीरा ॥ जुरे धार द्विजतन श्रुति न्यारहु । वेद गनाये पूर्वहि चारहु ॥ शास्त्र छहों वेदान्त मिमांसहु । सांख्ययोग गौतम अरु कणवहु ॥ विष्णु भविष्य भागवत वामन । पद्म मार्कण्डेय सुहावन ॥ शिव ब्रह्माण्ड ब्रह्मवैवर्ता । लिङ्ग वराह अग्नि अघहर्ता ॥ नारद मत्स्यरु ब्रह्मपुराणहु । कूर्मौ गरुड़ स्कन्द अठारहु ॥ आदि नृसिंह वायु शिवधर्मा । नन्दिकेश्वर कपिल सुपर्मा ॥ नारद साम्ब वरुण दुर्वासा । शूकर पद्म महेश्वर खासा ॥ कल्कीदेव मरीचि भास्कर । उपपुराण बसु दशहु पराशर ॥ (रागगौड़ सारङ्ग शूलतालमें) सवैया ॥ सुन्दर पर्म दयानिधि के सँग देहधरे द्विज वेदसुचारहु । शौनक औ सनकादिक याज्ञहुवल्क्य पराशर आदिक वारहु ॥ अष्टदशोपपुराण तथा विधि ज्योतिष न्यायसमेत सुन्यारहु । शास्त्र छहौं ललनेश कहै यश भाषत श्याम पुराणअठारहु ॥ १ ॥ दोहा ॥ राग रागिनी कुल सहित, उनंचास कोटीक ॥ आये श्री हरिशरण सज, वसनाभरणौ नीक ॥ १ ॥ (रागिनी खम्माच चारितालमें) म० ह० कवित्त ॥ नाद गुण सुसङ्गीत केर मतको विचार पुनि जौन विधि छायो जगमें प्रसारजो। सुरन को ब्योरो

औ बनायक पुराणमत नाम तिनकेरु राग रागिनीको सारजो ॥ समया उत्पत्ति ध्यान जाती वाणी को सुरूप तालन की गणना मुनीमतानुसार जो । विरचि सुनाऊं विधिगुण फल जतराऊं नँद ललनें रिझाऊं सुखदा अपारजो ॥ १ ॥ दोहा ॥ आदि नाद भाषत सबहि, पाछे वेद प्रसङ्ग ॥ यहि बिन जाने जानिये, नर सम पशू बिहङ्ग ॥ १ ॥ गानरु वाद्याभ्यास पुनि, नृत्य भावयुत होय ॥ तासु समुच्चयको कहत, साङ्गीत बुध सोय ॥ २ ॥ हिमजा प्राक्तन समय महँ, इन मत रह्यो विचार ॥ कलानाथ हनुमानमत, भरत सोमेश्वर चार ॥ ३ ॥ अन्याचार्यन मन्यहु अस, निजमति के अनुसार ॥ शिव शारद हनुमत भरत, यहमत चारप्रकार ॥ ४ ॥ पुनि औरहु गन्धर्व शिव, नारद मतो पुनीति ॥ इनहूँ से न्यारे अपर, सो दक्षिणदिशि रीति ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ है साङ्गीत शास्त्र अभिधारा । सप्ताध्यायन महँ प्रस्तारा ॥ जिमि स्वर राग ताल नृत पाथा । भाव कोक अरु हस्त अगाथा ॥ यह सम्यक प्रकार जोइ गीता । बरणत ताहि सुबुध सङ्गीता ॥ धातु मातु संयुत पद सारे । युगल बतावहुँ युत उपचारे ॥ नादात्मक सोइ धातु बखानी । वर्णात्मक सोइ मातु निदानी ॥ यन्त्ररु गात्र भाग सों जोई । पद समस्त युग रीतिक सोई ॥ वीणा वेणुआदि स गावे। सो पद नादयन्त्र कहलावे॥ गीत कण्ठ सों गाय बखानैं । ताहि गात्र बरणत बुध मानैं ॥ पदन केर पुनि युगल विधाना । यक निबद्ध अनिबद्ध सुजाना ॥ अत्तर नियम गमक बिन होहीं।

सो अनिबद्ध कहावत वोही ॥ ताल मान रस अक्षर नेमा । गमक सहित निबद्ध प्रद छेमा ॥ शुध सालग सङ्कीर्ण भेदसे । गीत त्रिविधिके नाद वेदसे ॥ पर यह भेदप्रबन्धहि केरे । गुणिजन जानत त्यहि निर्बेरे ॥ दोहा ॥ शुद्ध केर एलादिका, विंशति भेद प्रमान ॥ अत्र क्रमसों क्रम जानिये, जिमि बुध करत बखान ॥ १ ॥ एला शोध्य भवास्मर, पाट करण कैरात ॥ गद्य पञ्चतालेश्वरौ, लम्ब त्रिभङ्गी ख्यात ॥ २ ॥ दण्डक टेको वर्णपुट, चक्रपाल विजयाहु ॥ मुक्तावली सुसर्ग पुट, युगचरणिका सराहु ॥ ३ ॥ माहकारु वर्तनी इति, इन युत जो गीतादि ॥ तिनके शुभषट अङ्ग हैं, भनहुँ यथा संवादि ॥ ४ ॥ चौपाई ॥ तान विरद पद ताल पाट स्वर । यह षट अङ्ग सु भनत विबुध वर ॥ अथेव शालग भेद प्रमाना । जिमि उपवेद नाह अनुमाना ॥ मताचार्यजस कीन्ह निरूपन । जिन्ह मत मानत सर्ब गुणीजन ॥ गुणिजन मुखते करत अलापा । जौन प्रकार सविधि जग व्यापा ॥ वर्णत सकल विनोदनिधाना । उचित उचित विधि पूर्व विधाना ॥ ध्रूपद मण्डक पुनि प्रति मण्डक । यति वासक प्रतिलाभ निसारक ॥ एकतालि भ्रूमरो सुदण्डक । शालग भेद ध्रुवक रसमण्डक ॥ चैच नगनिका चर्चा मँगलक । दोहा बहुला गुरुवला भक ॥ अधागीव हेम्ना अतिनाठा । गीता कोपी उन्नावि ठाठा ॥ त्रिपदिकादि कारिका अनूपा । यह षोडश सङ्कीर्णक रूपा ॥ दोहा ॥ गीत प्रबन्धक में सदा, अक्षर मात्रा शुद्ध । पुनरउक्ति इत्यादि में, मानत नाहिं

विरुद्ध ॥ १ ॥ सोरठा ॥ गान वाद्य विधि जोइ, विदित सकल संसार जस । युगल प्रकार हि सोइ, ध्वन्यात्मक रागात्मकहु ॥ १ ॥ चौपाई ॥ त्यहिमें रागात्मक प्रस्तारा । मुनि सँगीत कह चारि प्रकारा ॥ स्वर प्रधान सो प्रथमहि नामा । ज्यहिमहँ स्वर विस्तार ललामा ॥ ताल कालको नियम न जामें । जिमि अलाप जस तान कलामें ॥ द्वितिये उभय प्रधान कहावे । युगल ताल स्वर धर्म्म सृजावे ॥ तृतिय शुद्धता प्रधान मान्यो । ज्यहिमहँ राग रूप शुध मान्यो ॥ खाड़व उड़व सँपूरण सेती । सरगम श्रुति मत ताल लसेती ॥ इन गणनायुत स्वरन अलापा । राग धर्म्मको हो सुघरापा ॥ चहि माधुर्य लगे चहि फीका । राग न भ्रष्टे है स्वर नीका ॥ है चतुर्थ माधुर्य प्रधाना । जाको यहिविधि सों अनुमाना ॥ राग रूप भ्रष्टे शक नाहीं । पर माधुर्य लगे श्रुत माहीं ॥ यहिविधि वेद भेद अनुमानहु । अग्रे स्वरन नाम इमि जानहु ॥ स्वर धौं षड्ज ऋषभ गान्धारा । मध्यम पञ्चम धैवट न्यारा ॥ सप्तम स्वर निषाद सुखकारी । स्वर जीवन यच समता धारी ॥ दोहा ॥ मयुर धेनु छगरी कुरंग, कोकिल बाज गयन्द ॥ इन वच सम पूर्वोक्त स्वर, उपजैं सहित अनन्द ॥ १ ॥ पुनि यह क्रम क्रमसों लखहु, स्वरस्थान उत्पत्ति ॥ नाभि कण्ठ उर तालु नक, रसना रदन सुगत्ति ॥ २ ॥ चौपाई ॥ षट थल उपज षड्ज सोइ भानी । योगाभ्यास गनी विधि सानी ॥ स्वर गत होय नाभि से शिरलों । ऋषभ सोइ गुणि जानै बि-

रलो ॥ वायु गन्धवाही की नलिकन । स्वर पूरै गन्धार ताहि गन ॥ पुनि स्वर व्याप्त नाभिलौं होई । मध्यम सोइ कहत सब कोई ॥ वायु मूर्द्धा लग स्वर छावै । सोइ पञ्चम पुनीत श्रुति-गावै ॥ पञ्चम स्वरसों ऊर्द्ध अलापै । धैवट स्वर त्यहि कहि बुध जापै ॥ हो विराम स्वर ऊँच न आना । ताको कहत निषाद सुजाना ॥ इन स्वर शब्दन आदि अक्षरसैं । स- र- ग- म- प- ध- नि सप्त स्वर दरसैं ॥ सप्त स्वरनकी सप्तक एका । कोइ कोइ ग्राम कहैं सविवेका ॥ उच्च अलापन सोइ आरोही । स्वरनु उतार कहैं अवरोही ॥ रवि ग्रह मूर्च्छन सप्त स्वरनकी । कोमल तीव्रकला उचरनकी॥दिग्दिनेश(२२) श्रुति अनुपम भेदा।षड्जमधम पञ्चम प्रतिवेदा॥ऋषभौ धैवट मात्रै त्रै हैं । द्वै निषाद गँधारमें द्वै हैं ॥ खाड़व उड़वहु सङ्कीरन की । तीनहुं की विधि बरन बरन की ॥ सम्पूरण महँ स्वर सबपूरे । जिमि स- र- ग- म- प- ध- नी-न अधूरे ॥ खाड़व बिन निषाद बतरावा । स- र- ग- म- प- ध इन स्वरन सुहावा ॥ उड़व ऋषभ पञ्चम बिन जाती । स- ग- म- ध- नी स्वर पञ्च सुजाती ॥ आड़व खाड़व डागुरि बानी । अरु गुवरारी कहत बखानी ॥ दोहा ॥ नट वसन्त रागादि जिमि, स्वर सम्पूरण जाति । सुहनि आदि खाड़व उड़व, रागहिंडोलहु ख्याति ॥ १ ॥ नष्ट उदिष्टौ मरकटी, मेरु पताका सार । इन विधान वर्णन करे, होत बहुत विस्तार ॥ २ ॥ चौपाई ॥ सोइ लघु क्रमसों राग निदाना । विदित कीन्ह सङ्गीत

विधाना ॥ राग रागिनी उँचास कोटा । नहिं खिंच सकहि तासु परिकोटा ॥ रीति सुघरि सब भेद जताया । जो ज्यहि विधि आचार्य्य बताया ॥ अथाचार्य्य मत राग नाम जस । सो कछु बरणि सुनावत तस तस ॥ भरत हनूमत में षट्रागा । भैरव कौशिक शुभरस पागा ॥ मालकोश हिण्डोल सुहानो । दीपक श्री छह रागहु जानो ॥ प्रति प्रति राग केरि शर वामा । छतिस राग रागिनी ललामा ॥ कलानाथ सोमेश्वर मतिसों । इमि षटराग बतावत प्रतिसों ॥ श्री बसन्त पञ्चम पुनि भैरव । मेघरु नट नारायण सुखदव ॥ षट् त्रिय प्रति रागहिकी प्यारी । बसु सुत प्रति सुतकी यक नारी ॥ दोहा ॥ अन्य मतहु में राग षट्, जिमि मालव मल्लार ॥ श्री बसन्त हिण्डोल अरु, शुभ कर्णाटअपार ॥ १ ॥ चौपाई॥ राग प्रत्येक केरिषट बाला । स्वर सागरि बांकुरी बिशाला ॥ स्वर शृंगार रसरूप धानसी । महा मनोहर मञ्जु मालसी ॥ तृतिय राम कीरी रसमाती । चौथि सिन्धुड़ा परम सुहाती ॥ पञ्चम सो भैरवी रसाला । षष्ठी आसावरी विशाला ॥ बेलावली कानड़ा पूर्बा । क्रीड़ा पुनि माधवी अपूर्बा ॥ छठवीं केदारिका बखानी । त्रिय मल्लार सर्व रसखानी ॥ शुभगा गौरी गान्धारी अरु । कौमारिका बेलवारी अरु ॥ बैरागी युत षट रागिनियां । श्री सुखसिन्धु रागकी रनियां ॥ टोंडी पञ्चमि ललिता गुर्जरि । पट मञ्जरी बिभाषा सुन्दरि ॥ मायूरी दीपिका बरारी । देश कारि पाहिड़ि मुरहारी ॥ रामकली नाटिका निराली ।

गोंड़ा कामोदा भूपाली ॥ कल्याणी कल्याण प्रदासी । मधुर महावर स्वर रस रासी ॥ दोहा ॥ मायूरी बेलावली, बैरागी बैरारि ॥ सुर हारी मध्याह्न में, क्रीड़ा धानुषि धारि ॥ १ ॥ चौपाई ॥ गन्धारी दीपिका पाहिड़ा । कल्याणी पूरबी कान्हिड़ा ॥ मालसि नाटी गौरि किदारा । भूपाली सिंधुरा सँभ्रुवारा ॥ शेष रहीं सो प्रातहि गैये । यहि मत अस विधि सुख उपजैये ॥ गायन राग समय वराजाती । तिसर पहर सों लौं अधराती ॥ उचरैं गुनि मलार बर्षा में । रामनौमि तक बसन्त गामें ॥ वामन द्वादशि बिजय दशहिरा । इतक दिवस मालसिको पहिरा ॥ पटमञ्जरी बिलावल आना । ललित मोरहारी रसखाना ॥ बैरागी गन्धारी जोई । करुणा रसमें गावैं सोई ॥ आसावरी पूर्वी गौरी । गोंड दीपिका सुख शिरमौरी ॥ रामकीरि कान्हरा बिभाषै । बैरारी पाहिड़ि इमि भाषै ॥ दोहा ॥ सुख सागरी अनूप यह, रागिनि परम पुनीत ॥ सदा बीर रसमें ललन, गावैं बुध शुध रीत ॥ १ ॥ चौपाई ॥ शेष रागिनी जोइ बिख्याता । गावैं रस श्रृंगार में ज्ञाता ॥ इमि मालव मलार हिण्डोलै । सदा श्रृंगारहि रसमें बोलै ॥ श्री बसन्त कर्णाट बीरमें । गावैं नितप्रति गुणी धीर में ॥ कलानाथ मतकी यह शाषा । राग चतुर्थ सु भैरव भाषा ॥ त्रिय भैरवि गुर्जरी बिलावलि । बढंस कर्णाटी भाषा भलि ॥ ललित हर्ष मधु माल कौशहू । बल नेहा अरु देवशाखहू ॥ बहुरि बिलावल अपरहु माधव । भैरव के बसु सुत सुखदासव ॥ सोमेश्वर

मतहू यह रीती । छह रागिनी राग प्रति चीती ॥ भैरव धुनि भैरवी गूजरी । बहुलि बँगाली दिवा गुनकरी ॥ यहि मतमहँ भैरव को गाना । ग्रीषमऋतुमें बिबुध बखाना ॥ दोहा ॥ भरत मतेकी चाल यह, बर्णत सह अनुराग ॥ शास्त्र निरूपण करतइमि, शरशर त्रिय प्रतिराग ॥ १॥ चौपाई ॥ ललिता मधु माधवी बरारी । वाहाकली भैरवी प्यारी ॥ ललित बिलावल हर्ष माधवा । देवशाख पञ्चम बिभासवा ॥ यह बसु सुत बङ्गाल समेती । बसु सुत प्रिया बखानहुं तेती ॥ अन्द्रोहा भिरवी कुम्भारी । सोरठ सुहा बिलाबलि न्यारी ॥ पट मञ्जरी बहुल गूजरिसी । भैरव सुतभार्या सुन्दरिसी ॥ पुनः मतान्तर षट् त्रिय भानी । बैरारी भैरवी बखानी ॥ बङ्गाली मध्यमा रसीली । मधु माध्वी सिन्धुवी रँगीली ॥ अजयपाल खरताप कौशकहू । श्याम टोल शुध षट सुत जाचहु ॥ अष्टी रेवा बहुला सोहिनि । रामेली सूहा सुत रागिनि ॥ कोऊ मत यह बिधिसों भाषै । सो विधि वर्णत युत अभिलाषै ॥ दोहा ॥ शिव शारद गन्धर्व अरु, नारद यह मत चार ॥ पृथक् पृथक् वर्णत सबै, निज निज मति अनुसार ॥ १ ॥ हनुमत मत महँ रागसो, भैरव प्रथम प्रतीति ॥ बाण बाम प्रतिकी कहीं, भिन्न सबनकी रीति ॥ २ ॥ चौपाई ॥ शिव मुख सन उत्पत्ति प्रमानौ । शिव सम ध्यान रूप अनुमानौ ॥ जाति उड़व धनि सगमा जोई । बादी धौं गृह धैवट सोई ॥ गान अनन्त अलाप विशाला । समय शरदऋतु प्रातःकाला ॥ ज्यहि गृह जो नित

भैरव गावै। भूत पिशाच वास नश जावै॥ विहरन लगै कोल्हु आपैते। आनँद भरव आला-पैते॥ बङ्गाली भैरवि बैरारी। मधु माधवी सिन्धुवी नारी॥ हर्ष सुहा मधु माधव तिलका। बल नेहा पूरिय पञ्चमका॥ कह्यो राग मत भेद समस्ता। अतः इतर देशीय सुररता॥ प्रचरित हनुमत मिश्र भरत मत। त्यहि विधि बरणौं राग यथावत॥ मालकोश मत भरतहि दूसर। ब्रह्मकण्ठ से है उत्पति वर॥ दोहा॥ सम्पूरण जातीय स्वर, स-र-ग-म-प-ध-नीसात। गान काल ऋतु शरदमहँ, भीम सुरारे ख्यात॥ १॥ चौपाई॥ गौर युवा पट पीत अधारै। यहि विधि यासु ध्यान हिय धारै॥ गावतही पाथर पिघलाहीं। मृतक सुनत स्वर जीवन पाहीं॥ मालकोश त्रिय हनुमत मतिसैं। यथा सुकम सुत भाषहुँ रतिसैं॥ गौरी खंबावती गुनकली। टोड़ी पञ्चम कुकुभ अति भली॥ चन्द्रक नन्द प्रबल मेवाड़हु। मारू भ्रमर खुखर बड़हंसहु। भरत मतेते इनकी नारी। देवदालि खंबावति न्यारी॥ कुकुभ दयावति गौरी अन्ता। मालकोश पँच त्रिय सुखमन्ता॥ गान्धार शुध मकर सहाना। त्रिछनु शक्रवल्लभ स्वरसाना॥ माली अरु कामोद रसाला। वसु सुत मतानुसार विशाला॥ जय श्रीदुर्गा भीम पलासी। मालश्रीहु सुधवारी खासी॥ धनाश्रीहु कामोद गँधारी। पुत्र भार्या सुन्दरि सारी॥ दोहा॥ भरत मतेमहँ भनतहैं, राग हिंडोल द्वितीय॥ हनुमत मतमा जानिये, वोही राग तृतीय॥१॥ चौपाई॥ ब्रह्मा तनते उत्पति जाकी। जाति उड़व बर्णत

मत ताकी॥ खड्ग पञ्चस्वर स-ग-म-ध-नीहै। गान समय ऋतु बसन्तकीहै॥ दिनके प्रथम भाग बिच गावे। आपुन तेहिंडोर गति ल्यावे॥ रामकली देशाखी ललिता। बिलावली अरु पटमञ्जरिता॥ चन्द्रबिम्बमण्डल शुभ आनँद। गौर बिनोद प्रधन बिभास पद॥ मालावती गुनकली एहा। रामकली देवारी जेहा॥ आशावरी मनाशा दायक। सुघर स्वरन कर सुख उपजायक॥ मालव मारू कुशल बसन्ता। लङ्का दहन धवल सुखमन्ता॥ पुत्र बखारबन्धु शुभकारी। नागधुनादि अष्ट बिधि न्यारी॥ दोहा॥ देवगिरी लीलावती, कैरबि चैती चार॥ पागवति तिरबरी पुनि, पूर्बि सरस्वति न्यार॥१॥ चौपाई॥ हनुमत महँ दीपक दूसर है। भरत चतुर्थ बखानत वर है॥ रवि लोचन सो जन्म जनायो। शुभ सम्पूरण जाती गायो॥ स-र-ग-म-प-ध-नी षड्ज सप्त स्वर। ग्रीष्म काल मध्याह्न गान कर॥ दीप्तै दीप अलापे दीपक। वर्जित जानत कोइ न गुनी तक॥ बीर वेष करि यान सुहावत। ध्यान धरे यह विधि सुख पावत॥ देशी कामोदा केदारा। कर्णाटी कान्हरा सुलारा॥ कुन्तल कमल कलिङ्गरु चम्पक। राम कुसुम्भ लाहिल हिम्मालक॥ हनुमत भरत युगलमत सोही। है पञ्चम श्री राग कहोही॥ सप्त स्वरा सम्पूर्ण सुजाती। स-र-ग-म-प-ध-नी षड्ज सुहाती॥ गानसमय हिमन्त सन्ध्याको। सुघर सिंहासन बाहन वाको॥ दोहा॥ मालसिरी आसावरी, मारुअ पुनर्बसन्त॥ धनासिरी पञ्चमकही,

श्री वनिता सुखवन्त ॥ १ ॥ चौपाई ॥ मालव गौड़ सिन्धु गुणसागर । कुम्भ गँभीर बिहागरु शङ्कर ॥
सोरठ सिन्धबि काफी सोहै । सुखद विचित्रा देशी जो है ॥ कोलाहल श्रीरमण शङ्करा । राके-
श्वर सामन्त रसभरा ॥ देशकार बड़हंस खटादो । हमिर कल्याण मतान्तर बादो ॥ शशिरेखा
सोहनो सरस्वति । कुम्भा अरु शारदा क्षमावति ॥ ध्याया बैया सब सुखसानी । बरण्यो
बुधजन ललन सुवानी ॥ मेघ युगल मत षष्ठम मान्यो । उड़वजातिया त्यहि अनुमान्यो ॥
अथा पञ्चस्वर धनि सरगादा । है धैवट वाचक मर्यादा ॥ ध्यान श्याम रँग सुन्दर बरणा ।
शोभित खड्गहस्त छवि भरणा ॥ गानसमय याको सुखदाता । वर्षा यामिनि वर्णत ज्ञाता ॥
दोहा ॥ देशी भूपाली बहुरि, टङ्क गूजरी जौन ॥ मदपारी प्यारी परम, भनत उभयमत
तौन ॥ १ ॥ चौपाई ॥ नरनारायण सार जलन्धर । गान्धार शङ्कराभरण वर ॥ पुनि कल्याण
सहानो गजधर । मेघ केर वसु सुवन मनोहर ॥ भरतहु मत सन पाँचहि नारी । मुलतानी
देशी मल्लारी ॥ रति वल्लभा और कावेरी । मेघवधू अतिही सुखदेरी ॥ वागेश्वरी कलायर
लेखो । तिलक स्तम्भपूरिया पेखो ॥ अथ शङ्कराभरण साहाना । मेघतनय कान्हरा बखाना ॥
माँझ पहाड़ी कक्कल्ल नाटी । परजशुद्ध नटहू करनाटी ॥ कादम्बी नटभञ्जी वामा । स्वरसागरी
समस्त ललामा ॥ अथ मूर्च्छन नामावलि जेती । जौनाचार्य कही जिमि तेती ॥ तिन्ह तिन्ह

मततादश अलबेली । बरणि सुनावत प्रमुद समेली ॥ सोरठा ॥ खरज अलापन माँहिं, जो स्वर
प्रकटै ऋषभ लागि । दोउ बिच स्वर सरसाँहिं, हनुमत सोइ मूर्च्छन कहत ॥ १ ॥ चौपाई ॥
गावत गलाकँपावत जोई । भनत भरतमत मूर्च्छन सोई ॥ परमत सप्तम भाग ग्रामको । इमि वर्णत
मूर्च्छना नामको ॥ षड्ज ग्रामकी मूर्च्छन सुनिये । ललिता पुनर्मध्यमा गुनिये ॥ चित्रा रोहिणि
मतङ्गजा सी । सौवीरा सो सुन्दर भ्यासी ॥ ग्राम मधमकी मूर्च्छन ध्यानो । पञ्चमी सुमत्सरी प्र-
मानो ॥ मधु मध्या शुद्धाहू अन्ता । कलावती तीव्रा सुखवन्ता ॥ गान्धार ग्रामकी मूर्च्छन ।
रौद्री ब्राह्मी वैष्णवीहु मन ॥ सुरा स्वेदरी नादावतिहू । बहुरि विशाला बालागतिहू ॥ इनको
जहां होय विस्तारा । कहियत ताहि तान प्रस्तारा ॥ तान उँचास माहिं स्वर मेली । कूट तान
होवति अलबेली ॥ दोहा ॥ कोमल अति कोमल बहुरि, तीव्र तीव्रतर शुद्ध ॥ त्रिविधि स्वरन
बर्नाव यह, राग रागिनिन युद्ध ॥ १ ॥ सूक्ष्म स्फुट स्वर लागहीं, सो. काकली कहाहिं ॥ राग
रागिनी इमि सकल, प्रभु सँग गावत जाहिं ॥ २ ॥ सोरठा ॥ रागरागिनी नाम, किञ्चित क्रमसों
कहत सो ॥ जिन्ह बच सुनत ललाम, मन मोहत सुर नर मुनिनु ॥ १ ॥ (रागिनी बरुआ रू-
पक तालमें) हरिगीतिका छन्द ॥ षट भांति भैरव शान्त सिद्धरु काल आनँद देव सो । बल
नेह माधो पूरिया युग्महु तिलक मधु एव सो ॥ पञ्चम विचित्रा मालकोशी ललित हर्ष हुला

सते । शुठि महानन्दि बँगाल्हि कौशिक अलहिया छविरासते ॥ खरताप शङ्करु टोल श्यामहु
अजयपाल सुहावने । सोहैं बिलावलि शुक्ल कुकुभ कुँभारि परिकर भावने ॥ अन्दोहि रेवा
अष्टि बहुली सोहनी सुरसागरी । रामेलि मिरबी बहुल गुजरी भिन्न भिन्न प्रभा भरी ॥ नव
मालकोशौ रूपकोशौ कान्तकोशौ जानिये । भल मानकोशौ जयतकोशौ पञ्च चन्द्रौ ध्यानिये ॥
पुनि छर्रकोशौ कोश कौशिक शुद्ध वदन गँधारते । मेवाड़ मारु प्रबल चन्द्रक नन्द भ्रमर वि-
हारते ॥ देसाख मकर खुसर त्रिवन तैलङ्ग माली सुख भरे । सुन्दर सहाना शकवल्लभ
अष्ट श्री शोभा धरे ॥ जयश्री धनाश्री मालश्री सामन्तश्री नटश्री अथा । आनन्दश्री
आनँदभरी अरु जयतश्री सुप्रथा तथा ॥ सुघवारि दुर्गा गान्धारी और कामोदा भली । लय
तन्त्र भूपाली विलासी भरि हिये प्रमुदावली ॥ हिण्डोलमण्डल चन्द्रबिम्ब विनोद गौर प्रघन
शुभौ । आनन्द सह आनन्द और विभास घन बन ठन उभौ ॥ वसुप्रिय वसन्त बहारबसन्त
परज वसन्त भलेभले।सोहनि वसन्त हिंडोलवसन्त बिहाग् वसन्त छटाझले ॥ मारुवसन्त कुशल
वसन्तहु राग नागधुनौ जुरे। मालवौ लङ्कादहन धवल बखारबन्दहु बाटुरे। लीलावती कैरवी चैती
पूर्वी पारावती । तिरवरी सुरश्रुति सरस्वति धौं गाय भाय बतावती ॥ दीपक कलिङ्ग कुसुम्भ कु-
न्तल कमल बिमल विधानसे । चम्पकलहिल हिम्माल राम गँभीर कुम्भ प्रधानसे ॥ श्री सिन्धु

मालव गौड़ गुणसागर प्रफुल्लित सोहहीं । बसुशङ्करा शङ्करारोहन शङ्करोही मोहहीं ॥ आनदश-
ङ्करा षट अरुण शङ्कराभरणविहागिया । राकेश्वरौ सामन्तसोरठि कुलाहल श्रीरमणिया ॥ कुम्भ
मधुर ध्याया शारदा देशकार क्षमावती । शशिरेखहु वैया विपुल समाज सजे सुहावती ॥ मृदु
मेघ जालन्धरा सार सुरागनौ नट यूथपा। नटहंस नटबड़ हंस नट सेंगरी प्रभु दल बिच थपा ॥
सामन्त नट अरुनट नरायण देवगिरि नटरस भरा । नटकार नटमल्लार छायानट धरे वपु शुभ-
नरा ॥ दश चतुरपुनि कल्याण शुध रस सेंगरी हंमीरसे॥ भूपालि केदारा कमोदरु हेम खेम ग-
भीरसे ॥ कल्याण श्यामरु भूप एमन गजधरहु पूर्वी गनौं । साहान सिन्धवि भैरवी काफीश्वरी
देशी जनौं ॥ आमोदनी कावेरि कादम्बी काक्की गुणकली । कुशलाङ्गना हु कलिङ्ग योगिय
पलस मारु मलिंग भली ॥ कलनाथ मत कालिङ्गड़ा कामोद श्रुतिः प्रथस्तसे । अरु तिलक का-
मोदादि सोहैं माधुरे मध्यस्त से ॥ षट कुकुभ दश खम्माच खम्बावती सिन्धु बहार की। काफिक
तिलंग विहाग देशी गौड़वर मल्लारकी ॥ गौरिका गारा गज कलिंग किदार चार प्रकार से। नट
चांदनी करनाटि जलधर त्रवण देव गधारसे । दश बसु कान्हरा सुहासुघरइ रायसा कोशी दुरा ।
काफ़ी अड़ाना नायकी बागेश्वरी शुठि सिन्धुरा ॥ कन्दर्पि दरवारी सहाना कलानाथी माधवी ।
हरिदासि सिंहलद्वीपि शूरी शैवि सुन्दर मालवी ॥ दशत्रय योगिया याम सन्ध्य वसन्त सिन्धु

बहारिया ॥ मद रुहस जीवि विहाग परज कलांगड़ा शृङ्गारिया ॥ पुनि पञ्च जै जै जलमतादी जयत मत देवाङ्गना । जङ्गला देवा देवसी देबालि निज शोभा बना ॥ दीपकी देवगिरी तिलक सँग देवदाली दिप रही । झंझौटि बसु अमनी पहाड़ीधार झार समग्रही॥ चिन देव राम बहोरि टोंड़ी द्वादशहु वागेश्वरी । आशावरी वैराड़ि जौनपुरी बरण माहेश्वरी ॥ लहचारि आलम्बेश्वरी अरु हरि विलासि सुवादिका । विहरैं विलास विलाससंयुत तान सैनी आदिका ॥ पालश पलाशी भिमपलाश प्रहस्त पिच सुन्दर तनै । पीलू प्रभाती रेनकी रतिवल्लभा हरियश भनै ॥ बड़हंस बरुआ रामकली बहार सुंदर रसकली ।मधुमांड माँझ बिहागरा मकराङ्गना वाहाकली ॥ मदपारि मधु शिव ब्रह्म रवि मत शुद्द नटिका स्तम्भला । ललिता बिलावल मध्यमा मधुमाधि रिझवैं यदुलला ॥ मञ्जरी मृदु यहरान मञ्जरि रूप रस पटमञ्जरी । मारुआ माली गौरहू मुलतानि सज मुक्तालरी ॥ मालावती हु विहाग षट श्रुति साक लच्छा सुन्दरी । ऐरन प्रलम्बरु मधु संधिवर सौम्य देव दिगंबरी ॥ स्वरपरदया द्वादश मल्हारी मेघ देशिहु धूरिया । सोरठी मिश्रि बिहागि नट मधु रामदासी नूरिया ॥ मल बिधिहि गौड़ सगौर माँझ मलार दशहु बहार जो । हिण्डोल विजया मालकोशि वसन्ति कौशी न्यार जो ॥ सोहनिक रस खम्माच परज मलार आदि अनेकहा । तिन्ह प्रभा परम पुनीत लखि मुनि देव करहिं अहा अहा ॥ १ ॥ (रागिनी

अमनी त्रैतालमें) सवैया ॥ रागरु रागिनि कोटि उँचास धरे तन ढाढ़िन डोम विहारैं । हास बिलासन भावनते निरतैं नव तान अलाप उचारैं ॥ नादमता अनुसार प्रचार सचार प्रसार सबै ब्यवहारैं । सो कछु भेद बखान कह्यो ललनेश मनै मनमां सुखसारैं ॥ १ ॥ सोरठा ॥ श्री हरि सुयश अपार, गावैं हुलसावैं हिया ॥ ताल माल बिस्तार, भांति२ उपचारहीं ॥१॥ दोहा ॥ एक अङ्कते क्रम सहित, जहँ तक सक अनुमान ॥ ताल गणित युत नामको, बरणत ललन निदान ॥ १ ॥ (राग कान्हरा चौताला में) म० ह० दं० ॥ कवित्त ॥ आदि यकताल ताल जननी बिशाल बिधि चाल ढाल लै रसाल रूपक दुतालकी । फाकताहु पट युगताली है निराली लय टप्पा ठुमरीहू केरी तीन ताल ख्यालकी ॥ झूमरो धमार शूल त्योरो झपहू में तीन भिन्न भिन्न मात्रिक लै आनि आनि चालकी । ध्रुपद सवारी आड़ा चार ताल न्यारी है अनोखी रीति ललन साङ्गीततल मालकी ॥ १ ॥ (राग कान्हरा नायकी चारतालमें) म० ह० दं० ॥ कवित्त ॥ पुट पचकौल फरोदस्त माहिं बाण औ बहिर षटताली बिधि ललन निराली है । सप्त कुड़नाचिहू गणेशहू में पञ्च युग अष्ट हनुमान चूड़ामणी नवताली है ॥ ब्रह्म दशरुद्री रुद्र विष्णू विधि द्वादशकी त्रोदशी[1] वरुण इन्द्र चौदा प्रतिपाली है । हरीसप्त अष्ट षोड़सी अमर विजै =षड सप्तदशी लक्ष्मी अठारा तालवाली है ॥ २ ॥ (रागिनी जैजैवन्ती चारतालमें) म० ह० दं० ॥ कवित्त ॥

१ चतुर्दश-चौदह।

उन्निस मराल विधि विंशति कपालकञ्ज एक विंशती ललन कामधेनु बायसी । त्रिविंश पुरन्दरी ऋः नौ नौ भृगुराज जलवरुण पच्चीस छब्बिसी कुबेर न्यायसी ॥ सप्तविंश मण्डनाष्ट विंशती नन्दन नव विंशती मयूर विक्रमी त्रिशत प्रायसी । नील एक त्रिंश युग त्रिंश भर्त त्रिंशत्रय स्वर निबन्धनि वेद त्रिंश गज भायसी ॥ ३ ॥ (राग कान्हरा बाघेश्वरी चारतालमें) म० ह० दं० ॥ कवित्त ॥ पञ्चत्रिंश चन्द्र षटत्रिंश सूर्य तोमरसो सैंतिस गन्धर्व वसु त्रिंशती प्रमानी है । कौल कलवाना नव त्रिंश चालिसी गणित इक्तालिसी नादरस ब्यालिसी बखानी है ॥ पार्षद तितालिस चवालिप सो पाण्डु माहिं कुरु पैंतालिसी कृष्ण छयालिसी प्रधानी है । सैंताली निबन्ध नृत्य अर्तालिस द्वन्द्वज में उंचास पचास बीरमें ललन मानी है ॥ ४ ॥ (राग कान्हरा चारतालमें) म० ह० दं०॥ कवित्त॥महामें इक्यावन वामन कालमें विलोम त्रेपन चौवन काड़ लोम सोहै पच्पनी । धुम्रामाठ छप्पन मृगा सतावनी मँदिर अट्ठावन उन्सठ अप्सरामें सरासनी ॥ तान्त्रिकमें साठ इक्सठी दहेज बिलममें बासठ त्रेसठ भँड़ चौंसठ बिडारनी । जै पैंसठी छाँछठी मुदरोदरतर खण्ड सर्सठी ललन नन्दी अर्सठी सुहावनी ॥ ५ ॥ (राग देश शूलतालमें) म० ह० दं०॥कवित्त ॥ उमामें उन्हत्तर ललन शक्ति सत्तर इखत्तरी प्रबन्ध सिन्धु भणत बहत्तरी । पवन तिहत्तरी चुहत्तरी सो नायकी नृसिंहमें पिछत्तर प्रल्हादिका छियत्तरी ॥ नागरि

पुल्कावली सतत्तरी अठत्तरी सो नीलमणि निगम उनासी अस्सी नागरी । इक्यासी निरञ्जन लछन ब्यासी तैरासी सो रावणदनुजमें चुरासी हैं खरी खरी ॥ ६ ॥ (रागिनी बरवा झपतालमें) म० ह० दं० कवित्त ॥ ऊर्ध्वमें पिचासी सुखतालमें छियासी औ सतासी शत्रुहन बिन्द अट्ठासी सुचालिका । ललन विस्तारे में नवासी औ अखण्ड नब्बे मदन इक्यान्बे बान्बे बिहँग प्रभालिका ॥ न्यायमें तिरान्नबे चुरान्नबे अनन्द में पचान्बे उजागर मान छयान्नबी विशालिका । भामिनि सतान्नबे अठान्नबे सुचञ्चरीक नटमें निन्नानबे नारायण सो तालिका ॥७॥ (रागिनी मुल्तानी शूलतालमें) म० ह० दं० कवित्त ॥ एकशत एक शुद्ध एक शत युग्म सन्त एक शत त्रय सुरसरी सुखदाई है । पुष्प एकशत श्रुति एकशत शर शान्त मञ्जुल मृदङ्ग एकशत रस जाई है ॥ शतौसप्त वणिज सताष्ट गणनाकर में ताल नाद नीरदमें शतौ नव छाई है । शतौदश सो सुमेरु शतौ रुद्र मधूनात इन्हीं भेदसों ललन त्रै सौ साठ गाई है ॥ ८ ॥ दोहा ॥ जुरे बराती देव गण, हित हरिदर्शन पर्ब्ब ॥ बृन्द बलाहक घोर घिर, झरिं नभ दुन्दुभि चर्ब्ब ॥ १ ॥ सोरठा ॥ दीन्हीं आज्ञा श्याम, रमी बरात सु कुण्डिनहिं ॥ स्वस्तिक वच अभिराम, सुर बुध मङ्गलध्वनि भनहिं ॥ १ ॥ गमनसमय समुदाय, सुशकुन आनि प्रकाश भे ॥ सब हित सब सुखदाय, हिय उमङ्ग उन्नति धरे ॥ २ ॥ (रागिनी नट मल्लारी तिवरातालमें) हरि गीतिका

छन्द ॥ बहु होन लागे शकुन शुभ मे विप्रदरशन आदहीं। पुनि गज तुरङ्ग उमङ्ग माते रजक शुचि पट लादहीं ॥ दधि गहे ग्वाल गुहारते कल कमल माली कर बसैं। कौ अमल अदन अनाज रतन जवाहिरात गहे लसैं ॥ पट श्वेत वेश्या वाद्य वाले गगन दुन्दुभि गाजहीं। कहुँ गान वेद पुराण कथना वीण वेणु प्रकाशहीं ॥ छिन मोर निवला सुरभिदर्शन मांस छत्र छटा गहें। कहुँ मग्न मन युग जीव वक्ता भावते दर्शन लहें ॥ सौभाग्य अङ्कित बाल त्रिय हरि सन्मुखहि आवत भई। शुभ दीपमाल विशाल दरशन फलप्रदा आनँदमई ॥ कुमकुम कमोरिन पुरित पान पिटार रथ साजन सजे। फलदा कुमारिन दरश चौंर ध्वजा पताक मिलैं छजे ॥ सित वृषभ प्रज्वलित वह्नि घृत मद मीन मुकुर सिंहासनौ। कहुँ शव रु रुदनविहीन दर्शन शहद पालकि तोरनौ ॥ जल पुरित घट आदरश अग्रहिते पिछेते शून्य घट। सोवरण रजत रु हरित तृण तरकारि दरशन शुभ निपट ॥ कौ ऊख भार निहार अंकुश शस्त्रधारी धावते। कहुँ होत नेग बिवाह वन्दी विरद बोलि सुनावते ॥ हो नीलकण्ठसों भेंट बायें श्वान वृक आगमनते । गण उष्ट्र दहिने गमन सुन्दर शकुन विलसैं ललनते ॥ १ ॥ (राग मालकोश शूल तालमें) म० ह० दं० ॥ कवित्त ॥ देखे दल धावत खड़ैचा सुर आलय पै करतो विहार नीर नियरे विलासते । प्राचीदिशि ते धनद वरदा वायव्य वस्त्र उत्तरदिशा सुलच्च परधी दिवावते ॥ बायें पै बिलासैं

चमगादर गौरैया मूस कोकिला कोयली शूकरौ खड़ैंच धावते । सारस बटेर बक बुल्बुल बासादि बाज ऐसे सुशकुन नँदललनैं लखावते ॥ १ ॥ चौपाई ॥ सुहा चकावक हुदहुद मैना। श्यामा दरश शकुन सुखदैना ॥ धौंरा कुमरी गुरगाबी गन। स्यारिन दरश चँडूल शुभ सुगन॥ बाट बाट पग पग दुखघाती। दरशैं विविध शकुन शुभ जाती ॥ हरि बरात लखि सुर मुनि सन्ता। बिहसैं विमल वचन यश भन्ता ॥ सानँद सकल चाणिक यकबीचा। आनघिचो दल नगर नगीचा ॥ पुरबिच पुरो समाज गुपाला । लुटवहिं देव रतन फुलमाला ॥ जय जय परी चहूँ दिशि माहीं। कुँडिननिवासी हिय पुलकाहीं॥ बिबिध बाजने बजहिं अपारा। हास तमाश अनेक प्रकारा ॥ राग रागिनी सुराङ्गनावलि। नृत्यैं गाय बताय भाव भलि॥ फूलरही यौबन फुलवारी। पुरि बिच कोटि इन्दुउजियारी ॥ दोहा॥ क्रमयुत अखिल बराति जन, निज निज यानारूढ़ ॥ गरुड़ध्वज रथपै हरी, जो श्रुति बेद निगूढ़ ॥ १ ॥ चौपाई ॥ तालध्वज रथ परममनोहर । बलारूढ़ तन द्युति नीलाम्बर ॥ निरखि युगल छविपुर नरनारी। छकितहिं बलि बलि तन मन वारी ॥ धर कनपटिन करन चटकातीं। कौ तृण तोर अवनि बगरातीं ॥ कौ गहि महि धूरी उतारिकै। बेंगें श्री प्रभु पाहिं वारिकै ॥ बहु मन मुदित प्रेम रस दरसा। करहिं अमित सुमनन की बरसा ॥ मानैं सुयश सुखद मोहनके। बदहिं बड़ाइ बृन्द वनितन के ॥ धनि बड़भागिनि यशु-

मति रनियां । जिन्ह जाये अस सुत सुखधनियां ॥ धन्य प्रताप भाग्य नँदराई । ज्यहि गृह जन्म लियो यदुराई ॥ धनि ब्रजमण्डल मही पुनीता । धनि ब्रज ग्वाल बाल करि प्रीता ॥ धनि द्वारावति सागर धनि धन । जहँ विहार मान्यो मनमोहन ॥ धनि हमारि यह कुण्डिन सगरी । पग दोउ भ्रात धरे ज्यहि नगरी ॥ धनि हम नर नारिन कर भागा । सुफल जन्म जीवन यश जागा ॥ (रागिनी भैरवी दादरा तालमें) सवैया ॥ तनको नगरे मनको मँदिरै रचि नैननकी दुदरी कुठरी । पलकौं मुहँ भारि अँसून सिंचै पट दृष्टि सजूँ पलका पुतरी ॥ तकिया उतसाहिक ठै ललनै हित वस्त्र उढ़ै रखुँ स्वाय हरी । मिलजा कहुँ छैल हमैं सजनी नहिं भाँकन दूं दुसरी बखरी ॥ १ ॥ [श्री महादेव उवाच] सोरठा ॥ रुक्मिणि बड़ उत्साह, हरि चरणन अनुराग ज्यहि ॥ दर्शनकी अतिचाह, पियपेखन जिय आतुरो ॥ १ ॥ दोहा ॥ प्रिया विकलता सत लगन, समुझि जननि भौजाइ ॥ बोलि सुता शृंगार साजि, लैगईं अटा चढ़ाइ ॥ १ ॥ चौपाई ॥ करि हरि दरशहरष हिय गहेऊ । प्रिय पिय पेखि धीर सुख लहेऊ ॥ इति पिय विरह विहाल दुलारी । उत वियोग दुख व्यथित मुरारी ॥ निरखि परस्पर युगल किशोरा । मिटयो विरहव्यथा दुख घोरा ॥ कहहिं भौजि जननी तैं प्यारी । बड़भागिनि मम गृह अवतारी ॥ तो मिस आये कृष्ण गुपाला । हमहुँ दरश कीन्हो नँदलाला । सफल सकल मन पुरि अभिलाषा । दम्पति छवि उरलीन्हों वासा ॥

अथ श्रीहरि बलदल यह भाते । चलि आवा पुर बाहर हाते ॥ प्रभु विलोकि गिरजा आगारा । उतरि परे रथते त्यहि बारा ॥ भन्यो निवासै सेना सारी । यह थल परम रम्य छविकारी । विशुकर्मा पायकन बुलावा । महि शोधन हित कहि जतरावा ॥ दोहा ॥ विरचे एक मुहूर्त महँ, दैविक सर वन बाग ॥ कहुँ कहुँ वापि विदारिका, सुन्दर कूप तड़ाग ॥ १ ॥ सोरठा ॥ सुरतरु बांछितदाय, कल्पवृक्ष कहुँ कहुँ बहुरि ॥ हरिचन्दनो अथाय, पारिजात ठहुँ ठहुँ दिपैं ॥ १ ॥ चौपाई ॥ पुरित बाग मन्दार आदिके । फूले फले मर्याद लादिके ॥ सुरप्रसून वाटिका सुहाई । महकैं चहकैं खगा अथाई ॥ विहरीं सुखसागरी समीरा । शिबरावली सुहैं गम्भीरा ॥ मखतूली सलमादिक गूठी । बिछीं बिछातैं परम अनूठी ॥ निरतैं सुर गन्धर्व बधूटी । बहु वाद्यन उपचार प्रजूटी ॥ तोमर तुम्बरादि बन ढाढ़ी । उचरैं साङ्गीत ध्वनि गाढ़ी ॥ रागहु भाग सराहि अलापैं । बढ़े बिनोद मोद उर छापैं ॥ रजीं रम्य वृन्दा वसु सिद्धी । अणिमा महिमा प्राप्त सुऋद्धी ॥ गरिमा प्राकाम्या लघिमादौ । व्याप्त वशित्व इशित्व शुभादौ ॥ नव निद्धी वाञ्छितदा न्यारी । निखिल सुशोभित सुखद अपारी ॥ (रागिनी आसावरी टोड़ी रूपक तालमें) सवैया ॥ नव निद्धिन भिन्निकभेद भनौं महपद्महु पद्म द्वितीय जनौं । पुनि शङ्ख चतुर्थ मकर्र सु पञ्चम कच्छप षष्ठि मुकुन्द मनौं ॥ निधि सप्तम कुन्द सुनील वसू अथ खर्व्व शुभौ नव निद्धि गनौ ।

फलदा ललनौ सुखदा अतिही शुभदायक सर्व्वहि भेद भनौं ॥ १ ॥ चौपाई ॥ शर विषयक शर रस शब्दादी । गन्ध स्पर्शरूप रस म्यादी ॥ षटरस यथा जलादि मधूपय । लवण सैन्धव जान अनूपय ॥ कटु निम्बादि कषैल विधाना । अम्ल निम्बु तिक्तादि निदाना ॥ अन्नपूर्णा अदन प्रदाइन । श्री प्रभुके शरणागत आइन ॥ दश दिशिके दशहू दिक्पाला । तिन सँग अमित समाज विशाला ॥ अस्त्र शस्त्र बहुभांति सजाये । यकते यक बलतेज सहाये ॥ धनदाताकुबेर भण्डारी । विहरैं सुरकिङ्कर रखवारी ॥ तहँ ब्रजराज परम सुखराजे । औ दुन्दुभी गाजैं बाजे ॥ भल कल थल बल दल बलपूरा । बस्यो विमल हरि यशभनि भूरा ॥ श्यामसमाज सर्व्वसुख साना । अमितहर्ष निज निज उर ठाना ॥ (राग तिलक कामोद चारतालमें) म० ह० दं० कवित्त ॥ धर्म्म धौं सुकर्म्म करि हर्ष जोई प्राप्त होत मति अनुसार नाम तासुको जनावतो । प्रीति सुखाऽमदहर्ष आनन्दाथ शात शर्म्म सम्मद आनन्दहू आमोद युत भावतो ॥ पावन प्रमोद उपजावन अनन्त मुद उन्नति अनोखी गति सुहृदोपजावतो । एते हर्ष कर्म्म धर्म्म दाताहू विधाता कह्यो ललन सुयश कान्त सुबुधि बढ़ावतो ॥ १ ॥ दोहा ॥ यहि विधि कृष्ण समाज सब, भरे प्रमोद अथाह ॥ उमा मौन माधो समिप, सुख विलसैं युत लाह ॥ १ ॥ इतिश्री रुक्मिणीपाणिग्रहणे कुण्डिनपुर्यां सश्रीकृष्णवरवैवाहिकाऽऽगमनशोभावर्णनोनाम त्रिंशत्तमः सर्गः ॥ ३० ॥

दोहा ॥ भई खबर शिशुपालको, हरि बल आवन केर ॥ कठिन भई सब नृप मनहिं, है कछु दिवसनु फेर ॥ १ ॥ [श्रीशिव उवाच] सोरठा ॥ विमुखि नृपन अघ जौन, दुख परिकर लै आयऊ ॥ लाग सतावन तौन, तापत्रय दाहैं अमित ॥ १ ॥ [अघनामवर्णनम्] दोहा ॥ किल्बिष कल्मष कलुष अघ, पङ्क पाप्मा पाप ॥ वृजिन ऐन दुष्कृत दुरित, अंह अनन्य अलाप ॥ १ ॥ इन पापनते नरक जे, प्राप्त होत दुख खानि ॥ उमा तौन वर्णन करहुँ, स्वल्प स्वल्प नामानि ॥ २ ॥ कालसूत्र तामिस्र मह, रौरव कुम्भी नर्क ॥ तपन निरय नारक अविच, अरु दुर्ग्गन्धि अतर्क ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ दहल उठ्यो दल खलबलि मांची । लै उसास अस मानहि सांची ॥ ऐस घड़ी कछु भयउ पयाना । नित नव विघ्न प्रकाशत आना ॥ है वह अतिहि छली यदुराई । अब कछु कुशल न परत जनाई ॥ जबहिं सुनी हरि केरि अवाई । भूपन मुखन मुर्दनी छाई ॥ सुनतहि मनमोहनकर आवन । बहुतन लागी मूर्च्छा धावन ॥ सुन्यो जबहि हरिबल दल छायो । जरासन्ध कहँ ज्वर चढ़ि आयो ॥ दमघोषै दम खांसी आई । अमितन अतीसार सरसाई ॥ विपुलन कम्पवायु भइ जारी । पांचल भइ पीनस बीमारी ॥ दुर्योधन कहँ दमा दढ़ायो । शकुनी सुनि शिर उदर पिरायो ॥ कर्ण करेजा धड़कन लाग्यो । दुगुणदाह दुःशासन दाग्यो ॥ सुन्यो नृपन आये बनवारी । अनगिन्तिन अँगियान तिजारी ॥ द्रोणाचार्य दहल अतिमानी ।

कृपाचार्य काया कुम्हलानी ॥ दोहा ॥ गाल बजैबो भूलगा, मद मन्दिर शिशुपाल ॥ निच ग्रीवा कर शोचवश, बहु विधि भयो विहाल ॥ १ ॥ चौपाई ॥ अखिल भूप भयभीत अनन्ता। धीर विहीन विकल अत्यन्ता ॥ कौ अस मनहिं गमी पतिभ्राता । अब कुलदेवहि रक्षक गाता ॥ कौ भ्वालन प्रति बदत गुहारी । लाज बचैबो है दुशवारी ॥ जो पति राख्यो चहहु भुआरा । निज निज सटकि चलहु आगारा ॥ यह छिनकी सायतै बरैये । वृथा अपति जनि भूप करैये ॥ ना हम तुम सँग सुभट दबङ्गे । क्षुधित तृषित दुखवश अँग भङ्गे ॥ रह्यो न कछुक समर सामाना । अस्त्र शस्त्र गे बिगर निदाना ॥ भूषण वसन रत्न धन हाने । वाहन विनश पशू रुगियाने ॥ एक विपति होताकर त्रासैं । शिबिर न यक जहँ बैठ विलासैं ॥ क्यहि भरोस तुम युथप भुलानो । जो हम वचन न हियबिच ध्यानो ॥ पेखहु तौ लै लै मुख मुकुरा । उड़हिं हवाईं रूप रँग बिगरा ॥ चातुरता यहको दिन काँईं ॥ समझ बूझ नहिं चलहु गुसाँईं ॥ दोहा ॥ ज्यहि क्षणते कुण्डिन चले, का सुख पायो कौन ॥ हो सुखि काया जौन विधि, करिये मिल नृप तौन ॥ १ ॥ चौपाई ॥ तन रक्ष्यहि कुल काज बनावै । तनबल त्यहि रण भूमि जितावै । तनहित लग जग नात नतेरे । इष्ट मित्र तन लग बहुतेरे ॥ हित शरीर जग सुख सब गाये । बुद्धिमान् ह्वै चेत भुलाये ॥ अस नृपनिकर कीन्ह यदि शङ्का । कह बुधिमान बीर बल बङ्का ॥ हरित हवास न होश

ठिकाने । यक यक भूप अमित अकुलाने ॥ लखि विहाल शिशुपाल बरातिन । अपन बिगार सकल विधि आँकिन ॥ तबतो क्षिप्र जनक ढिग धावा । आन नृपनकर मतो सुनावा ॥ सैनत पितुको नींद उतानो । अपन बनाव न कछु उर आनो ॥ तुव समाज भल ढँग न लखाता । नाति बराति सबै घबराता ॥ जो कछु भई सही सब पीरा । अब कछु समुझि करिय तदबीरा ॥ दोहा ॥ सावधान अब हूजिये, हे नृपकुल सरताज ॥ नतु पितु विनशत तोरसब, बनो बनायो काज ॥ १ ॥ सोरठा ॥ जो कदापि मम बैन, मन भावै तौ जन भनै ॥ कह दमु बच सुखदैन, का प्रिय कथत सुनाउ मुहि ॥ १ ॥ दोहा ॥ शिशुपाला पितु प्रति भन्यो, पाण्डुन कहौ बुलाय ॥ उन्हैं भेजि रिपु कटक को, लीजै भेद मँगाय ॥ १ ॥ चौपाई ॥ वे नँदके ढोटाकर नेही । सरहि काज जो कछु उन तेही ॥ अन्य उपाय न कछु बनि ऐहै । चिक चिक कर चिक चिकहि मचैहै ॥ सुनि शिशुबच दमघोष सुहायो । वहि छिन नृपसमाज बिच आयो ॥ पुत्र मतो महिपतिन सुनायो । यत्न सबन के यह मन भायो ॥ नृपन बोल पाण्डुन समझावा । समाचार कहि सर्व जतावा ॥ निश्चहु तो तुम जाय उहाँ तन । हरि बल ह्यां आये किन्ह कारन ॥ तुमसन उनसन रीति रसाई । तुम्हैं अभ्यन्तर दिहैं जनाई ॥ धौं कदापि आये रणकाजा । तौ हमहूँ तस सृजहिं समाजा ॥ यदि केवल मख निरखन आयउ । तौ तुरतै यह भेद खुलायउ ॥ है हरि छली बलीबहु बांका । किन्ह

दै भेद बुलायउ ह्याँका ॥ दोहा ॥ हम न बुलायो इन दुहुन, रुक्मिहु बुलयो नाहिं ॥ भीष्मक को कछु मतो नहिं, या विवाहके माहिं ॥ १ ॥ चौपाई ॥ यह परिणयभा रुक्मि मताते । आन न क्यहु कुल पञ्च प्रथाते ॥ पुनि को रिपु उपज्यो जग मोरा । क्यहि गहि मति आयउ नँद छोरा ॥ इन बातनु नहिं भेद उलहियो । ऐस युक्ति सृजजा मिल कहियो ॥ हम पठयो तुम जांच न पावैं । तौ चहि मन मन्शा उघरावैं ॥ भेटैंमिस रमि जाउ यहांते । हालहि फिरि आवो पुनि ह्वांते ॥ निरखु उमा भगवतकी माया । भक्तन पहँ नित जिनकी दाया ॥ पाण्डव तो यह चहत हुतेहीं । क्यहु विधि हरि शरणागत लेहीं ॥ जनरुचि लखि श्रीकृष्ण कन्हाई ॥ दियो उन्हें मुखते उचराई ॥ पाण्डव अतिप्रसन्न उठिधाये । शीघ्रहि हरि शरणागत आये ॥ लखि माधव पाण्डव आगमनू । उर लै बैठायउ ह्वै मगनू ॥ सोरठा ॥ भीम नकुल सहदेव, अर्ज्जुन पुनः युधिष्ठिरहु ॥ हरि बल चरणन सेव, त्राहि मुहित पदरज लई ॥ १ ॥ दोहा ॥ प्रेमानन्दसमाय कथि, रोम रोम पुलकान ॥ धनि यह घरि दिन भाग्य धनि, लीन्ह शरण भगवान ॥ १ ॥ चौपाई ॥ कुशलप्रश्न पुछि आनँद लयऊ । रिपुदलभेद बरणि सुख दयऊ ॥ हाल तालको सर्व सुनावा । ज्यहि हित उन अर्प्पा सोउ गावा ॥ बिहइ बार बहु दर्शन पर्शन । कोउ कहुँ जाय भन्यो यह वहिखन ॥ हेले तुमनु खबरुवा जोई । कारागृह दिय मोहन सोई ॥ तत्क्षण नृप अपरहु अकुलाये । बहु

विस्मय हिय दुख उपजाये ॥ कथहिं परस्पर पेखिय माई । अरु विपत्ति महँ विपत्ति आई ॥ कर्म्मन खोंट सबनकी जोहत । दृष्टि न आनत सुख बहु टोहत ॥ कोउ यक बोलि उठ्यो इमि भ्वाला । सुख जहँ तहँ सुख हितू न हाला ॥ यह महान सुख समुझिय राजन । भल सुख निटवो कोटिन कासन ॥ थिर चितकै कछु करिय विचारा । नतु क्षण लगब न होत बिगारा ॥ दोहा ॥ निखिल नृपन कीन्हो मतो, रुक्मि लेहु गुहराय ॥ ज्यहि गृह आवे तासुकी, लीजै सलह सहाय ॥ १ ॥ चौपाई ॥ दासपाणितत रुक्मि टिरायो । हाल नृपन कहि कुल जतरायो ॥ निहरत हीको मोहन छोट्यो । जस छोट्यो तस औगुनि खोट्यो ॥ अब बिवाहबिच कुशल न ध्यानो । यासों हम मति तो यह आनो ॥ रुक्मिणि को डोला दै दीजै । पाणिग्रहण न यहि क्षण कीजै ॥ निलय जाय रचि लिहैं बिवाहू । या महँ कुशल हमें तुम काहू ॥ जो कदापि चाहो कुशलाई । तौ यहि सम नहिं आन उपाई ॥ सुनि अस रुक्मि नृपनु कर बानी । उछलो दुर्म्मति अति अभिमानी ॥ तुमतो नृपति नपुंसक सारे । बिनहि बारि पग मुजा उतारे ॥ लजो न कछु इन बातन माहीं । सुनै कोइ तौ कहा सराहीं ॥ तुम क्षत्रीकुल वंश भँभारा । जगविख्यात प्रताप तुम्हारा ॥ दोहा ॥ धरौ लटी इमि बात मुख, गहतन किञ्चित ग्लानि ॥ बदन दिखावत सम्मुखै, धिक् धिक् अस बलवानि ॥ १ ॥ चौपाई ॥ धिक् धिक् जीवन जन्म तुम्हारा । जगतवादि क्षत्रिय तनु धारा ॥ निष्फल अस्त्र शस्त्र

बहु बाँधे। लाज न गाहत मे मति आँधे॥ डोला मांगत ह्वै रणधारी। काटन आये नाक हमारी॥ जो हौं देहुँ भगिनि को डोला। तौ जग नृप मुहिं मारहिं बोला॥ यासन तौ यह सरल उपाई। जे तुम त्रसंततुल्य नृपराई॥ मर्दाना बाना देउ टारी। नारिवेष सजिलेहु सम्हारी॥ लहिंगा कञ्चुकि चादर धारौ। हरि बल याचहु एक न छारौ॥ शिशुगन कहँ करिलेहु नचनियां। लय ढोलक झाँझैं झुँझुनियां॥ नाच गाय हरि बलहिं रिझावौ। प्राणदान तब उनते पावौ॥ बीच न अब तुम बचौ बचाये। कै धौं ह्यांते जाउ पराये॥ इतकहि का यश थोर कमाये। बने बराती ह्यां लग आये॥ कर कर भरकी मुहँ पहँ दाढ़ी। बड़ बिलांदसी मूछैं बाढ़ीं॥ दोहा॥ फूल रहे मद तूल सम, झूल रहे तन मास॥ वृथहि विनाशे मालचबि, तकत पराई आस॥ १॥ (रागिनी खम्माच सादरा शूल तालमें) सवैया॥ हो तनको प्रतिपाल गये बहु द्रव्य बिहैं कछु शोच न धारै। देहि हितै ललनौ सुख सम्पति वेद पुराण प्रमाण उचारै॥ जो वपु वित्त गये रहे लाज दुहूतज दे पति ओर निहारै। जातरही पतिजक्क जबै तन औ धन लैकह आगिहि डारै॥ १॥ (राग सिन्दूरा धम्मार तालमें) सवैया॥ जाचि लई तुम्हरी प्रभुता ललनौ बलबानि लखी हमसारी। एक न रोम उखार सकौ बबकौ न बकौ बकवाद पसारी॥ ग्वाल गवाँर कि

१ डरपोका=कायर॥

शङ्क किये कह औरन साथ बिसाय तुम्हारी। बूड़ मरौ यक चूरुहि में कुल क्षत्रिडुबावत लाजन मारी॥ २॥ दोहा॥ ग्वाला के आवत डरे, कह वह तुच्छ गँवार॥ मो बलकहँ चीन्हौ नहीं, शिव वरदायक भ्वार॥ १॥ चौपाई॥ दश सहस्र गजसम बल मोरा। कह मो आगे नँदको छोरा॥ करहु काज सब मोरे बलते। सुखकी नींद सोइये कलते॥ जो वह किञ्चित् बैन उचारा। तौ जनु गयो हस्त मम मारा॥ शङ्क न क्यहु कर कछु उर धरिये। निर्भय ह्वै कारज निजु करिये॥ यहि बिधि रुक्मी हिमत बँधाई। तब कछु नृपन धीर हृदिठाई॥ सब सराहिं कह प्रति रुक्मैया। अब तोरहि बल काज बनैया॥ सतभाषण कह कर सक ग्वाला। हमसँग योधा वीर कराला॥ तापर है सहायता तोरी। अब कह कोउ करसक बरजोरी॥ तुव मंशा अवलोकन कारण। बोलि पठावा तुहि साधारण॥ सो हमरी सब शङ्क बिनासी। उपजी हिय बिच सबन हुलासी॥ दोहा॥ अहो रुक्मि अब जाउ गृह, भेजहु सब सामान॥ तम्बु कनात बिछायतें, सहविधि खानरु पान॥ १॥ चौपाई॥ दृढ़ दै नृपन रुक्मि गृह आयउ। सोच समुझ भीष्मक ढिग धायउ॥ विरचि पिता अब इतकहि कीजै। सामा समधिन भेजसु दीजै॥ चहुँदिशि भरभर नगर मँझारा। भूप अनूप समाज अपारा॥ हौं अकेल पितु तनि तुम ध्यानौं। बयहि बिधिहौं सबकहँ सन्मानौं॥ सुनि सुतबैनन भीष्मक बोला। रुक्मि मोर मत शृणु अनमोला॥ जो कोउ अपने गृह चलिआवै। निश्चय ताहि

चहिय अदरावे ॥ तुव भगिनी मख दिखबे काजा। चलिआये मोहन महराजा ॥ तिनहूं को आदर सुत कीजे। बातहिं में जगमहँ यश लीजै ॥ जो तैं सन्मानै घनगाती। तौ मैं होहुं सहाय सँगाती ॥ यदि तुहि मम बच भावै नाहीं। हौं न परौं तब तो बिचमाहीं ॥ दोहा ॥ रुक्मी शोच बिचारकै, यहि विधि बर्णन लाग ॥ होइ सुयश मम रचहु सो, युत विवेक अनुराग ॥ १ ॥ चौपाई ॥ सुनि सुतवच भीष्मक हुलसायउ। हरि मनमाने कार्य बनायउ ॥ भीष्मक उठि भंडार सिधायउ। सद्य पदार्थ सर्व्व छटवायउ ॥ शुचि सँजोय सुबरण मय थारा। मेवा मधुर पुनीत प्रकारा ॥ बहु गोरस ब्यञ्जन नवनीते। पकवानादि चुआते घीते ॥ षटरस व्यञ्जनियां निमकीले। अमित प्रकारनकेर दधीले ॥ ऋतुफल बहु सागादिक स्वादिक। पुरी मुरब्बा पुप अमलादिक ॥ भिन्न भिन्न साजे बहुभाते। स्वादन सुधा समान सुहाते। स्वच्छ शुधित गज बाजिन दाना। सद घृत मञ्जु मसाले नाना॥ हरित दूबादि तृण उत्तमा। सकल पदारथ कीन्हिसंजमा॥ नव नव डेरा तंबु कनाती। दरी गलीचहु मखमलि जाती ॥ वृन्द बिछायत बर चाँदनियां। मुकेशी जरकसी रमनियां ॥ दोहा ॥ जौन बस्तु रस रँगभरी, सौरभसनी अनूप ॥ सो हरिहित पठई सकल, सहहित भीष्मक भूप ॥ १ ॥ चौपाई ॥ पच पकवानी बरसन केरी। शुष्कित सड़ी बुसौंदी ढेरी ॥ फबी फफूँदी सड़ियल घीकी। छुइबेकी रुचि होय न जीकी ॥ मुँदी मुदतकी अन्न

बुखारी। बिभ्भरा कोदौं चना जुआरी ॥ रहिला राई काकुन अरसी। सामा सिकुर अरहरी भ्भरसी ॥ जव तिल तण्डुल ब्रर मूँगरी। सरसौं कुरथी धान चोकरी ॥ मरसा मौठ मसूरहु मटरा। मोथी मकई अनिक बाजरा ॥ घुने सड़े लै साजे दाने। सो कमरन की भ्भोरी आने ॥ तिनकर तृण मटियारो कारो। तूष्णित तिख भबकीलो न्यारो ॥ नरई नारी भूसी पैरा। कुश खर भागा कांस सुखैरा ॥ छांट छांटके जीरण डेरा। दरी कनात बिछायत ढेरा॥ जे अगले समयक मरयादा। बने छोरगे मर सरदादा ॥ परदादा पैवँद टकवाकै। दादा धरे कछुक सुधराकै ॥ पिता मरम्मत कबहुँ न कीन्ही। चचा भतीजन सुधिहु न लीन्ही ॥ बिछवन तक नौबतै न आवै। छुवतहि खिन्न खिन्न हुइजावै॥ यहि रँगको असबाब जितेका। निरस अशन कटु भांति अनेका॥ नृपदमघोष बरातिन कांई। यहिविधि वस्तु अखिल भिजवांई॥ मधु मेवा पय कन्द मलाई। सो जेवनवारेनृप राई ॥ मुखमहँ धसै ग्रास नहिं शेशा। उबक उबक रहिजायँ नरेशा॥ जो बिमुखी प्रभुके जगमाहीं। उनको सुख तिहुँ पुरमहँ नाहीं ॥ दोहा॥ दमुघोषादि बरातियन, खान पान सत्कार॥ रुक्मी भेद न जानही, भीष्मककृत व्यवहार ॥ १ ॥ सोरठा॥ उमा सुनहु मम बैन, वह हरि दीनदयालु बड़ ॥ महिमा जानि परैन, जस चाहैं प्रभु तसकरैं ॥ १ ॥ इतिश्रीरुक्मिणीपाणिग्रहणेवैवाहिकसमाजद्वय शिष्टाचारनिरूपणंनामैकत्रिंशत्तमः सर्गः ॥ ३१ ॥

[श्री शुक उवाच] (राग जंगलातित्रा तालमें) हरिगीतिका छन्द ॥ इत आन रुक्मी कह्यो मात सुतापै तैल चढ़ाइये। प्रारम्भु आज सुकाज कल शिशुपालसँग भमराइये। हौं देत पठये खबर उतहू तैल ताई वरकी हो। सब करहिं राह रसूम अपनी जौन जाज्यहि घरकी हो॥ सुनि माय धाय बुलाय नाइन कहन सुतकी सब कही। अबआज कँगना तैल हरदी सुताको होनो चही॥ नाइन बुलाइन कुमरि आइन तैल ताइन ठाट लखि। कुलवधू तीर परोसि सबन लगायतनु को- चकि निरखि॥ कियो प्रश्नरुक्मिणि मातसों यह कहाधूम धमारहै। सुनिमात मौन नवाय शिर फिर कहि न वश्य हमारहै॥ तुव भ्रात हुकम लगागयो अब तैलताई आजहो। रुक्मिणि ब्यवहु शिशुपाल सँग प्रारम्भकर जो काजहो॥ सुनि रुक्मिणी भरनैनवारी पुनि उचारी श्वासलै। मम मृषहि प्राणनलियो चाहतभ्रातमम घातकखलै॥ मन वचसों क्रमसों मम प्रतिज्ञा वरहुंतौ गोपाल को। नहिं मरहुं गरलहि खाय नाम न लीजिये शिशुपालको॥ हैं जन्म बैरिन मोर तुहि गरभीज किन जन्मत दयो। अब पाल सुरभी हाय बधिकहि देन मन भावत भयो॥ मत गात मात चढ़ाउ तैल कढ़ाउ चूल्ह चढ़ाइये। ता बीच काष्ठ जराय घोर तपाय मोहिं डराइये॥ पुर जाय मन्शा रुक्मिकी तन हरिदसों जानि जर्द कर। वैस्यहि विरह तन जरदि छयि पुनि कहा केशर मर्दकर॥ भइ ललन तैं कह मात जात बिलात मति तोरी भई। कर कँगन असुरहि काज

चाहत बाँधिबो मोरे दई॥ १॥ (रागिनी जिला काफी खम्माच तीन तालमें) पद ॥ नमैं बाँधूं मैया असुर काज कँगना। लगौ तुम कोउ मोरे सँगना॥ (अन्तरा) शीश न गुहूँ भाल बेंदी धिक दृग अँजुं ना अँजना॥ १॥ मेहदी पाणि न उपटन अँग ना यावक हू पग ना॥ २॥ हाहा करत समुझाउ रुक्मि तुहि एरे बीर बम्हना॥ ३॥ भलो बुरो चहिं कहो सकल मुहिं मो पति नँदललना॥ ४॥ दोहा ॥ देख भवन गड़बड़ रुकुम, चलि आयो त्यहि बीच॥ एकहु की मानी नहीं, तैल चढ़ायो नीच ॥ १॥ चौपाई ॥ पेखि प्रबलता धृष्ट भ्रातकी। गोई रुक्मिणि सुरत गातकी॥ कहत मनहिं मन मम प्रणनाशा। तौ धिक् जीवनकेरि दुराशा॥ अवयहि भल पट उठि तन त्यागहुँ। हरिपति त्यजि क्यहि पहँ अनुरागहुँ॥ इमि रुचि रोचि दृढ़हि प्रण आनी। राजसुता इमि अति अकुलानी॥ अनँद बधावे उतउपचारे। बन्दि जननु दिय दान अपारे॥ पुनि हुक्मी रुक्मी यह कह्यू। उमा पुजनको आयो समयू ॥ भेजहु सुता अर्च्चने अंबा। अब जति कीजै मात बिलंबा ॥ सुनि रुक्मिणि मन धीरज आना। हैं प्रभु राजत वाही स्थाना ॥ भिलि हैं तहँ पिय मोर मुरारी। अति प्रसन्न भइ राजदुलारी॥ पुनि पुनि विनवन लागि उमाको। अमित नाम जपि सुयश शिवाको॥ [दुर्गानामवर्णनम्] (रङ्गत लँगड़ी में) ख्याल ॥ कात्यायनी शिवा ईश्वरी सुखद सर्व्वमँगला काली। उमा भवानी नमो भगवती सती जन

प्रणपाली ॥ (टेक) गौरी पार्वती रुद्राणी श्री दुर्गाजी मृडानी । शिवघनजीवनि प्राणप्रियहौ अंबिका राजरानी ॥ अगम अपरणा श्रुति यशवरणा गति अनन्त नहिं कोउ जानी । गिरिजा रानी मेरी महरानी मंशा फलदानी ॥ वाराणसी विहारिणि गिरिजे ज्ञान बुद्धि वरदा आली । उमा भवानी नमो भगवती सती जन प्रणपाली ॥ १ ॥ दाक्षायणी आर्या गिरिजा मेनकात्मजा जगमाता । हिम गिरितनया चण्डिका द्वैमातुर मा विख्याता ॥ कीरतिमुख तारकजितजननी गिरिकन्ये कोमलगाता । शैलकुमारी दुलारी शिव शंकर पुनीत ज्ञाता ॥ शिवार्धाङ्गिनि तुम्हीं सनातन सतव्रत प्रणधारणवाली । उमा भवानी नमो भगवती सती जनप्रणपाली ॥ २ ॥ हैमवती शर्वाणी सुखनिधि आठौं सिद्धि चरण चेरी । अणिमा महिमा प्राप्ति प्राकाम्या गरिमा सुखदेरी ॥ है ईशित्व वशित्व और लघिमा नव निद्धी वश मेरी । देव दनुज कुल रहैं दरबान चाकरीमें तेरी ॥ भूत पिशाचयक्ष किन्नर गन्धर्व सिद्ध सेवित व्याली । उमा भवानी नमो भगवती सती जनप्रणपाली ॥ ३ ॥ भक्तन मन रंजनी विपतिभंजनी तेजमय श्री ज्वाला । सप्तद्वीप नौखँड भुवन चौदह तिहुँपुरन रक्षपाला ॥ जनवत्सल नन्दिनी शैलवन्दनी मुनीसुरमहिपाला ॥ विमल आननी ललनजन शरण राखु पत शिवबाला ॥ जय जय श्रीहर प्रिया पुरातन कुशल क्षेमदा ततकाली । उमा भवानी नमो भगवती सतीजन प्रणपाली ॥ ४ ॥ चौपाई ॥ रानी

कह्यो सहेलि सुनोरी । सुताश्रृंगार सम्हार सजोरी ॥ प्रभावैन सुनि सखिन समाजा । भांति भांति के साजे साजा ॥ रुक्मिणि प्रेमसहित उठि न्हाई । भाल बिन्दि कजरा दृग लाई ॥ दिये प्रभासखियन पट भूषन । कहि पहिरावहु रुक्मिणिके तन ॥ प्रेम प्रीति मिलि कुँवरि सजाई । शोभासिन्धु रुक्मिणी माई ॥ भूषण रतन अमित अनमोले । वसन विशाल सजाये चोले ॥ छपका बेना बन्दी कटियाँ । झाले बाले श्रवण बालियाँ ॥ कर्णफूलझुमके वर बुन्दे । मीनबिजुलियाँ कुण्डल गुन्दे ॥ तरकि मुरकि नथबेसर लटकन । वर बुलाक गर गोफ जुगुनु गन ॥ दुलरि तिलरि पँचलरी सतलरी । कल कठुला जंजीर जरगरी ॥ दोहा ॥ चन्दनहार हु धुकधुकी, मोहनमाल मृदाङ्गि ॥ जौकृत कञ्ची वर्ण विधि, पहिरत भइसु उमङ्गि ॥ १ ॥ चौपाई ॥ दुलरा कण्ठी ग्रीव सतलरा । चम्पकली कचकरी हेमरा ॥ हेमहसुलिया सोहत ऐसी । मानो शशि लगि दामिनि जैसी ॥ चौकी भुजबँद जोशन न्यारे । जड़े रतन नव बहु रँगवारे ॥ भुज अनन्तकर छन्न पछेली । कँगनी कङ्गन चुहेदतेली ॥ हथ फुल बांके कड़े पहुचियाँ ॥ अँगुठ आरसी छले मुदरियाँ ॥ कटि किङ्किणि पग पायल धारी । पहुँटे सकरी छागल न्यारी ॥ पगन पलनियाँ अनवट बिछुहे । कड़ियाँ छड़ियाँ छले छबि सुहे ॥ बनै रुक्मिणी बाला बनियाँ । बनी ठनी शोभा निधिधनियाँ ॥ पूजन सामग्री धरि थारा । चावल चँदन प्रसून अपारा ॥ माली सों कह

सखिन यथोचित । सुमन आभरण लाउ उमाहित ॥ (रागिनी खम्माच तीन ताल में) पद ॥ मलिया कर को कँगनवा गूँध लादे कुमुदनको काम कलियनको कर सुभग सोहन गूँधन अति सुठार सो ॥ (अन्तरा) बेला चमेली केतकी निवारी जुही मोतिया गुलाब दौना मरुआ मालती वसन्त मोगरा केवरा कदम्ब कुसुम गुलेदावदी कनेर कुन्ती कचनार गुढ़र चम्पा चाँदिनी पदम हर सिंगारन भूषण अनमुल बनाला पहिरा प्रसूनन हूँ निछावर तोरे मनकी ललन प्रिया उमा· काज सजन शृँगार हितसु प्रकारसो ॥ १ ॥ सोरठा ॥ सुमन सुगन्धित लाय, अर्पे माली गहनयुत ॥ पूजनथार सजाय, धूप दीप नैवेद्य बहु ॥ १ ॥ कस्तुरि केशर रोरि, चन्दन अक्षत ऋतुफल ॥ भूषण वसन बहोरि, द्रव्य दक्षिणा रत्नलय ॥ २ ॥ दोहा ॥ वेदमन्त्र विधि जानहीं, ते द्विजपत्नि समाज ॥ अंबाअर्चन लै चलीं, रुक्मिणि सङ्ग सलाज ॥ १ ॥ [अथ सुहागमङ्गल रागिनी अम नीत्रैताल में] पद ॥ रुक्मिणि सङ्ग सखिन लैस्यानी । जा गणपति ढिग विनय बखानी ॥ जैजै सिद्धिसदन बुधिबानी । भागसुहागदे हितमानी ॥ (अन्तरा) प्रथम तुम्हारा धरै जो ध्याना । चहैं जो हो कारज मनमाना ॥ हे मङ्गलमूरति भगवाना । सर्वगुणनकी खानी ॥ भाग सुहाग दे हितमानी ॥ १ ॥ रुक्मिणि संग सखिन लैस्यानी । जा अम्बा ढिग विनय बखानी ॥ जय जय जय शङ्कर पटरानी । भाग सुहागदे महरानी ॥ (अंतरा) पांच बरसकी उमर से ध्याया । अबतो

अम्बे करिये दाया ॥ दीजै म्वुहिका पति यदुराया । दामोदर दरपानी ॥ भाग सुहागदे महरानी ॥ २ ॥ रुक्मिणि संग सखिन लै स्यानी । जा गङ्गाकी विनय बखानी ॥ जै जै भागीरथि बरदानी । भाग सुहागदे महरानी ॥ (अंतरा) जो तुम्हरी शरणागति आवे । मनोकामना सो भरिपावे ॥ सुख सुत संपतिसे घर छावे । होय कबहुं नाहिं हानी ॥ भाग सुहागदे महरानी ॥ ३ ॥ रुक्मिणि संग सखिन लैस्यानी । सूर्य नरायण विनय बखानी ॥ जैजै दिनेश प्रिय जगप्रानी । भाग सुहागदे सुखदानी ॥ (अंतरा) हे जगजीवन अनधन दाता । तिमिर हरण दृगदृष्टि विधाता ॥ नमो नमो तुवपदजलजाता । कृपा तोर कल्यानी ॥ भाग सुहागदे सुखदानी ॥ ४ ॥ रुक्मिणि संग सखिन लैस्यानी । सरस्वति ढिग जा विनय बखानी ॥ जै जै जै शारदा भवानी । भाग सुहागदे राजरानी ॥ (अंतरा) तुमसेवा शुभमतीप्रदाई । ज्ञान बुद्धिदाई अधिकाई ॥ सदा दास दाहिनी सुहाई । वेद पुराणन भानी ॥ भाग सुहागदे राजरानी ॥ ५ ॥ रुक्मिणि संग सखिन लैस्यानी । जा शिव समीप विनय बखानी ॥ जै जै शङ्कर पती मृडानी । भाग सुहाग दीजे ज्ञानी ॥ (अंतरा) शिवजी दीजे पति बनवारी । गिरिवरधारी कृष्णमुरारी ॥ श्रीवर वृन्दा विपिनविहारी । जै शिवधारी भस्मि मसानी । भाग सुहाग दीजे ज्ञानी ॥ ६ ॥ रुक्मिणि संग सखिन लैस्यानी । गुरु नारद प्रति विनय बखानी ॥ जै विधि ललन प्रपूरण ध्यानी । भाग सुहागदे सन्मानी ॥ (अंतरा) यशोमति

ललनके तुम गुण गाय । मात पितु मनको लियो लुभाय ॥ दीजै नँदनन्दन मोहि मिलाय । रहे जग तुम्हरी सुयश कहानी ॥ भाग सुहागदे सन्मानी ॥ ७ ॥ दोहा ॥ विदित होत दमघोष कहि, योधा होहु तयार । उमा पर्छेबे गइ बनी, कुन्दनपुर के पार ॥ १ ॥ चौपाई ॥ अस्त्र शस्त्र लै जाउ सुधारी । भली भांति करियो हुशियारी ॥ उहां टिको है ग्वाल गँवारा । करै न कछु उपाधि नँद-वारा ॥ पुरते उमाभवन लौं योधा । छाये चहुं दिशि करि करि क्रोधा ॥ जहां न पवनहु की गम होती । जो दल भीतर जाय उदोती ॥ नाना अस्त्र शस्त्र बहु बांधे । चमकावैं खांड़े धर कांधे ॥ भरे घमण्ड महा अज्ञानी । अपनी अपनी बोलैं बानी ॥ कहैं कदापि हु इत हरि आवा । लिहैं छिनहि महँ हनिकरि धावा ॥ इत उत चहुँ दिशि दीन्हे घेरा । अमित भूप भट वृन्द घनेरा ॥ नेति नेति कर करहिं बकाई । कृष्ण कुँवरकी बकहिं बुराई ॥ भनक प्रियाके परि कहुँ काना । करत श्यामको भट अपमाना ॥ छिरकैं तन वृण लवण यथाही । होत मृत्युवत प्राण व्यथाही ॥ दुखित हृदय दृग लाई बारी । अलिन कन्धकर धर भइ ठारी ॥ ऊर्ध्व श्वास लै बारंबारी । नेत्र मूँदकर थिरि कछु बारी ॥ बोली हो ब्रजराज कहां तुम । मींज न मारत दुष्ट युधा तुम ॥ मो सम्मुख तुमका निंदरावैं । यह मोसन दुख सहे न जावैं ॥ दोहा ॥ ऊर्ध्व श्वास लै दृग मुदै, जोइ कीन्हो हरि ध्यान । उतन्यहि महँ प्रभु स्वप्नवत, दरश दियो प्रिय आन ॥ १ ॥ चौपाई ॥

यह न चरित्र परेख्यो काहू । दूर भयो रुक्मिणि उरदाहू ॥ चलि भइ अग्र मन्दगति धारे । श्री पीतम की बाट निहारे ॥ इत उत घिरे बांकुरे भ्वारा । भीर भार कर अति अँधियारा ॥ फैलि प्रियाकर पग उजियारी । निरखैं रूप भूप मनवारी ॥ करहिं प्रशंसा सगरे भ्वाला । धनि धनि भागबली शिशुपाला ॥ ज्यहि मिलिहै यह सुन्दर दारा । नृपको पूर्वपुण्य अति भारा ॥ हुते दुष्ट नृप बहु दल माहीं । पापदृष्टि करि रुक्मिणि पाहीं ॥ कहैं परस्पर अखिल अलापी । चहि हरलीबो रुक्मिणि आपी ॥ ऐस वधू ज्यहि नृपगृह नाहीं । त्यहिको जग जीवनहि वृथाहीं ॥ हमहीं तुमहीं हरैं अगारा । जो हो सो लखि लिहैं पिछारा ॥ दोहा ॥ अस अवसर नहिं पाइहो, ऐसो दांव न घात ॥ पुनि पाछे पछिताइहो, यह धन करसों जात ॥ १ ॥ चौपाई ॥ यक हम तुम यक नृप शिशुपाला । कछु नहिं चार भुजावर भ्वाला ॥ अस अस मन नृप पाप बिचारे । रु-क्मिणि प्रभुचरणन लौ धारे ॥ पहुँची प्रिया उमामठ तीरा । अलिन धुवाये लै पग नीरा ॥ पग पखार तट उमा सिधारी । सङ्ग सखी विधि जाननहारी ॥ वेदमन्त्र पढ़ पुजा कराई । किसर चँदन कस्तुरी मिलाई ॥ लेप उमा तन इतर सुगन्धन । चावल चारु चढ़ै बहु पुष्पन । सुमन अभूषण अँग अँग केरे । दुर्ग्गा के तन सकल सजेरे ॥ धूप दिव्य आरती उतारी । भूषण वसन रत्नमय भारी ॥ सो सब दुर्ग्गा वदन सजाये । विविध भांति के भोग लगाये ॥

पाणिजोरि परिक्रमा दीन्ही। शीस नवाय बीनती कीन्ही॥ (राग चन्द्रकोष रूपकताल में) नाराचछन्द॥ ऋधीसिधी नवौनिधी करा प्रमोद मालिका। सदाप्रसन्न आननी स्वतंत्रनी विशालिका॥ अनूपरूप राशिनी सुहंत चन्द्र भालिका। नमो नमो कृपालिका प्रणाशु शत्रु कालिका॥१॥ समस्त सौख्य सारणी विदारणी विथानुकी। प्रचण्डदण्डदायनी नशावनी खलानुकी॥ अपूर्व मोक्षदाइ भक्ति हाव भाव झालिका। नमो नमो कृपालिका प्रणाशु शत्रु कालिका॥२॥ ललाम जाति भांति भा सुगात ख्याति भावनी। लजाँय कोटि यामिनीश दामिनी सुहावनी॥ अतीउदारता दया मया जया प्रजालिका। नमो नमो कृपालिका प्रणाशु शत्रु कालिका॥३॥ अनंत शक्तिधारणी निशङ्क सिंहवाहनी। सहस्र सिद्धि कारणी दरिद्र दुःख दाहनी॥ प्रपंच मोह नाशनी रिपून वंशघालिका। नमो नमो कृपालिका प्रणाशु शत्रु कालिका॥४॥ विभूति अङ्ग अद्भुतं रमी रसाल भाभरी। लिये कृपाण दुष्ट शूल दाइ शूलि कर्तरी॥ रणस्थली सक्रोध भंजनी खलू करालिका। नमो नमो कृपालिका प्रणाशु शत्रु कालिका॥५॥ अरिष्ट आवली दला मला दला प्रभंजनी। अघौ अथाह गंजनीय भक्त हीय रंजनी॥ सदैव दास दाहिनी सुहै सहाय ढालिका। नमो नमो कृपालिका प्रणाशु शत्रु कालिका॥६॥ अनंद कंद कामदायि वाञ्छितार्थ दायनी। अतौलशङ्कटै अघै विदारु सौख्यकायनी॥ कुकर्म्मजा अनीति रीतिनाशिकाकुचालिका।

नमो नमो कृपालिका प्रणाशु शत्रु कालिका॥७॥ महा पराक्रमी प्रचण्डि चण्डि शक्ति थापिका। निशुम्भ शुम्भ से बली अनेक दुष्ट दापिका॥ प्रचण्ड चण्ड मुण्ड धूम्र कैटभाल शालिका। नमो नमो कृपालिका प्रणाशु शत्रु कालिका॥८॥ जहां जहांहिं सेवकानु सङ्कटै पड़ै जबै। तहां तहांहिं आन तू सहायता करै तबै॥ ललन् सदैव चर्ण शर्ण शंभुबाल पालिका। नमो नमो कृपालिका प्रणाशु शत्रु कालिका॥९॥ (रागिनी मांडताल दादरा में) पद॥ हमारा बेगि करौ निस्तारा। न भाड़ा भक्तिका निर्वारा॥ (अन्तरा) अपनिहि लखु क्यों नहिं अपनावत कह अपराध निहारा॥१॥ कासे कहूँ मोर सुधि लीजै तुम बिन मम को सुखारा॥२॥ जन्म व्यतीत भयो दाया बिन तुम नहिं नेक विचारा॥३॥ ललन श्याम अब बेगि मिलावहु नहिं जिय जाय यहि बारा॥४॥ चौपाई॥ जय जय जय हिम शैलकुमारी। करुणा कारिणि प्रिया पुरारी॥ जय जननी जीवन जनकेरी। लिजिये बेगि मातु सुधि मेरी॥ हौं चेरी चरणन की तेरी। अब जन बार न करिये देरी॥ शिशुपाला दल द्वार छयेरी। अमित अधर्म्मि कुचाल घनेरी॥ कोटि कान सों सुनु मम टेरी। नहिं मम प्राण जायँ यहि बेरी॥ पाहि पाहि शरणागत अम्बे। प्रणपालिन भक्तन जगदम्बे॥ सुनि रुक्मिणि की बिनय बहोरी। प्रकटि अम्ब वर दीन्ह किशोरी॥ तनिक शोच कर जनि जिय प्यारी। मिलिहैं तुहि प्रिय कृष्ण मुरारी॥

पाय उमा वरदान किशोरी। प्रफुलित भई मगन मन गोरी॥ पुनि द्विजपत्निन कहँ सन्माना। दै धन रत्न वसन विधि नाना॥ रुक्मिणि प्रकृति पेखिहित बामा। ह्वै प्रसन्न इमि बोलि ललामा॥ [द्विजपत्न्य ऊचुः] (राग हमीर चारतालमें) घनाक्षरी कवित्त॥ ध्यायो कोउ भूत अवधूतको मनायो कोउ पूत ह्वै सुपूतको कुपूत सो कहा रह्यो। सम्पति अशन पट भूषण व्यसन मध्य वामरति रातो देव ध्याइबो कहा रह्यो॥ देखो तोर ललनपनै ते ना ललनपन जाको जो प्रताप सो जताइबो कहा रह्यो। स्वाधिन श्रीकृष्णदेव करि मानी सेव एव तोसो रुक्मिणी न आन हरि रतिमा रह्यो॥ १॥ [श्रीशुक उवाच] चौपाई॥ हरी अराधत मठसों निकसी। सखिन त्याज भइ बिकसी बिकसी॥ घूँघट खोल मुख दियो उघारी। नृप दल रूप मोहिनी डारी॥ मूर्च्छित ह्वै नृप गिरबे लागे। जो कुदृष्टि हे मूढ़ अभागे॥ तन सुधि बिहय बिहय मन बोधा। इमि गति प्राप्त भये नृप योधा॥ अस उपमा त्यहि समय उलहियत। समुझि परत तादृश जस कहियत॥ मनौं खिलौना रचे कुम्हारे। सूखन हेतु धूप में डारे॥ धौं डसलिये भुजङ्गम कारे। मृतक तुल्य महिं ऊपर डारे॥ ऐस हाल ह्वै गयो सबनको। जिन कुदृष्टि देखो रुक्मिन को॥ इत उत दृग उठाय हरि हेरी। पिय न पेखि भइ दुखित घनेरी॥ कर मलि मलि पछताति मनहिं मन। कहत बेगि मिलिये मनमोहन॥ (रागिनी काफी चारतालमें) घनाक्षरी कवित्त॥

वारण पिपीललउ पक्षि अबाबीललउ पाहन शुचीलयुति पञ्च तत्त्व न्यारे जू। जार अण्ड स्वेदजजे बार व्योम भूभिज जे देव मुनि मनुज जे तोरेही सहारे जू॥ चार पञ्च मुख वारे सहस्र मुखारे विष्णु प्रलै दुःख टारे ते तिहारो बल धारे जू। नन्द के ललन प्यारे मोर प्राण के अधारे जन रखवारे सुधि मोरि क्यों बिसारे जू॥ १॥ (राग देश तीनतालमें) पद॥ मैं तो बिनती करत कर जोर जोर। अब बेगि मिलौ मुहिं नँदकिशोर। तुम बिन व्याकुल भयो जिया मोर॥ (अन्तरा) जिय दर्शन अभिलाष पुजैये लगी तोर चरणनमें डोर॥ १॥ ललन पिया आधीन तिहारे करिये कृपा कटाक्ष कोर॥ २॥ दोहा॥ नृप दल शब्दन शोरभा, भनक परी हरि कान॥ आइ प्रिया पूजन उमा, जानि गये भगवान॥ १॥ चौपाई॥ गरुड़ध्वज रथ तुरत सजायो। शङ्ख सुदर्शन चक्र उठायो॥ श्याम कर्ण रथ शोभित घोड़ा। चाल पवन सम सहें न कोड़ा॥ जबहीं प्रभु रथ धावत भयऊ। वज्र घात सम रव उपजयऊ॥ मानहु महाकाल घन घोरा। गर्जन सुनि. भा भय दल ओरा॥ उमग्यो हिय धक धका गँभीरा। पहुँच्यो प्रभुरथ रिपु दल तीरा॥ तबहीं हरि ने शङ्ख बजायो। कम्पितभा दल अति सहमायो॥ छूट छूट आयुध हाँथनसों। गिरगिर परे भूमि भूपनसों॥ धाय धस्यो रथ समर मँझारी। अचरजवत कछु लागि न बारी॥ लाखन भट रथ चक्र दबाने। गजतुरङ्ग रथ दृष बिनशाने॥ लगी उमानहिं नेकहु बारी। वेगहिहरी

प्रिया बनवारी ॥ (रागिनी खम्माच तीनतालमें) पद ॥ निरखि गौरी पिया को परम हुलसी । झपट झट सैयाँ डारत गलबैयाँ ॥ (अन्तरा) परस अँग अँगसों निपट शुभ ढँगसों पकर कर करसों सरस सों हँसी ॥१॥ करत रस बतियाँ मोहनी सी मुरतियाँ मिलाये अँखियाँ सो अँखियाँ कमल सी ॥ २ ॥ युगल छवि छाजै दामिनि शशि लाजै ललनप्रिया प्यारी छवि जियामें बसी ॥ ३ ॥ दोहा ॥ करत शंख अतिघोर ध्वनि, रथारुढ़ करबाल ॥ बल दल प्रबल समीपहीं, गमने श्री नँदलाल ॥ १ ॥ इति श्रीरुक्मिणीपाणिग्रहणे श्रीरुक्मिण्याहरणंनामद्वात्रिंशत्तमः सर्गः॥३२॥

चौपाई ॥ रथ रव घटा पवन तन परसी । भटन सावधानी तबदरसी ॥ अथ मूर्च्छा जागी जब सबकी । नृपन लखी माया माधवकी॥ दल बिच परगा हाहाकारा। भनत परस्परअखिल भुआरा॥ लीजो लीजो परी पुकारा। भगो जातलै बधू गँवारा ॥ पकरो पकरो करिसब धाये। हरिबल दल सम्मुख नृप आये ॥ रे गुपाल यह ना बहादरी । छल करि हरलै गयो नागरी ॥ कछु मर्दुमी दिखातो दलमा । पुनि वहुअर हरलातो पलमा ॥ लव मालुम परतो वहि बारा। हो तो जीवन कठिन तिहारा ॥ है बल के बल पै मदमातो । तौकिन त्यहि हम सम्मुख ल्यातो ॥ बल सहायता काम न ऐहै। अपन दोष बध बलहु करैहै ॥ तैं कादर हम सब करजाना। तियन सदश बल दलहि लुकाना ॥ सुनिअसकुवच सबन के दाऊ। उपज रोष हिय जोश अथाऊ॥ दोहा ॥ लय बल

मूशल बाँकुरा, खल दल भञ्जक जौन। आ ललकारो सबनकँह, बीर रोहिणी छौन ॥१॥ चौपाई ॥ लाङ्गित लङ्ग सुजङ्घ नितम्बित । कछनि कछे कटि बिनु अवलम्बित ॥ भुज उठाय इमि कीन अलापा। थिरहु जौन निज जायउ बापा ॥ हे गुरु शपथ जो भजहु कदापा । करहु जनहु जो दाप अनापा ॥ रचिरण बल प्रभञ्ज मूशल को । बधन लगे बैरिनके दलको। शशक सिंह जिमि छापत धाई । त्यहिविधि रिपुन देहिं विनशाई ॥ ज्यहि बल मूशल करहिं प्रहारा। भूमिभाग बनि जाहिं भुआरा ॥ मूशल मूश्लेहिं भट प्रानन। मूशल मसल देहिं भूपानन ॥ मूशल मुशल देय प्रानन को। जीवन रहित करै ज्वानन को ॥ हल हलक्यहु हनदें बलदाऊ। मूर्च्छावन्त होहिं महिराऊ ॥ लखि हल बल खल बलि हिय ठाही। लैलै जियभागहिं हमराही॥ दोहा ॥ हल हलाय बल नृप बधैं, बड़वीरन बलवान ॥ हदि हिरासि हरएक प्रद, हल हारण अभिमान ॥ १ ॥ चौपाई ॥ हल हारक भट दल छल बल कहँ। हलअमोघ हन्ता खल दल कहँ ॥ हल हारी हरिरिपु अभिमानी। हल हरता हरिजन रिपु प्रानी ॥ हलहिं हलाहल सम सब योगू । हिय हारन लखिभागहिंलोगू॥ हल हलात ज्वरानिधि हल पेखहिं । हल ज्वालाग्निहुते तिख लेखहिं॥ हल बिज्जुलवज्रहुतेभूरा। पेखि पराँय सुभट रण शूरा ॥ बल गनीम हल जान सकावहिं । प्राण पनहिभँगिहिय कबु आवहिं ॥ कागज कारथ का भट बाजा। हल त्रासद तन रिपुन समाजा॥ ज्यहि दिशि शोध धरै

हलायुधी । षोड़श कलहों रहितसाबुधी ॥ बलसह भटपुर्षार्थ निधाना । दृग तर आँकहिं एक न ज्वाना ॥ खल दल यदपि बलाधिप नेती । कृष्ण विमुखि नृप सेन समेती ॥ दोहा ॥ तदपि न तृण वत आदरें, करैंखलन विध्वंस ॥ आकुल व्याकुल भूप भट, बहुतक भये निवंश ॥ १ ॥ चौपाई ॥ इमि गति देखि सकल भट योधा । शिशुपालहि तिन्ह जाय प्रबोधा ॥ कीन्हकुचाल गँवार गुपाला । अचरजवन्त सुनिय सोइ हाला ॥ जनै न का जादू कछु कीन्हा । मुहनी जाल डाल अस दीन्हा ॥ भे मूर्च्छित यक सँग सब शूरा । भाहत सबका नूर शहूरा ॥ अमितभूप भट मार बिदारे । नेति बाज गजरथ संहारे ॥ माया अस कछु कीन्ह कन्हाई । हरलेगयो वधूनृपराई ॥ भयो चेत हम सबका जोई । समर करन उद्यत भे सोई ॥ अबहिं न कछु बहु भयो बिगारा । जो उपाय बनसकै तुम्हारा ॥ झट चल छीन लेहु रुक्मिनको । माराबिनाशहु दोउभाइनको ॥ नहिंपति हीन होत सबकेरी । करुप्रयत्न कछु परिहर देरी ॥ दोहा ॥ सुनि शिशुपाला भटनुबच, दारुण भयो अचेत ॥ सावधानि अवसानगहि, चलिभा समरिक खेत॥१॥सोरठा॥ सकल सहायक भूप, भिरनलगे भट भीर लय ॥ दई समर महि तूप, अस्त्र शस्त्र धारी भटनु ॥ १ ॥ चौपाई ॥ कह शिशुपाल कहां गोपाला । कहँ बलदेव भूरि बलवाला ॥ मारिधरौं अब यह छिन दोऊ । जियत बचै नहिं त्यहि दल कोऊ ॥ शिशुपाला दल बली कराला । लयभट रणठान्यो तत्काला ॥

इत उत धावे घात घतावे । अखिल भटन अवसान बँधावे ॥ घेरौ घेरौ बलदल बीरे । चिह्न न रहै एक रणधीरे ॥ बाँधे बान कृपान कमाना । मारैं भटन बीरबलवाना ॥ गच पच खच पच शस्त्रनु माँची । त्यहि छिन की गति जाय न बाँची ॥ दमु नन्दनैं विजयके हेतू । युद्धै योधा नृपन समेतू ॥ दौरि पकरियो कहि इमि लोगा । अरियावत कहि कुवच विशोगा ॥ भले मौन दीन्हिसि शठ बैना । समुझ परब जस होब कुधैना ॥ दधिहि धोख जनि भखिय कपासा । लै बिनु प्राण न बचब गिरासा ॥ दोहा ॥ जस चाहत हे कहुँ यहां, चलि आवै नँद पूत ॥ विधि वश वहि बानक बनो, लूं बैरिन बल कूत ॥ १ ॥ दमु सुत नृप भट युधत लखि, सजई शकुनी सैन ॥ समर बीर शिरपर चढ़ो, निहद मस्त मद मैन ॥ २ ॥ [अथ शकुनी सहदेव समर वर्णनम्] रोला छन्द ॥ शूर शकुनि सकोप धायो समर साधन कृत्य । झपट झट सहदेव लाग्यो करन रण आवृत्य ॥ युगल भट सह गर्ब धनुधर करत विशिख निपात । मनहुं बाजीगर बटा नट बटाते उत्पात ॥ टीढ़ि दल सम शरच्छेदित गगन मंडलघोर । दुहुँन दुहुके काटि डारत बाण अवनि अथोर ॥ रोष रोष दबोच रद दृग फारि निरख बिरङ्ग । डारि डारि लिलार बलनक रन्ध्र फरकत सङ्ग ॥ बहुरि शकुनि सुबधत भा धरि धनुष विशिख भुजङ्ग । बाण तब संधान दिय सहदेव अधिप विहङ्ग ॥ ततः शकुनि निपात कीन्हिस वह्नि बाण अनन्त । सलिल शर सहदेव तज

तिन्ह कीन्ह चभित तुरन्त ॥ न्यूनरित शर शकुनि वध रवि द्युती दीन्ह दबाय। वायु शर सहदेव हनिदइ धुन्ध अखिल उड़ाय ॥ विविध बिधियत्न सृजाय खीझ्यो शकुनि भटनु गुहार । बदत भा यहि मारु शठ यहि मारु शठ यहि मार ॥ वीर भट समुहान लागे करन रन सह गर्व । तब तो अति सहदेव क्रुद्ध विभंज खलन अखर्ब ॥ लै अमोघ अनन्त शर संधान तीव्र निखंग । हनतु हनि हनि भटनु गनि गनि करत भुजशिर भंग ॥ सृजत दुस्तर कर्म अतिशय पर्म प्रबल अभर्म । डारि दीन्हिस भिरिरिण महँ दुरन लाग अशर्म ॥ भनत जै नँद ललन सिन्धु प्रताप करत सहाय । भंज कोटिन कुअँग के भट अमित दीन्ह भगाय ॥ १ ॥ [अथ कर्ण नकुल युद्ध वर्णनम्] (रागिनी खम्माच चारतालमें) मनहरण कवित्त ॥ रोष आभरण कर्ण कोप विधिवर्ण वर्ण समुझि अमर्ण धर्णि रणमां थिरातभा । सुभग आचर्ण दर्ण निषिद्ध आचर्ण भर्ण धर्मानुचरण हर्ण मनमाँ मुदातभा ॥ बांधि अवसान गूढ़ भिरवेही काजारुढ़ संग भट पूढ़ पूढ़ खन माँ जुरातभा । शस्त्रन सहस्त्र विधि रीति रण कीन्हे सिध ललन पनै दै निज फन माँ फुलात भा ॥ १ ॥ [अथ रोलाछन्द] निरखि नकुलै बिहँसि वरणों अरे पाण्डव भ्रात । समर करु हम संग शठ थिरु थिरु कहां चलि जात ॥ तोहि बधितो सुहृद गण बधि बधहुँ नँदको पूत। करहुँ तय दल सर्व तृण सम सम्हरु प्रथमहिं ऊत ॥ अस्त्र अमित प्रहार करि करि दाँव धरि धरि बंकु।

मारु मारु पुकारु धायो नकुल पांहि अशंकु ॥ नकुल धार निखंग शायक भजु सहायक श्याम । करन लगु विध्वंस बैरिन विकट जे बल धाम ॥ परत ज्यहि तन तीर चीर करेज होवत पार । रुंड रुंडित मुंड मुंडित लुंड लुंडित झार ॥ भनत कै कै रिपुन छै छै कृष्ण जै जै कारि । सुनत महिपति खिजत हदि अति वधत बाणन भारि ॥ विशिष त्रिफालिक बुझासि विषतिख धारित धार दुअंग । हनत नकुल निहंग अंगन दुखद दारुण रंग ॥ छिन्न भिन्न विछिन्न तन सन झरहिं रुधिर प्रवाह । नकुल नेक न शंकु सकुचन दढ़ित रण अवगाह ॥ सुधर सम्हर सकान तजि गहिचाप दृढ़ शर फेंक । छेंक रवि सुत घात शर बध कीन्ह भटनु अनेक ॥ मच्यो खल बल पड़िहि हल बल गुह्य छल बल खोइ । ढुँढ़त अपन सहाय निजु निजु गये हिय मनु रोय ॥ जनक जोहत पुत्र सुत पितु बंधु बन्धुहि टेर । ददहि ममा जमात्र जोहत युगत जीवन केर ॥ पड़ेचित विकलांग चिक्कत उठत पुनि गिरजात । बांध साहस शस्त्र धारत सृजत अति उत्पात ॥ मलरत अगणित बीर केवल नकुल सँग यक संग । करत जंग जमक्क साविधि नकुल सुभट मतंग ॥ धरत नहिं क्यहु नैन तर गर घूँट शर सन देत। बचत नहिं भट एक त्यहि सन साँचु बिनु संकेत ॥ अचल भक्ति ग्रहीत श्रीनँदललन चरण प्रताप । नकुल रण निर्वीर्य कैभट बँधहि दीन्हिस थाप॥ १॥ [अथ द्रोण द्राविड़ेश बल दलयोर्युद्धवर्णनम्] दोहा ॥ द्रोण प्रबल दल बहुरि

लय, कीन्हिस अति उत्पात ॥ द्राविड़ेश दक्षाधिपति, दोउ दल कीन्ह जमात ॥ १ ॥ अगर बगर चहुँ डगर सों, घेर सुभट बलकेर ॥ दावानल सम तीक्ष्ण शर, लग्यो प्रहारन फेर ॥ २ ॥ (ध्रुपद रागिनी खम्माच चारतालमें) म० ह० कवित्त ॥ ताड़लङ्ग झाड़की उखाड़ले पहाड़की शिला अथोर बाढ़की प्रपातने बलीलगो । ताकसों तमंच थोक ठोंक औबिछूह झोंक बीबिल बर्छीन नोंक छेंकवे भली लगो ॥ सार छल धोपन को ढालशर रोपनको तीखदल तोपन को दागबे छली लगो । ललन नँद दलपै दाऊ सुभट बलपै द्रोण दल सम्हल हनें शरावली लगो ॥ १ ॥ सोरठा ॥ बलभट बली महान, कोप कोप लागे बढ़न ॥ चाप शरन सँधान, घन भरसी बरषन लगे ॥ १ ॥ लेखि लेखि तन छेंक, चल्लनीय सम अङ्ग किय ॥ फुल महिताबि अनेक, फुल झड़ियां शोणित छुटैं ॥ २ ॥ दोहा ॥ भरि डावर ते सर भये, बहि बहि नरा करोर ॥ सरते झीलैं झिलनते, सरिता सागर घोर ॥ १ ॥ [अथ भूरिश्रवा पार्थयोर्युद्धवर्णनम्] रोला छन्द ॥ भूरि भूरिश्रवा रिस भरिगहे आयुध भूर । पार्थ पै खम ठोंक धायो विक्रमी भरपूर ॥ कठिन रण कर्कश युगल भट भिर पराक्रम लाय । धारि साहस तज असाहस दाँव घात घताय ॥ विशिष भर भर सघन झरि झर मनहुँ बुन्दन केर । अशर अगणित किये तरकस तूणीर सुमेर ॥ दुहु मारैं दुहुँन कहँ क्षण महँ अखर्बण बान । दुहु निवारण करहिं छोंके अमित

शर सविधान ॥ फेरि फेरि समस्त दिशिरथ टेरि टेरि सगर्व । हेरि हेरि विदार भट दिशि घेरि घेरहिं सर्व ॥ काटि काटि असंख्य धनु गहि बहुरि दुरबच बोल । बदत जियत न जान दीहैं बधहिं आयुध तोल ॥ करत दुहु को विरथि दुहु रथ अङ्ग बंधनतोर । तीक्ष्ण विधि सविधान सारत विष ज्वलित शरछोर ॥ गदा गहत गहि गयंदन से गुदगुदे गात । ढालसों कैं ढाल बारन शस्त्र वृन्द निपात ॥ गरल बभ्कि तरवार तीक्षण धरित धार दुधार । परत ज्यहि पै भँगत नहिं पै गिरत क्षितिहि मँझार ॥ अस्त्र विधे अनन्त चिकरहिं मही महिभरतार । बाधित बहु बंदुखन डारे लोथ यूथपहार ॥ तड़प तुपक तभंकदे बारूद गोलन घाल । बरत बाती धरत परत न चिह्न चीह्नि मुआल ॥ पार्थ निधि पुरुषार्थ पूरण विकृत नहिं मुख ज्योति । शस्त्र आश्रित शूर विजयी तनु अधीर न होत ॥ खड्गयुद्ध विधान सीखे युग्म योधा धीर । युधत अद्भुत युद्धसह विधि बधतभटहनि तीर ॥ खंड खंड बितंड डारे भूत भू पर नेति । जंघ सुभुज नितम्बु कटि कटि गिरहिं शोण समेति ॥ गिरहिं मद भद मुंड क्षिति मनुदृष्टि अति उफलान । रुधिरझर चहुँ फुरत बारन मनहुँ घन बुँदियान ॥ उभय बीर प्रमत्त रिस वश चाबि अधरन दन्त । किटकिटाय सभय धावत युगल योधावन्त ॥ छूटैं जूटैं जुटैं टूटैं सिंह टूटैं जान । झपट झरपटलपट लटपट गिरत हत अवसान ॥ कवच किरच कुठार हारत बार बीतहिंनाहिं । उठत शब्द भयंक शस्त्रन बदत बानि सकाहिं ॥ मचिहि सच

पच भिरत गचपच लंक लचलचकाहिं । करहिं कचपच गहिकलनि कटि बधहिं जनि पछिराहिं ॥ मरहिं अचपच बरण दुरवच हनें जचि जचिबैर । गिरहिं टचटच मुंडमनुतरु झरहिं फलकर फेर ॥ धारिदंडउदंड दारुण दिब्य भूषण युद्ध । वायु वेग ते वेगि वेंगहिं बली भूषित क्रुद्ध ॥ कुरिन कौरव कुल सुभट सँग सजेरणपट लोह । अपन अपन सुघात घाले धरे बैरिन द्रोह ॥ पांडवादिक पुरे रण छिति पुंज बल शिरमौर । दौर दपट दबंग दाबहिं दनुजरिपु नृपऔर ॥ दतहिं हतहिं न हटहिं हठिलै दतहिं युध कृति मूर्त्त । पूर्त छलबल सूर्त साहस बीर भंजन धूर्त्त ॥ विदित विक्रम करहिं निज निज एक एकन तेहि । करहिं भट विध्वंस बाणन अपर शस्त्रनसेहि ॥ धसहिं धौंसादै दनूजन दलैं दलन प्रचंड । अंड बंडस भुंड कारहिं रुंड मुंडित खंड ॥ शस्त्र मेदित नृप बिलापैं परे बहु रणभूम । नन्द ललन प्रताप पाँडन मची इमि दलधूम ॥ १ ॥ दोहा ॥ पेखि पेखि बिन लेख शवसड़हिं समरछिति पाहिं ॥ घोष सँगाति सजाति नृप, दहल उठे मन माहिं ॥ १ ॥ [अथ दुःशासन भीमसेनयोर्युद्धमाह] शेलाछन्द ॥ दुशहसन तब रोषलै शिशुपाल दल अगुआन । धाय धसि रणमाँहिं भीमहिं भिरन कही बखान ॥ भाएड पैलै भाएड भरि भरि पान करि करि मद्द । सद्य ताड़िहि लोटधारे मत्त महाविहद्द ॥ गजनु बलतन पुरित पुंजित तुरत फुरति निधान । सरित सुरत अजुरत जनि नर नाहरा अवसान ॥ सिकिल सृजित

सिरोहि सइफ सँगीन साँग त्रिशूल । बाँकि बाँक भुजालि वल्लम बखतरालेशूल ॥ खङ्ग खन्ता खांड़खरे गणाँस गाँसेहस्त । तबल तोमर पाट नीमच नेज करता ध्वस्त ॥ तीखतीर कमान हिंसक हँसिय गाँसि अखोटि । चाक चक्र छुरीन बाना गदा ढाल प्रजोट ॥ बहल बीषल छुरक पटिश पाश हल खड्वांग । अस्त्र अंगित सुभट गण बहु रचैं समरिक स्वांग ॥ बाण धनुष कृपाण धार कुठार कोउ तरवार । भिंडि पाल भुशुंडि शारँग शुठि कटारि कटार ॥ दिव्य दस्ताना झुला नाराच प्रबल पिनाक । बृन्द बन्दुख तिख तमंचा लेहिं आयुध आंक ॥ विपुल तुपकनु वृन्द साजहिं ग्रसित गोल बरूद । अखिल चाक चुबन्द-चकता धरहिं काँधनु कूद ॥ छिष्ट छिष्ट कुल्हाड़ि बाढ़न बाढ़ि बाँध बिछूह । गुलन लोहन बन्द बंधित लिये लाठि समूह ॥ ब्रह्म पवन गरूड़ अहि अग्निहु शोषक रक्त । बरछि सुबरन मई साजिति अमित भाँतिक शक्ति ॥ भरित भूर घमंड आयुध दीन्ह योधन काहिं । मल्लयुध मद भिमहिंकै युध मल्है ताहि भिराहिं ॥ सुनत स्वामि हकूम बंकुट भटन अगणित फोज । सुराहार महत्व माते करत भीमहिं खोज ॥ मलत भुजन बिताल तालन मारि मारत दंड । लसित मुद्गर मुष्ट लेजम अष्ट धातु उदंड ॥ सुभट दमखम बार नहिं खम खानवारे कोइ । ठोंक भुज दमदम खखारहिं भनहिं सेखी सोइ ॥ कहहिं हम सम होउ कोउ तौ अरे हमसन आइ । फेर मूँछन हाथ दाढ़िन रहे भूमि मभ्काइ ॥ धरत नहिं महिपाद

पैंतर बदल बदल प्रफुल्ल । करहिं नटवत कला कोटिन उछल२प्रजुल्ल ॥ दन्तपंक्तिन पिसहिं धरि धरि घिसहिं चीक चिंघार । ओष्ठ धरि धरि चबहिं रिसबश दृगन सुराखुमार ॥ घुरक लोचन झुरखि रोचन पुंज तुरक मिजाज । फुलै नक नथुना कपोलन कथहिं दुरबच बाज ॥ भाल बलित मरोर भृकुटि सकोर नैन तरेर । बाँध कटिपट लंग जंघित सोम दोम घनेर ॥ भरित जोम सुज्वान बांके वीर धीर गँभीर । भीम सँग ललकारि अभिरे चीर मीर अखीर ॥ १ ॥ दोहा ॥ महा मल्लमलयुद्ध पति, अतुलित ही बलसीम ॥ रोषि सबन लाग्यो हनन, धरि धरि पेंचन भीम ॥ १ ॥ [अथ पेंच नामानि वर्णनम्] (त्रैताल रागहिंडोलमें) मनहरण कवित्त ॥ झाई झमकाय झुकझाँक झूमकै ललन झपट झकोर झाल झालरो झटापटी । पुट्ठीहू प्रबल कटि पट्ठा कीली को उमेठ पाउँ पटकाय पट पटकै पटापटी ॥ इन्द्री इन्द्रायन लोट पुस्तकमृगा मसोस गुंज हस्त चप्परास सँडसी चटा चटी ॥ साड़पाड़ घात आड़ ताड़ पाड़ दे पछाड़ पैंतड़ा सम्भार भीम मारतो भटा भटी ॥ १ ॥ (रागिनी बहार शूलतालमें) मनहरण दंडक कवित्त ॥ गिरहगर लपेट ललन पल्टा पलेट दै घिस्सा झपेट कै समेटकै सो आरतो ॥ पेटिया लगाम औला मौला अभिराम कटि कूल्हो करथाममोतीचूर मुँह डारतो ॥ हफ्ता औ अड़ंगा राँध मार दाँव चंगा साँधिकुञ्जरचिंघार भीम पेंचनपै मारतो । झोली पर तौल धड़ टूट मोजा कै सुडौल बाँध

निज डौल धौल मारधूँ पछारतो ॥ २ ॥ (रागिनी बहार त्रैताल में) जल हरण कवित्त ॥ पट्ठन उखार बालसांगड़ा लुकान कर कुला काल फाँसी हथकोड़ा केरदाँव लाय । बाँधइकलंगा चंगा हलाकून बेलनहू हौदा महौती ललन श्रोटैंकपहँ टिकाय ॥ कल्छुलीकड़ा कराल रुईदस्त घुर्फलांग बगुली बहुल्लीपट डूब कूँचको उठाय । आँटी पर आँटकर काटपर काट छाँट ताककै तबाक फार मारै घातपै लगाय ॥ (अथ ध्रुपद रूपक ताली रागिनी सोहनीमें) सवैया ॥ भूरभटैभट भूरन माकर चूरन डारत पेंच पछारी । रूमकला जँगकूँच उखार खसोटहुमारत डारि सवारी ॥ काछुन धोबिपटा पटकै सुसखी इक दस्ति दुदस्ति प्रसारी । बैठक मारसुं डूबसम्हार ललन् डँडमार सुभीम भिड़ारी ॥ ४ ॥ दोहा ॥ पग पछाहिं दै बाँहि गहि, डोरि फिरै चक डोरि ॥ मुष्टिकमार थवइ थपक, डारत भटनु मरोरि ॥ १ ॥ चौपाई ॥ परैभीमके सम्मुख जोई । त्यहिछिन मारि गिरावैसोई ॥ हने मल्लयुध ते भट भारे । कछु मारे कछु अधमर डारे ॥ चली न यदपिचालक्यहु केरी । गहि निजु निजु आयुध अभिरेरी ॥ भीमहु सेन गदा लै कोपा । समर झँझार सबन कहँ रोपा ॥ गहिर गदा गदिकावन लागा । हनि हनि भटनु गिरावन लागा ॥ ब्रह्मबाण सम तेज अपारी । गदा गरेरै रिपु दुदुकारी ॥ गदा गम्य सर गरुड़ बराबर । भपै भुजङ्गम शत्रुभराभर ॥ शर समीर मनु गदा विशाला । मारि भगावत वैरि कराला ॥ मरिस अनल शर गदा बिगेरी । निजु भख लखि भखि यावत

बैरी ॥ अहि शायक सम तुल्य गदासो । डसिहानत शत्रुन दलासो ॥ दोहा ॥ शक्र वज्रसे कठिन बड़, गदा हनतु रिपु ओघ ॥ राम बाण जग विदित जिमु, तेहि समगमन अमोघ ॥ १ ॥ चौपाई ॥ तड़ितानल सम प्रज्वलित भानू । भूँज चबावत शत्रुन प्रानू ॥ कोटिन वृश्चिक सम विषवारी । गर्दत गदा रिपुन गणभारी ॥ जिमि गुलेल गुल्ला खग नाशै । गदा बेग रिपु बृन्द विनाशै ॥ गदा गदाधर दोउ इमि बूझैं । प्रलयभये जिमि शंकर सूझैं ॥ भीमपराक्रम देखि कराला । अखिल दङ्ग रहिजायँ नृपाला ॥ जीत जङ्ग रण भूमिम भारी । भीमप्रशंसा सबन उचारी ॥ बहुरि सात्यकी युद्ध प्रसंगी । अरि भिर अभिरपड़ो रण रंगी ॥ कर कमानकरि कठिन कराला । बिद्रावत भाविशिष बिशाला ॥ शर सविधान प्रधान छलय को । नभ मंडल मंडित के भयको ॥ तिमिराकार प्रसार मही थल । बुलै अपनभय भीत प्रबल दल ॥ टेर टेर सहगर्ब अपारै । घेरि घेरि रिपु धरहु गुहारै ॥ जियत न एकहु ह्याँते जाई । धारि धावा रिपु लेहु नशाई ॥ दोहा ॥ भरि भराइ भट भगपरे, लैलै शस्त्र शिरोहि ॥ खड्ग चर्म कत्ता कुलिश, घातैं घातन जोहि ॥ १ ॥ (राग सावनी मलार रूपक तालमें) अथ हरिगीतका छन्द ॥ कोउकरहिं अविरल पात शायक गहि कृपाण कठोर से । भुज विपुल बल बिकाल खल दल मत्त बिनुहद घोरसे ॥ पग पगपैंतरा बद्र अगर बगर सु डगर सिहारकै । बिस्तारित बृन्दन बृन्द बंकुट सविधि शस्त्र सुधारिकै ।

अद्भुतिक युद्ध जमाति जोरत बिरति विस्मय बाँकुरे । थिर थिर फिरैं फिर फिर भिरैं भिर भिर लरैं दै हांकुरे ॥ मचि चर्म चर्बित चहल मह महि महल गच गिर से लगैं । भे अङ्ग भङ्ग नितम्ब जङ्घ उरोज कटि कटि ते खगैं ॥ कोउभिगर बिगर सगर समरभट मनु बलाहक गात से । रिस भूरि भूरिसु घूरि घूरिअदूरिदूरि भिरात से ॥ कोउ छुरक लै दग घुरक के छिन छुरिन छेदहिं बदनपै । छिन तान म्यान बिहान तन तरवारि मारत रदन पै ॥ शर लगत तन तरु बिहदि उगिं मनु शाख शोणित पल्लवित । कैधौं हजाराश्वार छूटहिं धरनि ढिग ढिग अनगणित ॥ दें शक्ति प्राण अशक्ति करि धूँधार रण तुपकैं दगैं । भट चक्र बक्र प्रहार ते महि गिर न पुनि पानी मँगैं ॥ दल उभय बीर प्रचण्ड अतिशै मरुत बेगहुते लरैं । नँदललन भट शर परैं ज्यहि तन दरैं प्राणन परिहरैं ॥ १ ॥ [अथ दुर्योधन अर्ज्जुनयोर्युद्धम्] रोला छन्द ॥ उदधि विक्रम सिंह साहस रण निबन्ध प्रमान । छइक छोहनि लिये भट अर्ज्जुनैपै अगुआन ॥ अरे गांडिव धनुष धारक रण प्रचारक स्नान । सम्हरु सुधरु हमारु तुव सँग आजहो मैदान ॥ महत भूत तिहार सहचर तैं पुरुष प्रधान । आश्वासन करत तेरो नंद सुतहु महान ॥ दैव वश अस आज अवसर मिलो मोहिं निदान । समाधान सुकरिहै तैं मो सदृश तू बलवान ॥ यदपि चहुँ तुहि करहुं पातित यकहि शर हन जानि । तदपि इमिकै शीघ्रता नहिं मिलहि रण रसखानि ॥ ज्वलित रूप

कृपाण लैके नग्न विहय मियान । करन उद्यत समर सम्मुख ठाढ़ भा भट आन ॥ कुन्ति सुवन सकोप शोधो तासु बल अभिमान । परस्पर दुहु भटन सन तत होन लाग जुटान ॥ युगल घातहिं घात निज निज युग्म निधि अवसान । युगल बारण करहिं आयुध धरहिं नहिं क्यहु कानि ॥ रोष नीरध कुन्ति सुत सम्पन्न धनुर्विधान । दृष्टि मध्य न धरत दुर्योधनहिं एकहु आन ॥ जान तृण सम प्राण खिलवत खेल जिमि लरकान । विकृत नहिं आकृत्य मुख तनु बिमल आनन आन ॥ लरत मोदत सुरत शोधत तुरत फुरति समान । जुरत जलधि टिकातज्यों रण करत रिपु नकबान ॥ नशत शर भर पल न यदि ठड़ होत धनु सन्धान । बधत यकुयकु विशिष सन भट सहस कोटिन ज्वान ॥ नाक चना बिनाइ छोरत बधत रिपुअरमान । नाद घनकरि दपट दाबत सिंह जिमि शशकान ॥ बाज ग्रसित कपोत तिमि रिपु हनहिं अर्ज्जुन मान । इन्द्रिजित बल निलयरण दिग बिजयरूप सुजान ॥ परहिं जे दृग अग्र कुंजर अश्वभट रथवान । तिन्हैं जियत न तजहिं अर्ज्जुन करहिं प्रानन हानि ॥ मुरकि ज्येहि दिशि परहिं धनु धर प्रलय रूप निशान । शरन सोहंनि सन सुभट मलि दें बुहार सुथान ॥ परहिं कोशन जाय शर बल सुहैं शव इमि मान । पुरित लोथन लोथ गिरिबहु लसित भूमि मशान । समुझ अखिल अनाथ मनु शव देश

१ भुवारी=बढ़नी ॥

भूपति ध्यान । डरहि दीन्हिस परे पुरजविभक्त गिद्धरु श्वान ॥ पेखि पेखि अनन्त नभचर निजु अहार पिछान । प्रमुदके प्रस्थान दृढ़ ह्वै करन लागे पान ॥ निरखि वध दमघोष भटदल कुंति सुतके पान । त्याग अर्ज्जुन संग रणको कह्यो सबन बखान ॥ मान नृप वच निरखि अर्ज्जुन बिपुल शक्ति निधान । नंदललन प्रतापते सब लगे सुभट बरान ॥ १ ॥ [अथ युधिष्ठिर पौंड्रकयोर्युद्धम्] चौपाई ॥ बहुरि युधिष्ठिर पौंड्रक वीरा । दारुण रण धारो रण धीरा ॥ युगल महाभट बली करकसा । कीन्ह अवान अनन्त तरकसा ॥ धर्म्म सविधि रण करा अनापी । विस्मय रहित भूमि रण थापी ॥ मनु शिव प्रलयकाल रण भूमै । लिये संग भैरव गण भूमै ॥ निधि बलमत्त धनुष टंकोरत । वर्ष विशिष शत्रुन शिर फोरत ॥ घेरि घेरि दुहु सुभट गुहारैं । हेरि हेरि योधनहिं प्रहारैं ॥ युद्धत क्रुद्धत अद्भुत घाता । अमित शस्त्र बध हानैं गाता ॥ रूंधे रवायुधन चहुँ पाहीं । सुन न परहिं क्यहु वच श्रुति माहीं ॥ शूर सुभट इमि युद्धहिं राई । मनु केहरि पर केहरिधाई ॥ जुटैं छुटैं नहिं पुनि बिन जूझे । अभिर परहिं यक यकन अबूझे ॥ माचो घोर समर नृप दल महँ । कटे असंख्यन भट पल पल महँ ॥ दोहा ॥ धर्म्म तनय इमि भनतभा, भिरहु मोर सँग शूर ॥ अब न जियन कर आशधर, करहु माष मन पूर ॥ १ ॥ चौ० ॥ रचहु स्वयम्बर समर समाजा । अस अवसर न मिलब क्यहु काजा ॥ खाय खाय सृष जन्म

गमावा । सो बल कह निजु स्वार्थ न आवा ॥ युधौ युधौ अस जिष्णु जुहारा । बधौ बधौ उत पौंड्र उचारा ॥ संशय मरण बिहाय बिहाई । गे जुट समर धरनि धसि धाई ॥ कहुँ रथि बिरथि अश्व कुंजरपै । बहुभट लम्बग्रीव लुंभ्फरपै ॥ सोमदत्त मद मत्त महीपा । जयधृतादिक शल्य सहीपा ॥ कृपाचार्य्य बृषसेन धनञ्जय । बटुरे बीर बृन्द सँग सञ्जय ॥ बल बुधि भौन समर कृति जाता । रण दिल छितिर परीय जमाता ॥ बधहिं बिशिष अरि गर्दन हारे । शूर बीर बल मर्दन वारे ॥ अमित शस्त्र भट बेगहिं रणमा । पार्थ सबन शर क्षीणहिं क्षणमा ॥ दोहा ॥ कृप दश शर हन पार्थ पहँ, प्रति प्रति भट तन सत्त ॥ अगणित बपु भंजन किये, अनगन घैहा थत्त ॥ १ ॥ दश वसु अश्वत्थाम शर, हने पार्थ की देह ॥ नव बृषसेन प्रभंज शर, सत्रह शल्य सगेह ॥ २ ॥ अथ रोलाछन्द ॥ अनन्तायुध अन्य योधन हने चहुँ दिश घेर । सर्ब्ब सुभट सरोष संजय सहित बली घनेर ॥ हेरि दिशि दिशि दन्त घिसि घिसि विशिषबिस बिस छेद । बक्र चक्र चकत्त हन हन हनैं छितिपति खेद ॥ किंच शङ्क न हीय लखि रिपु भटन कृति पुनि खीश । ब्यर्थ बिन अनुमान आयुध कीन्ह पार्थ बलीश ॥ धार धनु शर मार मार बिदार बिपुल नरेश । डार डार मँझार महि बय दीन्ह खेत गरेश ॥ अमित बध हय दुरद रथ नृप बृन्द भट समुदाय । पार्थ सरिता शोणकी तहँ दीन्ह भ्यंक बहाय ॥ शरन बल कृत भटन तन किय रंध्रचलनी तुल्य ।

नदि करारन दिलदिलायन मनहुँ कीने घुल्ल ॥ बहें अभुज रुधिर जनु नल तोय छिति भरि भुंड । डुण्ड बुण्ड असुण्ड करि गण मुण्ड बिन बहु रुण्ड ॥ कीन्ह व्यथित बिहद सब कहँ पार्थ अँग भँग नेति । कर्ण पुनि रिस भर्ण दश शर धर्म्म तन दिय घेति ॥ धर्म्म धाय छकाय शीघ्रहि कीन्ह मूर्च्छित ताहि । भिरो सात्वकि आय त्यहि कहँ दीन्ह भीम भगाहि ॥ कर्ण होइ सचेत पुनि हन साठ शायक भूर । कइक शत तब पार्थ शर गण प्रवध ताकर तूर ॥ रुधिर तन गत कर्ण शर हन अर्ज्जुनांग पचाश । पार्थ बीर अमान काटे कर्ण शर बिनु त्रास ॥ बहुरि अरु धनु धाय गहि कहि खरोरहु शर छोर । कोपि अर्ज्जुन शरन छादित कियो त्यहि धनु तोर ॥ युग्म रिस निधि दिव्य अस्त्रन परिहरैं बहु बेर । इत निवारण उतते बारण करहिं आयुध गेर ॥ कथत मैं अर्जुन मोसन बचब नहिं तो प्रान । भषतहूं मैं कर्ण तोसे लेत जय अब जान ॥ बदहिं इमि इमि युधहिं तिमि तिमि देख दुहु बीरत्व । अमर बृन्द सराहिं दुहु के अतुल बलधीरत्व ॥ धर्म्म कोलखि युध बिलक्षण भनहिं इमि नृप ओर । करहु रक्षण कर्ण को बध लेहु अर्ज्जुन दौर ॥ नृपन बच सुनि धर्म्मने तत बेद बाणनु मार । बध चरहु हय एकशरते सारथिहि महि डार ॥ इबिधि कर्णहि बिरथ कै पुनि हने अनगिन बान । बिहित सुधि नाहिं कै सको युध सूत तनय निदान ॥ निरखि सो कृप शल्य बृषसेनादि बहु शरभंज । तिनहुँ अर्ज्जुन तोष मूर्च्छित कीन्ह

हन शर गञ्ज ॥ बिशिष बेधित भटुन तन मनु कुम्भ झिझिया सोहिं ॥ अमित चुटिहा चिंघरहिं
बहु भगैंसमुह न होहिं ॥ घोष बिह्वल पेखिनिजु भटभूर भूपन लाय । बीर पण्डन घेर चहुँ
सन दियो अतिरण छाय ॥ नेति आयुध बद्ध पाण्डनु दीन्ह गर्ब्ब नशाय। यकक शर सन सहस
योधन दियो बीर ढहाय ॥ बिंश छोहनि सुभट सँग मदमत्त विक्रम भौन। कथहिं कित नँद
ललन गोशिशुपाल बैरी जौन ॥१॥ चौपाई ॥ यहि बिधि जोम जनावहिं सारे। बृन्द बृन्द पहँ
बृन्द अपारे। दारुण दल उमड़ो रण माहीं ॥ गणना कर बनि आवत नाहीं ॥ देश देशकर
कुरिन भुवारा ॥ बिबिध बिधाननु करैं प्रहारा ॥ लय लय भ्वाल ब्याल शर तीखे। रचहिं युद्ध
योधा कृत सीखे ॥ घातहिं घात अनेक अनूठी। खाँड़न बाढ़न तीव्रित गूठी ॥ जूटैं जुटैं छूटैं
पुनि जूटैं ॥ ठोंकि ताल केहरि सम टूटैं ॥ फूटैं शिर टूटैं भुज सूटैं। अभिर न छूटैं भ्कट गर घूटैं॥
इमि कै जोर शोर घनघोरैं। धरि निजु घातहिं बहुरि न छोरैं ॥ पाण्डव वीर बलीसे बांके।
भिरत युधत रण दारुण थांके ॥ शिथिलदेखिपाण्डवन दुलारी। तबतो अति उर शंका धारी ॥
दोहा ॥ तिय जिय भ्रमिकि बिलोकतहि, मन मोहन सुख दैन ॥ बिहँसि भन्यो प्रभु प्रियाप्रति,
तैं किंचित डरपैन ॥ चौपाई ॥ तव भट इनहिं न दृग तर आनैं। अबहि मार करिहैं खरियानैं॥
तुमहिंबिलोकत पेखत वीरा। प्रबध बिनशि हैं शत्रु गँभीरा ॥ क्षणमहँबिजयतुम्हारिहि होइब।

रिपुगण शिरपर कर धर रोइब ॥ अस दै धीर बीर गिरिधारी। रण बिच फाँद परे बनवारी ॥
चक्र पाणिगहि लगेप्रहारण। रिपुदल प्रबल प्रचण्ड बिदारण॥ उत हल मूसल लय बलदाऊ।
क्रोधित हुइरण भूमि मँभाऊ ॥ खोज खोज भञ्जैं दल भारे। बहे रक्त कर प्रवह पनारे ॥ हाहा
कार मचो संग्रामा। मार मार ध्वनिहो चँहु ठामा ॥ महाबली रण शूर अनेका। पाछे नहिं मुख
मोरैं नेका ॥ ठौरैमारैं मरैंअथाहीं। पीछ पाद भट धारहिंनाहीं ॥ दोहा ॥ कोटिन भिरैं कबन्ध
तहँ, कटिशिर गिरहिं अनेक ॥ बिथुरि लोथ पहँ लोथ चिति, ठहँ न धरणि तिल एक ॥ १ ॥
चौपाई॥ चौंसठ योगनियाँ तहँ धाई। संग्रामावनि धूममचाई॥ पाणि एक महँ खर्पर राजे।
दूजे हस्तै खड्ग बिराजे॥ अन्ताबलि दै ग्रीव कलोलैं। हरि बलदाऊ की जय बोलैं ॥ भट
कपाल कर ताल बजावैं। कौतुक रचि भय भीम उपावैं ॥ शिशुपालहि कहँ घेरहिं धाई।
निज निज भ्यानक यत्न सुजाई ॥ भूत प्रेत बैताल पिशाचा। अगण उपाधाधिपरँगराचा ॥
दुर्गा सिंह यान चढ़ि आजै। चामुण्डा रासभहि बिराजै ॥ जिमि नभ प्रलय बलाहक गाजैं।
बिखरी लटैं विकट छबि छाजैं ॥ दोहा ॥ कृष्णउपासक योगिनी, डांकिन सांकिन यूथ ॥ लखि
चरित्र आकुल भयउ, शिशुपालस्य बरूथ ॥ १ ॥ चौपाई ॥ हहरत अति भ्यानक
चहुँ ओरा। बही रुधिर की नदी कठोरा ॥ उष्ट्र मकर घरियाल कुञ्जरा। ढालैं कच्छप केर

अनुहरा ॥ आँतैं शरगण अहि पनिहाले। भूपन केश सिवार विशाले ॥ शीश सरोरुह सरिस सुहावैं। भुज जङ्घा मनु मीन लहावैं ॥ माँस चहल चर्बिक चहुँ दाँदल। मिश्रित रुधिर पाणि पद साँदल ॥ महाघोर नदि जाय न बरणी। जनु यमराजा की बैतरणी ॥ भूत योगिनी युथप सिधाये। सारुचि रक्त पाय तृसाये ॥ काक गिद्ध अरु स्यार अथाहा। रुधिरपान करि पुजवैंलाहा ॥ शून्यसान भ्यानक रण भूमैं। शिवभैरवगण इत उत भूमैं॥ लै शिव शूरनमुण्ड बिशाला। निजगल माहिं सजावत माला ॥ चित्रगुप्त सँय्युत यमराजा। राजैं भूरण सहित समाजा ॥ भनहिं सुयश अनुचरा घनेरे। लय लय बिबिध नाम यम केरे ॥ (अथ यमनामानिवर्णन ध्रुपद इकताला रागिनी प्रभाती में) भजन ॥ जय जय यमराज कर्म्म साक्षी शरीरा (अन्तरा) धर्म्मराज पितृपती समवर्तीधीरा ॥ यमुना भ्राता कृतान्त शमन दमन पीरा ॥ १ ॥ हे परेत कालराट वैवस्वत बीरा ॥ अन्तक यम श्राद्धदेव दण्डधर गँभीरा ॥ २ ॥ पाप पुण्य साक्षी नित कृत सुतन्त्र कीरा ॥ जीवनकृति अधिपति सम फलदा अकसीरा ॥ ३ ॥ अघभय उरधार ललन येहीतदबीरा ॥ मुक्त प्रदापरख रटत श्याम नाम हीरा ॥ दोहा ॥४॥ दूत बिपुल बारुणि छके, निहरैं यम दग दृष्टि ॥ जस आयुष ज्यहि हित जनैं, करहिं दण्ड तस बृष्टि ॥ १ ॥ श्रीप्रभुकी शुठि शूरता, समर बीरता पेखि ॥ दय आशिष जय यशु भनहिं, पूरण ब्रह्मपरेखि ॥ २ ॥

सोरठा ॥ हिय सुख तोषैं शूर, रण समुहें प्राणन तजैं ॥ देवसराहतभूर, दयबिमान सुरपुरथपैं ॥ १ ॥ कायर कादर क्रूर, लखि युद्धै परिहरैं तन ॥ दुरहिं समर त्यज दूर, दग उठाय जोहैं न उत ॥ २ ॥ (राग आडम्बरी कान्हरा शूलताल में) हरिगीतिका छन्द ॥ रण रुदत घायल पिता पुत्र पुकार अस बिनती करैं। तनु दय सहारा हमहुँ कहँ लय चलिय लालन मन्दिरैं ॥ दोउ हस्त श्रुतन प्रथाप बरयैं पितु समरथ हमारना। कर सक सहाय तुम्हारको निज वपुष कठिन सम्हारना ॥ यदि जियत ह्याँ बचगये हम गृह जाय बासा लेयगे। मरजाउगे जो तुम कदाचित गया हम करेंदेयगे ॥ १ ॥ चौपाई ॥ निज निज प्राण बचाय भगोड़े। जाँय पराय पितुन सुत छोड़े ॥ मचो कुलाहल रव रण बीचा। प्रवधो प्रभु कुल रिपुदल नीचा ॥ नभमण्डल सुरथिरत बिमाना। लखि हरिशक्ति प्रमुद उर ठाना ॥ बिबुध परस्पर परम सिहाते। सामुद भर पुष्पन बरषाते ॥ जय जयकार परी चहुँ घाहीं। देवि देव बहु भाँति सराहीं ॥ इति श्रीरुक्मिणीपाणिग्रहणे शिशुपालपरिकर पराजयवर्णनो नाम त्रयस्त्रिंशत्तमः सर्गः ॥ ३ ॥

अथ रुक्मि युद्धवर्णनम् ॥ चौपाई ॥ लखिअस रुक्मि बरातिनु हाला। तबलो कोपो कठिन कराला ॥ यकात्तोपि दल सङ्ग लगावा। प्रथमरिसै पण्डुन पर धावा ॥ सृजो समर अधिकै बिकराला। कैपाण्डव मूर्च्छित तत्काला ॥ सोतो मगनभये बहुभूपा। जीतब रुक्मि हरिहि अनुरूपा ॥

लगे सराहन धनिरुक्मैया । जीते पाण्डव कठिन जुझैया ॥ सुनि अस बचन रुक्मि सब केरा । तब त्यहिमन मद उपज घनेरा ॥ दोहा ॥ बहुरिसो पण्डुन तुरत तज, बल पहँ धावा कीन्ह ॥ समुझ सकुच बलदेव जू, ताहि बरावा दीन्ह ॥ १ ॥ शम्भु भन्यो शृणु भामिनी, बल सोचे यह बात ॥ हौं बधौं कहुँ रुक्मितौ, दुखित न हो मम भ्रात ॥ २ ॥ चौपाई ॥ स्वानुज सार सुहृद भौजाई। उभय नातकरि लखि कठिनाई ॥ यह सन बलने दीन्ह बरावा। रुक्मि उचय कर नृपन सुनावा॥ ठाढ़ होउ जनि पराउ मूढ़ा। पेखहु अब मम बल रणगूढ़ा ॥ पाण्डव कछु कै सक नहिं मोरा । बलकर गर्ब गहिरहौं तोरा ॥ अब यह ग्वाल गँवार गुपाले। यमपुर पधराऊँ ततकाले ॥ छीने देउँ रुक्मिणी अबहीं। देहुँ ब्याह शिशुपाला सँगहीं॥ यह प्रण मोर सत्यही जानों। मृषा न यह महँ कुञ्चित मानो॥ भग्नि छीन हरिको न नशावों। तौपुनि जग जनि मुख दिखरावों॥ जो नहिं बल दल गर्व्व ढहाऊं। तौ न नाम रुक्मी उचराऊं॥ इमि हुँकार फुङ्कार दृढ़ानो। लाल ग्वाल दृग कोप तपानो ॥ (राग सावनी बरुवा तिवरातालमें) हरिगीतिका छन्द ॥ निर्लज्ज दुष्ट स्वभाव क्षुद्रात्मन सदा द्विजरिपुछली। खल अहङ्कारालय कुकर्म्मक जन्म आंध कुमतिथली॥ अविचारि दुर्व्वादी दुराचारी अतीप्रायश्चिती । अप्रिय सदन मिथ्या बिबादक धर्म्म उल्लङ्घी निती ॥ अनयोग्य कर्म्म अयोग्य चारी शठ विबाधित कर्म्मणा। मर्य्याद मर्दन छिन्न नित्याचार

मद चितभर्मणा ॥ दुष्टात्मा अघिसमाचारीअधार्मिक निन्दित कृती। नास्तिक चुगुल कादरा नीचः कर्म्मकारी खल वृती ॥ अज्ञान भीष्मकतनय रुक्मि महा अक्षोणी दल लयो। विधि बरण शस्त्र सुधार धावा धरतधावा रथ ठयो॥ दशसहस करित्रिंशतसहस रथ लक्ष यक भट परिकरा। दश लक्ष बाजरु प्याद कोटी त्रिंशषट बिक्रमि नरा॥ प्रज्वलित वह्नि समान तीक्षण क्रोधमद चक्षूभरे। भ्रूवं- कुरित अंकुरित नक बलभाल फर्कित ओष्ठरे ॥ धर दांत पांति चबात अधरन प्रबल योधा ध्यान तो। रणभूमि भूषित भयो प्रभु सन्मुख कुबचन बखानतो॥ हरिहठी शठ कृति लखि बरावा बहुत तैं मानत नहीं। मों जियत बिजय न होय तव अब सम्हरु तुहि मर्दों महीं॥ अस कीन्ह कुत्सित कर्म दल शिशुपाल जिमि नाश्यो बरन। अब लेहुँ बदलो तासु सांची समुझिये यशुदाललन ॥ १ ॥ चौपाई ॥ हानि निलय अरु समय बिरोधी। निजु कुल दाहक अतिशै क्रोधी॥ जोम भरित मा- धव प्रतिदौरा । जिमि कूकर कूकत है बौरा॥ कह अरिअधम कुटिल अभिमाना । तैं मम बल प्रताप नहिं जाना॥ दश सहस्र गज सम बल मोरा। सुर मुनि शंकहिं मोसन घोरा॥ तैं कछु मम भय कानि न कीन्ही। हौं बिदमान भगिनि हरिलीन्ही ॥ तैं जो चहि निज कुशल भलाई। तौ रुक्मिणि मुहि अर्थ कन्हाई ॥ नतु ध्यानिये सत्य बच म्हारा। जियत प्राण नहिं त्याजब थारा॥ आन नृपनकर धोखन रहिये। रुक्मि नाम मम अब बिधि लहिये॥ एकहि शर तव प्राण नशाऊं।

जगते जीवन तोर उठाऊं ॥ भनि इमि निज दल आयुध सारा । अरबराइ भट भिरे अपारा ॥ दोहा ॥ विकट युद्ध युद्धे बहुरि, योधा आयुध धार । सोम दोम भरि जोम जुरि, हनै कृपाण कुठार ॥ १ ॥ चौपाई ॥ बहु छल बल अभिमान पसारे । मनमोहन पलमाहिं विदारे ॥ रोष कोष मद रुक्मि जनावा । प्रबल प्रचण्ड समर अतिलावा ॥ बाणवृन्द अस भांतिन पूरे । नभ तम रुँधो रुपो रविहूरे ॥ बढ़ बड़ बाण कृष्ण अँग भंजे । हरिशर वाके निखिल प्रभंजे ॥ क्यहु विधि छल बल चलै न यदिपी । श्याम मोरचा तजहिं न तदपी ॥ लहि शठकी शठता मद भारी । क्रुधित तदन्तर भयउ मुरारी ॥ ऊचुः रे अधिपति अन्याई । कुत्सित कर्म्म न कर सकुचाई ॥ तैं जग विदित महाभट जाना । तोसम कोउ न अवर मरदाना ॥ धृक तव क्षत्रीपनहिं गँवारा । बड़ बच बदत न ग्लानि लवारा ॥ परिजन अपन अँगावत दोषी । आवा जीव देन मद कोषी ॥ दोहा ॥ लखिहौं तोर सहाय को, सगो सनेही कौन । रहे शेष यदि गुहरु तिन्हु, लें रण मोसन तौन ॥ १ ॥ अथ रोला छन्द ॥ निरखु जो गति भई सबकीसो सूजहुँ तव हेत । रुचत सोहौं बदत रिस बश भये अपगति चेत ॥ रुक्मिसन इमि बाक्य भनिकै हरीकै अनुमान । बाम हस्तहि चाप गहि सन्धान अबिरल बान ॥ रोष जोश महान ज्वाल प्रज्वलित तीखे नैन । फरक उठ भुज ओष्ठ बंकुट भ्रूतरेरित ऐन ॥ यकहि विशिख प्रघात त्यहि रथ खण्ड खण्डहि कीन्ह । श्रुति शरन सन

चरहु हय बध कीन्ह चिह्न न चीन्ह ॥ बिरथ ह्वै सारथी सटक्यो त्याग समरकि औनि । ग्रसित रिस गहि खड्ग रथते फ्लांग धायो तौनि ॥ पेखि रुक्मै विरथि भूपति दारुणै दुख पूर । रदन अँगुरिन चांपि रसना थापि दन्तन घूर ॥ कथहिं क्षितिपति क्षेम नहिं अब रुक्मबिरथी जोहि । भे अचम्भित शल्व इत्यादिकनु उर दुख पोहि ॥ डार आयुध भारलइ असि चर्म्म खोल बिहाय । धार विक्रम भीष्मकज अगुआन अग्र रिसाय ॥ नंदललन नृपारि रे कहि ग्लानि नहिं तो हीय । हौं बिरथ सहरथा तैं इमि समर कृत कमनीय ॥ १ ॥ चौपाई ॥ लाल कराल रिसौंहे नैना । किये बंकु भ्रुकुटी मद मैना ॥ नासा दुपट फुलावत क्षन क्षन । रसना अधर चबावत दन्तन ॥ फरकत ओष्ठपटल नहिं थोरे । हुमकत मनहुं कुमति जिय जोरे ॥ रुक्मिबली रिस रूप भयङ्कर । गन दश सहस सरिस जन शङ्कर ॥ धावा मुच्छ मरोरत बाहू । बोला कुवच मूर्ति मनु राहू ॥ नीति परिहरा कुटिल कन्हाई । लाज न भुग्रत तोर प्रभुताई ॥ रथ त्यजि सन्मुख आव हमारे । तव तुव छल बल निरखहुँ सारे ॥ सुनि प्रभु त्यहिकर अनुचित बाचा । यान बिहय फ्लांगे रणराचा ॥ थामि कृपाण प्रहारण लागे । ज्यहिके लगे नीर नहिं माँगे ॥ (अथ रागिनी काफ़िकी बैशरी टोंड़ी ताल दादरा) ॥ (होरी हो बृजराज दुलारे इस धुनि में) नाराच छन्द ॥ सुतेग वेगि काटती कटाक सों कटा कटी । खटाक सों खटा खटी गटाक मुण्ड जावती ॥ पिशोणितै घटा घटी

चटाकसों चटा चटी। छटाक सों छटा छटी भटानु भूँज खावती॥ जमाक सों जुटा जुटी झमाक सों झटाझटी। टिमाक सों टटा टटी ठनाक शब्द लावती॥ ठसाक सों ठठा ठठी ललन नृपौं डटा डटी। परे हथा ढटा ढटी व्यथा न ख्याल आवती॥ थपाक सों थपा थपी तटा तटी तराशती। दपाट सों दपा दपी धमाक सों धमाकती॥ निपातती निरा निरी पटाकती पटापटी। फटाक सों फटा फटी बलीन पै बवाकती॥ बिदारती बदा बदी भटाक सों भटा भटी। रपाट सों रुचा रुची ललाट पै लपाकती॥ सटाक सों सटा सटी सुसैफ जो शठा शठी। हवाकती हठा हठी ललनरिपू जो आँकती॥ दोहा॥ शोणित उच्छित गात गति, चेत न किंचित थाम॥ वायु बेगवत गिरत महि, महिप उभय संग्राम॥ १॥ जो सम्मुख हरि आभिरो, बिन बध तजो न ताहि। रुक्मि रपट गोविंद गह्यो, जकर दियो रथ वाहि॥ २॥ सोरठा॥ त्यहि शिर पाग उतार, युग्म बाहु बाँधीबहुरि॥ वधहित कीन्ह बिचार, रुक्मिणिपति सम्मति समुझि॥ १॥ दोहा॥ पगन परी पिय के प्रिया, कहि प्रभु ऐस करौन॥ है मम अग्रज अधम अति, यह चित खोरि धरौ न॥ १॥ सोरठा॥ तुव बल प्रबल प्रताप, देव कोटि तेंतीसहू॥ वेद न सकत अलाप, नर खल चीन्है कह तुम्हैं॥ १॥ चौपाई॥ दीनद्याल मम ओरिनिहारो। चेरि केरिचित बिनय बिचारो॥ सुनि प्रभुतिय मुख प्रिय प्रिय बानी। तब यह युक्ति श्याम उर आनी॥ लै असि धार

धुरंधर बाढ़ी। मूँड़ो मूँड़ मूँछ भ्रूदाढ़ी॥ ताशिर राखीं सातक-चोटी। तीरें तीरें छोटी मोटी॥ उतते आगमने बलराई। रुक्मि कुगति निरखी अधिकाई॥ प्रभु प्रति बल बोले मुसक्याई। यह कह कीन्हो कुँवर कन्हाई॥ कौन ग्राम की रीति प्रचारी। हमतो सुनी न कतहुँ निहारी॥ यह सज्जन समधी नतवारा। नात माँहि पुनि तुम्हरा सारा॥ तुमन भद्र बिधि सृजई ऐसी। नापित हू रच सकहि न तैसी॥ पुनिबल रुक्मिहु इमि समझावा। धरहु न हिय प्रिय कछु पछितावा॥ तुम सारे तुम्हरे बहिनोई। यह बिच उचरसकै नहिं कोई॥ सारे बहिनोइन कर हाँसी। होत सदा सन प्रेम प्रकासी॥ दोहा॥ करी नवीन न बात इन्ह, मनिये बिलग न हीय॥ कीन्ही निपट प्रवीन प्रभु, जगत रीति कमनीय॥ १॥ सोरठा॥ तुम जिय जानहु येह, दाम न कौड़ी व्यय भई॥ करनी पड़ी न गेह, भद्रोत्तम भासहजही॥ १॥ चौपाई॥ यह बिधि बल रुक्मिहि दै ज्ञाना। प्रभुसन दीन्ह छुटाय सुजाना॥ दग तर करग्रीवा पछितायो। मुग्रन हिमालय कहँ चलिधायो॥ शिशुपालहु अतिशोक उपावा। वहू तुषारे तुजन सिधावा॥ लखि दोउ की मन्शा महिपाला। बोध दीन्ह रुक्मै शिशुपाला॥ तुम दोउ चतुर सुजान गँभीरा। अस मन वृथा बिचारत बीरा॥ क्षत्रिन कर यह धर्म सदाहीं। क्यहुसन जीत हरैं क्यहु पाहीं॥ भिरैं अखार बीच युगयोधा। जितैं एक हारहिं बश क्रोधा॥

हारे जो कोउ प्राण गमावे । तौ कोउ कस जग जीवन पावे ॥ यासन कछु नृप शोक न करिये । आपनु आपनु देश पधरिये ॥ पुनि दल लैकर करैं चढ़ाई । छिनमें जीत लिहहिं यदुराई ॥ दोहा ॥ बाम बिधाता लखि परै, हमैं तुम्हैं यह काल ॥ बनत बरावा देतही, यह समया बिकराल ॥ १ ॥ सोरठा ॥ ज्यहि दिश बाहै पौन, त्यहि दिश पृष्ठि दिये सरै । चतुर कहावत तौन, हो जस अवसर तसकरै ॥ १ ॥ चौपाई ॥ शोक न तीय हेत कछु कीजै । उत्तम ते उत्तम त्रिय लीजै ॥ पुनर ब्याह नृप रचहिं तुम्हारा । जो तिहुँ कोउ अस होवन दारा ॥ रुक्मिणि पग धोवन नहिं जाके । तुमहिं बिवाहैं हम सँग ताके ॥ यह खन निजपुर वेगि पधरिये । रुक्मिहु कहँ त्यहि गृह लौटरिये ॥ समुझ बूझ कुल कार्य्य सुधरिये । निर्भय ह्वै प्रमोद उर धरिये ॥ नृप शिशुपालते मुर शिशुपाला । गृह चलि भयउ समुझ कछु भ्वाला ॥ दुलहापन को हो शिर मौरै । सो महिपटक दीन्ह उहि ठौरै ॥ जामा निरख भयो बे जामा । पटुका फार फेंक त्यहि ठामा ॥ ऊर्ध्व श्वास लै दृगभरि वारी । उचरा हाय रुक्मिणी नारी ॥ बिलपत रुदत दुखित गृह धावा । संग तात दमघोष सिधावा ॥ दोहा ॥ सुत पितु पितु सुत गति निरखि, सृजत महा मन खेद ॥ शोकसिन्धु बूड़े न मिल, अन्त दुःख कर भेद ॥ १ ॥ (अथ राग नायकी कान्हरा चारतालमें) कबित्त घनाक्षरी ॥ लाजन मरो सो जात ग्लानिन दहोसो गात संग तात जात मात खाये

श्रीगोपालसों । दृगभर अश्रुपात कर मींज अकुलात बाटना लखात भौन बावरो बिहालसों ॥ पग डग लबरात कम्पित शिथिल गात ढिग ढिग बैठजात कर धर भालसों । ललनपनेकी बात करै सोई पछितात काहूकी बिसात नाहिं होनी होनवाल सों ॥ १ ॥ सोरठा । बिगते किञ्चित काल , नियराने पितु सुत पुरै ॥ दिवस देखि महिपाल , लाज मानि नहि गृह गयउ ॥ १ ॥ मन मन कीन्ह बिचार, क्यहि वैभव सन प्रथमंगे ॥ अब यह दशा हमार , पुरजन हँसहिं बिलोक मुहि ॥ २ ॥ अथये द्योस बनाय ॥ गोधूली निशि सन्धि प्रति ॥ रह्यो तिमिर अतिछाय, प्रविशो पुरयुत नृप ललन ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ जबसनगा शिशुपाल बिवाहन । नित नव मङ्गल हों पुरधामन ॥ गृह गृहते युवती जुरिआवें । बिबिध निलय नृप चरित रचावें ॥ हास तमाश बिरचि मनभाये । गाय बजावैं हिय हुलसाये ॥ शिशुपालालय अमित अनन्दा । नृत्तहिं नटी नारि वर वृन्दा ॥ भागिनी भौज मौज महतारी । नादैं नीप नृपन दैगारी ॥ त्यहि क्षण कछु चुटैल चलि आये । गृह शिशुपाल हाल जतराये ॥ जूझे निखिल बरतिया थारे । जो तुम्हार सुत सङ्ग सिधारे ॥ उतते काण फुफा बचि आवा । वहि ने कुलबृत्तान्त सुनावा ॥ सुनतै परिगा हाहाकारा । धुनबे लागशीश परिवारा ॥ जननि ढोलकी लै शिर मारी । बहिन गिरी महि खाय पछारी ॥ दोहा ॥ भौज भन्यो वृद्धन बचन, जो न गहत शठ सीख ॥ वहि दर दर याचत फिरत, गहिकर खपरा

भीख ॥ १ ॥ सोरठा ॥ दबकत दुरत निराश, आव दुहूं श्री हत भुवन ॥ लखि गृहबासि सत्रास, तब कछु हदि भा धीर्य्य मुद ॥ १ ॥ दोहा ॥ भौजि आय निदराय कहि, देवर प्रति बतराहि ॥ कुशल सत्तेमाथे ललन, रुक्मिणि बधू बिवाहि ॥ १ ॥ (अथ लावनी रङ्गत मनभावनी) दिवर धनि२ तें तोर प्रताप । तोर बल कहँलग करूँ अलाप ॥ टेक ॥ सुता भीष्मक की ब्याह लाया । दहेजा क्या क्या तैं पाया ॥ भूपदल काहे पछराया । अकेला तैं कस चलिधाया ॥ दोहरा ॥ क्यहि बाहन राजै बधू रूपवती सुकुमार । तुव जीवन प्रिया राजदुलारी चलु मैं लेहुँ उतार ॥ युगल तन देहुँ ऐपनी छाप । तोर बल कहँ लग करूँ अलाप ॥ १ ॥ नहीं तैं माना मम कहिना । सोई दुख देखपड़ा सहिना ॥ गँवा सब आयो धन गहिना । भयो नहिं कछु सहाय लहिना ॥ दोहरा ॥ कहां गयउ छल बल प्रबल योधा युथप कराल । जिन्ह भरोस तुहि रह्यो बिपुल तिन्ह चली न एकहु चाल ॥ कहां गइ उन बीरन की थाप । तोर बल कहँलग करूँ अलाप ॥ २ ॥ प्रथम मैं कहा नहीं माना । उलट मोंसन अति रिसयाना ॥ कहां प्रण गयो तोर ताना । बिसरगयो सगरो अभिमाना ॥ दोहरा ॥ निरख लीन्ह बलश्याम को तैं निज नैनन कूर । बृथा हुओ बदनाम जगत बिच अपन उड़ाई धूर ॥ गँवाई पति पञ्चन में आप । तोर बल कहँ लग करूँ अलाप ॥ ३ ॥ रूप बल कुल धन विद्या पाय । सुजन न कदापि चलैं उभराय ॥ पूर्ण

घट ना कबहूँ छलकाय । फेर तरुवरहू तर नवजाय ॥ दोहरा ॥ नैबो सुखदाई ललन प्रभु रिपु भञ्जन मान । सेव सदा श्रीकृष्ण कमलपद नित करता कल्यान ॥ बिनाशन पाप ताप सन्ताप । तोर बल कहँ लग करूँ अलाप ॥ ४ ॥ चौपाई ॥ ग्रीवा हगतर कर शिशुपाला । बचन न आव कछुक त्यहि काला ॥ ह्वैगा लज्जित अति खिसियाई । माता उठि सुत धीर बँधाई ॥ पुनि कछु शोक हदय सन गेरा । दमघोषहु सङ्कोच निबेरा ॥ रुक्मि बहुरि जनि भौन पधारा । निज प्रण धर्म्म हीय हठधारा । भोज कटक पुर कर असनामा । बसहि लीन्ह यक नगर ललामा ॥ त्यजकुल बुलय लीन्ह निजदारा । तहां रुक्मि बासा व्यवहारा ॥ (अथ युद्धदोषप्रायश्चित्तम्) श्रीहरि नृपन बध्य खल भारा । प्रायश्चित्त कीन्ह त्यहिबारा ॥ सिद्धमङ्गलेश्वर शिवथापन । षोडश विधि प्रपूजकर जापन ॥ बोलि श्याम कोबिद कुरि जोथी । शिवपुराण सुनि पूजी पोथी ॥ बसन गहन धन रतन सुहाये । ऋतुफल मृदु पक्वान चढ़ाये ॥ बल दल युत प्रभुसहित सँगाती । सुनि शिवयश मोची अघजाती ॥ दै बहुदान मान महिदेवन । कीन्ह अयाचक याचक रङ्कन ॥ अजर अमर गण रजे बिमानैं । पुहुप दुंदुभी भर यशुभानैं ॥ दोहा ॥ जे हरि सम हित आनिउर, पूजैं हरियश ग्रन्थ । लहैं कीर्ति विद्या सुमति, परैं न ते अघपन्थ ॥ १ ॥ इतिश्री रुक्मिणीपाणिग्रहणे श्रीकृष्णस्ययुद्धे विजयोरुक्मिपराजयमुकुन्दप्रायश्चित्तकरणवर्णनोनामचतुस्त्रिंशत्तमः सर्गः ॥ ३४ ॥

चौपाई ॥ रहिसामा जोइ भ्वालन केरी । सकटनु लीन्ह लदय जित हेरी ॥ आज्ञा दई निजभटन मुरारी । ससुख द्वारिका चलहु सिधारी ॥ श्री प्रभु प्रियहि चढ़य रथ लीन्हीं । द्वारा चलिबे की रुचि कीन्हीं ॥ चहुँदिशि प्रतिपुरवासि समाजा । प्रभु देसुनत बिजय ब्रजराजा ॥ गृह गृहते लय पूजन सामा । सजि सजि शुभग शृंगार सुबामा ॥ आन सुजान परख पिय प्यारी । भरि प्रमोद आरती उतारी ॥ निरखैं ललन लाड़िली शोभा । तन मन वारि जांय मन लोभा ॥ भनहिं परस्पर बिपुल बड़ाई । भीष्मकप्रभा धन्य पुण्याई ॥ धनि धनि रुक्मिणि भाग बिशाला । ज्यहि पायउ वर कृष्ण गुपाला ॥ हमरेहु सुफल जन्म बड़भागा । पौर्विक पुण्य प्रबल कोइ जागा ॥ तब तो दरश दीन्ह बनवारी । धनि यह दिन घरि लग्न सुखारी ॥ सख्य ऊचुः ॥ (रागिनी झंझौटी त्रय तालमें) ॥ सवैया ॥ प्रभु तारिदियो नृप कोटि कुले उनकी करुणा गति काह कहूँ । दुख दाप परै यद कोउ कहीं तब होत सहायक आनि तहूँ ॥ भवसिन्धु उबारण नाम कलौ सुर सन्तबखानत वेद चहूँ ॥ सुखदानँद को ललनै अस है जनवार न आर करै कतहूँ ॥ १ ॥ (रागिनी खम्माच चौताल में) मनहरण कवित्त ॥ निखिल दिशान विदिशानकी दिशानकेर अखिल लतान चन्द्रभानु सो दिपायो है । वारिज में अण्डज में स्वेदज जड़ादि माहिं ब्यापक अनन्त भांतिवेद मुनि गायो है ॥ सप्तद्वीप नवखण्ड तीनलोक चौदा भौन विंश दिग कोटित्रिय देव शीश नायो

है । भनैं द्विज ललन कहांलौं को बखान करे जाको यश तम्बू सम जम्बूद्वीप छायो है ॥ २ ॥ अथ कुण्डलिया छन्द ॥ उत भीष्मक सुक सुक सुनी पाव बिजय गोपाल । रुक्मिणि हरी मुरारि ने पराभूत शिशुपाल ॥ पराभूत शिशुपाल रुक्मि कहँ दीन्हो त्रासा । भाभीष्मक मन मग्न नाथ पुजई मम आसा ॥ हिय बिच धारि बिचार महीपति अति प्रमोद युत । बिहँसे नगर निवासि निखिल मन बिमल बिमल उत ॥ १ ॥ सोरठा ॥ अब दुहिता सहनेह, मैं बिवाहि हौं श्यामसंग ॥ सर्ब वस्तु रहिगेह , लय नृपदल हरि मिलनगा ॥ १ ॥ दोहा ॥ साहित साचित साहितू , साबिधि सा रस भाउ ॥ सा उछाह शुचि रुचि प्रमुद, साप्रतीत सतभाउ ॥ १ ॥ पूर्णब्रह्म परमातम हरि, दाऊ शेषौतार ॥ पागि प्रेम परछो दुहुँन, धन रत्नन न्यौछार ॥ २ ॥ (रागिनी कालिंगड़ा चारि ताल में) घनाक्षरी कवित्त ॥ पङ्करुह पद पाय सरस पराग राय मन मधुकर नाय धाय रिपटा दियो । प्रेम प्रमुदै पुराय रुचिर रुची रुचाय पायबे अघाय चोर चित चिपटा दियो ॥ दीनभा अधीन भाय शील नम्रता सृजाय चारु चाय को सचाय नेम निपटा दियो । मन बच कर्म्म काय नन्दललनैं मनाय ध्याय ध्याय कै बनायलो को लिपटादियो ॥ १ ॥ [अथ भीष्मक उवाच] ॥ (राग सारंग रूपकताल में) हरिगीतका छन्द ॥ कर जोरि बिनय बहोरि पद शिर ढोरि भीष्मक उच्चरो । अब करहु नाथ सनाथ मुहि ममबालिका गिरिधरवरो ॥ तुम प्रणतपाल

दयाल दासन दीन सुख दाताहरे। मम आशपूजी नाश खल दल दुष्ट दारुण परिहरे ॥ मम ललन त्रिय परिवार कुंडिन की न आश पुजाउगे। हँसिहैं जगत जनमोहि जो बिन ब्यहे तनुजा जाउगे ॥ १ ॥ चौपाई ॥ चित दय बिनय सुनिय प्रभु मोरी। करिय कृपा जनपै छल छोरी॥ जैस नाथ तुम मम ढिग हेरे। पूरिय तैस मनोरथ मेरे ॥ हौं सदैव सेवक तुम चरणा। तुम उद्धारक शरण अशरणा॥ जो मो उर तुव सांच सनेहू। तौ मुहि दृढ़ निश्चय सतयेहू। करि आये करिहौ प्रतिपालन। तुमहिं सदा सहाय जन पालन ॥ सुन नृप बच बिरचो बनवारी। कुण्डिन अब जनि जांउ पधारी ॥ बसऊं माधो नगर अनूपा। तहँ तुव सुता बिवाहूं भूपा ॥ हुक्मविस्वकर्म्मा प्रति कीन्हा। पलमहँ स्वर्णपूर रचिदीन्हा ॥ कहुँ वापी कूपादि तड़ागा। दैविक उदपानादिक बागा॥ वन उपबन बहु प्रसूनबारी। बखरी बिविध बिधानिक न्यारी॥ दोहा ॥ रतन रचित गृह शुभगतहँ, बिश्रामे भगवान॥ सुर मुनि रजी बरात सब, प्रफुलित तन सुखमान ॥ १ ॥ बल किंकर कर पत्रिका, दइ द्वारा पधराय ॥ तात मात कुल भ्रात जन, पठयो सबन बुलाय ॥ १ ॥ चौपाई ॥ सहपाती साँड़िनी सवारा। दइ वसुदेव खबर चलि द्वारा ॥ समाचार पढ़ पितु पुलका के। पुर सम्बन्धि सर्ब्ब अदराकै॥ बृन्द बीर बाँकुरे बहूता। निज निज शस्त्रन शान प्रकूता ॥ सजे बाजने अमित सजाती। अन गन बाहनथिरे बराती ॥ लै सँग यूथ जमात अपारा। गे

कुण्डिन त्यज निज आगारा ॥ जा मिटान हरि हलधर सेतीं। परसे पितुपग प्रीति समेती ॥ जननि जनक मिल ललन जुड़ाने। टिके बराति नाति सुख साने ॥ भीष्मक मुदित गवन गृह काई। ब्याह संग्रहित बस्तु सजाई ॥ भूषण बसन अशन असवारी। बहुधन रत्न किंकरी नारी ॥ सँयुति नृपन कुटुँब पुर लोगा। भीष्मक श्रीमाधो पुर को गा ॥ दोहा॥ मन मन भाषा भाषते, पुर जन लोग लुगाइ ॥ श्री हरि रुक्मिणि हित पगे, गे दर्शन लग धाइ॥१॥ चौपाई॥ सिमिटि सकल प्रभु शरण बिराजे। चहुँदिशि ते राजे महराजे ॥ नापितादि नेगिया सिधाये। बन्दी बिरद बखानत धाये ॥ उचित निवास निवास्यउ निखिला। हाँस तमाश विलास्यउ अखिला॥ शुभ घड़ि लग्न मुहूर्तै शोधा। बाँधि सबन्दन वारि सुबोधा ॥ सुवरणमयि वेदिका रचाई। प्रभा सागरी परम सुहाई ॥ रत्नखम्भ चहुं पाँते पाँते। नूतन नग जड़ाउ जड़नाते ॥ कलइक मुकुर सदृश नर लाँबे। जलज जड़ित अनुहारन आँबे ॥ मणि माणिक हीरन झालरियाँ। झाड़ झबा फनूस फव फरियाँ ॥ जहँ जस चहि तस भाँति बिचित्रा। शोभित कीन्ह अनूपम चित्रा॥ चोया चन्दन सुगँधि सुहाये। आलय अँगन सुभाँति सिंचाये ॥ जग मग जगमग छबि फबहोती। लजितकैं रवि शशि नग ज्योती ॥ दोहा ॥ ब्रह्मा व्यास वसिष्ठ मुनि, ब्याह करावन येह॥ शिव नारदसन कादि सुर, आगमने नृप गेह ॥१॥ (अथ सीधे हाथ तनी कराही कंकण बन्धनादि बिधि प्रारम्भ)

चौपाई ॥ चारु चँदोव छबै रतनारा । हेम पटा बिच वेद प्रसारा ॥ जल घट थाप साथिया रोपन । तण्डुल यवान्नादि थल थोपन ॥ श्री रुक्मिणि तहँ पहँ बैठाई । गणप गौरि नव गृह पुजवाई ॥ कुल जन त्रिय मिलि तैल चढ़ावा । राजकुँवरि कर कँगन बँधावा ॥ बिप्रन बोलि दीन्ह बहु दाना । अनँद बधावे बाजहिं नाना ॥ पुनि प्रछाल पितु मातु दुलारी । भूषण बस्त्रन सजइ कुमारी ॥ अथ जनवास ख़बर दइ राजा । तुमहूँ अरम्भिय ब्याहिक काजा ॥ भरि प्रमोद वसुदेव सजाती । बोले सबुध बिपूल बराती ॥ के भँडया मण्डित मनमाना । पधरायउ यदुराज सुजाना ॥ गणेशादि सुरपूजन दयऊ । प्रभुपहँ तैल चढ़ावत भयऊ ॥ पुरजन परिजन गहि हित गाढ़े । जय जय मनहिं सुआनँद बाढ़े ॥ दोहा ॥ काञ्चनकृत नग जटित पुनि, हरि कर कंकण साज ॥ नेग जोग प्रदयो सबन, नातिन नेगि समाज ॥ १ ॥ चौपाई ॥ मागध सूत चारण गुनि गन । बंश बिरद बिरचैं बन्दीजन॥ उबटन मल मोहन अन्हवायो। केशरिया बागो पहिरायो॥ पीताम्बर पटुका रँगराती । चीरासुन्दर शीश सुहातो ॥ सुघर तुरंग सुसाजन साजा । कियो सुशोभितहित व्रजराजा ॥ निवछावर बहु भांतिन कीन्हीं । नापित नेगि याचकन दीन्हीं ॥ लुटये अमित रत्न धन न्यारे । कीन्ह अयाचक याचक सारे ॥ द्विजन दक्षिणा बहु बिधि पाई । बाजैं बिबिध अनन्द बधाई ॥ देवबधू अविलोक सिहावें। सुर सुमनन बर झर बरषावें॥ माधो नगर

बीथिनहु हाटा । बिहरैं चहुँ दिशि प्रमुदित ठाटा ॥ राग रागिनी कुल गन्धर्वा । हरिगुण गावें प्रमुदित सर्वा ॥ (अथ राग देश इकताला में) सेहरा पद ॥ बनरे रँगीले की मालिनियहुँ रसीलीसी बरण बरण सजे शृंगार आई सुहाई सु सज पिटार सेहरा गुँधीले की ॥ अंतरा ॥ बेला चमेली मुगरा मुतिय करन फूल दौंना मरुआ मौरसिरी निवारी जुही केतकी सनीलेकी ॥ १ ॥ केवरा गुलाब गेंदरा कदम्ब दावदी सुहर शृंगार नइ बहार दार लड़लसीले की ॥ २ ॥ शुभघड़ि शुभ सुख निहार वारत भूप धन अपार नन्दललन युग युग जिये मूर्ति सुख सूजीले की ॥ ३ ॥ (घुड़ चढ़ी) पद ॥ बनरे का सइसवा यार रँगीली घोड़ी लाया मजेदार ॥ (अन्तरा) नोलखिया जीन सजीली । हीरामोती पन्ना लाल जड़ीली ॥ अँग अँग में सुभूषण छजैं । गंगा यमुनी सों तरह दार ॥ १ ॥ मेराबनरा दिल दरयाई । जिसकी घोड़ी असलदरयाई ॥ पानी छलकै न फूटै बताशा । तमाशा सी चाल चलवार ॥ २ ॥ बनरा मेरा राजदुलारा । सेहरा हीरामोतीलड़-वारा ॥ बागा सूहा जरीदा विशाल । बांधे पटुका झालरदार ॥ ३ ॥ दुलहा नन्दललन लड़ैता । मेंहदी कर कँगन लसैता ॥ बाँकी घोड़ीपै सवार परिवार । करै तन मन धन बलिहार ॥ ४ ॥ (द्वितीय घुड़चढ़ीका) पद ॥ बन्ने की घोड़ी रँगीली है वैसा रँगीला बना ॥ (अंतरा) घोड़ी साजो शृंगारों सलूनी ॥ नोखी शोभा बन्ने मुख पै दूनी । सूहा बागा अनोखी बहार दिपै

हीरा मोती पना ॥ १ ॥ सोने छत्र ढुरै शीश चौंरा कर कंकण कंचनिया शिरमौरा । राई माई बाबुल बहिना उतारे आरती कुलके जना ॥ २ ॥ धनि धनि नँद नँद जू की रनियां जिन्ह जाये ललन सुखदनियां । बलि जायें छवि लखि ब्रजनारि उचारैं मँगालिक बचना ॥ ३ ॥ (रागिनी धुनि सारँग में) घोड़ी का पद ॥ नौलखिया घोड़ी मज़ेदार जोबन बौछार करती । मेरा बन्ना बना तरेहदार अदा मुख विहार करती ॥ (अन्तरा) घोड़ी साजों सजीली सुहावे बन्ना रँग रँगीला मन भावे । घोड़ि पै सवार करती ॥ १ ॥ घोड़ी चंचल चलै चाल बांकी पानी छलके न झलके चलांकी । मलीदा अहार करती ॥ २ ॥ घोड़ी लाखों में यक अलबेली वैसी बन्ने की सूरत नवेली । छटा उजियार करती ॥ ३ ॥ घोड़ी छूने न दे अपनी छैंयां मानो बन्ने को लीन्हे कनैयां । शिकारी शिकार करती ॥ ४ ॥ घोड़ीका रूप रँग क्या तमाशा चाल चलती न फूटे बताशा । सितम बेशुमार करती ॥ ५ ॥ घोड़ी सूरत सलोनी सोहनियां मेरे बन्नेकी मूरत मोहनियां । पै तन् मन् न्योछार करती ॥ ६ ॥ घोड़ी दामो अन्मोल दरियाई मेरा बन्ना वो दिल दरियाई । निकाई गुहार करती ॥ ७ ॥ जैसा नँदका ललन बन्ना नामी वैसी बन्ने की घोड़ी धूमधामी । बड़ाई संसार करती ॥ ८ ॥ दोहा ॥ सुभग सेहरा सजय प्रभु, अश्वपृष्ठ पधराय ॥ दइ मालिन बकसीस बहु, फूली अँग न समाय ॥ १ ॥ पन्नग मणिकंचन रचित, शिर पर छत्र सुहाय ॥ मनमोहन

ब्रजराज पै, चँवरकरैं बलराय ॥ २ ॥ (अथ रागिनी पीलू में) दादरा पद ॥ दूल्हो बनो ब्रजराज सँवरिया (अन्तरा) मोहनी मुरतिया सोहनी सुरतिया शीश सोहे सूही सूही पगरिया ॥ १ ॥ हीरनदा सेहरा शिर सोंहदा कलँगी मानो चमकै बिजुरिया ॥ २ ॥ अँग जरीदा जामा जमकै पटुका झालर दार केशरिया ॥ ३ ॥ रतनजटित कर कँगन बिराजै मेंहदी रचित अँगुरी में मुदरिया ॥ ४ ॥ मृग दृग मीन कमलदल लोचन तिरछी चितवन सैन कटरिया ॥ ५ ॥ श्रवण सुघर मकराकृत कुंडल गोल कपोल सुनक बेसरिया ॥ ६ ॥ अँग अँग अनँग सुहात सलोनो ललन ललित छबि सागरिया ॥ ७ (अथ बटेरी बिधानम्) दोहा ॥ रुक्मि रचित सामा सविधि, सजि बटेरि नृप दीन्ह ॥ दातव त्रिपुर उदोत त्यहि, वेद नामना कीन्ह ॥ १ ॥ कौंर धोति मेवा चढ़इ, ननदि बधू की आन ॥ हथ पिटारकृतकै कियो, परछन चाक पयान ॥ २ (अथ पेशकारा वर्णनम्) सोरठा ॥ भीष्मककुल समुदाय, गाजे बाजे धूमयुत ॥ नाच रंग छिड़वाय, छुटवत आतशबाज़ि बहु ॥ १ ॥ गे जनवास अवासु, द्वार डार पाटम्बरा ॥ नेग निछावर जासु, कीन्ह समर्पण उचितवत ॥ २ ॥ दोहा ॥ भेंटि सजन लय नाग हय, वारत द्रव्य सुहेत ॥ श्री गिरिवरधर कुँवर वर, लाये प्रमुद निकेत ॥ १ ॥ चौपाई ॥ निरखि नगर नर नारि उछाहन । धरैं भरैं मनबांछित लाहन ॥ तन मन धन बेगैं ठहिं ठेगैं । चकि छकतैं सर्बसु सुख नेगैं ॥ पट अँचल पसारध्या ईशा ।

यहि बर माँगै बिसवा बीशा ॥ यह मोहनि मूरति उर वासै । हो ममाश पूरण जोइ भ्यासै ॥ आशिष वरहिं अपूर्व सजोमा । मजतहू इन खसहि न रोमा ॥ बृद्धै नित बल तेज लला को । बिस्तत हो कुल नंदबबा को ॥ फूलैं फलैं अघाय अघाई । कबहुं न हीन होय प्रभुताई ॥ सास आन आरती उतारी । कै रुचना लै धाम सिधारी ॥ वर कर असि सन तनी छुवाई । गावैं गुनि गन्धर्व बधाई ॥ प्रियहि छत्र पहिरायउ दुलहा । दुलही गरी फुरकि हिय उलहा ॥ वेदिहि बना बनी प्रस्थापी । पुजय प्रथम सुर सकल प्रतापी ॥ मात पितहु पट उग्र सजैकै । आदि नवौ ग्रह सविधि पुजैकै ॥ (राग दरबारी कान्हरा तिवरा तालमें) हरि गीतिका छन्द ॥ भनि बुधनु भीष्मक प्रभा प्रति पुनि हेमथार मँगाइयाँ । भरि नीर कंचन झारि सुन्दर युगल पग पखराइयाँ ॥ दय अर्घ पाद्य कराय आचमन बिष्टरौ अर्पण करा । मधुपर्क पान कराय शाखोच्चार वर्णहिं बुधवरा ॥ १ ॥ (शाखोच्चारस्य मंगलाचरणम्) छन्द कुण्डलिया ॥ नमो नमो शिव ललनप्रिय, मंगल मूर्ति गणेश । बाणी वैभव सुमतिदा, बन्दौं उमा महेश ॥ बन्दौं उमा महेश, सुखद गुरु पग पराग बर । हृदि दृग अञ्जन आँज सुमिरि राधा राधा वर ॥ राधा राधावर कहूं शाखो भय उत्तमो । ललन जननि सावित्रि पितामह जगत पद नमो ॥ १ ॥ जै लक्ष्मी भगवान सिय राम रुक्मिणीश्याम । शिवा शम्भु रेवतिरमण ललन शचीन्द्र नमामि ॥ ललन शचीन्द्र नमामि रोहिणी पति द्रुपदार्जुन ।

दमयन्ती नल नाहु कौशिला दशरथ गृह गुन ॥ दशरथ गृह गुन नन्द यशोमति चरण अम्बुजै । अरुन्धतीश वसिष्ठ नमों कवि सुबुध द्विजन जै ॥ २ ॥ (अथ श्री कृष्णकुलस्य शाखोच्चारसप्तकारम्भः) दोहा ॥ भा ययाति नृपके ललन, बृषपर्वा यशवन्त ॥ त्यहि यदु त्यहि तुर्वशु सुतिन्हु सहेस्त्रदः गुणवन्त ॥ १ ॥ तासु पयोदः तासु के, क्रोष्टा त्यहि अनिलाहु ॥ तासु अञ्जिकः अवनिपति, त्यहि के हय हय नाहु ॥ २ ॥ हयहय सुत हय त्यहि कुँवर, भये बेणु पुनि तासु ॥ धर्मनेत्र त्यहि कार्त त्यहि, साहज नृप सुखरासु ॥ ३ ॥ तासु भद्र त्यहि श्रेणि त्यहि, दुर्दम नृप रतिवान ॥ त्यहि सन कनक बहोरि त्यहि, कृत्तवीर्य्य बलवान ॥ ४ ॥ त्यहि कर अर्जुन तासु शिशु, कार्तवीर्य्य अर्जून ॥ शूरसेन त्यहि शूर त्यहि, बृषण न त्यहि यशु न्यून ॥ ५ ॥ मधुपध्वज त्यहि जयध्वज, सुत त्यहि के वसुदेव ॥ वासुदेव तिनके ललन, पूजित तिहुँ पुरमेव ॥ ६ ॥ कुंडलिया ॥ ब्याही जिन भीष्मक सुता, जीत यूथ शिशुपाल । मन मन्शा पुरई सबन, नन्द नँदन गोपाल ॥ नन्द नँनद गोपाल, सुराका शशि रवि श्री की । अचल अमर यह जोरि, ललन ललनी रहि नीकी ॥ ललनी रहेनीकी सुरन दुलह दुलहिनी सराही । गतिदा द्वाराकरन मनौं प्रभु मुक्ती ब्याही ॥ १ ॥

(अथ श्री रुक्मिणी कुलस्य शाखोच्चारसप्तकप्रारम्भः) दोहा ॥ ऋषीराज सुखताज श्री, सर्व गुणालंकृत्त ॥ तीव्र तपस्वी तिन्ह तनय, भा दिलीप शुभवृत्त ॥ १ ॥ नृप दिलीप कर

आत्मजो, भा वृत्तीक प्रधान ॥ तिसका शान्तनु शुभग शिशु, त्यहिसुत शल्ल सुजान ॥२॥ शल्ल सुवन भीष्मक नृपति,त्यहिं सुत द्वै कम सात ॥ रुक्म बाहु कच मालरथ, सब समर्थ शुभ गात ॥३॥ त्यहि भीष्मक कुंडिनाधिपति, हरि जन परमप्रधान ॥ भक्ति प्रेम युत साविधै, दइ दुहिता भगवान ॥ ४ ॥ बुधशाखाउच्चारकर, गोत्र प्रवर स विशेष ॥ वेदविहित पाणिग्रहण, सविधि पद्धति नुशेष ॥५॥ सुरभी एकसहस्र दइँ, सौरी बिंश हज़ार ॥ श्यामात्रिंश सहस्र दइँ, कन्यादान मँझार ॥ ६ ॥ हयगजउष्ट्र बृषाजगण,पटभूषण धनरत्न ॥ बहल म्यान रथ यान बहु, हरिहि समर्थसयत्न ७॥ इति श्री उभयकुलशाखोच्चारस्य द्विसप्तकं समाप्तम् ॥ (अथराग अड़ाना त्रयतालमें बनरागायन) पद ॥ बनीरी देख बनरी बनरे को मुदित हीय अति बरण बरण बिधि (अन्तरा) सुघर तासु रिर सारी शुभकारी शशिबदन सरस शोभायमान मनहारी चितवन चख मोहित ललन तन मन धन वारी जाथँ जापै ऋधि सिधि निधि ॥ १ ॥ (अथराग अड़ाना शूल तालमें) पद ॥ बनरी लुभाई बनादेख मोहना साँवरीसुरत मोहनी मुरत छविफब नवनिधि सना बना बना ॥ (अन्तरा) शुभग सुन्दर सजे शृँगार शीश बामभाग पाग मुतियन लड़ सेहरेकी घुलिसों सोहना घना घना ॥ १ ॥ प्रफुलित पिय पेखिप्यारी तन मन धन देत वारी भागधनि सुहाग पायो ललन शोभना बना बना ॥ २ ॥ सखीप्रति सखीवचन (पहाड़ी त्रैतालमें) सवैया ॥

दोहुन के मन भावत की रुचि दोहुनके उरचाव अतीको । दोउ सुघात निहारैं नितै अविकास न पावत सोचत जीको ॥ ब्यूंत लगावन दोउ चहैं बल बूत करैं सबही सुबुधी को । बैरिन लाजभई सजनी नहिं भेंटन दे ललना ललनी को ॥ १ ॥ [बन्दीजना ऊचुः] (रागिनी खम्माच त्रैताल में ॥) पद बनरा ॥ बना मोरा जीवन प्रान बना (अन्तरा) रोम रोम पै रतिपति वारूँ तन मन त्रिपुरधना ॥ १ ॥ कलकच कुंच सुगन्धनु सींचे फींचे पय फेअना ॥ २ ॥ शीश चमाचम चाँगल चीरो फवित फवन फुँदना ॥ ३ ॥ मणि मुतियनदा सेहरा विराजे भुम्पन हीर पना ॥ ४ ॥ मनु धनु खण्ड मनोज भ्रुकुटियाँ कनक कुँडल श्रवना ॥ ५ ॥ कलकेशर कमनिय कस्तूरिक भालरोरि रचना ॥ ६ ॥ मीन मधुप मृग अम्बुजि अँखियाँ आँजित उग्र अँजना ॥ ७ ॥ लोल कपोल प्रफुल पंकज से हँसन सुधा सदना ॥ ८ ॥ अरुणित अधर प्रातभा भूषित सीपज दुतिदशना ॥ ९ ॥ मिठ बोलन मनु मोलत मनका बरषत भ्कर सुमना ॥ १० ॥ कटि केहरि मृणाल भुजकर वर मणिमंडित कँगना ॥ ११ ॥ मेहँदि रचित पद पाणि मनोहर पीताम्बर कछना ॥ १२ ॥ नगनित नीप अभूण अँग अँग वसन गसन रतना ॥१३॥ उच्च सूक्ष्म सम बड़ जस तस अँग दिपित चन्द्र बदना ॥ १४ ॥ युग युग जिये यह जोरि लाड़िली प्रभा नन्द ललना ॥ १५ ॥ चौपाई ॥ कन्यादान महीप समर्पा। कै संकल्प हस्त हरिअर्पा ॥ पुनि बुध गाँठि

जोर पिय प्यारी। फिरई भाँमरि मंत्र उचारी॥ अश्मारोहण करहि दुलारी। पद अँगुष्ठ गहि धर्यो मुरारी॥ सह स्वर वेदकाणि ऋषि बाचैं। अर्थहु अर्थ सबन हित साँचे॥ त्रयभाँमरि करि अग्र कुमारी। चुपचतुर्थभइ प्रिया पिछारी॥ सानँद भइल वेदँ भामरियाँ। सो छबि लखि छकितैं सुन्द-रियाँ॥ सरहजसरबर मह्ँ दियेरी। गहन वसन बहु बहु धन केरी॥ नृप कुल नारि लीन्ह चौलाये। भ्रातन लाजा होम कराये॥ बिच बिच सीठिन देहिं लुगाई। मंत्र अर्थ मनु देहिं जताई। भीष्मक मुदित महा सुखमानैं। द्विज नेगिन दै धन सन्मानैं॥ बाजहिं मंगल चारु बधावे। सुर नर मुनि मन सुख न समावे॥ दोहा॥ फेरे फिरि बनरा बनी, राजे कनक पटान॥ कामधेनु सुरतरु युगल, मनुँ थिर एकस्थान॥ १॥ [श्रीरुक्मिणी उवाच] श्लोक॥ मंडपम्मधुपर्कञ्च लाजा हुती तथैवच। यावत् कन्या न वामाङ्गी तावत् कन्या कुमारिका॥ यथा॥ सोरठा॥ तिय पिय सनकह बैन, मम पितु बिरचो मंडपहु॥ मधुपर्कहु सुखदैन, दियो होम लाजा कियो॥ १॥ पै जबलौं व्रजराज, हौं वामाङ्ग न आयहौं॥ संज्ञा क्वाँरि बिराज, नन्द ललन बामांगिये॥ २॥ [श्री कृष्णउवाच] श्लोक॥ आदौ धर्म्म धरा कुटुम्बसुखदा मिष्टा प्रियाभाषिणी क्रोधालस्य निवारिणी सुखकरी आज्ञा सदा कारिणी॥ सेवायां पतिमातृपितृ निरता भग्नीष्टका वादिनी

१ सुमेरु रूपी पाषाण पै पद रखना। २ अबही। ३ चार। ४ मेवा वसन द्रव्य भूषण युतपात्र। ५ चारि कटोरी सर्करा पूरित सद्द्रव्य बसन भूषण के देना।

एतेतेह गुणा वसन्ति सततं वामागुणत्वम्भव॥ २ (रागिनी जयजयवन्ती सादरा शूलताल में) कवित्त घनाक्षरी॥ साँवरे सुजान कह्यो एते बच मान प्रिया लीहौं बामअङ्ग धर्म कुलको प्रधानिये। कीजे सास ससुर सेवन कुटुम्ब तीजे भाषण माधुर्य्य बैन क्रोधतज आलस्य ममाज्ञहि प्रमानिये॥ एवमस्तु भानी यों बखानी नन्दल-शुश्रूषा राखिये सनेह भग्निसों हमारी कछु रिपुता न ठानिये। लन पै बासूँ बाम तब येते बाक्य मोर मानिये॥ १॥ दोहा॥ तीर्थोद्यापन यज्ञ ब्रत, दानकरौ ममयुक्त॥ हव्य कव्य सन सुर पितर, पूजन करहु अनुक्त॥ १॥ कुलरक्षा पशुपालना, लाभरु ब्यय धन धान्य॥ मम सम्मति बिन करहु जनि, यह वच तुम कहँ मान्य॥ २॥ चौपाई॥ देवालय उद्यान तड़ागा। कूप बापि प्रतिपाल सरागा॥ द्रव्य उपार्जहु देशबिदेशा॥ क्रय विक्रय ममति सन शेशा॥ परात्रिय संगतित्याग सदाहीं। हौं बामाङ्गी होब तदाहीं॥ प्रियावचन कर अंगीकारा। बाम अंग अँगि नन्दकुमारा॥ वहि क्षण की छबि बरणि न जाई। सुर प्रसून भर जयध्वनि ठाई॥ परिणय प्रचुर सुकृतिनु करैके। उठय वरसुता बुधार्घ दैके॥ गँठ जोरे प्रभु सदन सिधारे। जहँ थापे थापे तिय चारे॥ वंश बधूटि सरहजैं सारी। गावैं मंगलचार उचारी॥ दूलह दुलहि प्रिय प्राण प्रबीने। स्वर्ण तल्प दोउ स्थापन कीने॥ (रागिनी बरुआ की मांझ में) दादरा पद॥ बनरा मेरा गुलाब केरा फुलवा।

१-बहुत। २-बिस्तर, बिछौना॥

(अन्तरा)नाजुक कलइयां लिये फूलों की छड़ियां। नैनों कजर अनमुलवा ॥ १ ॥ हाथों में मेहदी जड़ीली अंगूठी। सोहे कँगनवा खडुलवा ॥ २ ॥ शिरपै चीरा बहारदार कलँगी। माथे तिलक नीक ढुलवा ॥ ३ ॥ नौलखिया हरवा हीरोंदा सेहरा। मुतियोंदा हार मझुलवा ॥ ४ ॥ नँद का ललन बन्ना बांकाबिहारी। मांगे वो नाजो का डुलवा ॥ ५ ॥ पद जोड़े का ॥ बनरा मेरा शिकारी योवन का। (अन्तरा) रसिया रुचीला रँगीला सा बांका। प्रेमी वो प्रिया चितवनका ॥ १ ॥ प्रेम का प्याला पिलावे सुहावेजी। कजरा काढ़े दृगनका ॥ २ ॥ नागर उजागर सो प्रीति का सागर। लोभी वो मीठे वचन का ॥ ३ ॥ आली अलबेला सुहेला नवेला। रँग ढँग नन्द ललन का ॥ ४ ॥ बनरी पद जोड़ेका ॥ बनरी मेरी चमेली की कलियां। (अन्तरा) अँखियां आमों सी फँकियां रसीली। कजरा की रेख प्रबलियां ॥ १ ॥ अलकैं कारी घुँघरवारी प्यारी। मनु मधुकरगण अलियां॥ २॥ चन्दासा मुखड़ा सितारा सी बिंदियां। नागिनिसी भौं चुलबुलियां ॥ ३ ॥ गाल गुलाबी गुलाबों से गालिब। हीरों की ऐसी दँतुलियां ॥ ४ ॥ हसनमोहनियां बशी करनियां। अमृतऐसी बतुलियां ॥ ५ ॥ नाजुक कमलसी कलैयां सलोनी। सो चम्पा कलीसी अँगुलियां ॥ ६ ॥ जुबनों का जोहर है जुबनापै जाहिर। गेंदा गुलाबकली फलियां॥ ७॥ चीतेसे पतली कमर करधनियां। हंसासी चाल छलबलियां ॥ ८ ॥ मखमल औ माखन से चीकन-

पनो गात। गौरी गुराई असलियां ॥ ९ ॥ नँद के ललन ऐसे बन्ने की बनरी। वारी सुरों की नवलियां ॥ १० ॥चौपाई॥ बना बनी कुल देव पुजातीं। दम्पति छवि लखि बलि बलि जातीं॥ षटरस अशन सुसरस सुहाये। हेमरतनमय थाल सजाये ॥ बर दुलहिन जिमवें कुलनारी। लाज लाज मुसिकैं पिय प्यारी ॥ सुमुखि आदि हिय दय दुलरावें। पलटैं ग्रास न बहु पलटावें ॥ सख्य ऊचुः॥ (अथ रागविहाग त्रैताल में) दूधाभातीका पद॥ ललन तोरी सरहज सास मनाती। युगल मिल जीमहु दूधाभाती (अन्तरा) पलटौ ग्रास परस्पर प्रियासँग प्रिया लै तुमहिं खवाती। सुनि त्रियबच लजि नैन नीचकर मुसकित मन्दनु जाती ॥ १॥ लजहु लाल न सकुच कर कछु यह रीति सनातन ख्याती। करहु न बार तजहु अस हठपन यामें न लाजकी बाती ॥ २ ॥ यह नइ बात न है कछु लालन जो तुव मनै न भाती। तुम्हरे तात मात पुरखन सों सदा यही चलि आती ॥ ३ ॥ ज्यों त्यों कहि फुसलाय पोट कर भइँ सखि श्याम मनाती। जीमत भे दोउ ललन लाड़िली पै हरत्रिय बलि जाती॥ ४ ॥ (अथ रागिनी सूरदासी सारँग रूपकताल में) ॥ सवैया॥ छाई छबीली रँगीली रसीली सुतीली छटा छबि दम्पति केरी। धौं घनश्याम इतै उत दामिन दोउन रूप अनूप बनेरी ॥ जीमत बारपलोटन ग्रासन सो छवि शेश न भानि सकेरी। लाल लजे मुसकी ललनी ललना विहँसीकर तारिन देरी॥ १॥ (अथ रागिनी काफी झँझौटी त्रयतालमें)

सीठनी ॥ गारी गावें सकल पुरनारी । तिहारी कछु हठ न चली बनवारी (अन्तरा) नेहके बस जह जीव सनातन तापर विनति हमारी । यक सों यक चाँगल चतुरा त्रिय पाथरदें पिघलारी ॥ तिहारी कछु हठ न चली बनवारी ॥ १ ॥ अबतो लला परगे हमरे वश छुड़िहैं नाच न चारी । बुरो भलो नहिंमानि सको कछु तुम बहनोइ हम सारी ॥ तिहारी कछु हठ न चली बनवारी ॥२॥ सीधेहि ढँगबरसो ह्यां मोहन तोर प्रशंसा भारी । नहिं तो ललन हँसैंगी तिय तुहि सब नतैल ससुरारी ॥ तिहारी कछु हठि न चली बनवारी ॥ ३ ॥ [शुक उवाच] ॥ दोहा ॥ कीन्हीं दूधाभाति प्रभु, ह्वै बश प्रेम अलाप ॥ अज्ञविज्ञ रसरहित सखि, स्यानप सरहैं आप ॥ १ ॥ सोरठा ॥ विनयो प्रभा बहोरि , मृदु बचना रचना सहित ॥ दीजिय बाति प्रभु जोरि, लिजिय नेग आपन अबहिं ॥ १ ॥ (अथ रागविहाग त्रयताल में) बाती जोरनपद ॥ ललन अब बाती से मिलवहु बाती । तोरी सारी सरहज समुझाती ॥ (अन्तरा) शीश नवत कर जोरत तोरे सारी त्रिय हाहा खाती । तुम नहिं कानिकरो बिनती कोउ निठुर तोर कुल जाती ॥ १ ॥ चीन्ह गई ठनगन हठि तुम्हरी चतुरइ सभा सुहाती । ज्यहि कारन तुम सकुचत मोहन सो हम करियति ख्याती ॥ २ ॥ तुव द्वै तात मात द्वै यहि कर सकुचन लाज लजाती । एक बाप कर जाये जो होते तौ बाती जुरिजाती ॥ ३ ॥ मात पितुन कुल भग्नि सबन मिल लेहु बुलाय बराती । तिन

ते लेहु जुराय बातिका तोर न एक बिसाती ॥ ४ ॥ कै मैया बहिना सन पूंछो जिन्ह यह बाती काती । तोरे बुधिबल की नहिं मोहन सांच कहैं न हँसाती ॥ ५ ॥ कहि हरि हम कुलरीति न यह कुल रीति तुम्हार जनाती । सिखइ होयगी रीति ललिहु जइ जो हम संगसिधाती ॥ ६ ॥ सुनि प्रियबैन मनोहर हरिके भइ प्रिया मुरि मुसक्याती । सकल सराहि कही सखि कस हरि कहिलियो बातनु बाती ॥ ७ ॥ जो यक जननि जनककर जाये सोइहों बड़ अकलाती । यहतो दुइ चारन के जन्मे इनहिं जीत को पाती ॥ ८ ॥ रस बतियन भुरमाय पोट पुनि भइ हरिको बशलाती । बाती जोर दई मनमोहन त्रिय तन मन बलिजाती ॥ ९ ॥ बहुरि बसन बिच बांधि उपानह बरकी लाय धराती । परछौ ललन अपन कुलदेवी बनी रहै कुशलाती ॥ १० ॥ (अथ राग बिहाग त्रयताली) जोड़े का पद ॥ ललन कुल देवीको पूजहु आई (अन्तरा) चरचहु रोरि घोरि धरराखी चाउर चारु चढ़ाई । माल पुहुप पहिराय प्रेमयुत आरति भोग लगाई ॥ १ ॥ यह कुलपूज्य तुम्हारिहि लालन कहि पठयो बलिराई । शीश नवो कर जोरहु इनके मांगहु जो मनभाई ॥ २ ॥ प्रिया कुलनारि सरहजैं सारी कहत बनाय बनाई । गहर करन की वार न मोहन पूजतही बनिआई ॥ ३ ॥ सुनि त्रियवचन रचन छल छन्दन बोले प्रभु मुसकाई । प्रकट धरो इन्ह सबन सामने कस यह देवी माई ॥ ४ ॥ कस बातैं तुम भनत सांवरे

चहों इन नग्नि कराई । हमरे देव कहुँ मोहिं न लेवैं तौ जाउ इनहुँ गँवाई ॥ ५ ॥ सखिंन ओर लखि लाल भनों मम नाहक करत हँसाई । देवि बताय कपट कर हमसन चहौ पवरखि पुजाई ॥ ६ ॥ जीति सकत इन्हसनको सजनी ये बड़ चतुर कन्हाई । दुइ भैया दुइ बाप इन्हों के यासन बुधि अधिकाई ॥ ७ ॥ ललन प्रेमबश लाय सरहजनु कुल कुलरीति कराई । ससुरारिनु प्रभु प्रेम प्रीतिपगि परछीं देविमनाई ॥ ८ ॥ ताछबि पेखि विबुध इन्द्रादिक शारद भनत सकाई । गुमकैं गगन नगारबाद्य बहु सुर मुनि फुलभर लाई ॥ ९ ॥ सोरठा ॥ घोरशब्द चहुँ ओरि, जय जय उचरैं नारिनर ॥ लखि मनमोहनि जोरि, निमिष न लावहिं चकित चख ॥ १ ॥ बिहँसि सारि ससुरालि, मृदुल मधुरबर बैन सन ॥ भनहिं अहो बनमालि, छन्नछबीले कहिय प्रभु ॥ २ ॥ [श्रीमहादेव उवाच] दोहा ॥ उपहासन रसबिबशके, प्रेमप्रमोह्यो श्याम ॥ छन्न छबीले लालसों, कहिलाये बर वाम ॥ १ ॥ [श्रीकृष्ण उवाच] छन्नाष्टक प्रारम्भ ॥ छन्नपके आइयाँ छन्नप के गुरु देव । मैं नँदललन यशोमतिप्यारा भायबीर बलदेव ॥ १ ॥ अथ हास्यछन्न ॥ छन्नतुम्हारी छोरीछीना हमसे पूछत कहिये । उलटचोर कुतवालै डाँड़ै चलोजी बस चुपरहिये ॥ २ ॥ तीसरछन्न कहूं छमकीला रसिक रँगीला होय । ललन तुम्हारे जिओ हमैं दइ रंगरँगीली जोय ॥ ३ ॥ छन्न कहूँ छल छना हुआ तुमसुनौं सरहजैं सास । हम तुम्हरे तुम हमरे पूरी हमरी तुम्हरी आस ॥ ४ ॥ (उपहास्यछन्न)

छन्नपके आइयाँ छन्नपके लोटा । सास ससुरको आनँद दीन्हा रुक्मिका घोटमघोटा ॥ ५ ॥ छन्नपके आइयाँ छन्नपके टोना । सासूदिये माणिक सुसर दियो सोना ॥ ६ ॥ छन्नपके आइयाँ छन्नपके करतार । बलिबलिजावैं सरहज सारी दय दय हीरन हार ॥ ७ ॥ छन्नपके आइयाँ छन्नप के चौसर । धन भूषन पटजो बनि आवा दिया सबन त्यहि औसर ॥ ८ ॥ इति श्री छन्नाष्टकावलीसमाप्ता ॥ (अथ रागिनी गुजराती गारा ताल दादरा में) सवैया ॥ याबिधि छन्नकहे गोपाल मुहिंसुर बालसबै ततकाला । भीष्मक मोदभरे उलहैं तन औ मन वारत वित्त बिशाला ॥ वाम अनन्तर प्रेमपगीं उमँगी उरलाहन रंगरशाला । श्रीयशुदा ललनै छबिपै बलिहारहिं लोक तिहूँ सुखबाला ॥ १ ॥ दोहा ॥ गोरोचन रोचनरुचिर, दै लिलार सहवित्त ॥ बागे गहन अलेख दय, धी धीनाह निमित्त ॥ १ ॥ पियप्यारी जनवासगे, गँठजोरे सानन्द ॥ बिपुल बधावे बाजहीं, तीब्रध्वनिक सुखकन्द ॥ २ ॥ (रागिनी झँझौटी त्रयताल में) सवैया ॥ आई बहू जनवासनिवास हुलास सबै उर वास अतीको ॥ सास ससूर प्रपूर महामुद हीय समात न नात नतीको । वारत सम्पति दम्पति पै न अघात सिहात बिलोक बनीको ॥ भाग सुहाग अशीस कहैं ललनै वत हो सुख भोगपती को ॥ १ ॥ (अथध्रुपद चारताल राग केदार में) कवित्त ॥ सासकी बुलाई प्रिया आई अँगनाई बीच ताक्षिण मृगाक्षिणको हेर हिया हरिगो । उलही दुकूल

ह्वैके दुलही को पेखि अंग चंचला चमाक चौंध लोचननु भरिगो ॥ घूँघट उघार मुखदेखत दशाबिसार फैलत प्रकास खास चन्द मन्द परिगो । गिरिगिरिजा को मान सिन्धुजा शशीको मानु काम वामरूपको गुमान कूँच करिगो ॥ २ ॥ (अथ रागिनी त्रयताल जंगला में) छन्द ॥ सवैया ॥ दुलही उलही छविसिन्धु दुहूँकुल दीपविलोक सकैं समता । तिय मैन उमा कमला चपला शशि भानु छिपैं उर दै भ्रमता ॥ मुख देखन नेग निवेदन को तिहुँ वित्त न दत्त चितै जमता । दय रत्न यदू ललनै प्रियको मुख सास लख्यो मन लै ममता ॥ ३ ॥ (अथ रागिनी भीम पलाशी पुटताल में) सवैया ॥ बनरी लखि दीप दुहू कुलकी समता रति गौरि रमा न सरेख्यो । शत शक्र प्रभूत भरी गृह में मनचाहत सिद्धि खड़ी ढिग पेख्यो ॥ मुख देखन नेग बधू समिता मनु ढूंढ़ फिरी उपमा नहिं लेख्यो । दय श्री यदुनन्दन रत्न प्रियाकर सास सकोचित ह्वै मुख देख्यो ॥ ४ ॥ (अथ रागिनी जैत श्री फाक्ताताल में) सवैया ॥ पुरवासि सुरेन्द्रबधू बटुरीं बनरी मुखचन्द बिलोकनको । अनुमान बिनै कुलजाति सँगाति लिये सँग नात नतेलन को ॥ बित योग समान बहू धन वस्त्रनु नेति निछावर नेगनको । दिखराइ प्रियातन दै ललना रुचि मोद भरैं अपने मनको ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ सुही बधूटी करसन सासू । ज्यहि जस उचित दिवाई तासू ॥ भूर भूरसी रस बधाइयां । सासु ससुर बधुकर दिवाइयां ॥ नेगी नेति

अयाचक कीन्हे । धन रत्नु पट गृह भरि दीन्हे ॥ मंगलाचार गव मंगलामुखि । कीन्हेसि देवि देव यूथप सुखि ॥ मुद मय मंगल सुखद समाजू । धन्य धन्य शुभघाड़ि दिन आजू ॥ प्रफुलित अँग न समावत कोऊ । मनु तनु धरि प्रकटो सुख होऊ ॥ युति आमोद प्रमोद बराती । अविदित विहय गई कुलराती ॥ कै सिगँ नेगरु मुख दिखराई । प्रिय सधूम पितुगृह पधराई ॥ मुख दिखराइ दात ससुरारी । सिमटे सिहँरन सिग नर नारी ॥ निहँर सिहायँ सरहि समधी को । आशिष वरहिं बना बनरी को ॥ दोहा ॥ शयनित भे वर सुता निज, निज गृह शय्या तल्पँ ॥ जागे सागे अथ कृति, करइ अरम्भ अनल्प ॥ १ ॥ चौपाई ॥ कुँवर कलेवा हित बुलवावा । बनरा ज्यहि त्तण मन्दिर आवा ॥ करै सुहाग रात्रि जामात्रै । बिच कठौति प्रक्षाल्यो गात्रै ॥ पाटम्बर धन गहन निवेदे । षटरस अदंन सुस्वादन भेदे ॥ गुरु दीक्षास्य दत्त व्यवहारू । 'काँजि चखाइसो दीन्ह सचारू ॥ सजन बरातिनु हित मिजमानी । सविधि समर्पि अखिल रसखानी ॥ गोमय सजल अजिर शुधवावा । बिबिध सुगन्धनु शुठि सिंचवावा ॥ विस्तत कै अम्बर मखतूली । सल्माकारि सितार्न समूली ॥ पनग पितुज पुखराजन अवली । जटित जालिज मणि माणिक धवली ॥ विद्रुमि पाटि पन्नगी पाये । चिन्तामणिन सुचक्र सुहाये ॥ कीलित कीलनु स्वर्ण चुनीली ।

१-आनन्द । २-जान न पड़ी । ३-सर्व । ४-देखने को । ५-देखकर । ६-प्रसन्न होवें । ७-विस्तरा । ८-साथही । ९-बड़ी । १०-भोजन । ११-कांजीके बरा ॥

कहुँ फिरोज कहुँ नलिम नीली ॥ चौकी चारु डार बिचवेदी । जरकसि बिशद पटनु आच्छेदी ॥ [अथ बरीबिधानं पुष्पप्रदानम्] दोहा ॥ मुतियन चौक पुराय वर, सुता आसनित कीन्ह ॥ स्वर्ण टका धरि पाद तल, सुरार्चि शुभघड़ि चीन्ह ॥ १ ॥ (रागिनी कल्यांगड़ा ठेका होली त्रयतालमें) सवैया ॥ जोरि सनातनि जागति जोतिनु श्री बनरी बनरा घनश्यामा । साजित शुभ्र शृंगार दुहूँ मनमोहन सोहन रूप ललामा ॥ भामिन श्याम सनेह सनीं भरि कंचन थाल जलै वहि यामा । आनि घिरीं ललनी ललनै मिलि कंकण खेल खिलावन वामा ॥ १ ॥ (अथ रागिनी सिन्ध काफ़ी त्रयताल में) गायनपद [सख्य ऊचुः] खोलो खोलो लाल कँगना नँदके ललना कर कछु चतुराई दिखाओ अपनी कन्हाई फुरफुरताई की सुघराई शूरताई (अन्तरा) गिरिगोबर्द्धन न जानियो जह ग्रह गज की लराई जनि जनक जीर्ण धनुआँ बलहिं छलिबो कन्हुआं ललन ये प्रिया कँगन ग्रंथि हम न लगाई ॥ १ ॥ तुम्हरे द्वै द्वै जनक जननि तिनहुँ लेउ बुलवाई उनहूँ की देखें निपुणाई तोरी यदुराई एकौ न बिसाई नाहिं हाहाकर हमरी हमसों लेउ छुरवाई ॥ २ ॥ [श्रीशुकदेवउवाच] (रागिनी धूरिया त्रयताल में) पद ॥ लखिसखियन अभिमान कान्हरे । खोल दिये कँगना सुजानरे (अन्तरा) कहँ गइ अलि तुम्हरी चतुराई मनमोहन अस कह्यो भानरे ॥ १ ॥ ललन लजाय दियो वनितनको गइँ सखियां खिसियान मानरे ॥ २ ॥ तुम चारनकर जाये सांबरे

यासों ललन तुम बुधिनिधानरे ॥ ३ ॥ दोहा ॥ पुनि रुक्मिणि सन हरि कँगन, तिय खुल्यो वाहि बारि ॥ पचि हारी प्रिय नहिं खुल्यो, लगि हारीं कुलनारि ॥ १ ॥ चौपाई ॥ युग्मरु अर्ध ग्रन्थि कर चक्रो । खोज न सक त्यहि गति अज शक्रा ॥ इमि बल फन्दा जन्दा गाँसा । कुञ्जिं न खोजि मिलै क्यहुपासा ॥ परिगा अखिल बुधिनु भ्रम फन्दा । मीन जार ग्रस राहु चन्दा ॥ आन नाग्र हरिहोब न काहू । हिय खिसियान उपाजिस दाहू ॥ तकि चकि रहैं जोहि प्रभु बदना । सैनैं सखिन ओष्ठ दै रदना ॥ लाज ग्लानि दृग बुधि हदिसानी । स्यानपरहित भई शुठिस्यानी ॥ अल बल सफल न क्यहु तिलराई । नाविवेक षोडश कलथाई ॥ सारि सरहजें नम्रितह्वैकै । पुनि उबाचिं प्रभुपद चित दैकै ॥ तुमहिं चिताउब यदि कोउ पन्थी । तबहिं छुड़ब तुव कंकण ग्रन्थी ॥ हमरि पराजय विजय तिहारी । द्रविय अवतु करुणेश खरारी ॥ दोहा ॥ प्रियाननहु फर्कं पेखि प्रभु, धरि करुणाउर अयन ॥ छुरैलीन्ह वामांगि कर, दयासिख नयन सु सयन ॥ १ ॥ कृष्ण कटाक्षे युवति जुहि, धन्यहिं बिनय सुनाय ॥ श्याम पराभँव चाहु चित, प्रिया विजय मन लाय ॥ २ ॥ अथ कंकणछुद्री प्रारम्भ [सख्य ऊचुः] (रागिनी झंझोटी त्रयताल में) सवैया ॥ अब जैसकहौ हम तैस करैं हरवैकि लला जितवैं कँगनै । कर हस्त हमार तुम्हार सबै जोइ नाच कहो

१-फेर । २-ताला । ३-लगाया । ४-ताली । ५-अस्त होगई । ६-चेहरा उतरजाना । ७-हार । ८-कल, यंत्र, कुंजी ॥

सो नचाय मनै ॥ अब आन हमार परे वशमा दशमा कशमा परतीत भनै । नतु नेग हमार चुकै चुपकै तब हुम्मंत तोर बचै ललनै ॥ १ ॥ [श्रीकृष्ण उवाच] तथा ॥ सवैया ॥ बनि आये तुम्हैं सो करो परक्यों अभिमान की तान सुनावती हौ। तुम्हरे बलपै हम आये कहा अपने घर दै धमकावती हौ ॥ न सहाय तुम्हारि चही हमका ललनै लखिमोहिं डरावती हौ । भरि यौवन जोम जवानी तुम्हैं यहि सों हमसों इतरावती हौ॥ २ ॥ [अन्योवाच] सवैया ॥ चहिं नाच नचौ तिंगनी को लला इन नाचन कोउ न हीय बसे है। गृह आनके आन न तान चलै हमरे रुचि की बरते बनि ऐहै ॥ धमकी बहु काहे बतावत हौ तुम्हरी न यहां कछु एक बिसैहै। ससुरारि में आरि चलै न कछू ललनै पन देउगे नाहिं निबैहै ॥३॥ [श्रीकृष्ण उवाच] तथा ॥ सवैया ॥ न भटू अपने हिय होड़धरौ यह होड़ निचोड़में लाभकहा। चमकौ तमकौ न तनौ इतनो ललनै पन ना तुम देउ अहा ॥ बिनुवारि उतार न मोजधरौ अलि होय वही विधि जौन चहा। तुमका इन बातन काहपरी हरि हैं जिति है दुलही दुलहा ॥४॥ [अपरोवाच] तथा ॥ सवैया॥ चँदरावतका हमका ललनै चिबलौ न चिआय रहो चलिजा। निंदरावत जो हम बैनन तौ यह लीक कहैं न तिलौ टलिजा ॥ हिय लेखधरौ हमरी करनी करतूतहि की जु कछू घलिजा । तुम देखत देखत मो ललनी ललना कँगनामें तुम्हैं छलिजा ॥५॥ [श्रीकृष्ण उवाच] तथा ॥ सवैया ॥

छलको तुम आनिपियो क्षितिपै तुम्हरो छकहीय रह्यो छलमा। पुनि सीधनकी क्यहि भांति बिसात नियुक्त कछू तुम्हरे थलमा ॥ विधनाहिं निवाह करै तौ करै हमसों तुमसों तुम्हरे दलमा। न निभात कभौ हुइहैं कलमा गृहमा तुम्हरे ललनौ बलमा ॥ ६ ॥ [इतरोवाच] तथा ॥ सवैया ॥ लवराउ न लाल बहू हमसों झट नेग हमार निवेदन कीजै। बतियाँ जनि गूढ़ गढ़ो विपुलै शुभ बार निवार ललामत दीजै ॥ तुम कोटि करौ न रसूम तजैं हम नाहक ही हठि कान्ह करीजै। नतु हार तुम्हार धरी ललनै जितिहै कँगना तुम सों नृप धी जै, ॥ ७ ॥ [श्री कृष्ण उवाच] तथा ॥ सवैया ॥ शुठि साँच सबै तुम्हरी बतियां सखि धी बिनकाज सरै न कछू। जग धी सम आनपदार्थ नहीं अनधी उरज्ञानै भरै न कछू ॥ कुल धी बलदेव जहान सृजै पलवैं नशवैं निवैरं न कछू । धनि धी समधी सुबुधी कुबंधी हमतो ललनै अपरै न कछू ॥ ८ ॥ [अन्यो-वाच] तथा ॥ सवैया ॥ सखीप्राति सखिवचन ॥ सखि जीतब कौन भला इनते बल बुद्धि में को अकला इनते । जिन्ह जन्मत ही दुहिता बलिकी प्रबधी बड़ को प्रबला इनते ॥ यशुदा ललनै लड़का न लखौ बिनशे व्रज नीति खला इनते । शिशुपाल दला रुक्मी मसला कँगना कह को न छला इनते ॥ ९ ॥ [इतरोवाच] ॥ सखी प्रति सखि वचन ॥ सवैया ॥ परिहै

१-पुत्री । २ -यह । ३-बुद्धि ४-खोटे केनाशक ५-पहिचान, जांच । ६-बलिराजा की पुत्री पूतना ॥

लखि द्दष्टि सबै अबहीं कँगना कृत रम्भ परेखियेतो । तुमहूँ इन ओरि अटौगी भटू अतुराउ नहीं मन मेखिये तो ॥ इनके रँग रूप अनूप अली न अनैल बचै मम रेखिये तो । यह वो नँद के ललना सजनी इनकी चतुरायन देखिये तो ॥ १० ॥ सखीप्रति सखि वचन ॥ सवैया ॥ साँचसहेलि असाँच नहीं हमरेहु हिये यह भ्यासत है । इनपै चढ़बो रँग दुस्तर है इनके छल छन्द हिंशैसत है ॥ रस रीति चहौं लपटौ ललनै हित आन न युक्त प्रकाशत है । खिलवो ललनी ललनै कँगना समया सखि शुभ्र बिकासित है ॥ ११ ॥ इति श्री कंकणरुद्री समाप्ता ॥

चौपाई॥गहि कँगना ललना ललितांगी । रजी खिलावन बर बामांगी ॥ सैना बाटि छलनु परिपाटी । संकेतहिं धरि करन कपाटी ॥ प्रथम बार कहुँ घात घता कै । दुहितहि दीन्ह जिताय दुराकै ॥ तिय मिल तारि बजावन लागीं । शिर भ्रू अँगुरी नचावन लागीं ॥ बहुरे श्री प्रभु अन्तर्यामी । समुझ सखिन छल छन्दागामी ॥ अवर बार सन शारँगपानी । चलन न दइ तिन्ह किंच कहानी ॥ प्रति क्षणगे प्रभु जीत बिशेषा । तामें तामा मीन न मेषा ॥ कंकणस्य लखि बिजय समस्ता । ह्वैगे सबन मान मद अस्ता ॥ देव देव जय देव मनाई । गुनि गन्धर्व्व गुणै गुण गाई ॥ कँगन खिलै वर वधू उठावा । पुष्प प्रवारण समधि बुलावा ॥ दोहा ॥ कंचनीय कमनीय कृत, पलिका

१-जल्दी करना । २-धीर्य्यधारण करो । ३-नादान । ४-निश्चयरक्खो५-वशीभूत ६-कनपटी ॥

रत्न जड़ाव ॥ बिछै वेदिका बिच सुरँग, रेशमि दाम गुँधाव ॥ १ ॥ चौपाई ॥ गादी साज सुही जरकसिया । कार्चोबि मखतूलिक तकिया ॥ चारु चँदोवालंकृत रतना । अजिराच्छेदित कीन्ह सुयतना ॥ अमित प्रकार अमित पक्वाना । मिष्टिक नूनिक नेतिविधाना ॥ मेवान्नादिक के गिरि सोहें । मंजु मिठाइन पर्वत पोहें ॥ भिन्न भिन्न बहुभाँतिक न्यारी । पुरित पक्क पूरिहु तरकारी ॥ भांति अनेकन शोभित भारी । फल फलारियन पुञ्ज अपारी ॥ सुमनन सार निसारेउ गन्धी । सोहें अतर अपूर्ब सुगन्धी ॥ अष्टगान्धि संयुत बिस्तारन । पान मसालेहु मद अलगारन ॥ विविध विधानिक अमित अचारा । मृदुल मुरब्बा बिपुलप्रकारा ॥ हैमिक रजतिक वर रत्नारे । गंग यमुनि कलई कृत न्यारे ॥ दोहा ॥ ताम्र कसकुटी काँस्य कल, फूल पीतली पात्र ॥ लोह अष्ट धाती शुभग, शोभित अजिर यकात्र ॥ १ ॥ चौपाई ॥ बंश बेत्र१ काष्ठिक कमनीयम् । मौंजिक पोतन कृत रमणीयम् ॥ कागजीक काँचकी सीसकी । रँग कपड़ई माटि जस्तकी ॥ विविध पदार्थ प्रपुञ्ज अलेखा । देखा सुना न जिन्ह तिन्ह देखा ॥ बसन बिशाल रेशमिक ऊनी । शाल दुशाले कला बतूनी ॥ तासबादलाई जरकसिया । सल्मासितारिक कार्चोबिया ॥ गोटन पटनु पुरित द्युति भीने । सूती साठनियां पशमीने ॥ बहु बिछायतें रंग रँगीली । दरी दरीची दिपत छबीली ॥

१-बेंत ॥

वर बिछौन सुजनी शतभातीं। गणगलीच गादी गुलकार्ती॥ चारु चादरें शुठि चाँदनियाँ। पुंजपाल पल्ली जाजमियाँ॥ कलाबतूनी तानो बानो। टाटनु बिनवट यह बिधि जानो॥ दोहा॥ चौकस चाँगालि चौपटी, तोसक तकियन तूल॥ गदे गुद गुदे मसनदें, मंजु मसहरीभूल॥ १॥ चौपाई॥ पर्दन पटन परी वर भामें। पलँगपोशके कोष सुहामें॥ खजुर दुरारो[1]हिंया पतेरी। श्रीफलस्य पल्लाविक घनेरी॥ शीतलपाटि चटाइहु चारू। अन्य बस्तु भूषित ब्यवहारू॥ तम्बु तूल मखतूलि कनातें। खीमा खीम खाफि छबि मातें॥ डेर डूँगरा[2] डौलि[3] सुडौलिक। समियानन समूह बर्तौ-[4]लिक॥ छोलदारियन छटा निराली। बहु रावटी अनेकन चाली॥ याँन[5] अनन्त सुसाजन सजके। हवादार सुखपाल अकजंके॥ ताम दाम रत्तार अनूपा। गाड़ि मझोलि इके बहुरूपा॥ डोलि चँडोलि भुलाबहु बोंचा। ललित लढ़ी रथ रमणिक कोंचा॥ बग्घिबृन्द पीनसो पालकी। पालकिगाड़ी नवल नालकी॥ दोहा॥ बम्बुकार्ड टिम टिम फिटनु, फवन[6] फबीली जौन॥ म्याने बाने साजित नग, सेज गाड़ियाँ तौन॥ १॥ चौपाई॥ चँदन चौकियां सिंह मरमरी। स्याह मुसाही दन्त कुंजरी॥ स्वर्ण रूपई कुर्सि त्रिपाहीं। पशु बाहनगण गने न जाहीं॥ दिग्गज[7] दुरदं[8] लम्बग्रीवाहू। हयंगीवि[9] हंय[10] उँदधि[11] अथाहू॥ बहुदेशी रँग जाति अनेका। टट्ट टिमाकदार प्रत्येका॥ महिषी

१–ताड़वृक्ष। २–पर्ब्बत। ३–समान, सदृश्य। ४–बरताउ योग्य। ५–सवारी। ६–सुन्दर। ७–दिगत हाथी। ८–ऊंट। ९–चिकने। १०–घोड़े। ११–दरियाई।

पूरी पूरी रीति सन पुरी पुरी रसरूप। बराधुवांसी मूँग अरहरी चणिक फुलौरी तूप॥ अधौटादूध मलाईदार। सलोनी वस्तु न पारावार॥ ३॥ चचेड़े जिमींकन्द तोरी। करेला भटा खंत जोरी॥ कासिफल ककरी सरसोंरी। रतालू खीराघृतघोरी॥ दोहरा॥ आदी कमराखि मिरचई सोया पालक जोउ। मेथी भिंडि मूलियां गोभी आलू ढेंढस सोउ॥ कुल्फा चूका अर्वी दुप्रकार। सलोनी वस्तु न पारावार॥ ४॥ गहर कटहल कड़री प्यारी। किसमिसी बढ़िया तरकारी॥ बरण बहुसृजि न्यारी न्यारी। धरीं पारस पतरिन सारी॥ दोहरा॥ रचे रायते चटपटे खीरा ककरी सान। कुम्हड़ा लौकी गाजर मूली आम अमीले जान॥ कली कचनारन में दधिडार। सलोनी वस्तु न पारावार॥ ५॥ खटाई तरहर केरी। तैल सिरका मिठास गेरी॥ गुड़म्बा गलका की ढेरी रायते चटनी[illegible]नेरी॥ दोहरा॥ आम ईमली कैथकी कदम करौंदाकेर। दाख छुआरा किसमिस अदरकि निबू अनार चुकेर॥ अम्लबेती टेंटि अलूबुखार। सलोनी वस्तु न पारावार॥ ६॥ खटमिठी अजब अचारी है। आमड़ा अदरकि न्यारी है॥ आबजोशी दाखवारी है। किसमिसी और छुआरी है॥ दोहरा॥ तूत गिलौरी तैलकी सूखा भरमा आम। खटमिठ ढुरमा निबू करोंदा आक मूलियाजाम॥ बेल भरबेर कमरखी भार। सलोनी वस्तु न पारावार॥ ७॥ तुरश अंजिर अनार दाना। अमलतासी मिरचिय नाना॥ खीरा ककरी नरङ्गियाना। बांस भिटुअन अनेक

मग बिहर बिलोकिये हमार देश नूतन रसाल छबि ललित अमोलै हैं। माननीन मानभङ्गकारी कोकिला कुलंग मोहिनीश रूप रंग वाणी वर बोलैं हैं॥ नारी रूपवारीसो न आवें दृष्टिगोचर में ऐसी छबिवारी प्यारी खग पंक्ति डोलै हैं। लीजै पंच बाण मैन कीजिये बिजय सचैन ललन तुम्हार जौन रस माहिं मोलैं हैं॥९॥ (अथ वर पत्ते विनती रागिनी चिन त्रयतालमें) कवित्त घनाक्षरी॥ बाट २ विहरैं तौ साधुनको संग करैं जिन्हसतसंग तें सुनै सुयश श्यामको। दुस्तर अनन्त जगकीत्तन गुपाललाल नाशत विकारपंच धारे ध्यान रामको॥ध्याये नंदललनके आवेंना समीप दुःखद्वन्द्व छल छन्द फन्द दीखें नाहिं नाम को। नामको अराधी अपराधीहो न श्यामको प्रमोद परिणामको हो वासी ब्रह्मधामको॥ १०॥ [भीष्मकउवाच] विनय माधुरी छन्द॥ नमामि जगस्वामि सुखधाम दाता। जैति यदुवंशि मणि श्याम गाता॥ जननु हित मथुरापति कंस मारो। त्रेताह्वै रामचन्द्र रावण तारो॥ गर्बित भा शक्र अज मान मर्दा। कालीदहकूद अहि गर्दवर्दा॥ जहँ जहँ जन क्लेश भा आनँद दीन्हा। ब्याहि मम सुता ललन पावन कीन्हा॥ १॥ दोहा॥ गज द्रुपदा प्रहलाद सी, राखी मम पति नाथ॥ मन कारज पूरण किये, जिमि गिरि राख्यो हाथ॥ १ चौपाई॥ लै अनुशासन बास सिधावा। अशन समग्रि प्रशोध सजावा॥ चोयाचँदन अजिर सिचवावा। सुवरण पाट अमित बिछवावा॥ अनुपम गुद गुद तल्पंनु तौंते। विश्रित

१-विस्तरे। २-समूह।

कीन्ह बेदि चउपाँते॥ रत्नजटित कलकंचन थारा। बनन चुनन प्रतिपात्र अपारा॥ हेम पल्लवी पातरि सोहैं। टँकी रजत टाँकिनु मनमोहैं॥ व्यंजन बिपुल विशाल अमोले। खस्ता मोयन मिलित अतोले॥ मधु मेवापय सरस दधीले। फलिहारी नाजी निमकीले॥ सुहृद सुगण युति उमँग उछाहन। करहिं काज निज निज उत्साहन॥ आये प्रभु सँग सकल बराती। जीमन बासे नाती जाती॥ समधिनि समधिनु नाम उचारी। गावैं नृपकुल नारी गारी॥ (अथ जीमनवार वर्णन छन्द लावनी में[१]) पद॥ सजी समधी सुन्दर जिवनार। सलोनी बस्तु न पारावार॥ (टेक) मसालेदार तिकोनेहैं। सेव बहुभांति सलोनेहैं॥ शकरपाले सो समोनेहैं। दालमोठिक बहुदोने हैं॥ दोहरा॥ उरद चना मोठी मटर मूंग मसूरिकदाल। मठरी लघु बड़ महा मुलायम पापरियां नइ चाल॥ बेसनी रवा कणिक कृतकार। सलोनी वस्तु न पारावार॥ १॥ सेमियां सुघर विविधरंगी। टिक्कियां लघु जंगी चंगी॥ पिराकन की नहिं कुछ तंगी। परांठे स्वारन के संगी॥ दोहरा॥ सेमखरबुज़ा तरबुज़ी सोंधे बीजतलाय। भिन्न भिन्न सजधरीं हुनैयां सुन्दरभाँति सजाय॥ पानी हड़जीरा नई बहार। सलोनी वस्तु न पारा वार॥ २॥ मोइनी अधियाघृत घोरी। लुचलुची लुचई नहिं थोरी॥ मसालन महक पिठी बोरी। कचौरी कल कोमल ढोरी॥ दोहरा॥

१-चारों तरफ॥

सूक्ष्महि सेवनते अदरा। नँदके ललनै धनिधन्यसनाथ किये हमसे जगतुच्छनरा ॥ २ ॥ (वरपक्षे विनती रागिनी छायाचारितालमें) कबित्तघनाक्षरी॥ ललन भनौंधौं कल्पतरु काष्ठनम्र तुम समिता सुमेरै हूँ अचलगतिधारीहै। चिन्तामणि तुल्य कहूँ तदपि पाषाणवत कामधेनु ध्यानहुँ सोपशु अवतारीहै॥ भानुसो सन्तापी कहूँ रत्नसिंधुक्षार वारि न्मपाणोंनिशेश समबिकलाबिकारी है। कामसो निहंगपुनि उपमा सु दृशौं कौन तुमसो न और शिरमौर भूपभारी है ॥ ३ ॥ कन्या पक्षेविनती ॥ (रागिनीछाया नट चारितालमें॥) कबित्त घनाक्षरी ॥ अवनि महान सम नाथ यश तोर कहूँ ताहि निधि अंकित कै राखो चहूँ ओरसे। सिन्धुसो कहूँ अगस्त्य मुनी ताहि सोख गये उनसे नक्षत्र नभ दीपत करोरसे॥ व्योमसो कहूँ पदनु नापि लियो विष्णु मूर्ति सो तो पितु तीहीं बसै बँधीप्रेम डोरसे। कास[illegible]ऊँ तोर मातु यश ध्याऊं धन्य कोख सो जो जायेतोसे ललन किशोरसे॥ ४॥ वरपक्षे विनती॥(रागिनी अलहिया चारितालमें) कबित्त घनाक्षरी॥ सप्तसिन्धु अम्बुबिन्दु सकल समेट जेठ स्याही श्याम रंगकी सुहावनी रचायकै। प्रबल पुनीत पात्रपृथिवी अनन्त भरि वाणी शेषरसनाकी लेखनी बनायकै॥ अम्बर सो पत्र तापै तो यशबिरचि हारे शम्भु हू न पावें पारावार गुनगायकै। ललन सी मोरमति तोरयश है अमित कहाँलौं बड़ाई करौं तुमका सुनायकै॥ ५॥ (कन्यापक्षेबिनती रागिनीबिलावली चारतालमें) कबित्त घनाक्षरी॥ शुभ सत्य गूढ़ दृढ़ मूल

कीर्ति बृती द्रुम मधुरे वचन मानोंपल्लव प्रमानेहो। ज्ञानगुण रूपी पुष्पसुकृति फलानु फले शील शुठि सन्तोषिक छाया छहरानेहो॥ अमरअवनि ऐस कल्पवृक्ष नर भेष तुमसे तो तुम्हींनाथ जगत निर्म्मानेहो। चिरंजीव तुम धन्य ललन तुम्हार धन्य तनया हमार भाग्य हमैंजन जाने हो ॥६॥ पुनः(विनती कन्या पक्षे बुधस्य हास्यवचनम्॥ रागिनी खम्माच चारतालमें) कबित्त घनाक्षरी॥ पीनोत्तुङ्ग स्तनी [illegible] मलया मलंत अंग बिमल बिलोलनेत्र तरुणी सुशीलसी। चन्द्रबदनी अनूप तिहूं [illegible] भूप मृदु बैनवारी प्यारी सुकुला असीलसी॥ सुखदाभिराम बाम प्रेम की सो आम धाम काम भा अनूठ चाम भाव भवकीलसी। ऐस बाल ज्यहि ना अलिंगी बृथा जन्म तासुसो तुव ललन हेतु दे नृप रँगीलसी॥ ७॥ (वर पक्षे विनती रागिनी खम्बावती चार ताल में)॥ कबित्त घनाक्षरी ॥ दासी क्रोध माँहि जौन रतिमाँहि रम्भा सम भोजन खवै जननि-तुल्य भाव वारीहो। आपदा समैया बिच मित्र सी ललन जौन ललना सुशीला कुल लाजवती भारी हो॥ प्रेमपुंज पुष्करी मनोज स्वच्छ भाह भरी बिमला बिलोल लोल लोचनी सुखारी हो। ऐसी जौन नारी सुकुमारी छविवारी प्यारी रूपकी उजारी सो हमारी घरवारी हो॥ ८॥ (कन्या पक्षे परिहास्य बुध बचनम् विनती रागिनी बिभाससादरा शूल तालमें) कबित्त घनाक्षरी॥ मग

१-पीन। २-उतंग। अर्थ॥ पुष्टऊंचे। ३-कुचनवाली॥

चौपाई ॥ ब्रह्मभोज्ययुति जपंडजिमायउ । इष्टमित्रकुल नृपतिसजायउ ॥ प्रतिजन मोद गोद मनु आने । श्रीप्रभुकमलचरण रतिसाने ॥ बेणुमृदंगभेरि सहनाई । धूमधमार समेतबधाई ॥ तूरतँबूर छिड़तशुभताने । गे जनवास सुता समध्याने ॥ देवांगना मनोहर बानी । नृत्यहिं गायसुयश दरपानी ॥ छज्जनछतन छबीली बामा । सजनसमधि छबिलखहिं ललामा ॥ छूटहिं आतशबाजि अनन्ता । होयप्रफुल्लधन अत्यन्ता ॥ श्रीबसुदेव शरण युति चोपा । सबमिल जायशीश पदतोपा ॥ पाणिजोरि असि वचन[illegible] । जीमनहित जन बुलिबे आवा ॥ सेवक स्वामि सनाथ करीजे । हितयुति मानि निमंत्रण लीजे ॥ दोहा ॥ पाधाप्रोहित विज्ञ बुध, बिरचिसबिनतिपुनीत ॥ प्रेमप्रीति पूरितहिये, हावभावशुचिरीति ॥ अथवरपक्षे बिनती ॥ (रागिनी जौनपुरीटोड़ीत्रयतालमें) ॥ सवैया ॥ वरतात वधू धन दै प्रमुदो पदपूज बरातिन तुष्टकियो । दय मान्यन मान धनै मगन्यो जन पामर स्वादिक भच्छदियो ॥ त्रिय हावरु भाव कटाच्छणते नवज्ञानन मोदित कीन्ह हियो । निज दै तनया नँदके ललनै यशुभूपति त्रैपुर माहिंलियो ॥ १ ॥ अथकन्यापक्षेविनती ॥ (रागिनी बाघेश्वरी टोड़ीरूपकतालमें) सवैया ॥ गृहिणीकमला गउकामदधेनरु कल्पतरूतरु है तुम्हरा । अणिमादिक सिद्धिहि चेरि सदा मुनियों हदि ना दरशौ अपरा ॥ यदुनाथ ममै गृह आनि दया कर

१-जो बरतियों के कुँवर दुलहा के साथ जीमन को आउते हैं । २-रक्खा ॥

उपबनेश कर सुमन बहु, मँगये भीष्मक नेति ॥ १ ॥ (रागिनी मल्लारी तिवरा तालमें) हरि गीतिका छन्द ॥ गहिं गहे गुढ़र गुलाब गेंदा गुलाबाँस दुपहिरिया । गुलदावदी गुलछबो गुल खैरा प्रसून हज़ारिया ॥ बेला चमेली केतकी दौना मरुआ मोगरा । मोतिया मालति जुही कुसुम कदम्ब कुन्ती केवरा ॥ कचनार चम्पा चांदनी वर विष्णुकान्ता सितासित । करणा कनेर पदम निवारी हरशृंगार बसन्ति कित ॥ बहुपुरित टोकनि भाल भबइन झोरियन झोंका भुके । बर महिर मांहिर-महंक महकैं भौन भूषित बुकबुके ॥ सरसाहिं शोभा शुठि सुरेन्द्रहु सदन मन शतगुणि घणी । प्रिय पुहुप प्रभा पुनीत पोशाकनु पुरित जगमग मणी ॥ कोउ चँवर चौरी चारु मुर्छल असा वल्लभ लिय सुहैं । चहुँ अर्क अतर गुलाब बौछैं निरखि सुरनर मुनि मुहैं ॥ [illegible] उभय कुल जन तुरत उत्थापहीं । हित चाव भावन ललन ललनी शीश पुहुप [illegible] वारहीं ॥ जयजयति ध्वनि महि ब्योमि भरित्यहि छबि छटा सुख को कहे । सुर मुनि मनुज निज जन्म भाग्यन सुफल सर्वहि कररहे ॥ इति श्री पुष्प प्रवारण प्रथा समाप्ता ॥ दोहा ॥ फुल्लनँमुल्लन वर कुमरि, गाजे बाजे साथ ॥ सज्जन सजन निवासगे, वारत वित्त अगाथ ॥ १ ॥ इति श्रीरुक्मिणीपाणिग्रहणेशुकपरीक्षितसंवादेमंडपातकंकणपुष्पप्रवारणादिवर्णनो नामपञ्चत्रिंशत्तमः सर्गः ॥ ३५ ॥

१-माली । २-पुते पुताये सजेसजाये भकाभक । ३ आज्ञा हुकम । ४-चढ़ावतेभये । ५-फूलचढ़ायेहुये ॥

महिष वृषभ गो नेती। अजा भेंड़ि पय प्रदा समेती ॥ दासी दास्य युथप नहिं थोरे। वित्त बाह्य धनरत्न प्रेजोरे ॥ नकसिखिया आभरण अमोली। भा भवकैं जिन पाहिं अरोली ॥ तेवर बेवर विविध विधानिक। तीयल पीयल अन अनुमानिक॥जोट जनाने बहु मरदाने।समधि नेगियन हित बहु बाने॥ जे ज्यहि योगे जातिबराती। त्यहि तादश्य बस्तु वर जाती ॥ दोहा॥ सहरुचि सहरति सहितहित, विधयुति संयुति क्षेम ॥ सुख सम्पन्य उमंगवत, संग रंग मयप्रेम ॥ १ ॥ भीष्मक [illegible] जोइ अस, सर्ब्ब समग्रि अगन्य ॥ भूतो नाहिं भवष्यति, धन्यकोटिशः धन्य॥ २ ॥ चौपाई॥ [illegible] श्याम सबाम स्थापा। युगल प्रभा लखि बिस्मृत आपा ॥ ससुर बरतिया सजन सुहाये। पुष्प प्रवारण हित अतुराये ॥ नृप नेही गेही परिवारी। इष्टमित्र उमैये नर नारी॥ त्रिंशत त्रय कोटिक सुर यूथा। राग कोटि गुंचास बिरूथा ॥ गुणि गन्धर्ब ढाढ़िया चारण। वेद उपवेद तीर्थ अघहारण॥ राजे महराजे सरताजे। आनिविराजे सर्बसमाजे॥ द्विज दैवज्ञ ब्रह्मशिव सोई। पुजये प्रथम इष्ट सुर जोई॥ धान बुदतभे लोग लुगाई। बजैं नगार सघूम बधाई॥ बनरी बिलखि जननि पितुयादै। बन्धुसहेलिन युति मर्य्यादै ॥ हरिक हृदाम्बुज भरि भरि आवे। नैनन प्रेम नीर भर छावे॥ दोहा॥ बसुदेवरु बलदेवजू, कुँवर कुमारीहेत ॥

१-बाहिर। २-इकट्ठेकिये। ३-छट्टा, चुनिन्दा ४-लिमिटपरे। ५-उंचास। ४९।

बाना ॥ दोहरा ॥ सफरिक सरफा रेविड़िक जामुन रँडखरबूज। चणिक खरबूजा सेम आलुकी, शकरकंदि तरबूज ॥ धिया सियफल बन्डा घ्युक्वार ॥ सलोनी वस्तुन पारवारा ॥ ८॥ लभेरिक ललित शुष्य सहभूर। गाजरिक राईका मशहूर ॥ मसाले मेल अमित भरपूर। विविधविधि चूरण केरी चूर ॥ दोहरा ॥ लौंग इलाची जायफल जावित्री कस्तूरि। चूना कत्थ तमाखू छाली बीड़ी वर्कप्रपूरि ॥ सुगन्धित अतरेत्यादि अपार ॥ सलोनी वस्तु न पारावार ॥ ९ ॥ केवड़ा खसगुलाबढाले। तरङ्गे लेयँ जल निराले ॥ घूँट जो एकहु मुखडाले। रोग आलस अजीर्णटाले॥ दोहरा ॥ दूल्हा श्री नँदललन सों समधि देवकी राय। वृन्द बरतिया करहिं सरहना हिय आनन्द सुजाय ॥ सफल ज्योनार हो सजन तुम्हार॥ सलोनी वस्तु न पारावार॥ १०॥ (रागशारंग में) द्वितीय ज्यवनार पद॥ धनि सजन समधी सार सजी जिवनार भली। (अन्तरा) क्या बालूसाही बढ़िया। डाला घृत मोइन [illegible] ॥ मुखमेलत वेगि बिलाय। सुधावट सुगँध भली ॥ १ ॥ बरफी केशरिया पीली। मनु [illegible] सुवाद लसीली। पिस्तई हरित हिय करें॥ गरी घिय घृतमसली ॥ २॥ बादामी द्रावनवाली। अरुदानेदार निराली ॥ घुटमा चिरोंजिकी न्यारि। चासनी कंद ढली ॥ ३ ॥ किस्मिसी मूंग की बरफी। प्रति बरफी मोल अशर्फी ॥ जिन्ह देखत हिया अघाय। क्षुधा भट जाय चली ॥ ४॥ गुल गुली गुलाब जामुनियां। निखरीं नवनीत अम-

नियां ॥ नितखाय अघाय न जिया । जिनका होजा अमली ॥ ५ ॥ क्या ताजेताजे खाजे । जिनपै रँगरूप बिराजे ॥ उनपेखत प्रेमपुराय । क्षुधापोषक प्रबली ॥ ६ ॥ येखजला खुरमा खासा । खरपुरी सजूर बतासा ॥ फेनी बताशफेनियां । एकसे यक उजली ॥ ७ ॥ दूधिया दुधीले स्वादन । घृतदूने दै मरयादन ॥ साँकल साँकलि परसाय ॥ सजीं सिजला सिजली ॥ ८ ॥ अंमृती अमिरती आला । बरबनाव साँचे दाला ॥ बहु भाँतिक धरीं सजाय । बड़ी छोटी मछली ॥ ९ ॥ पेठा रसमेटा परिया । घियकुम्हड़ाकेर सुघरिया ॥ नव नम्र नम्र बरभाँति । निकाई नहिं नकली ॥ १० ॥ दधि बूरादोनन दीपै । मालपुवा पुवा रसनीपै ॥ नहिं कहत बनै जिवनार । समग्री बहु सनली ॥ ११ ॥ पट्टी पेड़ा लौजादी । मृदु मधु सुपाग संवादी ॥ मेवा बाटी खैसनी । सूतशीतिक अगली ॥ १२ ॥ गरीमिगी चिरौंजी घुइयां । अस अमित पाग भर नुइयां ॥ नवठौर अनेक रचाय । नवल जिनकी पटली ॥ १३ ॥ चिरजिय दोउ बनरा बनरी । धनि धनि यह ब्याहिकसघरी ॥ नँदललन कृपाते उभय । सजन की आशफली ॥ १४ ॥ अथ पतरी बंधन सीठनी (रागिनी सोरठ रूपक तालमें) हरिगीतिका छन्द ॥ बांधूं सजन तोरी पातरी बांधूं सो दोने नाल । बांधूं कचौरी पूरियां तरकारी सोंठसुहाल ॥ बांधूं जो पेड़े पापरा बरफी बदामी सेव । बांधूं जो मैदा बेशनीमोदक जलेबी घेव ॥ बूँदी जो बांधूं ढुर ढुरी मिसरी मलाई चारु । रस डोबियां बांधूं इमरती अमृत स्वाद

सुहारु ॥ बांधूं जो ताजे ताजे खाजे खुरमे खेस खजूर । खस खसी नांनखताइयां फेनियां मोतीचूर ॥ बांधूं जो बालूसाही खस्ता मा[1]लपुआ पुनीत । गुप चुप सँदेस गुलाब जामुन कपुरकन्द समीत ॥ बांधूं जो मोहन भोग पेठा भुरभुरी पपरीहु । हलुवा सुहन गोझा अँदरसा सकरपाल टिकीहु ॥ बांधूं तिकोने सेम मठरी दालमोठ समेल । लौजात लौंज कलौंजि मावा सुठि बसौंधी सेल ॥ बांधूं सकल मिष्ठानियां निमकीन सामा जौन । चटनी अचार विचारवत दधि दूध सिखरन तौन ॥ बांधूं मुरब्बे फल फलैरी भिन्न भिन्न विशाल । बांधूं रुचिहु समधी बराती नँदललन गोपाल ॥ इति पतरीबंधन सीठनी षट्विंशतिकलिका गीतिकाछन्दः समाप्तः ॥ अथ सीठनी दोहरा ॥ जैसे साजन तुम मिले बसुदेवजी ऐसे मिलैं सबकोय । दूजा साजन तब करूं जब तुम्हरी बराबरी साजन जी होय ॥ १ ॥ साजन मेरा जौंहरी के वारी वे परखै हीरालाल । तैं परखै मेरी चुन्नियां वारी मैं परखूँ तेरालालाजी लाल ॥ २ ॥ साजन फूल गुलाबका बलदेवजी धूप धरे कुम्हिलाय । जो मैं होती बादली तो लेती सूधैं साजन जी छिपाय ॥ ३ ॥ साजन का घर दूर है बरतिओ जैसे लम्बी खजूर । चढूँ तो चाखूं प्रेमरस वारी गिरूँ तौ चकना लालाजी चूर ॥ ४ ॥ (अथ रागशारंग धुनि ढपाली धमार में) सीठनी ॥ मनमोहन लाल गुपाल हरे मधुसूदन ॥

[1] -माना ॥

(अंतरा) चारनको चतुरा तैं जायो चित चोरन चोरन दधिरे मधुसूदन ॥ १॥ नंदनँदन तोहि कहूँ सांवरे धौं यशुदा सुत सोहनरे मधुसूदन॥ २॥ देवकी ललन कहुं तुहि कैधौं वासुदेवको लालन रे मधुसूदन ॥३॥ कै दोउअन तुहि हिल मिल जायो भेद न पायो वेदनरे मधुसूदन॥ ४॥ अथ गारी रागसारंग॥ बनवारी तेरो भेद न पायो लला गिरिवरधारीरे (अन्तरा) तुहि वसुदेवदेवकी जायो धौं नँदयशुमति महतारी रे गिरिवरधारीरे ॥ १ ॥ गोरेनंद यशोदा गोरी तैं कारो काहे को बिहारी रे गिरिवरधारीरे ॥ २॥ दूं वसुदेव देवकी समिता उनहूं की नहिं अनुहारी रे गिरिवरधारीरे ॥ ३ ॥ बलदेवहु तनगोर बरण तोरी इनहुंते सूरत न्यारीरे गिरिवरधारीरे ॥ ४ ॥ सदा प्रपंच रह्यो तोरे कुलमें तेरो न दोष मुरारी रे गिरिवरधारीरे ॥ ५ ॥ बहिन तुम्हारी सुनी सुभद्रा अर्जुन संग पधारीरे गिरिवरधारीरे ॥६॥ कुन्तीबुआ तुम्हारी ज्यहिने जन्मे ललन कुँवारीरे गिरिवरधारीरे ॥ ७ ॥ (अथ रागिनी कहरवा त्रयताल में) गारी ॥ म्हारे जी का अँदेशा कैसे जायगा। हांरे कैसे जायगा प्यारे कैसे जायगा (अन्तरा) गोरे बलदाऊ तुमकारे यह को हाल बतारे। अँदेशाकैसे जायगा ॥ १ ॥ कह दोऊ इन साझे जायो नँद वसुदेव बबारे। अँदेशा कैसे जायगा॥ २॥ तैंतो ललन पितु मात भ्रात इन तीनौं की ना अनुहारे। अँदेशा कैसे जायगा ॥ ३ ॥ सीठनी रागसारंग ॥ तोरेकुल की है रीति यही मोहन जिय जान सहीरे (अन्तरा) बहिन तोरी अर्जुन

सँगभागी कौंरिहि बुआ जई। मोहन जिय जान सहीरे ॥ १ ॥ भाभी तोरी ललन द्रौपदी पंच पतिन संग्रही। मोहन जिय जान सहीरे ॥ २ ॥ दोहा ॥ यह बिधि नारी गावतीं, गारी न्यारी न्यारि ॥ लाज लाज मुसकैं हरी, युवतिनु प्रेम निहारि ॥ १॥ [देवाङ्गना ऊचुः] (रागिनी मांझ बरुआ दादरामें) बनरीपद ॥ नाजो नवेली अलबेली चिकनियां ॥ (अन्तरा) पोतरों की सुखिया सदा सुख की मुखिया। धनियां वो नाजुक बदनियां ॥ १ ॥ रंगरस की रसिया वो हसमुख बिलखिया। बतसियासे मीठी वचनियां ॥ २ ॥ चन्दासे गोरी भोरी रूपबोरी। नाजुक करहैयां कमनियां ॥ ३ ॥ दामिनि सी दमकैं सुरँग सुवरन सी। पहिरे सो पीत झुलनियां॥४॥ नैनानुकीले रँगीले रसीले से। चित चोरन चितवनियां ॥ ५ ॥ यशुदा ललन बन्ने की बनरी प्यारी। भीष्मक नृपति की ललनियां॥ ६ ॥ पद जोड़ेका ॥ बांकी दुलहैया दुलहैया का बनरा। (अन्तरा) गोरी गोरी बनरी का बनरा सलोना। मनमोहना गुण अगरा॥ १ ॥ नाजो नवेली अलबेली सुहेली। सुहेला बने का तन सगरा ॥ २ ॥ चन्दा जुन्हैया सूरज की किरनियां। दम्पतिका रूप उजगरा ॥ ३ ॥ ध्यौ की ललन भीष्मककी ललनियां दोनों का यश जग बगरा ॥ ४ ॥ (दूसरी ध्वनि रागिनी बरुआ दादरामें)पद॥ बनेका बागापटुका लाल जरीदा चीरा रंगीला। (अन्तरा) बनेका तंबा सुहालाल। जोड़ा रतनौं जड़ीला॥ १ ॥ बनेके

गल हीरोंदाहार। सेहरा मुतियों गुँथीला ॥ २ ॥ बने के मेंहदी हाथों लाल। कँगनवां बांधे दुतीला ॥ ३ ॥ बनेकी घोड़ी सूही लाल। जड़ाऊ ज़ीन वसीला ॥ ४ ॥ बने के मुखमें बीड़ी लाल। अँग अँग अतरों से सरसीला ॥ ५ ॥ बनेकी छबिपै बलिहारी। नँदललन छैल छबीला ॥ ६ ॥ (राग सोहिल सारंग में पतरी छोरन सीठनी हरिगीतिका छन्द) जलपात्र लै मुनि गर्ग प्रोहित पातरी छोरत भये। कुल बिरद बरणत वन्दिजन भीष्मक भुवन आनँद छये॥ बरषैं सुमन हरषैं सुमन बहु विधि बधावे बाजहीं। दुन्दुभी गगन नगार नौबत माधुरी धुनि गाजहीं ॥ खोलूं खजूले खुरमे खाजे ताजे ताजे घेवरा। बाँधूं प्रभा भीष्मक नृपति सुकमार तन के जेवरा ॥ खोलीं कचौरी पूरी पापर साग भाजी रायते। बाँधे सुलहिगा कंचुकी डुपटानु चीरा चायते ॥ खोली अमरती बरफियाँ बूँदियां मोहनभोग जो। बाँधे सुअँग अँग समधि के नखशिख सकलही योग जो ॥ खोले जो लड्डू पेड़े पेठा पापरी सामा मधू। बाँधूं बरातिन नृप सँगातिन पटनतीली नव बधू ॥ खोले तिकोने वस्तु निमकीली दधीली जो रही। खोला बँधा जल साजना जिमिये ललन जिय सुख लही ॥ १ ॥ दोहा ॥ बिबुध राग गन्धर्व त्रिय, सुनई पातर खोल ॥ जीमत भे सुख सहित सब, सजन बराती गोल ॥ १ ॥ सोरठा ॥ निरखि नृपन छबि बाल, नूर सहूर प्रपूर भल॥ह्वै मन मनै निहाल, गावैं सीठनि रसभरी॥१॥ (अथ रागिनी शारंग त्रयताल में) गारी॥

धनि धनि रुक्मिणि तेरो भाग जो पायो वर कृष्ण हरी। युग युग जिओ दोउ सुखसिन्धु मिलइ विधि जोरि खरी (अन्तरा) धनि भीष्मक धनि प्रभा पुनीता जिन्ह जाई धी सुन्दरी। जो पायो वर कृष्ण हरी ॥ १ ॥ धनि दिन आज लग्न तिथि सायत धनि यह सुवरण घरी। जो पायो वर कृष्ण हरी ॥ २ ॥ धनि हम भाग्य ललन ललनिहु दै दरश सनाथ करी। जो पायो वर कृष्ण हरी ॥३॥ गारी ॥ दोहरा॥हम पंछी तुम कमल दल बरतिओ सदाही रहो भरपूर॥दाया तुम्हारी चाहिये वारी क्या नेरे क्या साजनजी दूर ॥ १ ॥ हाथ जोड़ बिनती करूं बलदेवजी सुनिये श्री ब्रजराज ॥ अपनी करके जानिये वारी बाँह गहेकी साजनजी लाज ॥ २ ॥ साँवलबरण सुहावना श्रीकृष्ण दाऊ मुखमें नागर पान ॥ मेरे आँगन यों दिपै वारी ज्यों अकाशमें चन्दा अरु भान ॥ ३ ॥ दोनों भाई शिरोमणी मैं वारी वे सब जग के प्रतिपाल ॥ दाऊजी श्रीकृष्णचँद वारी यक हीरा यक लालाजी लाल ॥ ४ ॥ (अथ समधैं रागिनी शारंग में) सीठनी॥ समधिन अलबेली नारि नवेली रंगभरी ॥ (अन्तरा) तेरी अँखियां आमकी फँकियां सैन कटरिया। मनु भौं नागिनियां चाखैं अमिरस शशि थलरी ॥ १ ॥ तेरी अलकैं अतर लपेटी पटियां प्यारी। मुख चन्द उढनियां नीलवरण मनु छइ बदरी ॥ २ ॥ बिंदिया माथेपर श्याम अरुण रँगवारी। जनु काम बाम युत दिपै साज नव फव छबिरी ॥ ३ ॥ दोउ गाल तेरे मोइनी कचोरी मानो। ओठ

मिसिया की धड़ी दन्त मनु हीरलरी ॥ ४ ॥ क्या मधुर तेरी मुसक्यान प्राण सुख पोषक। मृदु वचन मोहिनी वशीकरन आकरषनरी ॥ ५ ॥ चित चोरनि चिबुक सलोनी सुन्दरताई। जुबनन पर वरषत नूर अजब अँगिया सिदरी ॥ ६ ॥ गल पीक लीक दरशनीहार नौलखिया। गोरी बहियाँ कँगनी कँगन हरे मनुवां मुँदरी ॥ ७ ॥ तोरी पतली कमर बलखाय लचक मन लेती। जंघा मखमलिया उदर झनक नूपुर पगरी ॥ ८ ॥ समधिन तेरा नखरा नया निराला जोबन। करदे सो बरतियन दान करै तेरा भला हरी ॥ ९ ॥ तेरा दिया दान नहीं निष्फल जाने वाला। जा गोद खिलैहो ललन पुरै मन्शा हमरी ॥ १० ॥ सीठनी जोड़ेकी॥समधिन तेरा जुबना क्या है जदुवाडारे॥ (अन्तरा) तेरे नैन नुकीले तिरछी चितवन बरछी। भौं पलकैं बान कमान निशाना मारे ॥ १ ॥ तेरी जुल्फैं क्या कजराली घूंघरवाली। शशिमुखपै मनु घनघटा छटा नइ धारे ॥ २ ॥ कुंडलित सितारन बेंदी भाल चमंकै। मनु उदय भानु भा आनि थान शशितारे ॥ ३ ॥ कजरा करे डारे काट करिजवाकेरा। गालों गुलाब से आब अधिक अधिकारे॥ ४ ॥ दाड़िम दाने धौं दशन हँसन मनमुहनी। रसबतियन अमि झर झरै अधर अरुनारे॥ ५ ॥ तेरी नाक सुवासी समधिन नथ बेसरिया। चोपैंचित चोपैं जोपैं कोऊ निहारे ॥ ६ ॥ ठोंड़ी का गुदना गुद गुदाये मन मेरा। तेरा गला सुराहीदार गहन रतनारे ॥ ७ ॥ दोउ मदन नगाड़े

उलट धरे धौं फलदो। दाडिम नरङ्गिधौं जुबना गोल गुलारे॥ ८ ॥ अँगिया जरकसिया जुलुम सजावट करती। भुज कमलनाल पर जोशन जोबनवारे ॥ ९ ॥ हथफूल कड़े कंगन पहुँची हाथों में। अँगुली चम्पक की कली कमल कर प्यारे ॥ १० ॥ गोरी गोरी बहियन में चुरियां हरी हरी दीपैं। मुँदरी का नगीना मन आरसी छलारे ॥ ११ ॥ तेरा उदर मुलायम मखमल माखन सेती। तोंदी लघु त्रिबली मनु अमिकुण्ड किनारे ॥ १२ ॥ चीतेसी कमर करधनी नितम्बन ऊपर। रम्भासी जंघा शिर सारी सब्ज विहारे ॥ १३ ॥ परियाँ पिंडुली पैरनकी प्यारी प्यारी। पग नूपुर तेरे मनु बाजें मदन नगारे ॥ १४ ॥ पायन अँगुरी करपूर जोतिसी दीपैं। नख मोती जोती दिपैं महावर पारे ॥ १५ ॥ नँदललन कृपाते समधिन युग युग जीवौ। बहु ललन खिलावो गोद मोद उपचारे ॥ १६ ॥ चौपाई ॥ उभय ओरिहों अनँद बधावे। निरखि निरखि छबिसुर सुख पावे॥ नेगि पझारु भाट भटु जागा। जीमैं सरस हरषि अनुरागा॥ जीमत महिप अखिल सुख लहते। भीष्मक की बढ़हार सरहते॥ नृप करजोरे विनय सुनावै। स्वयं सुभाग्य प्रताप जनावै॥ तारिदियो ममकुल ब्रजराजा। सुफल कीन्ह मन मम रुचि काजा ॥ रुक्मिणि कर तुम दर्शन पाये। हम से अधम आप अपनाये ॥ धनि ममधी समधी बड़ भागिन। जो भइ कृष्ण चरण अनुरागिन ॥ धनि तुम नाथ अनाथै साथा। कै नाता सेवकहि सनाथा॥

अनुवत अनुदिन अनुचर पाँई । रखिये कृपादृष्टि नित साँई ॥ बसुदेवादि प्रमुद हियहोते । प्रभा वंशिया उर सुख बोते ॥ दोहा ॥ निस्पृह द्विज दैवज्ञ सुर, युग्म पाणिके उच्च ॥ जयति जयति जय जय बिमल, बिरचैं मनुज समुच्च ॥ १ ॥ [सर्वा ऊचुः] हरिगीतिका छन्द ॥ जय नरवरेश्वर धर्म्म वत्सल जितेन्द्रिय श्रीपति हरे । नर शार्दूल विरुद्ध हारी जन अभिप्रायज्ञरे ॥ व्रतधारि सत्य प्रतिज्ञ श्रीधर्मानुवर्ती सांवरे । जन लोक शोक विमोचने जै नँदललन गुणसागरे ॥ १ ॥ सीठनी बीड़ीदापद॥ बन्ना बीड़ी माँगे न्यारी। नागर मघइ महोबा छेया और दिशौरी बँगलावारी॥ (अन्तरा) चूना चांगल जिसमें कैसा । दूध मलाई खोया जैसा ॥ दधि घीसा होवे टकसारी ॥ १ ॥ कत्था अलबत्ता कलकत्ता केरा । केवड़ा सुगँध बसेरा ॥ गेरा गुलाब रसमलियारी ॥ २ ॥ छालीवार सिवारसे पातर । होवे कतरी चिकनी सुन्दर ॥ भिगईं दुध गुलाब सु पियारी ॥ ३ ॥ इलायची कस्तूरी पूरी । अगर तगर कर्पूर कचूरी ॥ शीतलचीनी लवंग धारी ॥ ४ ॥ जातीफल गुंजा की पाती । सत पोदिना तमाल सुहाती ॥ केशर जावित्री पुटडारी ॥ ५ ॥ सोने चांदी वरक लसेती । मूंगा मोती भस्म वसेती ॥ बनरा नँदललन रसियारी ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ सबन जिमय वर विधि अदरावा । कंचन थारन बिच अँचवावा॥ बीड़ी सुबरण पनाँ लसीली। मंजु मसालन मिलति र-

१ एकसी २ हररोज़ प्रतिदिन ३ दास ४ पर ५ लालसा रहित ६ सर्व्वे ७ वरक ॥

सीली ॥ अंजुरिन निकुटि समर्पि गिलौरी । अतरनकै तरवतर बहोरी ॥ घुरै घोर बहु रंग रँगी-ले । सुठि सहाबि केशरिया पीले ॥ रहसि रहसि रँग छिरकई कीन्ही । रतन नेग निछावर दीन्ही ॥ अबिर गुलाल अतर कर्पूरी । चहल महल माँची भरपूरी ॥ ससुख सबिधि भा समध मिलापा । उभय ओरि अति आनँद व्यापा ॥ निखिल नेगियन दाहिज नेती । पटधन दीन्ह अमित हित सेती॥ निस्वै निधनि कै दीन्ह धनीशा । तुष्ट पुष्ट सह प्रमुद महीशा ॥ कै निस्तोक सर्व ब्यवहारा । बर बराति जनवास पधारा ॥ दोहा ॥ नात नतेलिन नेगियन भूर्सि बधाई बाँट । प्रोहित पाधा पंडितन, तोषे अतिथिनिआर्ट ॥ इति श्रीरुक्मिणीपाणिग्रहणे शुकदेवपरीक्षित संवादे भोज्यभोजकादिरंगसिक्तसमधीमिलापप्रभृति वर्णनो नाम षट्त्रिंशत्तमः सर्गः ॥ ३६ ॥

सोरठा ॥ भिन्सारे बलराम, मँगी बिदाई भूप प्रति ॥ सामा नृप वहि याम, संग्रहि दुहिता बिदा हित ॥ १ ॥ चौपाई ॥ रुक्मिणि भ्रात मात पितु पेखी । समुझ बिछोह सखिन ढिग देखी ॥ रोदत भइ भरि लोचन बारी । जननि जनक नर नारि दुखारी ॥ सगरि सहेलि सुता उर लावें । निज निज हृदयन हित जतरावें ॥ नारि निकर कहें भई हम हेटी । गवनित हा अरु शीघ्रहि बेटी ॥ भरि भरि राज कुमरि कहँ कौरी । प्रभा प्रभेशहि करहिं चिरौरी ॥ अबहिं सुता श्रीकृष्ण

१ छोटी इलायची २ दरिद्री ३ चुकौता निपटारा ४ आनंदपूर्वक ५ भाग्यहीन ६ भीष्मक ॥

मुरारी। नृपन पठइये दिन दुइ चारी॥ नृपबहु भाँतिन भनेउ न थोरा। एक ना मानिस समधि निहोरा॥ रुक्मिणिगमन गरुअ दुख देई। यहि बिधि भनहि वाम बेई बेई[1]॥ बुधनु रजायसु पाय भुआला। सचित सहित सधीर्य्य नरपाला॥ कै केशर रोरी को टीको। बिदा करतभे बना बनी को॥ दोहा॥ परिजन पुरजन परिकरा, निज२ भरित उछाह भोरि जोरि जुहि जुहि सुछबि, बलि बलि हों नरनाह॥१॥ (अथ रागिनी खम्माची झंझौटी त्रयताल में) द्विरागमनिकगायन पद॥ धी पहुँचावन चलीं मातु पितु, भ्रात नगर की भामनियां (अन्तरा) छिन मुख चूम वदन उरलावें। नैनन प्रेम नीर बगरावें॥ करमलि मलि पछितात तात। कहि कहि प्रिया मोरी रुक्मिनियां॥ १॥ जन्म जन्म हौं पालन कीन्हीं। कबहुँ न दृगन ओट तुहि दीन्ही॥ हाय दैव धी जन्म कठिन भइ। जात पराई सुख मनियां॥ २॥ दम्पति चरण गहे गिरिधरके। विनय सुनाय कही दृग भरिके॥ देत सुता दासी सेवा हित। ललन राखियो यहि सनियां॥ ३॥ दोहा॥ भइ रोदत रोदत मलिन, न्यार होत पितु जान॥ जिमि कुम्हिलावत छिनक मा, वारिज वारिबिहान॥ १॥ (अथ सखिन प्रति श्रीरुक्मिणी विनय रागिनी खम्माच त्रयताल में) पद॥ गवन मोरा सजनी पिया के घर आज (अन्तरा) छूटत सुख नैहर

१। अलग अलग॥

सहेलिन समाज। लिवाये जात डुलिया बलम साज बाज॥ १॥ अरज तुम सैय्याँ मोरे औगुन निवाज। सुफल होवे सजन सुहाग भाग राज॥ २॥ मनाय कुल देव सकल सरताज। ललन पिया मोरा चिरजीवो महराज॥ ३॥ [सख्य ऊचुः] (रागिनी भूपाली त्रयताल में) आशीर्वादात्मक सवैया॥ शील स्वभावहि ते रससैं शुठि हास बिलास प्रवाह सदा। शान्ति स्वरूप अनूप महा मृदु बैन सुऐन प्रमोद ददा॥ कीर्तिवती परिपूर्ण रहो निधि नीत सनेहि प्रवीण तदा। होललनै वति जागो जिओ जबलों शशि भानु मही सुखदा॥१॥ [इतरोवाच] तथा सवैया॥ धनि धन्य हितू अवतंश रहो ललनेश सहाय अधीनन की। धनि देश बिदर्भ अहो अवनी तुमसी जहँ धीय प्रवीनन की॥ जबते प्रकटी गृह भूप महीं बरसी सुख बूँद नवीनन की। अब हास बिलास पयोध छुटै सबका गति हो हम मीनन की॥ २॥ [अन्योवाच] सवैया॥ दैव तुम्हैं नितराज बरैं सुख राज करैं गिरिराज तुम्हैं। संतति ते घर बार भरैं सिरताज करैं व्रजराज तुम्हैं॥ श्री यशुदाललनै सन नेह रखै नित नाथ सलाज तुम्हैं। हास बिलास सदा बिलसैं नर देहिं सहेलि समाज तुम्हैं॥ ३॥ [अथ श्री कृष्ण प्रति सखि वचनम्] विनयात्मक सवैया॥ मस्तक नाय करूं बिनती महराज हमैं न भुलैयो कभी। लै अपनेकर पाणि ममै प्रभु ना कपटै मन लैयो कभी॥ मोह धरे रहियो हम ओरहि नेह न नैक हटैयो कभी। हैं तुम्हरी नँदके-

ललनै शरणागत को न भुलैयो कभी ॥ ४ ॥ [अन्योवाच] सवैया ॥ तुमतो न क्यहू असके बशके रसके चसके हित जोरतु हौ । रस रूप पदार्थ लखौ जितहीं बिन जूठ किये नहिं छोरत हौ ॥ लय स्वाद न बाद करौ ललनै यक संगहि प्रीतहि तोरत हौ । निज स्वारथ कै दगहू भरिकै नहिं हेरत यों मुख मोरत हौ ॥ ५ ॥ [अपरोवाच] सवैया ॥ दय मान स्वधा रसको चसको पुनि प्रीति पुरै विष घोरत हौ । रचि रंग अनेक ठगौ न अँगौ लय औरन जीय बटोरत हौ ॥ झक झोर बिराह में बोरत हौ ललनै यह को यश रोरत हौ । घर आन के आन लला तुमतौ मुख मोरत ना चित चोरत हौ ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ अथ सबहिन पुनि रुक्मिणि भेंटी । जासन दुखित न पगतर चेंटी ॥ भीष्मक बलदाऊ ढिग धाये । हस्त जोर मृदु बचन सुनाये ॥ दीन्ही गृह मार्जन हित दासी । रखियो दयाभाव यहि पासी ॥ तुम ममधन जीवन दोउ भैया । बड़ भागिन ममधी अधिकैया ॥ जो तुम्हरी शरणागत जाती । तर गइँ हम कोटिन कुल पाती ॥ पुनि नृप प्रभा श्याम तट आयउ । बना बनी के तिलक लगायउ ॥ अर्पि रतन धन वित्त समाना । भाक्ति युक्त रिझयउ भगवाना ॥ कुल कामिनि भरि प्रेम उछाहा । दिये बसन भूषण बिन थाहा ॥ तन मन सुरत रहित रँगराते । बना बनी रस रूपन माते ॥ लेहिं अलाय बलायन गोरी । कोउ बेंगैं उबार तृण तोरी ॥ देहि अशीश अघाय न कोऊ । प्रभु रस भे अशक्त शिशु जोऊ ॥ दोहा ॥

कोइ चाँदी कोइ हेमके, भाजन मणिन जड़ाय ॥ जो ज्यहि योग्य निवेदहीं, दाइज दिव्य सजाय ॥ १ ॥ चौपाई ॥ बिदा भयउ रुक्मिणि यदुराई । रथ चढ़ि चलेउ द्वारिका धाई ॥ गुमकैं नभ निशान दुंदुभियाँ । वरषैं सुर सुमनन की झरियाँ ॥ सुहृद बराती सुर मुनि सारे । हरि सँग द्वारा पुरी पधारे ॥ प्रभुरथ अग्र रागिनी रागा । गावहिं हरि यश युत अनुरागा ॥ ढाढ़ी डोम वपुष गंधर्वा । विबुध विबुधवामांगी सर्वा ॥ नृत्तहिं भाव सुभाव जनाई । रिझय रहस मोहन बलिराई ॥ बाद्य बिहद्द बिपुल बर जोरैं । घुँघुरु घंट घरियार घमोरैं ॥ जैजै ध्वनि चहुँ दिशन भराती । महि मग पग पग पाहिं सुहाती ॥ अन्तरगत भे द्यौस त्रियामा । लियो प्रभू निधि तट विश्रामा ॥ सहविधि सबनु अचायउ अशना । संभोगेउ निज निज मद व्यसना ॥ दोहा ॥ प्राति जन रुचि अनुसार बहु, क्रीड़ा करहिं सचैन ॥ हदि धरि कृष्ण पदाम्बुजन, कीन्हिस सुख युत सैन ॥ १ ॥ इति श्रीरुक्मिणीपाणिग्रहणे श्रीशुकदेवपरीक्षितसंवादेश्रीकृष्णोद्वाहमंगलसवधूसिन्धुसमीपागमनवर्णनोनाम सप्तत्रिंशत्तमःसर्गः ॥ ३७ ॥

दोहा ॥ प्रत्यूषे सुस्नान कर, प्रीतम प्रिया जमात ॥ द्वारा कीन्ह पयान प्रभु, निज निज यान सुहात ॥ अथ बाहन नाम बरणन कवित्त ॥ बदक बटेर बगरेल बक बासा बाज बेसरा

१ अमृतवेला-प्रातसमय ॥ फूलित ॥

बायस बहरी सिताब बरकी । बानर बृकोदर बराह ब्याल बाजी बाघ बारणन जात बाट यमके बगर की ॥ खगपति वारिध बधू के बार बीच बूड़े ऐसी गति होन लागि पशु पत्ती नरकी ॥ बाजे चढ़े बर्ध पै बिराजे हूपै बाजे चढ़े बाजे चढ़बैठे पीठ बरटा के बरकी ॥ १ ॥ तथा कवित्त ॥ गरें बाज गुंडे अलबेले हैं तबेलेबीच करतकलोल अलगारन उमंग हैं ॥ नाचत चलत रद्द घुँघुरू दहाना दाबि झञ्झनात झञ्झन बजावत मुर्चंग हैं ॥ राजा महराजा सरताजन सवारी बीच उड़े कुल्ले बाज पौन पत्तिनके संग हैं ॥ जम्मत जकन्नत फफक्कत फुरक्कत छुरक्कत मुरक्कत थिरक्कत तुरङ्ग हैं ॥ २ ॥ चौपाई ॥ गरुड़ध्वज रथ पै पिय प्यारी । जय जय ध्वनि चहुँ दिशा प्रसारी ॥ कुसमित महि ऋतु राज समाना । मनु भू सजत हरियरा बाना ॥ उलहत बन उपवन बेलरियां । तरु बरान शोभित द्रुमडरियां ॥ वापी कूप तड़ागनु बृन्दा । निर्मल जल प्रफुलित अरि बिन्दा ॥ ढिग ढिग सुमन बाटिका भूषित । गुंजे बच चंचरिक अदूषित ॥ पशु पत्तिन शुठि शोभित सैना । रूप अनूप बैन सुख दैना ॥ गावत सुरगंधर्ब बधाये । यह बिधि बिहरत प्रभु पुर आये ॥ अवनि सुदेशिय बाद्य सुबाजैं । देव यन्त्र नभ नूतन गाजैं ॥ शीतल मन्द सुगंधित वायू । प्रहरहि रोग शोक प्रति कायू ॥ भनि सक कौन सुछवि वहि बेरी । सोई जानैं जिन्ह नैनन हेरी ॥ दोहा ॥ प्रभु आगम संदेश सुनि, पुर मंडल बासीय ॥

आगमने प्रमुदित हिये, निखिल निकर कमनीय ॥ १ ॥ (राग बसन्त रूपकताल में) हरिगीतिका छन्द ॥ वसुदेवगृहणी देवकी संयुत सबन आवत भईं । सुत बहू हित युत रथन ते उतराय गृह लावत भईं ॥ लै ललित सज रमणीय बिस्तर कनक सिंहासन पहीं । श्री रुक्मिणी प्रिय श्याम सुन्दर दुहुनपधरायो तहीं ॥ मणि हीर माणिकरत्न जटित पुनीत कंचन कोथरा । बट तूल बाती बोर सद घृत साज आरति को जरा ॥ प्रभु पितु जननि धनि गुगुल मिल लय आरती हरि की करैं । नौबत नगारे बजहिं इत उत दुंदुभी नभते झरैं ॥ सुर सुमन बरषैं निरखि हरषैं दय अशीश सुनावते । बन्दी जनादिक बिरद बरणहिं अनँद मंगल गावते ॥ नरनारि यूथ अपार करहिं बिहार सजित शृँगार ते । टकटके दृग थिर दृष्टि भइ दम्पति सुरूप निहारते ॥ डफ ढोलकी मुहनाल भेरी शंख तूर मृदंग लै । जल नस तरंग रबाब बीणा कोउ बजावत चंगले ॥ हासे तमाशे सुख बिलासे बजहिं तासे ढोलरा । नट नटी नृत्तहिं राग बर्त्तहिं चाव भाव अमोलरा ॥ दंबुल सरंगी तम्बुरा तबला चिकारा इकतरा । कहुं बजहिं बँसुरी बेणु बिगुल मँजीर मुँहचंग परिकरा ॥ कोउ झांझ सुर शृङ्गार मौहर तोरहीधुनि कर रहे । कोउ सुर बहार सितार सीठी छेड़ बाद्यन गह गहे ॥ सुर राग रागिनि किन्नरा गंधर्ब तिन्ह वामा नबै । कहि कहि बधावे जिय रिझावें देवकीललनै सबै ॥ १ ॥ चौपाई ॥ जय जय कार

१ बटकर बनायकर २ रुई ३ ताजा – सच ॥

परी चहुँ ओरा । चिरजीवो प्रिय नन्दकिशोरा ॥ हरषित मात भ्रात बसुदेवू । परछाये समस्त कुलदेवू ॥ कुल कुलरीति कराय सयत्ना । बना बनी पहँ वारहिं रत्ना ॥ नेगि पभारु अतिथि रंकादो । कीन्ह तृप्त दय धन इत्यादो ॥ षटरस भोजन सरस जिमावा । सानँद दिवस समस्त विहावा ॥ निशिमुख आदरशितहि अपारु । आरोगाई विविध बियारु ॥ गृह गृह मँगलाचार बिहारा । नृत्य गान बिन वारापारा ॥ सुख समूह लयलय कर आपन । मनु द्वारा बिच आनिस्थापन ॥ जन मन संतुष्टित इमि मानो । कबहुँ न क्यहु दुख देखि स जानो ॥ पूर्णब्रह्म नर वपुष कन्हाई । सुवये सुख शय्या यदुराई ॥ दोहा ॥ उठि अमृत बोला महीं, राम श्याम सुखधाम ॥ जननि जगायो जाय दोउ, भनि मृदु वाक्य ललाम ॥ १ ॥ (आस्ताई रागिनी आसावरी रूपक तालमें) पद ॥ लाड़िले जागिये तुम जागेहि जग जागे ॥ (अन्तरा) उदयत होन चहत नभ दिनकर प्राचीदिशि के आगे ॥ १ ॥ जीवन के जीवन धन माधव ब्रज जन भाग सुहागे ॥ २ ॥ सम्पन्नित समीर सियराई शशि उडुगण द्युति त्यागे ॥ ३ ॥ यमुन जात मज्जन मानुज मग चलन बटोहिया लागे ॥ ४ ॥ लिय नागरि गोरसकी गागरि भ्रमहिं निकुंजन लागे ॥ ५ ॥ गोगण घेर ग्वाल गण धावत गावत गुर्जर रागे ॥ ६ ॥ कुमुद अमुद मुद अम्बुज आलिगण बिहरत चखत परागे ॥ ७ ॥ कियो सँयोग चकवा चकई ह्व खग मृदु ध्वनि अनुरागे ॥ ८ ॥

सुर नर मुनि योगी जन जंगम तोर ध्यान रसपागे ॥ ९ ॥ मोर ललन युग जिओ सनातन दरश जननि तुव मांगे ॥ १० ॥ [शुक उवाच] सोरठा ॥ जगय बधू सुत माय, उबटन उबट न्हवाय शुचि ॥ भूषण बसन सजाय, पीनस पधरायउ युगल ॥ १ ॥ नगर नारि समुदाय, पूजन सामा सजित शुठि ॥ अर्चन अम्बा माय, कुसुम बगीचै लै चलीं ॥ २ ॥ दोहा ॥ बाद्यन और बधावरन, धूम धमारि समेति ॥ फुल धन रत्न प्रवारहीं, जननि युवति बिधि नेति ॥ १ ॥ (रागिनी बरुआ दादरा में) सेहरेका पद ॥ सेहरा मालिन सुघरसा बनैये ॥ (अन्तरा) हीरा मोती मणियोंकी लड़ियोंके बिच बिच एक पन्ना पिरोजा पुहैये ॥ १ ॥ चुन्नी निलमणियां लहिसुनियां पुखराजोंके एक भुम्पीले भुम्पे लगैये ॥ २ ॥ बेला चमेली निवारी के फुलवन, गुहि गुहि गुंछा गुँथैये ॥ ३ ॥ सोने के तारों के सलमा सितारों के, जाल बेल बूटा रचैये ॥ ४ ॥ मेरे ललन शिर बँधैये तभी मोंसे, मन मानो नेग चुकैये ॥ ५ ॥ (रागिनी खम्माच त्रैताल में) बनरा पद ॥ बन्ना मांगे लिल्ली घोड़ी दुल्दुल घोड़ी की असवारी, अरु दरियाई घोड़ी न्यारी ॥ (अन्तरा) बन्ना मांगे तिरछी बरछी तेग कटारी दो तलवारी, रसिया जुबना केर शिकारी । दिल दरियाई घोड़ी न्यारी ॥ १ ॥ बन्ना माँगे जोड़ा तोड़ा होड़ी होड़ा पट जरतारी, मोती महिलों सेज अटारी । दिल दरियाई घोड़ी न्यारी ॥ २ ॥ बन्ना मांगे बांकी बनरी । सब गुण अगरी रूप उजारी ॥ राजकुमारी सी सुकुमारी ।

दिल दरियाई घोड़ी न्यारी ॥ ३ ॥ बन्ना मांगे सरहज सारी प्यारी ससुरारी की नारी, नँद का ललन छैल बनवारी । दिल दरियाई घोड़ी न्यारी ॥ ४ ॥ (पिया जागे कहीं रात नैना कुसुम्भी रँग ह्वै गये इस धुनिपर रागिनी बरुवा में) बनरा पद ॥ बांकी बांधे तलवार बनरे का नखरा बांका ॥ (अन्तरा) अलकैं मानों नागिनियांकारी, सैन कटारी दुधार । नैनोंका कजरा बांका ॥ १ ॥ सोहै माथे तिलक केशरिया, चीरा सिरपै कलँगीदार । गलमें सोहै दुलरा बांका ॥२॥ नोखी नाक बुलाक अनोखी, चोखी मुखपै बहार । सब गुन में अगरा बांका ॥ ३ ॥ बीड़ी चाबे सुगन्धों लसीली, लाली लालों से अतिरँगदार । चन्दा से उजरा बांका ॥ ४ ॥ मीठी बतियों भरा जादू टुनवा, बरषै फूलोंसी बौछार । हँसन में सो रस मधुरा बांका ॥ ५ ॥ यशुदाका ललन वो लड़ैता, बांकी घोड़ी पै सवार । बांकी बनरी का बनरा बांका ॥ ६ ॥ सख्यऊचुः ॥ (रागिनी सोहनीमें) दादश पद ॥ शुभग घड़ी लग्न मुहूर्त्त योग साधि आंईरे । सबहि सलोनी नारि दुलह दुलहि देखन छांईरे ॥ (अन्तरा) दादुल बाबुल चाव सहितपुर जन पुलकांईरे । इन्द्र दुन्दुभी नगार बाजतीं बधांईरे ॥ १ ॥ विहँसत मुनि मन महेश सुर युथुप सिहांईरे । नंद ललन रुक्मिणि छबि लखिलखि बलि जांईरे ॥ २ ॥ (अथ रागिनी जै जैवन्ती त्रयताल में) प्रभु गुणानुवादिक ॥ पद ॥ जय राधागिरिराज धरनकी ॥ (अन्तरा) सुन्दर श्याम किशोर मनोहर मोर मुकुट कलँगी मणियनकी ॥ १ ॥ संशयशमन

स्वधानिधि मूरत हारत बिपदा जियन मरनकी ॥ २ ॥ रुक्मिणि हरन वरन जनकात्मजा जन रुचि भरन शरन अशरनकी ॥ ३ ॥ दीनद्याल वशभक्त दमोदर बलिहारी प्रिय नंदललनकी ॥ ४ ॥ तथा पद ॥ जय सिय पिय राधिका रमन की ॥ (अन्तरा) षोड़श कला पूर्ण अवतारी मर्य्यादा पुरुषोत्तम तनकी ॥ १ ॥ श्यामल सोहनि मोहनि मूरत सब सूरत अधिप सूरतन की ॥ २ ॥ गौतम नारि उबारन तारन यमलार्जुन जनक्लेश कदन की ॥ ३ ॥ सदन सुदामा शिवरि आदिकन जन मन रंजन भय भंजन की ॥ ४ ॥ रिपु लंकेश कंस आराती दम घोषात्मज दलन मलन की ॥ ५ ॥ अवध ललन ब्रज चन्द कन्द सुख छन्द फन्द दुख द्वन्द दमन की ॥ ६ ॥ तथा पद ॥ बलि बलि गई सियराम श्याम की । सुखद मूर्त्ति प्रद कोटि काम की ॥ (अन्तरा) कलिमल कदन तरण तारण जय कृपा काय सुख गुणन ग्राम की ॥ १ ॥ विश्वामुनि मख जनक सहायक भीष्मक प्रण रुचिदाभिराम की ॥ २ ॥ श्री नँदललन कौशिलानंदन जय जग बन्दन मुक्ति धामकी ॥ ३ ॥ (अथ रागिनी भूपाली झूमरा ताल में) सवैया ॥ देखत रूप अनूप छकैं सुर वाम मुनीश्वर किन्नर बाला । मोहित हों छबि पेखि पथीक ज्यही मग जाय परैं नँदलाला ॥ देहिं अशीश सबै नर नारि चिरंजिव जोरि रहैं तिहुँ काला । श्री ललनौ धन धाम अराम बिलास करैं नव नित्य बिशाला ॥ १ ॥ जाय कुसुमबगीच महीं ललना ललनी सों उमा पुजवाई । तोर प्रसून

पुनीत नवीन छड़ी रचिकै दुइ बाम बनाई ॥ एक दई हरिके कर एक प्रिया दइ दोहु छरी खिलवाई । लाल प्रहार करैं सखि रोकलें प्रीय प्रहारन देहिं बड़ाई ॥ २ ॥ चौपाई ॥ यह बिधि दम्पति छरी खिलाई । अमित निछावर नेगिन पाई ॥ बीथिन घाटरु हाटन बाटा । द्वारा पुरि बिच आनँद ठाटा ॥ आय भवन भइ मंगल कारी । दीन्हिस जननी जीवन वारी ॥ इष्टमित्र नाती कुल जाती । सम्मानेउँ जो ज्यहि औकाती ॥ बोले प्रभु सुर नर मुनि नागा । दीन्ह सबन धन भूषण बागा ॥ गिरि गंधर्ब्ब गुणी गण जेते । तीर्थ वेद सम्माने तेते ॥ शक्ति राग रागिनी सुवंशा । कीन्हि बिदा बहु बरणि प्रशंसा ॥ अप्रसन्न नहिं काहुन राखा । पूरण कीन्ह सबन मन माखा ॥ निज निज जाय निकेत निवासे । द्वारा रुक्मिणि श्याम विलासे ॥ प्रिय प्रीतम सन प्रीति पुराई । नित नव मंगल परहिं जनाई ॥ [श्रीरुक्मिण्युवाच] (राग देश तिवरा तालमें) ॥ पद ॥ अब मुहिं सजन मिल गये श्याम ॥ (अन्तरा) ॥ सुफल भा मम जन्म बड़ भागिनि को मोंसी वाम ॥१॥ भाग जाग सुहाग धनि धनि पुरन भे मन काम ॥२॥ धनि गुरूधनि उमा वचनन परी न नैकहु खाम ॥ ३ ॥ वास द्वारा पुरी पायो मुक्ति जीवन धाम ॥ ४ ॥ प्रभु सनातन वेद भाषन भक्त बश बिन दाम ॥ ५ ॥ तरण तारण जान जगबिच ललन सुमिरत नाम ॥ ६ ॥ इति श्री शुकदेव परीक्षित संवादे श्रीकृष्णरुक्मिणीद्वारिकागमनोत्सववर्णनोनामाष्टत्रिंशत्तमः सर्गः ॥ ३८ ॥

अथ श्री कृष्णनाममाहात्म्यमहिमा वर्णनम् ॥ [श्री रुक्मिण्युवाच] ॥ श्लोक ॥ एकोपि कृष्णस्य कृतः प्रणामः दशाश्वमेधावभृथेन तुल्यः । दशाश्वमेधी पुनरेति जन्मः कृष्ण प्रणामी न पुनर्भवाय ॥ १ ॥ गो कोटिदानं ग्रहणे च काश्यां मकरे प्रयागे यदि कल्पवासी । यद्दीयते मेरु सुवर्ण दानं गोविन्द नाम्नो न समानतुल्यम् ॥ २ ॥ चौपाई ॥ श्रीहरि नाम पुनीत प्रतापा । श्रुतिमुनि मतिवत करहुँ अलापा ॥ ज्यहि सुमिरत अशंख्य अघ नासैं । दुख दरिद्र नहिं निकट निवासैं ॥ सुख सम्पति हरि भक्ति उपावै । अन्त काल वैकुंठ बसावै ॥ श्री व्रजराज गोबर्द्धन धारी । जिनकी महिमा जगत्प्रसारी ॥ कोटिन रति पति सम तन शोभा । असको तिहुँ पुर पेखि न लोभा ॥ सुरश्रुति मुनि नर खग पशु जेते । द्वीपखंड पुर भुवनसमेते ॥ नामाधार सबन कर राखा । ज्यहि जस करणी तस फल चाखा ॥ परब्रह्म कोइ विष्णु मनावै । कोइ हरिहर रघुबर कहि ध्यावै ॥ भाव अनन्त अमित हरि नामा । भेद न किंचित सब सुख धामा ॥ शब्द एक बहु अर्थ प्रकाशक । कनक एक भूषण बहु जातक ॥ दोहा ॥ यथा अनगणित तोय घट, राजत हौंयक ठाहिं ॥ यक रवि लक्षअनेक हों, तसफल नामन माहिं ॥ १ ॥ चौपाई ॥ नामहिंप्रदा अमित फल केरा । कोटिभानते भूरिउजेरा ॥ तीर्थामित जपतप ब्रत नेमा । दान धर्म्म कर कर्म्म सप्रेमा ॥ पै न नाम सम सुखदा एका । बदत वेद अघहरण अनेका ॥ चहिकहु हरे

कृष्ण नारायण। वासुदेव प्रभु प्रीति परायण॥ परमेश्वर परमात्मा देवा। केशव कमला कन्त न भेवा॥ कलिकेवल यक नामहिं सारा। बिना नाम नहिं भव निस्तारा॥ नाम पुनीत श्यामको ऐसा। नक्षत्रन बिच निशिपति जैसा॥ ग्रह में रवि देवन मा इन्द्रा। जिमि हनुभक्तन माहिं दिपिन्द्रा॥ लोकन में गोलोक पुनीता। पाठन महँ जस भगवत गीता॥ सरितनमा श्री पावन गंगा। शरशोभा महँ जैस अनंगा॥ नरनमें नृप शक्तिन में श्यामा। भगवन्तन महँ जिमि-घनश्यामा॥ दोहा॥ जिमि सुमेरु गिरि अँद्रि[1] महँ, गो बिच कामद धेनु॥ बिबुधबिटप[2] वृक्षन महीं, ना हिंसा धर्मेनु[3]॥ १॥ (अथ राग बाघेश्वरी त्योरा तालमें) हरिगीतिका छन्द॥ हरिकर्म्म कर्म्मण बीच जिमि ज्ञानन में ब्रह्म ज्ञान है। तीर्थन में पुष्कर मणी कौस्तुम णिन मांहि प्रधान है॥ मंत्रण मही ॐकार जिमि अरु स्वरन माहिं अकार त्यों। तिहुँ लोक ते न्यारी पुरी मथुरा गतिद संसार ज्यों॥ दाननमें कन्यादान श्रेष्ठ वरणमें ब्राह्मण सर्वदा। पावन ते पावन नँदललनको नाम भजु सब सुखप्रदा॥ १॥ दोहा दैविक देहिक भौतिकी, त्रिविधि पाप सन्ताप॥ नाम निहाई छेनि जप, ते नाशैं अघ दाप॥ १॥ (अथ रागिनी प्रभाती इकताला में) पद॥ नारायण नारायण नारायण भजिये॥ (अन्तरा) काम क्रोध लोभ मोह, मद

१ पर्वत २ कल्पवृक्ष ३ धर्मों में॥

ममता आन द्रोह। आशा तृष्णा असोंह[1], तजियें जग कंजिये॥ १॥ दुस्तर यह सुरन काय, सो तैं नर जन्म पाय। फिरहूँ नहिं ले बनाय, नर तन नहिं छजिये॥ २॥ है असार ये संसार, अनित जन्म जग बिहार। काय अघ विकार श्याम, नाम मंजन मँजिये॥ ३॥ पर्म धर्म कर्म जोय, लीजै तिन्ह मर्म टोयँ[3]। भर्म खोय छल बिगोय[2], कुकरम सों भजिये॥ ४॥ चाहैं जो निज सुधार, सर्ब्बस सुख को बिहार। नन्द ललन भीष्मक ललनि, चरण शरण रजिये॥ ५॥ (दिवसी पूरिया राग चार ताल में) घनाक्षरी कबित्त॥ नोखो तन यान पाय अर्थ मोह बाजि जोत सारथी सलोभ की लगाम लिये डोलै का। हृदय अगार भार कपट ब्योहार सार नेक ना विचार करै मुक्ति पद चोलै का॥ ललन अनेक जन्मकी न बिगरी बिगार कौन भूल भूलो है अमी गरल घोलै का। बार बार नरतन मिलै ना विमूढ़ भजु श्यामाश्याम नाम सर्ब सुखदा अमोलै का॥ १॥ (रागिनी झंझौटी त्रैताल में) सवैया॥ निधि काम कला प्रबला हु प्रवाहन आस तरंगन तैं-रत है। नहिं काल बियाल कि ताक कछू भ्रम भूल भरो जग सैरत है॥ परिवार के प्रेमहि पाच मरै सुमिरै न हरै बिन गैरत है। ललनै धन धाम न साथ चलै चित चेतु अजौं नहिं हैरत है॥ २॥ (रागिनी धना श्री चार ताल में) घनाक्षरी कबित्त॥ कामिनी कला में वारिभामिनी छला

१ अशोभित २ झिगड़े ३ टटोल-तलाश॥

में रति काम अनला में मन मानो ही करे फिरे । मैथुन बला में रसकेलि प्रबला में यह भूमि मण्डलामें बहु बार आय आभिरे ॥ त्यागत न शठता न लठता लवारपन ए रे ए गँवार कछु चेतत ना आख़िरे । नर तन पायरे ललन ले बनाय किनु बिनु सियराम सियराम भजे नातिरे ॥ ३ ॥ (रागिनी धना श्री चारि ताल में) घनाक्षरी कवित्त ॥ पौढ़ो मात उदर में मास नव कुदर में जन्मत मँदिर माहिं पौढ़ो जग आय कै । सूप माहिं पौढ़ कर मात गोद मोद धर पौढ़ो पुनि पलना पै ललना कहाय कै ॥ युवा होत युवतिन संग पौढ़ वृद्धा पन तृष्णा रस छाको बैस बृथहि गँवाय कै । हा शठ न चेतन अजहूं हरि नाम भजे आयो चिता पौढ़न समैया नघिचाय कै ॥ ४ ॥ (रागिनी झंझौटी त्रै ताल में) सवैया ॥ वेद पुराणरु शास्त्र मुनीश्वर कोविदहू कबि टीको है । शम्भुशिवा हिय केरु अधार सदा सनकादिक लीको है ॥ जो नर जन्महि पाय भजो हरिको न हितू युवती को है । सो ललनेश रुदै फिर अन्त ग्रसै यम दुःख अती को है ॥ ५ ॥ (सादरा रागिनी धनाश्री शूल ताल में) घनाक्षरी कवित्त ॥ आत बिन नात औ सुरूप बिन गात जिमि प्रेम बिन दात बिन शूर ज्यों समर है । कन्त बिन बाल ज्यों कमल बिन ताल राजगादी बिन भ्वाल ज्यों न दर बिन जर है ॥ स्वर बिन बानी जैसे नदी बिन पानी निशि बिन यामिनीश दिन बिन दिवाकर है । बूझ बिन गुन जन्मबिन हरिके भजन ललन

लहात त्यों न विद्या बिन नर है ॥ ६ ॥ (रागिनी सोहनी चार ताल में) घनाक्षरी कवित्त ॥ यश को सवाद जोपै आन मुख भाषै रस गुण को सवाद जोपै जगत जनाय है । जीभ को सवाद काहू से न कटु बच कहै रहे कृष्ण नामै की रटन सुखदाय है ॥ दृग को सवाद हरि दरश सवाद श्रुति सुनबो चरित श्याम सबै हो सहाय है । देह को सवाद हो निरोग ललनेश योनि नरको सवाद लो हरी से जो लगाय है ॥ ७ ॥ (रागिनी सोहनी चार ताल में) घनाक्षरी कवित्त ॥ खान को सवाद जोपै और को खवावै कछु धनको सवाद हाथ ऊँचे को उठाइये । कुल को सवाद हो सुमति हरि भक्ति जोपै विद्या को सवाद जो बिवेक उपजाइये ॥ घर को सवाद नारी नेही निज मनकी हो सन्तती सवाद इच्छाचारी सुत पाइये । स्वाद जो ललन जग येही जानिये मनुज तनको सवाद जो गोविन्द गुन गाइये ॥ ८ ॥ (रागिनी बरुवा झपताल में) घनाक्षरी कवित्त ॥ अर्चन करे ते श्याम पर्चन करे ना यम बन्दन बिदारत हैं बन्धन बदन के । सेवन करे ते पद पावत परमपद श्रवण करे ते हों शमन पाप मनके ॥ कीन्हे सुमिरण के सुचीन्हे संत हरिजन कीर्तन करे भरैं भंडार भूरिधनके । नंद के ललन सन पूरत सनेह साँच पाँच आँच लागै ना सहाय रहैं जनके ॥ ९ ॥ (सादरा रागिनी सोहनी शूल तालमें) सवैया ॥ शीत घटै रविके प्रकटे अरु ताप घटै शशि चाँदनि छाये । शक्ति घटै बिन सुन्दर भोजन रोगघटै कछु औषधि खाये ॥ तेज घटै त्रिय

भोग करे बल बुद्धि घटात कुसंगति पाये । मान घटै ललनै पनते अरु दुःख घटै हरिके गुण गाये ॥ १० ॥ प्रीति घटै परदेश बसे पितुमात हितू न कोऊ अपनाये । मान घटै ससुरार गये बहु सास ससूर न क्यौ अदराये ॥ झूंठ कहे जग साख घटै ललनै पनते मरजाद नशाये । जाति घटात कुजाति गृहे अरु दुःख घटै हरिके गुण गाये ॥ ११ ॥ माघ महातम प्राग बसे सब पाप कटै तिरबेनि अन्हाये । काशिहि बासकिये गति हो जग आवन जावन क्लेशनशाये ॥ पूजतपाद हरी जनके मनमाँ हरिभक्ति प्रपूर दृढ़ाये । जो ललनैपन त्याग भजै सब दुःख कटैं हरिके गुण गाये ॥ १२ ॥ आये गये सन प्रीति करै कबिदेव मुनीद्विज शीश नवाये । जे अतिथै सनमान करैं तिनको जगमान महायश छाये ॥ कोविद वेदन बाक्यगहै कुल वृद्ध हितू ललनेश सगाये । जे गुण गान करैं हरिके तिनके दुख मात्र समीप न आये ॥१३॥ (रागिनी मुलतानी चार तालमें) घनाक्षरी कबित्त ॥ पायतन मानुजको देवनको दुर्लभ जो चेतत न भूलहू न मूढ़मति गहुरे । याही तन सेती साक्षात हरि रूप होत आवागौन क्षय होत नेकहु ना सकहुरे ॥ ऐसी अनमोल वस्तु मुक्ति की निशानी पाय घूरमाहिं फेंकत न पीर मन महुरे । ललनपने को छाँड़ चाहै जो भलाई जग सीताराम सीताराम सीताराम कहुरे ॥ १४ ॥ (रागिनी झँझौटी त्रय तालमें) सवैया ॥ सुनु मीत मना सपना जगहै अपना पुनि को यहँ दीखपरे । कँपना अघसों चपनाहि चही अहि काल

करालहि घात धरै ॥ यमफाँस फँसै जब अन्त समै तब रामको नामहि लेत सरै । ललनैपन ठान न चेतत है हकनाहक या तनु बाद करै ॥ १५ ॥ तथा सवैया ॥ ताय दियो तृष्णातनकोहु तुजाय दियो मन आश अरेरे । छाय दियो तम ज्ञान गलीन्ह बिहाय दिये सुख सर्ब फेरेरे ॥ हा ललनै पन धार नरै तन नाहकही महबाद करेरे । गाय बजाय के काठ परै भजु श्री हरि जो भव सिन्धु तरेरे ॥ १६ ॥ तथा ॥ जिन्ह तार दिये कुल कोटि अघी हरि नाम प्रताप कहाँ लौं कहूं । दुख दाप परै जब कोऊ कहीं तबहोतसहाय तहाँहिंतहूँ ॥ जनवारि न आरि करैं कतहूं सुखदा नँदको ललनैहिं लहूं । भव सिन्धुउबारन नाम कलौ सुर सन्त बखानत वेद चहूँ ॥१७॥ (रागिनी भूपाली चार तालमें) घनाक्षरी कबित्त ॥ जाँच्यो नाहिं जगाचार नीत ब्यवहार निज कुल धर्म जातिकर्म ललन अघाय हो। गुन्योना अच्छर चार भेद वेद कौन कहै काव्य अलंकार नाद स्वादौ न यथा लहो॥ योग जप साधन न सन्तसतसंग कीन्ह मातपितु मित्रन सों नेक ना नता गहो। असत निहार जग केवल सुखन सार कृष्ण नाम गायो तिनु गायबो कहा रहो॥१८॥ तथा॥ जान्यों नाहिं देवि एव देवनके भेवनको जाप्यो नाहिं जापन गुनाइबो कहारह्यो। मोह्यो ना मुनीन मन मान्यो ना महीसुरन दया दान कर्म धर्म ध्याइबो कहा रह्यो॥ पाठो नाहिं वेदन न संगत गुनीन कीन्ह यंत्र मंत्र तंत्र गति पाइबो कहा रह्यो । अजहूं न चेतत ललन कौन नींद बश

श्यामा श्याम श्यामा श्याम भजु का भुलारह्यो ॥ १९ ॥ (रागिनी पीलू त्रैतालमें) सवैया ॥ जीवतही तनको जगनात सुखीयहि देख सबै अपनावत । आनि परै कछु भीर उछीर सगो अपनो सोउ नैन छिपावत ॥ कोउ न काहु के संग चलै अपनी करनी सोइ पार लगावत । ये कलिकाल महीं ललनै सुखसार यही जो हरीहर गावत ॥ २० ॥ सवैया ॥ देह अनित्य दिना दुइ की सुख किञ्चित क्लेश करोरन ताता । झूँठ प्रपंचनते धन जोड़त आपन रूक्ष अहार अचाता ॥ मै मद में नित पाच मरै ललनौ ललना बश वैस गँवाता । चेतत ना अजहूँ शठ श्याम न ध्यावत काल शिरै चढ़ि आता ॥ २१ ॥ तथा ॥ बैल भये हरमाहिं जुते गर दीन लढ़ी मल ढोय मरे । तेलिहि के गृहनैन बँधाय बहोरि कसाइन हाथपरे ॥ शीश कटो अरु खाल कढ़ी मढ़ ढोल नगार गये कचरे । ना सुमिरे ललनै हरि नाम यहू से बुरी गति होय अरे ॥ २२ ॥ (रागमालकौश चारताल में) घनाक्षरी कबित्त ॥ बहुतै गईहै अबथोरीही रही है यह रही को रहाउ सुख चहैं तो सम्हार ले । भई गई को बिसार करु अग्र को विचार जग जार है असार सार रस सारले ॥ ललनपने को टार वेद बचको सिहार सन्त कबि कोबिद बचन मनधार ले ।बार बार नर अवतार ना मिलैगो यार श्यामा श्याम श्यामा श्याम सुमिर सुधारिले ॥२३॥ तथा ॥ वेद बन्दनीय बच बदत बिरंचि बिष्णु बिबुध अधीश शक्ति भाषत पुरारि है । अवनि

अधारी सुर शारद बिशारदहू नारदादि सन्त गण सम्मति अपारहै ॥ कोविद कवीन गुनी ललन पुराण मति यंत्र मंत्र तंत्र विधि विविध बिचारहै। सतयुग त्रेता और द्वापर कलौ के बीच श्यामा श्याम श्यामाश्याम श्यामा श्याम सारहै ॥२४॥ (राग पावस चारताल में) घनाक्षरी कबित्त ॥ ललनकहे ते ठाके ठिहा मति आय जात अंकुर उच्चारे आके ज्ञान ही दृढ़ावतो । कुपथ कुकर्म कुकहेते नियराय नाहिं रंकता रमतरा रटत सुखछावतो॥ जी जहान जीवनको जीवनदा चार फल बलिजेये ऐसनाम नामना बढ़ावतो । सर्व सुखधाम अभिराम सो सुनाम जासु काहि ना जपे से नाथ ठाकुरी दिवा-वतो ॥२५॥ (राग हमीर चार ताल में) घनाक्षरी कबित्त ॥ अवध अनेकबार हरद्वार हरबार काशी कोटि बार गौन विष्णु शिव कांचिये । मोक्षप्रदमथुरा अवन्तिका अनन्तबार द्वारिका दरश दश दिशि भ्रम थाकिये ॥ चित्रकूट नाथद्वार पुष्कर त्रिवेणी नेति नित्य नीमषारो गया गंग निधि माखिये । बद्री औ किदार जगदीश रामनाथ गये सो फल ललन एक कृष्ण नामके लिये ॥२६॥ (रागहमीर झपताल में) घनाक्षरी कबित्त ॥ पुरी नाहिं मथुरासी नगरी न गोकुलसी तप को न धाम जग बद्रिका आश्रमसो । शीतल शशीसो ना न भानु सो तपत कोऊ शिवसो न योगी भोगी ना हरी अगम सो ॥ राम मरयाद नाह रावण सो हठी नाहिं चित्रगुप्त सो मुनीम न्यायी नाहिं यम सो । व्यास सो कवी ना धनी ना कुबेर सो ललन कृष्ण सो न नाम सुखदाइया परम सो ॥ २७ ॥

(राग देश चार ताल में) घनाक्षरी कवित्त ॥ पवन को पानी को न अग्नि भय हानी को न देव द्विज दानव की शंका अधिकाई है। काल बिकराल को न डर दिगपाल को न दंड यमराज केर परत सुझाई है॥ भूत प्रेत आदि को न बिस्मै बैरी व्याधि को त्रिलोक को फसाद भूरि भागत पराई है । ध्यावै सुखधाम हरि नाम को ललन जौन ताको कौन डर जाको साँवरो सहाई है ॥ २८ ॥ (रागिनी बसन्त बहार त्रयताल में) सवैया ॥ करसों कर कोटिन दान गऊ गज बाजरु अन्न अनेक प्रकारा । चहि कोटिन तीर्थ भ्रमै पग ते कर वेद पुराणन ज्ञान बिचारा ॥ बहु योगरु जाप करै तप साधन कोटिन यज्ञ करै प्रतिबारा । ललनेश बिना हरि नाम भजे नहिं कोटि उपाय तरै संसारा ॥ २९ ॥ (राग छाया नट त्रय ताल में) सवैया ॥ खाय भुजंगमधौं गरुड़ै सदघृत्य मथे निकसै जल नीका । चन्द्र स्रवै चहि ऊष्णघनो धहुँ भानु स्रवै शुठि शीत अती का ॥ धौं इत से उत होय मही खटमिष्ठरु नोंनहुं हो चहि फीका । बे यशुदा ललनै सुमिरे न तरै मम बात ये पाथर लीका ॥ ३० ॥ तथा ॥ सत को तप सत्युग माहिं रह्यो हरि को धरि ध्यान तरे सबहीं । पुनि त्रेतहि संयम यज्ञ किये बल देवन दै भव उद्धरहीं ॥ ब्रत द्वापर पूजन नेम करे जन पार सदैव भये भवहीं । कलि केवल नामहि सार कह्यो दुसरो ललनेश उपाय नहीं ॥ ३१ ॥ (शुक उवाच) दोहा ॥ यासन हे शठ मोर मन, नित प्रति यह ब्रत धार ॥

श्री रुक्मिणि जननी जगत, भजु पितु नन्द कुमार ॥ १ ॥ (अथ राग देश रूपक ताल में) पद ॥ भज मन रुक्मिणी घन श्याम (अन्तरा) चार वेद पुराण दश वसु शास्त्र षट मति थाम ॥ शेश शारद ब्रह्म नारद रटत शिव बसु याम ॥ १ ॥ भजो गणिका कीर पढ़वत अरु अहिल्या वाम । अजामील सो भील तरि गयो सुमिर सीताराम ॥ २ ॥ ध्रुव प्रह्लाद निषाद मीरा भक्त बिभीषण राम । द्रौपदी अम्बरिष पीपा नृग सुग्रीव सुदाम ॥ ३ ॥ हरिश्चन्द्र मयूरध्वज गज सदन शिबरि ललाम । कूबरी भजि कृष्ण पायो सुतन छबि अभिराम ॥ ४ ॥ बाल्मीकि बशिष्ठ गौतम व्यास-जग सरनाम । पराशर यमदग्न कश्यप याज्ञबल्क मताम ॥ ५ ॥ कौनडिन्य सनक सनन्दन शुकदेवादि प्रणाम । तरे भारद्वाज विश्वामित्र भजि हरि नाम ॥ ६ ॥ कपिल सनत्कुमार शौनक सूत चिमन निकाम । सनकादि शुक्राचार्य्य गोरख कबिर नानिक राम ॥ ७ ॥ सूर तुलसी केश-वादिक सुमिरगये सुर धाम । भक्त वत्सल ललन प्रिय प्रभु भजु जो चहे अराम ॥ ८ ॥ चौपाई ॥ अस पुनीतपावन हरि नामा । जन सुख वरदा अष्टहु यामा ॥ जो श्रीरुक्मिणि कृष्णोद्वाहा । जासु चरित इच्छौद अथाहा ॥ रंक सुनै सुख सम्पति पावै । रोगि ऋणी कोउ दुख न सतावै ॥ भय बन्धन ते रहितै सोई । सुनै कथा छल छन्द बिगोई ॥ दृढ़ निश्चय युति सुनै अनैंझा । निश्चय शुभ सुत

१ ॥ श्री कृष्णचन्द्र का बिवाह ॥ २ ॥ मन्शा फल देनेवाला ॥ ३ ॥ उद्धार होवै छुट जावै ॥ ४ ॥ छोंड़ करके ॥ ५ ॥ किसीदिन नेत्र खंडन न होवै ॥

पावै बंध्या ॥ कन्या सुनै नेमवत् ठीका । मिलहिं गुणज्ञ वाहिवर नीका ॥ रुक्मिणि परिणय चरित
पुनीता । भुक्ति मुक्तिदायक चित चीता ॥ जो यह कथा कहै व कहावै । आप सुनै कुलको सुनवावै ॥
बहु जन्मनकर पाप पहारा । गो द्विज बध पातिक हों छारा ॥ मांसिक बाचिक कायिक केरे । सुनत कथा
अघ नशहिंघनेरे ॥ दोहा ॥ रुक्मिणि मंगल जाह्नवी, गोमा यमुनस्नान ॥ गंगासागर गंडकी, गो-
दावरी नृमान ॥ १ ॥ चौपाई ॥ सरजु शारदा कृष्णा श्रेणी । कावेरी नर्मदा त्रिवेणी ॥ सोहन भद्र सरस्वति
तापी । ऐरावती शतुद्र प्रतापी ॥ सफरा शशिभागा गंगोत्री । जे फल अलकनन्द यमुनोत्री ॥
पय अमि मधु घृत इक्षु आदिका । सप्तोदधि मज्जन फलादिका ॥ अवधपुरी मथुरा हरिद्वारा ।
काशी कांचि अवंतिका द्वारा ॥ वृन्दारण्य प्रयाग गयागे । ते फल प्राप्त होय बिनमांगे ॥ मिश्रिक
नैमषार कुरुक्षेत्रा । गमने गोकर्णेश्वर क्षेत्रा ॥ तीर्थ जनक पुर शृंगीरामा । हरिहर बरहक्षेत्र
अभिरामा ॥ बैजनाथ पूर्णागिरि धाये । चित्रकूट ऋषिकेश हनाये ॥ बद्रि किदार स्पर्शे जेते ।
प्रभु परिणय कृति सुनि फल तेते ॥ दोहा ॥ जगन्नाथ भुवनेश शिव, मीनाक्षी रामेश ॥ पद्मनाभ
अरु जनार्दन, मलयवार यात्रेश ॥ १ ॥ चौपाई ॥ पंक्षीतीर्थ चितम्बरेश्वरा । बायुलिंग बाला-
जी अपरा ॥ किस्किन्धा पम्पापुर बिठ्ठल । भिमशंकर नासिकत्र्यम्बकमल ॥ नील सरस्वति श्री
कामाख्या । विदित जगत् ज्यहि वेदन ब्याख्या ॥ रामटेंक श्रीनाथदुवारे । चंडी ज्वाला भागसु

सिधारे ॥ गढ़गिरिनार प्रभास प्रवासै । ते फल पावै बिना प्रयासै ॥ वेंक्टेश श्रीरंग ओंकारा ।
पुष्कर ब्रह्मावर्त भँभारा ॥ नैनाम्बा निलगिरि दधीचसर । ऋष्यमूक हयग्रीव दरश कर ॥ अमर
बसिष्ठाश्रमहु पशुपती । मुक्तिनाथ हिंगलाज भगवती ॥ पिंडनरायण रोहिणकुण्डे । फल बहु
तीर्थे मज्जे मुंडे ॥ सो हरिव्यह यश सुने सनेमा । द्रवत रहैं सदैव नित क्षेमा ॥ दोहा ॥ जो ज्यहि
मंशा ते सुनै, त्यहि तस फलै निदान ॥ प्राप्तहि रति गोविन्द की, तनक न मिथ्यामान ॥ १ ॥
पाय मनुज तन जगत विच, जो न भज्यो भगवान ॥ ज्यहि न सुनी यह हरि कथा, बृथा जन्म
त्यहि जान ॥ २ ॥ चौपाई ॥ मन वांछित फल देवन वारी । ब्याह कथा रुक्मिणि गिरिधारी ॥
शंभु भन्यो शृणु गिरिजारानी । तो सन मति अनुसार बखानी ॥ अति दुर्लभ हरियश श्रुति
बरणी । सुनैंवेई जिन्ह नीकी करणी ॥ जिनकी गति कछु होत सुचरणी । सोइ पावत यह भव-
निधि तरणी ॥ यहि भाँतिन फल देत अलेखा । सूक्ष्म कथन प्रिय जान बिशेखा ॥ ज्यहि मुख
सहस सहस दुइ रसना । बरणैं पार जो तिन कर वसना ॥ नहिं समर्थ शारदा भवानी । जो भगवत
गुण कथ सक जानी ॥ सृष्टि सृजायक श्रुति मुख वारा । सो हरि यश कह लहि सक पारा ॥
त्रिशत्रय कोटी बिबुधेशा । का बापुरो सो कथ सक लेशा ॥ वेद पुराण मुनिन गति गोई । प्रभ
गुण कबि कब कहि सक कोई ॥ दोहा ॥ प्रभु गुण गति जानै प्रभुहि, कै ज्यहि देय जनाय ॥

ललन तात गुण शक्ति विभु, गति कस सकियत पाय ॥ १ ॥ दोउ तन मन रुचि सुफल हित, हरि यश कह्यो सुनाय ॥ जो जग जन सुनि आदरैं, फूलैं फलैं अघाय ॥ २ ॥ इति श्रीरुक्मिणीपाणिग्रहणे शुकदेवपरीक्षितसंवादे श्री १०५ मान्यवरसांगीतकलाकुशलसारस्वताष्टवंशोत्पन्न भारद्वाजीज्वालाप्रसादजीशर्म्मातस्य प्रियपुत्रकविवरपंडितललनजी (उपनाम ललनपिया) प्रणीतकथायां समाप्तोयं नवत्रिंशत्तमःसर्गः ॥ ३९ ॥

सम्पूर्णम् ॐ शान्तिः ३ ॥

अथ श्री गुरुनामवर्णनम् ॥

(राग तिलक कामोद चार ताल में) घनाक्षरी कवित्त ॥ आदि में नकार सो हिरस्व पुनि मध्य में हकार में नकार पै एकार दरशायोहै ॥ तदनु मकार औ लकार युग्म लघू इति नामिन में नामी सो उस्ताद नाम पायो है ॥ सारस्वत भ्रात दोउ विपुल संगीत रूप ललन भतीजा शिष्य तिनको कहायो है । वतन फरक्काबाद कूंचा मित्रसेन जहां दर्श हनुमान तेजवानको सुहायो है ॥ १ ॥ श्री ॐ । श्री गुरुनाम निवासस्थलव्याख्यावर्णनम् सम्पूर्णम् ॥ १ ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ भक्तिभूषणः (नरसीभक्त कथा) प्रारम्भः ॥

तत्रादौ मङ्गलाचरणम् ॥

अलिमण्डलमण्डितगण्डतलं तिलकीकृतकोमलचन्द्रकलम् ॥ करघातविदारितवैरिदलं प्रणमामिगणाधिपतिं जटिलम् ॥ १ ॥ तोटकवृत्तमिदम् ॥ तदुक्तं रत्नाकरे । इह तोटकमम्बुधिसैः कथितम् ॥ गण । ४ सगण, विराम ६ । ६ ॥

दोहा ॥ जय गणपति वरदा विभव, बुधि विद्या यशदेनु ॥ विनवौं विद्यापति प्रथम, राखि शीश पदरेनु ॥ १ ॥ श्रीशारद सुखदायिनी, वरवाणीदातार ॥ कमलासनि वीणाधरी, प्रणवौं अमित प्रकार ॥ २ ॥ गुरुपदपद्म पुनीत को, पुनि पुनि करों प्रणाम ॥ अपन जान अपनाय जन, पूरण करिये काम ॥ ३ ॥ श्यामा श्याम पदाम्बुजन, बन्दौं महि शिर टेक ॥ निज बल बुधि किञ्चित् नहीं, तुम जन राखन टेक ॥ ४ ॥ नरसीभक्त पुनीत यश, चरित जगत् जन जान ॥ सो वरण्यों कछु चहत हौं, हो सहाय भगवान ॥ ५ ॥ अथ विंशमात्रिको नन्दछन्दः ॥ जयति

जय जयति जय जयति जय श्रीहरे ॥ माधो मुकुन्द मदनमोहन साँवरे ॥ १ ॥ श्रीपती सुजान सर्वशक्तिमानरे ॥ तोहि ध्याय लहत ललन जगत् मानरे ॥ २ ॥ चौपाई ॥ झूनागढ़ नगरी सुखरासी। तहँ को नरसी वैश्य निवासी ॥ महाधनाढच परम गुणआगर। जासु कार व्यवहार उजागर ॥ दृढ़ हरिभक्ति नेम व्रत साधक। सदा सुश्याम नाम आराधक ॥ मन वच क्रम सों अष्टौ यामा। हरिचरणन लौं और न कामा ॥ दान मान सम्माने त्यागी। द्विज सन्तन को नहिं अनुरागी ॥ प्रभु तो जनवत्सल[1] श्रुतिगाये। भक्तपाणि बिनु दाम बिकाये ॥ यकदिन श्रीहरि मनहिं विचारी। यह मम भक्त मुक्ति अधिकारी ॥ कर सों दान कबहुं नहिं दीन्हो। द्विज सन्त न नहिं सेवन कीन्हो ॥ क्यहि विधि यहिको बोध कराई। जो मम भक्ति होय फलदाई ॥ दोहा ॥ जो न पाय जन सम्पतिहि, पूजै विप्र न सन्त ॥ बिनु दीन्हे धन दान के, मुक्ति न पावत अन्त ॥ १ ॥ चौपाई ॥ मुनिवर्यहिं प्रभु कह्यो सुनाई। तुम नरसीगृह जाउ सिधाई ॥ धन इच्छा कर याचहु जाई। लै आज्ञा पहुँचे ऋषिराई ॥ गाय बजाय सकल विधि याचा। नरसी डबल दीन्ह नहिं काचा ॥ तृतिय दिवस हाड़ि कर ऋषिराया। प्रभुसन आय वृतान्त सुनाया ॥ महाराज वह तो अति सूमा। कहां करायो मेरो घूमा ॥ तीन दिवस बितये त्यहि धामा। अशन न दिये न

१ भक्तवत्सल

पूंछ्यो कामा ॥ अथ पुनि दीनद्याल भगवाना ॥ आपहि त्यहि गृह कीन्ह पयाना ॥ नरसी रथै चढ़्यो कहुं जाई। तासु पीछ चलभये कन्हाई ॥ दोहा ॥ पुर बाहर वन सुभग थल, नरसी लखि सुखमान ॥ रथहि रोकि जल पात्रलै, गयो शौच मैदान ॥ १ ॥ चौपाई ॥ ताको रूपधारि त्यहि काला। रथ पै शोभित भे गोपाला ॥ कह्यो सारथी सों अतुराई ॥ रथ लै बेगि चलो हँकराई ॥ गयो शौचहित मैं यहि खेता। मम वपुधर यक आवत प्रेता ॥ शीघ्रहि रथ हँकाय त्यहिकाला। नरसी गृह पहुँचे नँदलाला ॥ द्वार पालकन प्रति अस बोधा। सावधान हूज्यो सब योधा ॥ मोर पिछारी मम तनुधारी। आवत यक पिशाच छलकारी ॥ म्वहिं मारण कारण त्यहि हेतू। पैठि न पावै मध्य निकेतू ॥ कीन्ह प्रबन्ध न इमि प्रतिहारा। तो तुम कोउ कहँ नहिं निस्तारा ॥ दोहा ॥ इमि आज्ञा कर नरहरी, लीलानिधि भगवन्त ॥ रच्यो चरित्र विचित्र अस, महिमा जासु अनन्त ॥ १ ॥ चौपाई ॥ आप जाय राजे घर भीतर। तापाछे आयो नरसी घर ॥ देखि किंकरन अति ललकारा। प्रेत प्रेत कहि सबहिन मारा ॥ भवन मध्य नहिं पैठन पायो। नगर त्यागि नरसी वन धायो ॥ हरिसुमरण करि रोदत भयऊ। हाय नाथ म्वहिं अति दुख दयऊ ॥ सुनि अराधना प्रभु जनकेरी। प्रकटे साधू बन त्यहि बेरी ॥ प्रश्न कियो तैं को यहि ठांहीं। एकाकी कस थिर वन मांहीं ॥ नरसीमुनि कहँ नाम बतायो। ब्योरो कहि समस्त समझायो ॥

हौं प्रभु आराधी धनवारो । प्रेत बनै गृहजनन निसारो ॥ कौन यत्न कीजै सोइ कहिये । जो गृह धन आनँद उर लहिये ॥ दोहा ॥ साधु कह्यो सुनु हरिभगत, तैं धनियन महँ धन्य ॥ दान दिये बिन सुर द्विजन, नहिं हरि होत प्रसन्य ॥ १ ॥ चौपाई ॥ यक तो अति दुर्ल्लभ यह नरतन । नरतन पाय कठिन मिलवो धन ॥ धन हो पुनि कछु दान न देवै । अथवा द्विज सन्तन नहिं सेवै ॥ वाको सफल न जानहु धर्म्मा । मुख्य प्रधान जगत् बिच कर्म्मा ॥ यासों गृह जा करिये दाना । सन्नमान मुदितै भगवाना ॥ हरि सिखदै निज धाम सिधायउ । नरसी पुनि निज गृह को आयउ ॥ दै अधीश को मान किङ्करन । नरसी को लाये गृह गृहजन ॥ साधु शिक्षणै धरि त्यहि चितपै । तुलसी धरन लग्यो निज वितपै ॥ तबतो तद्भ्रातन सिख दीन्ही । यह क्यहि की शठ मति तैं लीन्ही ॥ धनगे कोउ न पूँछै बाता । धनहीं से पद्वति जग भ्राता ॥ दान पुण्य चाहे जस कीजै । पर अँधराव न मान जो छीजै ॥ अबहिं तेर करनी जिंदगानी । सबै भजत हरि तुमहिं न ज्ञानी ॥ धनगे कोउ न नैन तर लावैं । अपन परायउ सब निदरावैं ॥ जग केवल धनहीं मुखजानहुं । धनसेहि गति पति निज सम्मानहुं ॥ सो तुम धन घूरे सम फेकौ । तुम्हरे मनमहँ दरक न नेकौ ॥ क्यहु सिखये धौं देखा देखी । जगदिखाव हित करहु न शेखी ॥ नरसी उर सांची हरि प्रीती । कान न की कछु बन्धुन नीती ॥ दोहा ॥ श्याम नामपै सकल धन,

धाम नरसि दैडार ॥ प्रभुचरणन लाग्यो नितहि, रोषित कुल परिवार ॥ १ ॥ सोरठा ॥ हरि दर्शन अभिलाष, धारिस रुचि दृढ़ प्रीति सन ॥ पुजवन निज मनमाष, शिव सेवा आदरत मा ॥ १ ॥ (रागिनी बरुवा में) दादरा पद ॥ नमो गणपति पितु गौरी ईश ॥ (अन्तरा) बिच ललाट राजत मयङ्कवर सुन्दर रूप अधीश ॥ १ ॥ जटाजूट नवमुकुट लसत छबि गंग विराजत शीश ॥ २ ॥ नीलकण्ठ विषधर वृषवाहन पाणि त्रिशूल बलीश ॥ ३ ॥ सुनि ध्वनि डमरू नशत बिघनगन जरत रोगछत्तीश ॥ ४ ॥ अंग भुजग उरहार कपालन शोभित शोभाधीश ॥ ५ ॥ त्रयलोचन त्रयताप विमोचन डारत विपदा पीश ॥ ६ ॥ बाघम्बर सोहत रिपुमन्मथ सुखनिधि विश्वाबीश ॥ ७ ॥ तुम कहँ रटत वेद मुनि गुनिजन देव कोटि तेतीश ॥ ८ ॥ तुम समान कोउ देव न दूजो विदित जगत् बक्सीश ॥ ९ ॥ ललन दीन नरसी जनको शिव देहु भक्ति आशीश ॥ १० ॥ (रागिनी प्रभाती इकताला में) पद ॥ सुनिये बिनती महेश मुण्डमालवाले । करुणाकर कमलनयन अयन चैनवाले ॥ (अन्तरा) आरत जन स्वारथसन शरणागतिवाले । विनवत करजोरि तोर छैल बैलवाले ॥ १ ॥ सुरसरि सुखमा सुशीस जटाजूटवाले । व्याल अंग भूषण छबि चिताभस्मवाले ॥ २ ॥ बिस्तर मृगछाल खाल बाघम्बरवाले । कालकूट घूंट करन नीलकण्ठवाले ॥ ३ ॥ शृङ्गितन्त्रधर स्वतन्त्र डमरुयन्त्रवाले । करत्रिशूल हरनशूल भक्तन रखवाले ॥ ४ ॥

ललन शरण तोरी नाथ शैलसुतावाले । मनवांछित भक्तिदान करिय मम हवाले ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ शिव दृढ़भक्ति देखि नरसीकी । प्रकट कही कहु मंशा जीकी ॥ नरसी शिव प्रसन्न जब जाना । प्रभुदर्शन मांग्यो वरदाना ॥ एवमस्तु कह श्रीत्रिपुरारी । गोपेश्वर तनु लीन्हों धारी ॥ लै नरसी सँग हरि ढिग आये । जहँ श्रीप्रभु ब्रज रहस रचाये ॥ प्रभुदर्शन करि अतिहि सुखारी । भाग जाग जानसि वहिबारी ॥ प्रफुलित अंग समावत नाहीं । बार बार शंकरहि सराहीं ॥ सांच वदत श्रुति शिव सम एवा । अस भोला नहिं दूसर देवा ॥ दीन जान म्वहिं शम्भु उबारा । पुनि नरसी हरिविनय उचारा ॥ (रागिनी कान्हरे की बहार में) इकताला—पद ॥ निर्विकार निरङ्कार निर्मल वर न्याई ॥ (अन्तरा) निराधार निर्गुण नित जग निजन्मताई । निगम अगम निर्णयो सुनेति नेति गाई ॥ १ ॥ अलखित अनुरूप अजित अकृत अगमताई । धीरा थिर प्रकट रह्यो घट घट दर्शाई ॥ २ ॥ अछत अमित मायानिधि महिमा निस्थाई । सृजता संहार करण जगपति यशराई ॥ ३ ॥ अचल अटल अमल अदल अछल अकलताई । अतुलित बलधाम सो अभिराम रमाराई ॥ ४ ॥ अजर अमर अडर अचर अनघ अखिलराई । विश्वम्भर अतज अकज अकोप अचोपताई ॥ ५ ॥ अगति अति अगाथ नाथ अकथ चतुरताई । आदि-देव महाप्रभू पूरण प्रभुताई ॥ ६ ॥ आनँदमय अरिपु नित्यनेही सुखदाई । अमरधाम अतन

अपन अमन स्वमनसाई ॥ ७ ॥ समदृष्टी दीनबन्धु दीनन हितलाई । ललनै बरदीजै निज चरणन सेवकाई ॥ ८ ॥ चौपाई ॥ नरसी की दृढ़भक्ति निहारी । भक्तिदान दीन्हो बनवारी ॥ पुनि नरसी निजभवन सिधावा । हरिचरणन सों ध्यान लगावा ॥ सुखसों कालसदैव बितावै । सुर द्विज सन्तन प्रीति पुरावै ॥ जो गृह महँ हो चून अनाजा । दे समर्प द्विज सन्त समाजा ॥ यहि बिधि करत रहा कछुकाला । रुष्टित ह्वै उचरी त्यहि बाला ॥ हौं कणदलत मलत गतिगोई । तुम न दरक हिय नैकौ होई ॥ पर्यूषितहू थिरन न पावै । शिशुगण उदरहु नहिं तुष्टावै ॥ दोहा ॥ तैं साधुन माता रहत, कर उत्पाता थोर ॥ कहँ लगि शिख तुहिं देहुं तैं, दइ सब हुर्म्मत बोर ॥ १ ॥ चौपाई ॥ करे रहत साधुनकर ठाटा । अब न देहुं मैं किंचहु आटा ॥ चहि तुम रहो तजो गृहकाई । हमरि तुम्हरि जनि बनव गुसाई ॥ अस कुवाक्य सुनि वाम करेरे । उपजिस रिस भे नैन तरेरे ॥ नात भ्रात कुल त्यागि झमेला । डारि मँड़ैया बसो अकेला ॥ सत्संगी साधू दुइचारा । त्यहि थल आगमनै प्रतिबारा ॥ कीर्तन भजन होयँ दिनराती । खनकैं खँजरि झांझ झनकाती ॥ चर्चा कथा पुराणन केरी । ब्रह्मवाद पद सुमति घनेरी ॥ ज्यहि नित श्याम नाम आधारा । और न दूसर बात प्रचारा ॥ दोहा ॥ या विधि

१ बासी अन्न ।

नरसी अहर्निशि, हरचरणन लौलाय ॥ काम क्रोध मद लोभ अरु, दी संसृति बिसराय ॥ १ ॥ अब यह कथा अपर सुनो, नरसीसुता पुनीत ॥ गोंडा नगर निवासिनी, सुख संपति सब शीत ॥ २ ॥ चौपाई ॥ तासु सुता भइ ब्याहन योगा । कीन्हमता सुसरारिन लोगा ॥ अब कन्या कर ब्याह रचावो । पत्रि भात हित समधि पठावो ॥ रंगलालकर कुमर नरेना । बोलत भा त्यहि चिए कटुबैना ॥ यह रामा मोड़ाकर जाई । वह का भात भेजिहै भाई ॥ यदिवा तुम्हरे यह मनभाती । तौ हम सन लिखवैये पाती ॥ सुनतहि ताना देवरकेरा । रामा तमकि उठी त्यहि बेरा ॥ करन चहत पर परिभव जोई । तिरस्कारभागी सोइ होई ॥ तव बल मम पितु पति न नशाई । रक्षस सबन सदा यदुराई ॥ दोहा ॥ भावज पाहिं बिवाद ठय, रंगललन मुदगात्र ॥ लावत भा सोइ लेखनी, पत्र और मसिपात्र ॥ १ ॥ चौपाई ॥ जनकै कह्यो जनाय कुमारा । लिखब पत्र हौं जो न बिचारा ॥ यह बिधि लिखब न जाय पठावा । हँसि रँग कह करु जस मनभावा ॥ नाई नेगिन बोलि पठावा । उपरोहित कोविदन बुलावा ॥ ब्याहलग्न कहि उत्तम सोधौ । ज्यहि में हो न शास्त्र अवरोधौ ॥ लै पञ्चाङ्ग सुबुधन विचारा । सबन कीन्ह सोइ अंगीकारा ॥ विरचित कीन्ह पत्रिका सोई । विविध विधानन मिश्रित जोई ॥ मनप्रबोध सह मुद अधिकाई । पाति भातहित सजन पठाई ॥ मांग्यो ज्यहि प्रकार सामाना । बरणौं लघु ताको व्याख्याना ॥

कवित्तघनाक्षरी ॥ पाट औ पटम्बर मरुतूली बहु अम्बरा बनाती बर ऊनियां दुशाले दामवालेसे । नैनू तनजेब जामदानी कामदानी केर जरकसी ज़रीकेर खासे उजियालेसे ॥ छींट के छटाऊ महमूदी स्यालुवा ललन लाख लाख जोड़े सूती रेशमी बिशालेसे । पट मरदाने भांति भांति के सुहाने कोटि तेवर जनाने भेजु नरसी निराले से ॥ १ ॥ चौपाई ॥ रूपेरचित पात्र यक लाखी । सुबरण के दुइलख अभिलाखी ॥ रोरी अबिर गुलाल अनेका । अष्टगंध कस्तूरि जितेका ॥ मेवा मिश्री नौलख बोरी । मेंहदी मौलि सिंगारिक गोरी ॥ आभूषण नवलख अभिरामा । रत्नन जटित अमोल ललामा ॥ बेंदी चन्द्रकला अनुहारी । दामिनि द्युतिन द-बावनवारी ॥ करणाभरण प्रभा भवकीले । ग्रीवागहन सुढंग ढँगीले ॥ भुजकर कटिके भूषण भाते । अंग अंग के सुभग सुहाते ॥ भूपशृंगार दन्त आभरना । लिखित सदृश नहिं नेक निदरना ॥ हरिगीतिकाछन्द ॥ भेजहु खजाना मुहर रुपिया रत्न अमित प्रकारियां । पीनस मियाना पालकी गज रथ विपुल असवारियां । षटरस मिठाई घृत अठारह लक्षमन पक्वानहो । भेजना शकटन साजना मन कोटि सीध समान हो ॥ अवदात भात समर्पिये तव दोहिती को ब्याह है । कछु कठिन नरसी तुहिन तेरो सांवरो सो साह है ॥ इहि भांति नरसी केर समधी जब

१ सोलह । २ बत्तीस ।

लिखो सामान दो। तब बोलती वृद्धा भई लिख भेजिये पाषान दो ॥ १ ॥ सोरठा ॥ वह फकीर कंगाल, सबधन तुलसी धरचुको ॥ तुम मांगत असमाल, सो कस भात पठाय है ॥ १ ॥ चौपाई ॥ मातु वचन तिन्ह हँसि अंगेजा । पथरन हू कारण लिख भेजा ॥ लै ब्राह्मण समधी की पाती । नरसी कहँ दइ कहि कुशलाती ॥ लैपत्री आतन ढिगधावा । समाचार सब बांचि सुनावा ॥ भात मँगावन की सुनि गाथा। चौंकि परे कानन धरि हाथा ॥ कह्यो सुनाय नरसिया भाई । प्रथम न हमसिख तो मन भाई ॥ धनदै बन बाबाजी बैठो। अबका हमरे बल पर ऐठो ॥ हमरे कछु नहिं बनै बनाये । मँगहु उनहिं जिन धन दै आये ॥ धौं उनहीं को याचो जाई। जिनपर बैठो मूँड़मुड़ाई ॥ सुनि बखतावरसुत अस बाता । फिरगे सब मोसे मम भ्राता ॥ दोहा ॥ लै चीठी उठि चलतभा, हरी अराधत गुप्त ॥ बरसावत दृगवारि झर, तन मन दशा प्रलुप्त ॥ १ ॥ (रागिनी सावनी बरुवा धुनि की बारहमासी में) पद ॥ टूटी सी मड़ैया छपरवन छाई। बसवा बिहीन बनायरे ॥ (अन्तरा) फूस पुरनवा नीर गलानों छिदवा हजार दिखायरे । काची दिव-रिया के तर घमछइयां गादी गुदड़िया सुहायरे ॥ १ ॥ इत उतते चहुँ दिशि मैदनवां ब्यारी सों बदन भुरायरे । नरसी बबाकी मँडलिया तहां रही साधुनको समुदायरे ॥ २ ॥ यक कुँडिया यक निंबुवा को सुँटुवा बिजिया की बगिया दिपायरे। टूटी रसरिया सो फुटो सो डुलवा नीर भरे

चुचुवायरे ॥ ३ ॥ गर हरभजनी माल तुलसिका करही झांझ झनकायरे । ललन श्यामगुन गावत आयो नरसी थल खिसियायरे ॥ ४ ॥ चौपाई ॥ दै दर्भासन विप्रस्थापा । चून तमाल अर्पि पदचापा ॥ मुद महिसुर प्रति नरसी बोला । मज्ज सावधानिये तो चोला ॥ दै जलकूप द्विजै हनवावा। इमि ब्राह्मण सन कहि जतरावा॥ तुम्बि कुशासन कर नहिं घाटा । रहि न सकत ह्यां दालरुआटा ॥ लेहु तुम्बि यहि नगरि सिधावो। भिक्षा मांगि घरन ते लावो ॥ आप जीम सन्त-नहु जिमावो । सुनि हरिकीर्त्तन जिया जुड़ावो ॥ सुनि नरसी की कहन अटपटी । धरिस ब्राह्मण हस्त कनपटी ॥ भगा झगालय झट महिदेवा । यजमानै प्रति कह सब भेद ॥ वह मोड़ा क्यहि योगिक भोंडा। सुहद जासुके गुंडा गोंडा ॥ दोहा ॥ वहिकृति लखि हौं चकित भा, वर्णत बनै न एक ॥ नरसि व्यवस्था सकलसुन, रह्यो ओष्ठ रद टेक ॥ १ ॥ नरसी निरखि वियोग द्विज, अरुभा पश्चा-त्ताप ॥ कह पति अब औरहु गई, करण लग्यो हरिजाप ॥२॥ सवैया ॥ दीन दयालु तुम्हैं बिन कोउ न दीखपरै जगमोर सहाई। तात न मात न भ्रातसगो न सगो ललनौ न नतेलहु भाई ॥ गाढ़ परे तुम हीं जनकी सुधि लीजत श्यामलसाह कन्हाई । हौं मनसों वचसों क्रमसों तुमरोजन तो सुन कान लगाई ॥ १ ॥ हौ धन पूज्य तुम्हैं हमरे तुमहीं जन काजन सारनहारे । रामा सुता ममता तनया को विवाह रच्यो समधीनु हमारे ॥ भात को पाति लिखी हमका ज्यहि भांतिक वस्तु न जाय उचारे ।

दाम छदाम न धाम महीं ललनै यहि बारहि कौन उबारे ॥ २ ॥ हैं तुम्हरोहि भरोस बड़ो तुमहीं पितु मात सहोदर जानो। लोक प्रमाणिक बात यही सुत तात बलै पै रहै अभिमानो ॥ पूत कपूत जो हौं तुम्हरो ललनेश तुम्हैं परि है हि निभानो। आन न पूरि करै सुत शरहि जो ज्यहिको त्यहिको सोइ मानो ॥ ३ ॥ हैं उनको मम ओरि सों धोख कि है नरसी सम साह न कोई। जो ननसारिक हो ब्यवहार मँगाय पठायउ ठीकहि होई ॥ धौं लखि दीन दुराय लिखो म्वहिं अस्तुति में निन्दित वच जोई। भेजु हमैं ललनै सब बस्तुन संगहि साजन पाथर दोई ॥ ४ ॥ कवित्त घनाक्षरी ॥ ताना समध्याना सन आयो लिख तापै यह तेरो नन्दललन सहायक प्रधानहै। याही उन लेख पै भरोस मन मोर भयो सांच जनको सुखद तो समको आनहै ॥ कमलासी नारी औ भंडारिया कुबेर सम कमी क्यहि बातकी तू बरदा कल्यान है। कानि है तुही तो सनमानहै तुही तो पतिमानहै तुही तो जनजीवन जहानहै ॥ १ ॥ दोहा ॥ अब तोरहि कर लाजहै, दीनबन्धु ब्रजनाथ ॥ जस चाहे तस कीजिये, तुम बिन कोउ न नाथ ॥ १ ॥ चौपाई ॥ पुनि कछु समझ धीर्य्य हिय धारा। नरसी अस मन माहिं विचारा ॥ भातदात जो भ्रातन दीन्ही। अस निलज्जता उरधर लीन्ही ॥ यहकर बिलग मान कह होई। आन प्रकृति पहँ कह बश कोई ॥ सजन भात नहिं दै सक यद्यपि। जग उपहास उपाजिस तद्यपि ॥ यासन सजन समीप सिधइये। तिन्ह करजोरि शीश पग नइये ॥ निधन दीन

आधीन परेखी। करि हैं कृपा कछु मीन न मेखी ॥ यहि मिस लखि आउब तनयाको। दिहौं बँधाय ढाढसै वाको ॥ यह तनकर अब कौन भरोसा। पुनि यह समय करोरन कोसा ॥ दोहा ॥ अस असकर अनुमान मन, पुनि सुहृदन ढिगजाय ॥ जापक श्रीनँदललनगुण, विनय कही इमि गाय ॥ १ ॥ जो न भात देसक हमैं, तौ कोउ बाहन देउ ॥ जाय सजन पग शिरधरूं, यही सुयश बड़ लेउ ॥ २ ॥ सोरठा ॥ जिन पर मूँड़ मुँड़ाय, विपुल बुढ़ानो बौरहा ॥ तिन सोइ मँगिहौं जाय, भ्रात भात सामा सकल ॥ १ ॥ हरिगीतिकाछन्द ॥ सुनि वचन नरसी केर भ्राता हेर मुख मुसकावते। दुइ ड़ुंड बुंड से वृषजुता कै टूटिलढ़ी मँगावते ॥ जगरीति लखि विपरीति धन बिन निजहु ना अदरावते। नहिं नरसि कछु उरसोच किंचित् दरक नहिं उर लावते ॥ कछु अँधरे धुँधरे सन्त सँग लै झांझ खँजरि बजावते। नरसी सुताके देश हरिगुण गावते भे धावते ॥ लखिभ्रात कुल जन सन्त मंडलि हँसैं गाल बजावते। नहिं गांठ दाम छदाम बाबा भात देवन जावते ॥ अब रह्यो शेष यही जगत बिच कार मुँह करवायँगे। जो रह्यो अपयश और सो लै उलटि पुनि गृह आयँगे ॥ १ ॥ सोरठा ॥ करत कृष्णगुन गान, नरसी सन्तन सहित अथ ॥ निज समधी प्रस्थान, पहुँचे गोंडा नगर जा ॥ १ ॥ कहयक साधुहि टेर, कहु प्रणाम मम आगमन ॥ जा समधी के नेर, सन्त सुनावा हाल सब ॥ २ ॥ कवित्त घनाक्षरी ॥ नरसीसाह आयो सुन सम्धी हरषायो यक

किङ्करा पठायो लखि आवो क्यहि ठाट सों। दास जाय देखो संग सन्त दशपेखो और कछू नाहिं लेखो लौटिआयो सोइ बाटसों॥ हाल हाल भानो सुनि सम्धी निदरानो यक बागथो सुखानो नाहिं छाया चहुँघाट सों। दीन तहां बास नन्दललन के दास काहिं लायो ना उनख लखि कुथल उचाट सों॥ १॥ सवैया॥ है कुलरीति सनातन जा क्यहु के गृह पाहुन जो कोइ आवै। वित्त समान करै सनमान सबै सबको ज्यहि जो बनि आवै॥ नार्सिहि निर्धन जान त्रियान तपै जल अंग छुवै जरि जावै। आतुर निन्द कह्यो जन सों लइजा कहियो नरसी सो अन्हावै॥ २॥ दोहा॥ किङ्कर पाथहि माथ धरि, समधि समर्प्यो जाय॥ समाचार ज्यहि भांतिहो, बरण्यो सकल सुनाय॥ १॥ सोरठा॥ देखि तप्तजल घोर, नरसी अस उचरत भयउ॥ शीत सलिल ला ओर, तब समेल मज्जन करूं॥१॥ कवित्त घनाक्षरी॥ देखि ओर नरसीकी रोषकर किङ्कराने नाक भौं चढ़ाय कह्यो वचन जनायकै। तैंतो हरिभक्त याही जानतहै जक्त फेर येती नाहिं शक्ति वारि लेउ बरसायकै॥ देखि अपमान करि ध्यान श्रीमुकुन्दजी को नरसी निहोरो नन्दललनै सुनायकै। हरिजन लखि नेह मेह बरसायो गेह शुष्क हरियायो बाग बेगिहि बनायकै॥ १॥ चौपाई॥ सिरै नीर न्हवयो सब सन्ता। तिलक छाप करि प्रमुद अनन्ता॥ समध्याना कर समधि पठावा। साधु बुलावन नापित आवा॥ कह भोजन हित समधि बुलावा। बेगि पयान कीजिये बावा॥

नरसि बवा सब को सँग लैकै। चले सन्त यष्टिका टिकै कै॥ ऊबट बाट चलो गम्भीरा। गिरे धमाधम सूरफकीरा॥ गे चुटियाय केतिकन अंगा। त्राहि २ बोलैं वच व्यंगा॥ सन्त वेदना नरसि परेखी। तबहिं कीन्ह प्रभु बिनति अलेखी॥ दीनबन्धु प्रभु दीनदयाला। ह्वै प्रसन्न चख दीन्ह उजाला॥ दोहा॥ सहमुद नरसी सन्त गण, पहुँचे सज्जन द्वार॥ तिन्ह हित बासी खीचरी, परसी बिन सत्कार॥ १॥ चौपाई॥ तब प्रभु मायहि प्रेरि सुनायो। मम प्रियदास जो नरसि सुहायो॥ त्यहि सन्तन कर आशस्वाशा। जाय जिमाउ अशन सुख राशा॥ प्रकृति आन सद अदन जिमावा। यह कोउ भेद न किंचित् पावा॥ करि भोजन निज आश्रम आयउ। स्वहित नरसि तहँ पाक बनायउ॥ हरि समर्प्य पुनि भोग अहारा। दीन्ह वृषन कहँ दाना चारा॥ बिछइ कामरिन बिस्तर आछे। कटि कोपीन लँगोटी काछे॥ श्रीहरि कीर्तन भजन अलापे। पुरजन परिजन जुरे अनापे॥ प्रेम भक्तिकी अमिसम बरषा। कोजन अस ज्यहि हिया न हरषा॥ दोहा॥ इत गृहमें चरचा चहूँ, करत भये सब कोय॥ नाम बड़ो दरशन लघू, दइ सब नरसि डुबोय॥ १॥ कवित्त घनाक्षरी॥ रामा अभिरामा नामा नरसीसुता ललामा वासों ससुरारी वामा बोली कटु बानियां। निपट निलाजी पाजी मूरख बखानै बाजी कोउ कहैं तो पिताजी येही धूरधानियां॥ तनि नहिं सकुचावा को मुख लै इत आवा तैं जानै थी बावा केरि सगरी कहा-

नियां। ललनपन ठानियां न तो मनमें ग्लानियां आनियां न कानियां है कैसो यह बानियां॥ १॥ सोरठा॥ सुन सबके दुरबैन, रामा जनक समीप गइ। महाकुधित बेचैन, हिलकिसरित हुचकिन भरित ॥ १ ॥ कवित्त घनाक्षरी ॥ नरसी ललनि लखि आदर अनन्त कर हृदि सों लगाय बात पूंछी कुशलातकी। दृगभरि बारि मिली जनक सों बहुबार सावधानी कछु धार बेटी अस बातकी॥ लाय का दहेज मोहिं दीजिये सहेज देवो साजन को भेज तात बस्तु जौन भातकी। वहां तो तिहारी नर नारी आशधारी पितु कीजिये न बारी होय जारी कृति जातकी॥ १॥ हौं तो लहचार बिन काज ब्यवहार पुत्रि तैं कहा न जानै पास कौड़ी ना छदाम है। तोरी यक प्रीतिकेर कारण प्रतीति जान केवल लखन तोहि आयो यहि काम है॥ मैं तो निरधनियां हूँ जानै मोहिं दुनियां न दुरौ तोहि मुनियां न रहिबेको धाम है। मोसम अनाथ नन्दललनै सनाथिहैरी दी है सोई भात भक्तवत्स जौन श्याम है॥ २॥ काम नाहिं धाम नाहिं रहबेको ठाम नाहिं गांठ माहिं दाम नाहिं आयो क्यहि कामसे। मेरी जौन प्रीति घर बैठेहू प्रतीति होय कौन यह रीति छूंछ चलभयो ग्रामसे॥ समधी के देश में सुबेषसों आवन चहीं नाहि यह रूपते न ऐबो भल धामसे। निन्दैं जनसारे मोहिं तोहिं पुरवारे भात दे किन मँगाय यशुदाललन श्याम से॥ ३॥ मांगे नाहिं मिलै भीख मान सुता मोर सीख बिन मांगे मोतीहू तुरत मिलजात है। लोभते बिनाशे

दोऊ लोक परलोक जोऊ लोभ दुःखकारक औ सुःख को निपात है॥ लाड़ो उरधार धीर हन्ता हरि दासपीर जानकै फ़कीर दया लैहै जगतात है। मोंहि तो भरोसे नन्द को ललन तोषै हिये राखिये सँतोषै कहा भात करामात है॥ ४॥ बीते युग याम मोहि त्यागे निजग्राम पितु आई तुव ठाम मोहिं कछू ना लखाय है। आजहि को रोज काल चाहिये उरूज सब तेरो साह सांवरो न जानै कब आय है॥ पलकदरियाई श्याम रीते छिन भरै धाम भक्तहित काम हर याम हो सहाय है। तोर पितु सांचरे न बातनसों काज सरे ललन कहा करे जो कर्मै दुखदाय है॥ ५॥ दोहा॥ इमि पितु संग बिवाद करि, रामा गइ निज भौन॥ जलहित पनघट जातभइ, सखियन के सँग तौन॥ १॥ चौपाई॥ सुनि बेटी के बैन कठोरा। दुखित भयो नरसी उर घोरा॥ ह्वै उदास चित अति घबरायो॥ पुनि दृढ़धारि गिरिधरै ध्यायो॥ तुम बिन मम कोउ सुनै न टेरी। अब राखो गिरिधर पति मेरी॥ तुमहिं ग्राहसों गजहि उबारो। द्रुपदी को दुख तुम प्रभु टारो॥ जन प्रह्लाद हित अन्तर्यामी। रूप नृसिंह धरो तुम स्वामी॥ तुमहिं सुदामा दीन सगायो। दारिद दूर धनीश बनायो॥ धन्यो धना धन्य तुमसो को। धन्यवाद तुम को दूं को को॥ तुम जन यमलार्जुन दिय तारी। तुमहीं गौतमनारि उबारी॥ दोहा॥ पीपा प्रतिपालक प्रभू, पूरणब्रह्म प्रधान॥ कदनक कूबर कूबरी, बलि २ कृपा निधान॥ १॥ चौपाई॥ जनन

हितू खल दलन विदारण। तुमहिं सन्त सन्ताप निवारण ॥ वत्सा बका अघासुर केशी। हनोप्रलम्ब व्योम खलभेशी ॥ धेनुक शंखचूड़ वृष मारा। जनहित गोवर्द्धन तुम धारा ॥ इन्द्रमान भंज्यो नँदनन्दन। तुमहिं बरुण अहि अज मद भंजन ॥ जनवत्सल तुहि वेद बताहीं। सोइ भरोस मोरे मनमाहीं ॥ मम समधी मुहिं सब निदरावत। कहें तुमतो हरिदास कहावत ॥ तोर हितू हरि सरिस प्रतापी। तिनकर तैं जग बजत मिजापी ॥ पुनि कह यह कारज बड़ रामा। तुम हमरे ऐहौ कब कामा ॥ दोहा ॥ ताना मुहिं तुहि देत इमि, सुनत बनत सब केरि ॥ निधनि धनी तुहि नँदललन, रह्यो कृपा तुव हेरि ॥ १ ॥ (राग खम्माच तीन ताल में) पद ॥ सँवरिया प्यारे कहां येती बार करी ॥ (अंतरा) कहे कोउ भक्तिकाज कहुँ उरझे सोइ मम सुधि बिसरी ॥ १ ॥ तुमहीं सुता ब्याह सब सँजयो तुहि हुण्डी सकरी ॥ २ ॥ अब यह बार उबारु ललन को हे ब्रजराज हरी ॥ ३ ॥ नरसी दास तिहारोहि गिरिधर हो सहाय यह घरी ॥ ४ ॥ (अथ जोड़े का पद) सदा प्रभु जनवत्सल ब्रजराज। सुनत जन टेर चले रथसाज ॥ (अन्तरा) लखि प्रिय गमन रमा हँसि बोली मृदुवच शीलजहाज ॥ अहो अमोघ प्रदान प्रदायक कित पयान प्रभु आज ॥ १ ॥ मोर अराधक प्रियजन नरसी भरन भात त्यहि काज ॥ हो आज्ञा मुहिं संग सिधारहु प्रियवर दीननिवाज ॥ २ ॥ नरसिसुता रामा ससुरारिन सन नहिं अइहो बाज ॥ ननदि

निलज दिवरानि दुर्वचा जुलमि जिठनियां आज ॥ ३ ॥ यह विस्मय कछु मोहिं न माधव सब सहिहों बिन लाज ॥ लइ बिठाय रथ रमा श्याम सँग ले ऋधि सिद्धि समाज ॥ ४ ॥ वैश्य वेष शिर पाग लटपटी तनजामा द्युति छाज ॥ पटुका कांध कांख बहि कानन कलम टांकि यदुराज ॥ ५ ॥ अन्नपूरणा धनद किंकरा त्यहि सँग वृन्दबजाज ॥ नन्दललनगे रंगलालपुर बजत बाज अधिराज ॥ ६ ॥ कवित्त घनाक्षरी ॥ अश्व गज पालकी सुनालकी अनन्तरथ हेममय रत्नकी जड़ना करे करे। जुते रँग राते वृष भूलन सुहाते श्वेत नेति नील पील पटपूरित हरे हरे ॥ कोटिन पाटम्बर जरील बादला पिटार शाल औ दुशाला आला शकटौं भरे भरे। ऊनी अजबेले रेशमीन बढ़िया नवेले बस्त्र नन्दललन के संगमें खरे खरे ॥ १ ॥ बसन बिशाल चाल जामदानियां रसाल मलमली मरीनावाल खासे डोरिया के हैं। खासा खीमखापी टूलजाली महमूदी तूल चारखाना के समूल आवे रमाभाके हैं ॥ ललन लसीले नैनसुखिया लुंगीले ऐन कामदानी फुलालैन फावने प्रथा के हैं। कीधौं चपला के हैं कि शशि की कलाके हैं कि हेमकी प्रभाके रंग नई छबि छाके हैं ॥ २ ॥ दोहा ॥ अमित अनोखे लक्षकइ, जोड़ जनाने जानि ॥ मरदाने कोटिन बसन विरचित रत्न खानि ॥ १ ॥ कवित्त घनाक्षरी ॥ विविध विधान पकवान शकटान बिच मेवा मेदादिकी सो हैं मिष्ट निमकीनियां। कोटिमन सीधा औ सामान घृत लाखौंमन ईधन मसाले खांड़

केरि लक्षबोरियां ॥ अमित प्रकारके सुभूषन ललन लहैं रत्न धन कोशसों प्रपूरि बहु गाड़ियां। चांदी अरु स्वर्णवारे पात्र रतनारे न्यारे कहां लौं बखानौं नेति भांतिक समग्रियां ॥ १ ॥ चौपाई ॥ अबिर गुलाल कलावा रोरी। केशर कस्तुरिक बहु बोरी ॥ तेल फुलेल इतर अवदाती। जुही केवड़ा चम्पक जाती ॥ वर्ण वर्ण की बस्तु अपारी। जो कछु मँगई त्यहुसनन्यारी ॥ सहित समग्री युग पाषाणा। यक चांदी यक हेम प्रमाणा ॥ संगलिये गिरिवर गिरिधारी। कमला कन्त वैश्य छबिधारी ॥ सहित सारथी रथ असवारा। आये गोंडा नगर मँझारा ॥ गाजे बाजे बाजैं भाते। तूर नफीरी प्रथा प्रथाते ॥ नृत्य करैं अप्सरा अनूपा। जिन्हैं देखि लाजैं रतिभूपा ॥ दोहा ॥ चिन्तायुत तहँ भरत रहि, नरसीतनया नीर ॥ गरुड़ध्वज रथ देखि विभु, पूंछन गइ त्यहि तीर ॥ १ ॥ कहँ निवास तुम नाम कह, क्यहि की सुता अनूप ॥ कहँ आई कहँ जायहौ, सुन्दर सुभग स्वरूप ॥ २ ॥ चौपाई ॥ वदत भई श्री कोमलबानी। पुर द्वारा मम पति रजधानी ॥ भीष्मकजा मम नाम बखानो। यहि पुर कहँ ममागमन जानो ॥ नरसी कुमरि लाड़िली रामा। जाकर पुत्री नामकि श्यामा ॥ तासु विवाह समधि त्यहि राचा। नरसि सजन सन भात सुयाचा ॥ त्यहि गुमाश्ता मम पति येही। भात देन जावत सह गेही ॥ सुनि व्याख्या यहि तिय हिय हरषी। प्रेम पुलकि दृग जल भर बरषी ॥ धिक दुर्वच पितुसन हौं भाषा। पश्चात्ताप अनाप

प्रभाषा ॥ रामा रमा भुजा भरिभेटी। तुमहिं सकृत सबजन दुख मेटी ॥ ज्यहि परिणय सोइ मोर कुमारी। भल सहाय भेआन मुरारी ॥ दोहा ॥ तुम आगमन बिलम्ब लखि, मैं दुख सहे अनन्त ॥ सास ननदि तानन तुजी, पुजी दुखन भगवन्त ॥ १ ॥ धनि दयालुता दर्श दै, कीन्हि कृतार्थ अपार ॥ बँदइ धीर प्रभुनाय शिर, गमनी मुद आगार ॥ २ ॥ चौपाई ॥ भक्तनकर बिनदाम बिकाने। हरि मायायुत पुर प्रस्थाने ॥ धूम धमार सुनत पुरवारे। आन जुरे जन बालक सारे ॥ नारि नवेलि सिमटि चलिधाईं। ब्रजन छतन छय छिति छितराईं ॥ तिन सन प्रश्न कीन्ह सांवरिया। रंगलालकी कौन बखरिया ॥ जो नरसी को सजन कहावत। सुहृद नरैना ज्यहि कर भावत ॥ तिन्ह समीप हम जावन चाही। यहि अभिलाषा है मन माहीं ॥ जो प्रभु सब घट घट कर बासी। अज्ञ बन्यो जनहित अविनासी ॥ लखि वित्र राजसी समाना। बूझन लगे सकल व्याख्याना ॥ (हरिगीतिकाछन्द) तुम कौन बासी कहां के कह नाम तुम्हरो साह है। तुम ललन किनके बरणिये हम सबन मन उत्साह है ॥ बैन पुरजन केर हरिभे कहत सहित उछाहरे। मम नाम श्यामलसाह कहैं मुहिं द्वारिका नाहरे ॥ क्यहि काज रँग पहँ आगमन सोइ सर्व हमैं सुनाइये। ज्यहि मिलन आये बतैहें सँग हमार सिधाइये ॥ हम चाकरा ज्यहि केर नरसी नाम त्यहि अनुमानिये। तासुता

ाहि पुर समध्यना तासु बखानिये॥ त्यहि सजन नातिन केर ब्याह रच्यो मँगायो भात हो।
ा ननसारी सकल हम देन ताको जात हो ॥ ह्वै मग्न नरसी सजनद्वारे साहको लावत
ुनि साजना नरसी भगतको ताहि गोहरावत भये ॥ आयो तुम्हारे सजन केर मुनीम लेकर
है। सो लै सकल सकराइये तुव द्वार खड़ी जमात है ॥ सुनि समाधि नरसीकेर आयो
चकित निहार कै। हरि कही लीजै भातबस्तु मँगाइ जौन प्रकारकै॥ नँदललन कहँ रँगलाल
सन्मान द्वारै लैगयो। हिय प्रेम पूरित शुभ्र सिंहासन सबन आसनदयो॥ कवित्त घनाक्षरी॥
ाको उछाह माह भयो हियामें उमाह कुल कामिनी अथाह बोलि यों बिचारती ॥ भूषन
ान लाय श्यामा सुता को सजाय बाजन बजाय गाय मङ्गल उचारती ॥ पूजन सँजोय थाल
अक्षत गुलाल माल भातई गोपाललाल के तिलक सारती। चौमुख प्रज्वाल दीप रत्न धनवार
नीप धूम धाम सो ललन आरती उतारती ॥ १ ॥ सोरठा ॥ निरखि अनन्द अपार, भाम भात
गावन लगीं ॥ नेगचार ब्यवहार, कुलकृतिवत कुल होत भे ॥ १ ॥ (रागिनी बरुआ की मांझ
में) पद ॥ धनि धनि नरसी को भात नवेलो न्यारो॥ (अन्तरा) न्यारी न्यारी असवारी
हथिया हजारी भारी घुड़ला विशद वृष गात--नवेलो न्यारो॥ १ ॥ पालकी पुरन्दरी सी नालकी
धुरंधरी सी रथ म्याना बाना नव जात--नवेलो न्यारो ॥ २ ॥ बसन अनोखे चोखे भाजन २२

०मं०
११५

प्रभा समोखे धन सुरतन अवदात--नवेलो न्यारो ॥ ३ ॥ भूषण प्रभाते भाते नख सिख के सहाते
जिन छबि बरणि न जात--नवेलो न्यारो ॥ ४ ॥ नरसी धनीश कहूं धनद को ईश कहूँ पठयो
सजन असदात--नवेलो न्यारो ॥ ५ ॥ धनि वाकी प्रीति नँदललनन सो जाको मीत हो सखी तो
ऐसो होवै नात--नवेलो न्यारो ॥ ६ ॥ (हरिगीतिकाछन्द) बस भक्ति रमा रमेश त्यहि गृह जाय
आदरयुत रजे। दै ऋद्धिसिद्धिन सैन धनपति तुरत सब सामा सजे॥ यक यक पदार्थ गनाय प्रभु
ाब सजन के आगे धरे। अरु नेगयोग विशेष हो कछु मांगिये सो दूं खरे॥ समधिन नवेली
ां त्यहि पाषाण यह दोउ दीजिये। सौवर्ण रजतिक शिला मिला दिला गिला निर्बीजिये॥
ीन जे आसीन जौन प्रबीन हे पुरतीर के। दिय द्रव्य शाल दुशाल तिन उष्णीष बसन
के॥ यक सुघर सारी रत्नवारी चमत्कारी सों गसी। सो रमा रामा वृद्ध वामा तनसजायि
लसी॥ हित चित समात न मुदमुकात प्रफुल्ल दोउ बलि बलि गईं। श्रीरूप शोभन
अनूप लखि मोहित भईं॥ लखि सकल चित्र विचित्र वस्तू अमित मोलन मेरकी।
नेरखी कबहुं सो लै सजन निजगृह ढेर की॥ करि हरि कुबेर समान धनपतिआप निज
। सुनि भक्त नरसि पलाय हरिहित दर्श हिय अकुलात भे। जनकेर करुणा बैन सुनि
सनाथ्यो श्रीहरी ॥ धनि धन्य नरसी भक्ति पूरणब्रह्म ज्यहि बस हरघरी ॥ लखि २३

न०क०

ार । २ दोड़े ।

। चकितचित पुरनारि नर समधी तबै । घरबार कुल परिवारयुत नरसी निकट
प्रवलोकि भावपुनीत प्रीतिप्रपूर हर हिय लहलहे । द्रुत दौरि हस्तनजोरि करत
ी पगगहे ॥ हम सब अजापी अधम पापी तोर प्रभुता नहिं लही । दियो शुष्क
भा तुव पगन परे हरित मही ॥ मम करिय क्षमापराध धनि तुम कियो पुरपावन
तोर सनमाने सजन कहि नरसि कह करियत भला ॥ हौं ललन तुम बड़ पूज्य
धन महँ सानत महा । तुम सबहि लायक हूँ अलायक बरणिये आज्ञा कहा ॥ १ ॥
कह्यो सकल नर नारि, आयो तोर गुमाशता ॥ दैगा वस्तु अपार, भात जात बरण्यों
१ ॥ चौपाई ॥ तिनप्रति नरसि भन्यो हितलाई । कृष्ण बिना मम कौन सहाई ॥
तात मात वहि भ्राता । केवल उनहीं सों मम नाता ॥ उन बिन कौन भक्त प्रणपालै । ये सबैं
मर्थ गोपालै ॥ सुनि नरसी के वचन विशाला । सबहिनु ज्ञान भयो तत्काला ॥ लखि नरसी
की भक्त छकाने । धन्यवाद दै धन्य बखाने ॥ धनि हमभाग सजन तुम पाये । तुम मिस श्री
हरि हमपुर आये ॥ गुप्तवेष हम जान न पावा । यह अब परम शोक उर छावा ॥ हे अभाग्य
हमरे अधिकाई । सोइ प्रभु चरण न पकरेउ धाई ॥ अपन अधमता कहँ लग कहहीं । तिष्ठन दिहै
न यह दुख दहहीं महुँ कृपाकर असमति दीजे । हो उर हरिपदरति यश लीजे ॥ हमरो तो

जग जन्म वृथ तुम नरसी धनि धनि जगमाहीं ॥ धनि तुम्हरी दृढ़ भक्ति सुहाई । जो तुम्हरे बस
रहैं कन्हाई ॥ तुम्हरे पुनीत सत्कर्मा । धनि व्रत नेम पुण्य तुव धर्मा ॥ धन्य धन्य ज्यहि
उदर निवासा नि तुवमात पुण्य यशरासा ॥ धनि पितु जासु पुत्र तुमसेजू । धनि सोइ
थल जहँ तुम जू ॥ धनि सो नगर जहां तुम बासा । धनि हितु जिन्ह तुव संग बिलासा ॥
धनि जिन्ह तं ड़ोस निवासा । धनि धनि सत्संगी तुवदासा ॥ कहँ लग तम्हरी करहिं ब-
ड़ाई । तुम स त न अपर जनाई ॥ प्रेम पुरित रससन अनन्दा । मनमाने बिहीन छल
छन्दा ॥ स धन के वचन बिशाला । नरसी कह्यो भजो नदलाला ॥ ॥ यह युग में हरि
नामहि । ज्यहि भजि जीव होयँ भवपारा ॥ अस कहि नरसी लै सग सन्ता । गमने
श्री भगवन्ता ॥ (हरिगीतिकाछन्द) जब चले नरसी नगर पुरजन सकल पहुँचावन
खि सुता पिता बिछोह ब्याकुल रुदन करि दोउ कर मले ॥ पुत्रिहि प्रबोधि बँधाय
ढाढ़स दै अशीस सुश्रसकही । जब चहें तब मुहिं बोल लीजै वही छिन अइहा सही ॥ भे
नगर बाहर नरसि त्यहि छिन भग्नि रहि यक सजन की । ज्यहि भात बस्तु न मिली कछु
सोइ मलिन ह्वै अस भननकी ॥ हे नरसि तुम कित जात भ्रात न मोहि नेग दियो कछू । सोइ
हौं निराश समीप आई आश तुम पुरियो कछू ॥ धन कहूँ भुषण बसन कह यक कंचुकी तक

१०
१८
ना दई । तैं इतक माया लुटइ मुहिं यक नेग दियो न निर्दई ॥ सोरठा ॥ सजन बहनकी बात , सुनि नरसी ब्याकुल भयो ॥ दुखि लखि जनमन गात, वहि छिन प्रभु दाया करी १ ॥ चौपाई ॥ दयादृष्टि हेरे बनवारी । बरसे कोटिन बसन अपारी ॥ लखि नरसी कर भक्ति प्रतापा । भँगतै बरसे बस्त्र अनापा ॥ छकित चकित भइ भग्नि बहोरी । नरसी पगन गिरी करजोरी ॥ कही सजन धनिभाग हमारे । जोभे नैनन दर्श तुम्हारे ॥ तुम्हरे बशमें नर नारायण । तुम निजकुल पुरुषन तारायण ॥ नगर निवासी सब हरषाने । नरसी के यश कहत छकाने ॥ आनँद भरे लौटि गृह आये । नरसी अपने भवन सिधाये ॥ प्रकटी भवन अखिल यह बाता । ज्यहि बिधि नरसी दीन्हिस भाता ॥ भ्रात मनैमन अति आनन्दे । बार बार नरसी यशबन्दे ॥ जो नरसी यश कहै कहावै । धौं निज गृह कोइ सुनै सुनावै ॥ ताहि भक्ति नरसी सम होई । बृथा न किञ्चित् मानहु कोई ॥ दोहा ॥ नन्दललन प्रिय प्रेमबस, भक्तभक्ति आधीन ॥ जे हरिजन यश सुनि मुदैं, भोगैं ताप न तीन ॥ १ ॥ इति श्री द्विजवर्यपण्डितललनपियाशर्मविरचितोभक्तिभूषणः (नरसीकथा) समाप्तिमगात् ॥ शुभम् ॥

प्रथमबार

लखनऊ

सुपरिंटेंडेंट बाबू मनोहरलाल भार्गव बी. ए., के प्रबन्ध से
मुन्शी नवलकिशोर (सी. आई. ई.,) के छापेखाने में छपा सन् १९१० ई० ।

॥ इति रुक्मिणी मङ्गलम् ॥